नसीम हिदायत के झोंके

(बराए ख़्वातीन)

मौलाना मुहम्मद कलीम सिद्दीक़ी

Maktab Ashraf

(बराए ख़्वातीन)

इफ़ादात

दाइये इस्लाम हज़रत मौलाना

मुहम्मद कलीम सिद्दीक़ी साहब

मद्दज़िल्लहुल आली

मुरत्तिब

मुफ़्ती मुहम्मद रौशनशाह क़ासमी

Maktab Ashraf

नाम किताब : नसीम हिदायत के झोंके (बराए ख़्वातीन)
मुरत्तिब : मुफ़्ती मुहम्मद रौशनशाह क़ासमी
सफ़हात : 216
क़ीमत : 100
इशाअत : अप्रैल 2012
बएहतमाम : सइदुज्ज़फ़र अफ़ी अन्ह

Maktab Ashraf

Name of the Book : Naseem Hidayat Ke Jhonke (Bara-e-Khwateen)
Compiler : Mufti Mohd. Raushan Shah Qasmi
ISBN : 978-93-81509-19-7
Published By : Maktaba Shaha Waliullah
B-25/1, Rahman Complex, Jogabai
Batla House Chowk, New Delhi-25
Mobile: +91-9899166988

फेहरिस्ते मज़ामीन

अर्ज़े मुरत्तिब

नहमदहू व नुसल्ली अला रसूलीहिल करीम !

किसी भी कौम की ख्वातीन का इस कौम की तामीर व तरक्की मे जो हौसला होता है वह किसी तशरीह व बयान का मोहताज नही। माँ की गोद बच्चे की सबसे पहली दर्सगाह भी है और तरबीयतगाह भी और यह ऐसी मोअस्सर दर्सगाह है कि यहाँ का सीखा हुआ ज़हन व कल्ब पर पत्थर के नक्श से भी ज्यादा देरपा होता है और सारी उम्र नही भूलता ।

तारीखे इस्लाम शाहिद है कि ख्वातीन ने कुरआन व हदीस के हिफ्ज़ करने मे गैर मामुली कारनामे इंजाम दिए ज़हद व इबादत ईसार व किनाअत ,हया व उफ्त के साथ मर्दों का जिहाद व शहादत और दाअवत व अज़ीमत मे साथ दिया या कुरआनी अल्फाज़ मे **साइहात** (मुहाजिरात)[1] का अमली नमूना है ।

हत्ता की दाअवत के मैदान मे कुरबानियो के देने मे मर्दों के मुकाबले मे औरतो ही को अव्वलियत हासिल रही चुनांचे आप सल्ल.पर सब से पहले ईमान लाने वाली एक औरत (हज़रत खुदेजा रजि) हैं और इस्लाम की खातिर सबसे पहले अपना माल लगाने वाली एक औरत (हज़रत खुदेजा रजि) है और इस्लाम की खातिर सबसे पहले जामे शहादत नोश करने वाली एक औरत (हज़रत सुमैय्या रजि) है ।

और कलाम इलाही ने पुरी वज़ाहत के साथ उम्मते मुहम्मदिया के हर मर्द व औरत को दाअवते ईमान व इस्लाम का ज़िम्मेदार करार दिया। इर्शादे बारी तआला है :

وَالْمُؤمِنُوْنَ وَالْمُؤمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

अलगर्ज़ शरियत ने मर्दों और औरतो दोनो को दाअवत व तब्लीग का मुकल्लफ बनाया है ।

(1) हज़रत इब्ने अब्बास रजि.ने "साइहात" की तफसीर मुहाजिरात से की है ।(अल्दुर्रुलमंसूर ,इब्ने कसीर)

और मौजुदा हालात मे इस्लाम कुबूल करनेवाली सईद बहनो मे औरतो की ताअदाद ज्यादा है और वह मर्दो से आगे है। इस किताब मे इस्लाम कुबूल करने वाली खुश नसीब बहनो के हालात व वाकिआत यकजा जमा कर दिया गया (जो माहनामा अरमुगान फुलत मे शाए हाते रहते है) ताकी बहनो को इस्तेफादा मे सहुलत हो और बुजुर्गो और अहबाब का भी तकाज़ा था इन इंटरव्यूज़ को अलग से किताबी शक्ल मे शाए किया जाए। यह किताब इंशाअल्लाह दाअवत के काम के लिए एक महमेज़ का काम देगी और दिल की सर्द अंगिठीयो को गरमाएगी और खैरुलकुरुन मे जिस तरह औरतो ने मर्दो का दाअवत की मेहनत मे साथ दिया इन की यादे ताज़ा करेगी ।

दाई इस्लाम मदज़िल्लहु से बंदे ने जब इस काम का तज़केरा किया और किताब का मसौदा पेश किया तो हज़रते वाला ने बहुत ही पसंदीदगी का इज़्हार फरमाया और फरमाया कि ये तो मेरी दिली तमन्ना थी कि ख्वातीन के इंटरव्यूज़ यकजा शक्ल मे अलाहीदा शाए हो जाए और बुलडाणा,भुसावल व महाराष्ट्र के 28,29 जून 2011 के प्रोग्राम मे दोनो मकामात पर ख्वातीन के इज्तेमात मे बडे अच्छे अंदाज़ से इस किताब की अहमियत व इफादीयत की तरफ मस्तुरात को मुतवज्जेह फरमाया रवानगी के वक्त हज़रत ने इस नाकाराह से फरमाया कि मुफ्ती साहब इस किताब का मसौदा मेरे बॅग मे रखा दो मै इस को देख लेता हूँ तो बंदे ने अर्ज़ किया नज़्र सानी के साथ इस किताब के लिए तकरीज़ भी इनायत फरमादे तो हज़रते वाला ने बंदे की यह गुजारिश कुबूल फरमाई और अब यह किताब हज़रते वाला की नज़्रे सानी व तकरीज़ के साथ शाए हो रही है ।

किताब पर नज़्रे सानी उस्ताज़ मोहतरम हज़रत मौलाना अ.सलाम साहब मज़ाहिरी पुनवी मदज़िल्लहु ने फरमाई किताब मे इंटरव्यूज़ के

(2) तर्जुमाः और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरते आपस मे एक दूसरे के (दीनी) रफीक है नेक बातो की तालीम देते है और बुरी बातो से मना करते है।(सुरः तौबा :71) (तर्जुमा हकीमुल उम्मत मौ.अशरफ अली थानवी रह.)

अनावीन मौलाना इलयास बंदे इलाही साहब अवन जि.सूरत, गुजरात ने लगाए जो माशा अल्लाह बडे पुरकश है अल्लाह तआला इन्हे जज़ाए खैर अता फरमाए ।

इस किताब की तसीह व तरतीब मे हज़रत मौलाना वसी सुलेमान साहब नदवी ज़िद मजदहू, एडीटर माहनामा अरमुगान फुलत ने और ब्रादरम मुहम्मद याकुब अली इब्ने मीर वाजीद अली साहब ज़िद मजदहू अब्दुर्रशीद खॉ बाबु साहब लोही ने बंदे का साथ दिया । अल्लाह तआला हमारी इस कोशिश को कबूल फरमाए और साहिबे इफादात दाई ए इस्लाम हज़रत मौलाना मुहम्मद कलीम सिददीकी साहब मदज़िल्लहु की उम्र मे खूब बरकत अता फरमाए और उम्मत की ख्वातीन को फिर से अपने फर्ज़े मनसबी पर खडा फरमादे ।

मुहम्मद रौशन शाह क़ासमी

मुहतमिम दारुलउलुम सोनोरी

24 शाबानुल मोअज़्ज़म 1432हिजरी

मुताबिक 21 जुलाई 2011

Maktaba Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुक़द्दमा

मंब-ए-अख़्लाक़, मुश्फ़िक़-ए-इंसानियत, दाई-ए-इस्लाम
हज़रत मौलाना मुहम्मद कलीम साहब सिद्दीक़ी मदज़िल्लहूल आली
खलीफ -ए-मजाज़ मुफक्किरे इस्लाम
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली मियाँ नदवी रह.

गारे हिरा मे पहली वही के नुज़ूल के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल. मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ लाए । आपको सर्दी लग रही थी । आप सल्ल.ने अपनी रफीक ए हयात हज़रत खुदेजा रज़ि.से फरमाया " ज़म्मीलुनी जम्मीलुनी " (मुझे चादर उडाओ मुझे चादर उडाओ) हज़रत खुदेजा रज़ि. ने चादर उडाई सर्दी का असर कम हुआ तो आप सल्ल. हज़रत खुदेजा रज़ि.से फरमाया कि मुझे अपनी जान का खौफ है गम ख्वार और जानिसार रफीक ए हयात ने वजह पुछी तो आप ने नुजुले वही का पुरा वाकिया बताया बेइख्तीयार पुरी ज़िंदगी की रफाकत, शादी से कब्ल तिजारती रफाकत और शादी के बाद अपने बिस्तर मे परखने वाली रफीक ए हयात ने आप के किरदार की अज़मत को खराज वुहसीन पेश करते हुए अर्ज़ किया ,

وَ اللهُ لا يُخْزِيْكَ اللهُ اَبَدًا، اِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتُصَدِّقُ الْقَوْلَ، وَتَحْمِلُ الْكَلَّ،
وَتَكْسِبُ الْمَعْدُوْمَ، وَتُعِيْنُ عَلٰى نَوَائِبِ الْحَقِّ، وَتُؤَدِّى الْاَمَنَةَ وَتَقْرِىَ الضَّيْفَ.

अल्लाह की कसम ! अल्लाह आप को कभी रुसवा न करेगा, आप सुलहा रहमी करते है, बात को सच्चाई अता करते है, कमज़ोरो का बोझ उठाते है तंगदस्तो के लिए कमाते है, हक के नाईबीन की मदद करते है, अमानते अदा करते है और मेहमानो की मेहमान नवाज़ी करते है ।

आप सल्ल.की नबुवत की तसदीक की और आप की रिसालत

सब से ज़्यादा कद्रदान और वाकिफ कार मेरे चचा ज़ाद भाई वरका बिन नोफल हो सकते है इस लिए अल्लाह के रसूल सल्ल.से वरका बिन नोफल के पास पहुँचे और सारा माजेरा बताया। इस के बाद रसूलुल्लाह सल्ल. से अर्ज किया कि आप अपनी ज़बान मुबारक से फरमाइये आप ने पुरा वाकिआ सुनाया वरका बिन नोफल ने भी आप की रिसालत की तसदीक की और कहा की ये वही नामोस है जो हज़रत ईसा और मूसा अलैहिमस्सलाम के पास आया करता था । काश मै इस वक्त ज़्यादा रहता जब आप की कौम मक्के से आप को निकाल देगी । अल्लाह के रसूल सल्ल.हैरत ज़दा हो गए कि इतनी जानिसार और मुझ से मुहब्बत करनेवाली कौम मुझे निकाल देगी ! मक्का के हर आदमी आप का दिवाना,आप के किरदार की अज़मत का मुताअरुफ,आप को सादिकुल अमीन कहने वाला ,अमानते आप के पास रखी जाती,हर कज़िया मे आपका फैसला सबसे मोहतरम होता, आप की दाअवत पर लब्बैक कहना इज्ज़त की बात समझा जाता,मक्के मे हर फर्द आपका चाहने वाला था मगर सलाम हो आप पर कि जिस जाहिलीयत को आप कदमो के नीचे रौंदने आए थे । इसकी सबसे से बडी बुराई औरतो का इस्तहसाल और औरतो पर ज़ुल्म था इस लिए आप ने जाहिलियत को कदमो के नीचे रौंदने का अमल शुरु फरमाया तो कुरआन मजीद की सबसे पहली वही और दीन के सबसे बडे पैगाम के लिए जिस शख्सीयत को मुंतखब किया वह आप के ज़िंदगी भर के जानिसार अबु बकर सिद्दीक रज़ि.,आपकी हद दरजे शफक्कत व मुहब्बत से परवरिश करनेवाले सरपरस्त चचा अबु तालिब आपसे हद दरजे मुहब्बत करने वाले हज़रत अली रज़ि.और आप के खादिमे खास हज़रत ज़ैद रज़ि जैसा कोई मर्द नही था बल्की वह खुश नसीब शख्सीयत जिस को इरादतन आप ने कुरआन की अव्वलीन आयात का मुखातीब,मुताअल्लम और मदऊ बनाया और जिस शख्सीयत को अल्लाह के रसूल सल्ल.की रिसालत पर सबसे पहले ईमान लाने का

शर्फ हासिल हुआ, आप की सबसे पहली सीरत निगारी करने का और आप के पैगाम को वरका बिन नौफल के पास ले जाने का शर्फ हासिल हुआ वह आप की रफिक ए हयात हज़रत खुदेजा रज़ि. है । इस से यह सबक मिलता है कि जाहिलियत ज़दा मआशेरा के इस्लाम के नूर के साये मे लाने के लिए नबवी तरतीब यह है कि मर्दो से पहले औरतो को दाअवत का मुखातिब बनाया जाए और मर्दो से पहले इन को कुरआनी ताअलीम देने और इस्लाम की दाअवत देने के लिए तैयार किया जाए । अफसोस है कि आज हम ने इस्लामी दाअवत और तालीम के सिलसिले मे ज़िंदगी के तमाम शोबो की तरह औरतो को नज़र अंदाज़ किया है जिस की वजह से माहोल मे दीनी दाअवत और दीनी तालीम का मिज़ाज नही बन पा रहा है यह ज़माना जब दुनिया मे औरतो का दौर चल रहा है,ज़न परस्त लोग दुनिया मे सिर्फ अपने को तरक्की याफ्ता कहलाने के लिए औरतो की दाअवत की अहमियत और भी बढ गई है इस मुहब्बत के मुल्क हिंदुस्तान मे तो हाल यह है कि सारी मज़हबी रसूमात और त्यौहारो मे मज़हब से असली ताअल्लुक औरत का होता है मर्द सिर्फ इनके टॅक्सी ड्रायव्हर होते है ।हमारे ब्रादराने वतन मे औरते जिस देवता और मंदिर से अकीदत रखती है मर्द भी उसी से अकीदत रखते है। आम तौर पर पुजा के लिए जाना होता है तो घर मे मशवरा होता है कि कौन कौन मंदिर जाएगा ? फला जाएगी, फला जाएगी । कौन लेकर जाएगा ? मर्द एक दूसरे पर टालते रहते है जिसके नाम का कुरआ पड जाए वह लेकर चला जाता है। यकुम जनवरी को नए साल के मौके पर यह लोग पुजा करते है एक शनी के मंदिर पर राकिम ने गाडी रोककर पुजा के लिए लाईन लगे लोगो को शुमार किया तो 132 औरते और 19 मर्द थे । बकौल हमारे एक नौवारिद दाई दोस्त के। यहाँ अगर औरते ईमान मे आ जाए तो मर्द खुद बखुद ईमान मे आ जाएगे। अब औरते अगर मंदिर की तरफ जा रही है तो मर्द भी मंदिर की तरफ जा रहे है। अगर औरते मस्जिद का रुख करले तो मर्द भी मस्जिद का

रुख करने लगेगे। इस तरह दुनिया की सारी मदऊ आबादी का एक चौथाई एक अरब मदऊ कौम के मुल्क हिंदुस्तान मे औरतो मे दाअवती काम की अहमियत और भी बढ जाती है। मगर अफसोस है कि मर्दो मे कुछ दाअवती बेदारी मार खा खा कर पैदा हो गई है मगर औरतो मे इस की ज़िम्मेदारी का एहसास नही पैदा हो रहा है। औरतो मे दाअवत से इस दरजे गफलत के बावजूद अल्लाह तआला अपनी हिदायत की कार फरमाई दिखा रहे है और हमारे मुल्क मे बल्की पुरी दुनिया मे औरते इस्लाम मे आ रही है बल्की मगरीब के इस प्रोपेगंडे के बावजूद (कि औरत को इस्लाम ने मुकीद कर के रखा है)मगरीब मे इस्लाम लाने वालो की तादाद मर्दो से ज्यादा औरतो की नज़र आती है।

खुद हमारे मुल्क मे भी यह तादाद खासी है और इन औरतो के इस्लाम की और भी अहमियत है कि घर के शिरकिया और इस्लाम मुखालिफ माहोल मे मर्द तो इस्लाम कुबूल करके घर से बाहर इधर उधर जाकर अपनी नमाज़ वगैरा अदा कर सकता है मगर औरतें इस शिरकिया माहोल मे बडे मुजाहदे और कुरबानिया देकर अपने ईमान की हिफाज़त करती है। इन मे से बहुत सी बहने हद दरजे घुटन महसूस करके बे सहारा सिर्फ अल्लाह के भरोसे घर से निकल जाती है। बाज़ तो ऐसे मसाईब सहती है जिन को सुनकर सहाबा रजि.की कुरबानिया याद आती है और यह वाकियात ज़मीर को झंझोडने वाले होते है। माशा अल्लाह हमारे माहनामा अरमुगान मे " नसीमे हिदायत के झोंके " के नाम से यह कारगुज़ारिया छपती रही है। जो किताबी शक्ल मे चार जिल्दो मे शाए हो चुकी है। पांचवी जिल्द तयार है इन मे एक पंदरह साला शहीद बच्ची हिरा की कुरबानी भरी दास्तान अब्दुल्ला भाई के ज़मन मे इस मे आ गई है जो न जाने कितने बेदीनो के दीनदार बनने और न जाने कितने लोगो को दाअवत से अमली तौर पर वाबस्ता करने और न जाने कितने लोगो की हिदायत की ज़रिया बनी ।

ज़रुरत थी कि औरतो को तर्जीह और खुसुसियत देते हुए इन

खुशनसीब मुहाजिर ख्वातीने इस्लाम की कारगुजारियां अलग से शाए हो हमारे मुहीब्ब व हबीब रफीक दाई ए दीन जनाब मुफ्ती मुहम्मद रौशन शाह ज़ादुल्लाह तौफिकं व शरफन बहुत मुबारकबाद के मुस्तहीक है कि इन्हे इस तरफ तवज्जोह हुई और इन्होने ख्वातीन के कुबूल इस्लाम की दास्तानो को अलग से शाए कराने का प्रोग्राम बनाया। मै मुफ्ती साहब को इस काम के लिए मुबारकबाद देता हूँ बदल व जान दुआ है कि यह इंतेखाब मिल्लत की माओ और बहनो दाअवत पर उभारने और माओ बहनो की हिदायत का ज़रिया बने और बहनो मे यह ज़ज़्बे बेदार हो कि वह हज़रत खुदेजा रज़ि. के नक्श कदम पर चल कर मर्दों से दाअवत के मैदान मे सबकत ले जाने की कोशिश करें।आमीन

खाक पाए- खुद्दाम- ए- दीन
मुहम्मद कलीम सिद्दीकी
जामीयतुल इमाम वलीयुल्लाह इस्लामिया
फुलत जि. मुजफ्फर नगर (यु.पी.)
16 शाबानुल मोअज्ज़ 1432 हिजरी.
मुताबिक 19 जुलाई 2011 ई.

नसीमे हिदायत के झोंके पर

मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपूर के मुफ्ती हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद शोएब साहब मदज़िल्लहु का

तबसेरा

मज़कूरा किताब कोई मुस्तकिल तसनीफ व तालीफ तो नही मगर अपने फायदे और असर आफरिदी की बाइस मुस्तकिल तसनीफ व तालीफ से बढकर है असल यह किताब उन नवमुस्लिम भाईयो की दास्ताने हयात(जीवन कथा) है जिन्होने कुफ्र व शिर्क से बेज़ार हो कर बिलवास्ता या बिलावास्ता दाईए इस्लाम हज़रत मौलाना मुहम्मद कलीम सिद्दीकी साहब दामत बरकातहुम के दस्ते हक परस्त पर कुफ्र व शिर्क से तौबा करके इस्लाम मे दाखिल हुए, बल्कि इन मे से बहुत से लोग वह भी है जिन्होने हालाते कुफ्र मे मुसलमानो के खिलाफ (विरुद्ध) उठने वाले हर पहले दस्ते की कयादत की और अपना मज़हबी फरीज़ा समझते हुए इस मे जी जान से लगे ताकि इन की आत्मा(रुह)को सुकून व चैन मिले,मगर इन्हे सुकून के बजाए बे सुकूनी,बेचैनी,डर और खौफ मिला,और बिलआखिर इन्हे चैन व सुकून इस्लाम की ठंडी छॉव मे नसीब हुआ और फिर इस्लाम लाने की पादाश मे हर तकलीफ को बरदाश्त किया मगर कोई तकलीफ भी इन के पॉव को डगमगा नही सकी ।

दर हकीकत इन नवमुस्लिम भाईयो की यह दास्ताने ईमान हम जैसे खानदानी मुसलमानो को ख्वाबे गफलत से झंझोडती और हमारी हकीकत को आईना दिखाती है और बिलाशुबा बाज़ मर्तबा अपने उपर शक गुज़रने लगता है कि हम मुसलमान भी है या नही ।

इस लिए किताब की खूबियो का अंदाज़ा तो सिर्फ पढने ही से होंगा किताब हर खास व आम के पढने की है खुसुसन दाअवती काम करने वालो के लिए बहुत ही अहम है क्युकि इस से नया अज़्म व हौसला मिलेंगा नई राहे खुलेंगी और दाअवती काम मे आने वाली हर तकलीफ को बरदाश्त करना आसान हो जाएगा ।

(माखुज़ अज़ माहनामा मज़ाहिरुल उलूम, जनवरी २०१०,सफ्हा ४७)

तबसेरा

अज़ हज़रतमौलाना सैय्यद मुहम्मद शाहिद साहब सहारनपुरी मद्दज़िल्लहु
खलीफ-ए-मिजाज़ : हज़रत अकदस शेखुल हदीस
मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रह.
दामादः हज़रतजीमौलाना इनआमुलहसनसाहब रह.अमीरे जमाअते तब्लीग
अमीनेआम :जामिया मज़ाहिरुल उलूम सहारनपूर

दाई इस्लाम हज़रत मौलाना मुहम्मद कलीम साहब सिद्दीकी मद्दज़िल्लहु नाज़िम जामियातुल इमाम वलीउल्लाह फुलत (मुज़फ्फरनगर) को हक तआला शानहु ने दीन की दाअवत और इस्लाम के आलमगीर पैगामे अखूव्वत को बिरादराने वतन तक पहुँचाने के लिए एक खास सलीका और मख्सूस जज़बा अता फरमाया है चुनांचे इस्लामी तालीमात से मुतास्सिर होकर बडी तादाद मे इन के ज़रिये कुबूले इस्लाम का सिलसिला जारी है और जिस के नतीजे मे हिंदुस्तान(व बैरुन हिंद)मे तब्लीगे इस्लाम की एक अज़ीम और एक जदीद तारीख मुरत्तब हो रही है हक तआला शानहु मौलाना मौसूफ की हिफाज़त फरमाए और इन की खिदमात को कुबूल फरमाए ।

पेशे नज़र किताब ऐसे ही इस्लाम कुबूल करने वाले नवमुस्लिम भाईयो की कहानी है जो खुद इन की ही ज़बानी इंटरव्यू के तौर पर मुरत्तब(प्रकाशित)की गई है । मौलाना मुफ्ती रौशन शाह कासमी`

अकोला(महाराष्ट्र) इस किताब के मुरत्तिब(प्रकाशक) है किताब अपने मज़ामीन की असर अंगेज़ी और दीन की खातिर जान व माल,इज़्ज़त व आबरु की कुरबानी देने वालो के इबरत अंगेज़ हालात की वजह से इस दर्जे तासीर और कशिश अपने अंदर रखती है कि मुख्तसर से अरसे मे इस के मुतअद्दीद एडीशन (हिंदुस्तान व बैरुने हिंद) से शाए हुए जब कि हाल ही मे इस का जदीद एडीशन कुतुब खाना इशाअतुल उलूम मुहल्ला मुबारकशाह सहारनपूर से छपकर आ चुका है किताब चार जिल्दो पर मुश्तमिल है(१) और इस मे ८२ बिरादराने वतन के कुबुलियते इस्लाम की तारीख और हैरत अंगेज़ दास्तान आ गई है । खुदा करे यह सिलसिला बढता रहे और इस मुबारक कोशिशो के फल की मज़ीद तारीख और दास्तान उम्मते मुस्लिमा को पढने बल्कि नसीहत और असर पज़ीरी के लिए मिलती रहें ।

(माहनामा 'यादगारे शेख' मोहल्ला मुफ्ती सहारनपूर जून जुलाई २०१०)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आगाज़े सुख़न
आईये अहदे वफ़ा ताज़ा करें

ज़मीन व आसमान के मालिक जिसने इस पूरी कायनात(सृष्टी) को अपने हुक्म से पैदा फर्माया।उसको खूबसूरती अता की और अपनी अनगिनत मखलुकात (निर्मीती)से आबाद किया ।उसने इस पूरी कायनात को अपने तआर्रुफ, पहचान और शनाख्त का ज़रिया बना दिया।उसीने इसकी हुक्मरानी(सत्ता) पासबानी (रखवाली) और निगरानी(देखरेख) के बतौर इंसान को अशरफुल मखलूकात (सर्वश्रेष्ठ निर्मिती)बनाकर इस आलम मे अपना नायब(उत्तराधिकारी) बनाया " اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً "(तर्जुमा मै ज़मीन मे अपना खलीफा बनाना चाहता हुँ) और हज़रते इंसान की रहनुमाई(मार्गदर्शन),रहबरी और रुश्दो हिदायत की राह(सन्मार्ग) पर उसको लाने के लिये नबीयों(प्रेषितों) का एक तवील(लंबा) सिलसिला ज़ारी फर्माया जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से शुरु होकर जनाबे मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम पर आकर मुन्तही(खत्म)हुवा ताकि यह इंसान वह अहदे अलस्तु(आत्मालोक का वचन) भूल ना जायें जो उसने आलमे बाला(परलोक) मे अपने परवरदिगार से किया था।अल्लाह के ये बर्गुज़ीदा (श्रेष्ठ)बंदे अपने अपने दौर मे कौमों,कबीलों और खानदानो मे भेजे गये और दीन का ईमान का अख्लाक(सुस्वभाव) का इंसानियत का सबक भटके हुये इंसानों को देते रहे और अखीर मे नबी आखिरुज़्ज़मॉ(अंतिम प्रेषित) हज़रत मुहम्मद मुस्तफा स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम इस कारज़ारे आलम(कार्यभूमि) मे इस सिलसिले की आखरी कडी बनकर तशरीफ लाये और दुनिया के बातिल ऐवानों(झूटे महलों) मे तौहिदे खुदावंदी(अद्वैत) की एक पुरअसर(परिणामकारक) आवाज़ से लर्ज़ा पैदा कर दिया और इंसान को इंसानियत का वह सबक जो उसने भुला दिया था पूरी कूव्वत ताकत हिम्मत और कुर्बानी के साथ याद दिलाया।आप स्वल्लल्लाहुअलैही व सल्लम की यह आवाज़ कि-ऐ लोगों لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ लाईलाह इल्लल्लाह कह दो कामियाब हो जाओगे। मक्का की एक बंजर पहाड की चोटी से बुलंद हुई और पूरे आलम मे फैल गयी।आप स्वल्लल्लाहु अलैही व

सल्लम अपने साथ खुदा की तरफ से ऐसा दस्तुरुल अमल(कर्मयुक्त संविधान) और कानुन व शरीयत लेकर आये जो इंसानी फितरत(स्वभाव) का हमराज़ और दमसाज़(हृदयस्पर्शी)था।ज़मीन व आसमान ने कभी इतने मुअस्सिर(परिणामकारक) और हमागीर(विश्वव्यापी) कानुन का तजुर्बा(अनुभव) नही किया था। लिहाज़ा बातिल के सारे निज़ाम(व्यवस्थाएं) उसके सामने फेल हो गये और कुरआनी तालीमात(शिक्षाएँ) उसकी आयात (वाक्यों)और निशानात(मुद्दों) के ज़रिये इंसान ने इंसानियत का ऐसा सवेरा देखा जिसमे सारी तारिकियाँ काफूर(अंधेरे खत्म) हो गई هُوَ الَّذِىٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ (سورہ الصف آیت:۹)
(तर्जुमा : वही है जिसने हिदायत और सच्चा दीन देकर अपने रसूल स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम को भेजा ताकि दीन के तमाम बनावटी शक्लों पर इस सच्चे दीन को ग़ालिब कर दे चाहे मुशरिक लोग कितनाही बुरा मानते रह जाएँ) यह लाज़वाल अबदी हिदायत(अनंत सन्मार्ग) का सरचष्मा(स्त्रोत) वह कुरआन मजीद है जिसके बारे मे खुद उसके भेजने वाले ने यह कहा, यह एक पैगाम है तमाम इंसानों के लियें और यह भेजा गया इसलिए की उनको उसके ज़रिये खबरदार किया जाये और वे जान लें की हकीकत मे खुदा बस एक ही है।

मुहम्मद रसुलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम को अल्लाह तआला ने सिर्फ रहबरे इंसानियत(मानवों के मार्गदर्शक) ही बनाकर नही भेजा बल्कि उनको शराफत और ज़िंदगी के लिये सलाह व फलाह(प्रगती व उन्नती) और सिफाते हसना(सदगुणों) का नमुना भी बनाकर भेजा। मज़ीद यह की इंसानियत को राहे रास्त(सही रास्ता) और मेयारे आला(उंचाई)पर लाने के लिए ऐसी काविश(कोशिश) के साथ भेजा जिस से इंसानों को जानवरों जैसी बेमहार(बेलगाम) ज़िंदगी से निकाल कर खैर व कामियाबी की ज़िंदगी मे दाखिल होने की राह मिली।रब्बुल आलमीन(विश्वों का पालनहार)ने इसी बुनियाद पर उनको रहमतुल्लिल आलमीन(विश्वों का दयालु) की सिफत अता फरमाई। वह उम्मत जिस की तरफ आप भेजे गये उसको भी दअ्वत इलल्लाह और कलमा ए तौहीद को आम करने के लिए ऐसे मुकल्लफ(योग्य) बनाया गया जैसा की जिसके करने पर ही उसकी खैर व फलाह और कामियाबी व कामरानी को मुकद्दर किया गया, कुन्तुम खैर उम्मतिन उखरिजत लिन्नास كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ लिहाज़ा

तारिख इस बात की गवाह है की उम्मत ने जब जब दावत की ज़िम्मेदारी को पूरा किया वह कामियाब रही और जब जब इस फरीज़े(कर्तव्य) से गाफिल हुई उम्मत ज़िल्लत व रुसवाई(अपमान) से दोचार हुई । इंफिरादी(वैयक्तिक) एतबार से हो या इज्तिमाई(सामुहिक) एतबार से हो जब जब प्यासी क़ौमों तक हक़ व सदाक़त (सच्चाई)की बात और कलमए तौहीद की दअ्वत पेश की गई ईमान व इस्लाम की बारिशें बरसीं । नसीमे हिदायत के झोंके चले और उसके दामन मे सुलगती, सिसकती, तडपती, कराहती इंसानियत ने राहत व आराम चैन व सुकून और इत्मिनान की साँस ली। आज के इस पुर आशोब(अंधेरे) दौर मे भी अलहम्दुलिल्लाह जो लोग इस फर्ज़े मंसबी को अदा करने के सरफरोशाना जद्दोजहद(सर उँचाकरके कोशिश) कर रहे है खुदावंदे आलम अपने फज़्ल और उनकी मेहनतो से भटकते इंसानो को ज़ादहे हक़ व सिराते मुस्तक़ीम(सन्मार्ग)से हमकिनार(लाभान्वित) कर रहा है। लिहाज़ा जरुरी है कि हम भी रसुलुल्लाह स्वल्ललललाहु अलैही व सल्लम की तडप, कुढन, सोच व इज्तिराब(बेचैनी) और उनका दर्द लेकर पूरी इंसानियत को मख्लूक परस्ती(निर्मितीपूजन) की लानत से निकालकर खालिक(निर्माता) से जोडने और कुफ्र और शिर्क की भूल भुलय्यों से निकाल कर तौहीद(अद्वैत) की शाहेराह(राज मार्ग) पर लाने की कोशिश करें ।

इसी के साथ यह मुआज़ना(तुलना) भी करें की इस फर्ज़े मंसबी(पद कर्तव्य) को अदा करने मे हम कहाँ तक अपनी ज़िम्मेदारीयों को निभा रहे हैं और जो वाक़िआत आप स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम की जिंदगी मे पेश आए हमे उनसे कहाँ तक मुनासबत(लगाव) है। कहीं ऐसा तो नही कि हमने इस ज़िम्मेदारी को पसेपुश्त(पीठपीछे) डाल दिया। कहीं ऐसा तो नही की धक्के खा खा कर जिस पैगाम को रसुलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने हम तक पहुँचाया था उसे हम धक्के दे दे कर अपने घरों से निकाल रहे हैं। क्या किसी को कुफ्र और शिर्क की हालत मे देखकर हमारा दिल बेचैन होता है ? क्या किसी को कुफ्र की हालत मे दुनियासे रुख्सत होते(छोडते)हुए देखकर हमारी आँखे नम होती है?क्या ताईफ के वाकिअे की कोई झलक हमारी ज़िंदगी मे पेश आयी है?क्या ख्वाब मे भी दअ्वत के लिए किसी घाटी में नज़रबंदी की सआदत हमे नसीब हुई है?फिर हम कैसे आप अलैहिस्सलाम के उम्मती है ? उम्मत के कंधों पर डाली गई इन

आफाकी(क्षितिजी)ज़िम्मेदारियों का तकाज़ा(मांग) है कि हम रसुलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के उस्व:(आदर्श) पर अमल पैरा होते हुए अपने फर्ज़े मंसबी को समझें और एक लम्हा ज़ाया किये बगैर दअ्वत अलल ईमान के लिए मुतहर्रिक(कार्यान्वित) हो जाएँ और अल्लाह तआला से किये गए अहद को वफा करने की कोशिश मे हमातन मसरुफ(हमेशा मग्न) हो जाएँ और उम्मत की ज़बूँ हाली(बुरा हाल), पस्ती(गिरावट) व ज़िल्लत(अपमान) का इलाज इसी नुस्खा ए शिफा(सत रखनेवाली दवा) से करें जिसे रसुल्लल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने उम्मत के हर फर्द के हाथों मे दिया था। अल्लाह हम सबको अपना फर्ज़े मंसबी अदा करने की तौफीक़ दे।....... आमीन सुम्म आमीन

मुहम्मद रौशन शाह कासमी

Maktab Ashraf

1 आश्रम मे लडकी की शर्म और इस्लाम

मेरे हज़रत जी (मौलाना मुहम्मद कलीम सिद्दीकी) की तकरीर मैंने सुनी कि अल्लाह ने हिदायत उतार दी, हर कच्चे पक्के घर में इस्लाम को दाखिल करने का फैसला हो चुका है अब अगर मुसलमानों ने अपनी ज़िम्मेदारी ना निभाई तो अल्लाह अपने बंदों की हिदायत के लिए मुसलमानों के मोहताज नहीं हैं। हज़रत फर्माते हैं कि ऋषिकेश के गढ से मुझे हिदायत (सत्य मार्ग)मिलना उस की तरफ से मुसलमानों को तंबीह है कि तुम्हें अपने दाइयाना मनसब पर खडा हो जाना चाहिए।

सिदरा ज़ातुलफौज़ैन

सिदरह ज़ातुलफौज़ैन : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
आमेना : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सवाल : बहन आमेना। अल्लाह तआला की हिदायत का करिश्मा है कि अल्लाह ने आप को बुतपरस्ती के गढ में अपनी शाने हिदायत दिखाकर हिदायत अता फर्माई,आप से मुलाकात का बहुत इश्तियाक (शौक)था,आप को देख कर और मिल कर बहुत खुशी हुई,अबी आज कल अपनी तकरीरों में आप का बहुत ज़िक्र करते हैं ?
जवाब:- (रोते हुए) सिदरा बहन। बिला शुबह मेरे करीम रब कैसे करीम हैं,कि मुझे किस तरह दर दर की पूजा की ज़िल्लत से निकाल कर अपने दर पर लगा लिया ।बस आप दुआ कीजिए कि मरते दम तक अल्लाह हमें ईमान पर रखे और मुझ से राजी रहे।

आश्रम को इन साधुओं के साथ आग लगा देनी चाहिए बल्कि आप को और हम को सब को सजा के तौर पर जल जाना चाहिए कि आश्रम के ज़िम्मेदार (प्रमुख)आप हैं । उस की वजह से मुझे आश्रम से नफरत हो गई और पूजा के लिए जाना बंद कर दिया । एक रात मैं सोई तो ख्वाब देखा कि मैं आश्रम में पूजा के लिए गई तो मेरे पीछे दो साधु लग गए । वह मुझे पकड कर अपने कमरे में ले जाने लगे । मैं किसी तरह छूटकर भागी । वह भी मेरे पीछे दौडे । मैं दौडती रही,बीसों मील तक वह भी मेरे पीछे मुझे पकडने के लिए दौडते रहे,उन में से एक जो महाराज कहलाते हैं पचास साल की उम्र के बावजूद मेरे पीछे दौड रहे हैं । मैं थक कर हलकान हो रही हूँ और ख्याल आया कि बस अब मेरी हिम्मत जवाब दे चुकी है। यह मुझे जरुर पकड लेंगे और मेरी इज्ज़त जाएगी । ऐन उसी वक्त मैं ने देखा कि एक छोटी सी मस्जिद के दरवाज़े पर एक मौलाना चश्मा और टोपी लगाए खडे हैं और बोले बेटा रुको । इधर आजाओ । यहाँ मस्जिद के अंदर आजाओ । मैं जान बचाकर मस्जिद के अंदर दाखिल हो गई फौरन उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया और बडी मुहब्बत से बोले बेटा अब यह तुम्हारा घर है । यहाँ तुम्हें कोई बुरी आँख से भी नहीं देख सकता । मेरी आँख खुल गई । मेरी अजीब सी कैफियत थी। रात के तीन बज रहे थे । उस के बाद सुबह तक मेरी आँख नहीं लगी । मुझ पर उस ख्वाब का ऐसा असर था जैसे यह वाकिआ मेरे साथ जागते में हुआ हो । अजीब बेताबी सी मुझ पर सवार थी । दिन में दस बजे मेरे दिल में ख्याल आया कि इन पंडितों से मेरी इज्जत बचने वाली नहीं । मुझे मौलवियों को तलाश करना चाहिए । शायद इस्लाम में मेरी इज्जत बचेगी । मैं ने अपने आप को समझाया कि यह सपना (ख्वाब) था कोई हकीकत तो नहीं थी । मगर जैसे अंदर से मुझे कोई झंझोड रहा था । यह ख्वाब था मगर सच्चाइयों का सच्चा,इस कशमकश में मेरे दिल में ख्याल आया कि मैं अपने मोबाइल से ऐसे ही फोन मिलाऊँ ।

अगर वह फोन मुसलमान के फोन पर मिल गया तो मैं समझूँगी कि इस्लाम में मेरी इज़्ज़त बचेगी मुझे मुसलमान हो जाना चाहिए और अगर फोन किसी हिंदू का मिला तो मैं समझूँगी कि यह ख्वाब है । मैं ने वैसे ही मन मन में अपने मालिक से प्रार्थना (दुआ) की, मेरे मालिक । मेरे दूध का दूध, पानी का पानी कर दे । यह दुआ करके मैं ने फोन मिलाया । घंटी बजी तो मैं ने पूछा कि आप कौन साहब बोल रहे हैं ? उन्होंने कहा, मुजफ्फरनगर के फुलाँ गाँव से बोल रहा हूँ । मैं ने कहा, मुझे मुसलमान होना है । वह बोले, मुसलमान क्यों होना चाहती हो ? मैं ने कहा इस्लाम सच्चा धर्म है और इस्लाम ही में एक लडकी की इज़्ज़त बच सकती है । वह बोले, तुम कहाँ से बोल रही हो ? मैं ने कहा ऋषिकेश से । उन्होंने बताया कि मुसलमान होने के लिए आप को फुलत हमारे हज़रत के पास जाना होगा उन का नाम मौलाना मुहम्मद कलीम साहब सिद्दीकी है । फुलत जिला मुज़फ्फरनगर में खतौली के पास गाँव है । मैं उन का फोन नंबर आप को दे दूँगा । मैं ने कहा दे दीजिए । उन्होंने कहा कि अभी मेरे पास नहीं है । एक घंटा बाद तुम फोन कर लेना मैं तलाश करलूँगा । मैं ने उन से कहा कि मैं अगर इस्लाम कुबूल करूँगी तो मेरे घरवाले तो मुझे रख नहीं सकते मैं फिर कहाँ रहूँगी? उन्होंने कहा, मेरा एक बेटा तो एक्सीडेंट में इंतकाल कर गया है । मेरा एक लडका है जिस की उम्र अभी 15 साल है अगर तू मुसलमान हो गई तो मैं तुम्हारी उस से शादी कर दूँगा और तुम मेरे घर में रहना । मैं ने कहा कि वअदा याद रखना । उन्होंने कहा कि याद रहेगा । मुझे बेचैनी थी । मुझे एक घंटा इंतेजार करना मुश्किल हो गया । पचास मिनिट के बाद मैं ने फोन किया मगर उन को मौलाना का फोन नंबर ना मिल सका । उस के बाद घंटा आध घंटा बाद उन को फोन करती रही और मअज़ेरत (खेद) भी करती रही कि आप को परेशान कर दिया मगर मुझ से बगैर इस्लाम के रहा नहीं जाता, उन्होंने कहा कि सुबह को मैं खुद तुम्हें फोन करुँगा बडी मुश्किल से सुबह

हुई । नौ बजे तक इंतेजार करती रही, नौ बजे के बाद मैं ने फिर फोन किया फोन अब भी ना मिला था । उन्हों ने बताया कि मैं ने आदमी भेजा है बडोली, वह वहाँ से फोन नंबर ले आएगा, साढे ग्यारह बजे फोन मिला, मैं ने फोन नंबर ले कर मौलाना साहब को फोन किया, फोन की घंटी बजी, मौलाना साहब ने फोन उठाते ही कहा, अस्सलामुअलैकुम, मैं ने कहा, जी सलाम, क्या आप मौलाना कलीम ही बोल रहे हैं ? उन्होंने कहा, जी कलीम बोल रहा हूँ। मैं ने कहा कि मुझे मुसलमान होना है । मौलाना साहब ने कहा आप कहाँ से बोल रही हैं ? मैं ने कहा, ऋषिकेश से, मौलाना ने कहा, फोन पर ही आप कलमा पढ लीजिए । मैं ने कहा, क्या फोन पर भी मुसलमान हो सकते हैं ? उन्होंने कहा कि हाँ क्यों नहीं हो सकते ? बस अपने मालिक के लिए जो दिलों के भेद जानने वाला है उस को हाज़िर व नाज़िर (उपस्थित देखने वाला)जान कर सच्चे दिल से कलमा पढ लीजिए कि अब मैं मुसलमान बन कर कुरआन और उस के सच्चे नबी स्वल्लाहुअलैहि व सल्लम के बताए हुए तरीके के मुताबिक जिंदगी गुजारुँगी । मैं ने कहा, पढाइये । मौलाना साहब ने कलमा पढाया और कहा कि अब हिंदी में इस का अर्थ (तर्जुमा) भी कह लीजिए । अभी बात पूरी नहीं हुई थी कि मेरे फोन में पैसे खत्म हो गए और बात कट गई । मैं जल्दी से बाजार गई और फोन में पैसे डलवाए मगर उस के बाद मौलाना साहब का फोन नहीं मिल सका, मैं बहुत तिलमिलाती रही । और अपने को कोसती रही कि अंजु । तेरे मन में खोट है तभी तो तेरा ईमान अधूरा रहा, मैं अपने मालिक से दुआ करती रही, मेरे सच्चे मालिक । आप ने कहाँ अंधेरे में मेरे लिए ईमान का नूर निकाला, मैं तो गंदी हूँ । मैं ईमान के लायक कहाँ हूँ । मगर आप तो दाता हैं जिस को चाहें भीख दे सकते हैं । तीसरे रोज मैं ने आँख बंद कर के रो रो कर दुआ की और फोन मिलाया तो फोन मिल गया । मैं बहुत खुश हुई, मैं ने मौलाना साहब से कहा मेरी गंदी आत्मा

की वजह से मेरा ईमान अधूरा रह गया था, फोन में पैसे खत्म हो गए थे उस के बाद लगातार आप को फोन कररही हूँ मगर मिलता नहीं । मौलाना साहब ने बड़े प्यार से कहा, बेटा आप का ईमान बिल्कुल पूरा हो गया था, मैं खुद सोच रहा था कि मैं इधर से फोन मिलाऊँ मगर उस वक्त नोएडा में एक प्रोग्राम में जा रहा था, हमारे साथी एक बात कर रहे थे उस की वजह से फोन ना कर सका, फिर ऐसी मसरुफियत (मग्नता)रही कि फोन बस बराए नाम खोला। मैं ने कहा, फिर भी आप मुझे दोबारा कलमा पढा दीजिए । फोन दोबारा कट गया। मेरा हाल खराब हो गया । मेरी हिचकियाँ बंध गईं । मैं अपने मालिक से फरियाद (याचना)कर रही थी मेरे मालिक । क्या आज भी मेरा ईमान अधूरा रह जाएगा कि अचानक मौलाना का फोन आया, मैं ने खुशी से रिसिव्ह किया । मौलाना ने बताया कि मैं ने फोन काट दिया था कि पता नहीं कि आज भी तुम्हारे पास फोन में पैसे होंगे कि नहीं । इसलिए अपनी तरफ से फोन करुँ । कलमा पढ लो, मैं ने कलमा पढा, हिंदी में अहद किया और फिर कुफ्र व शिर्क और सब गुनाहों से मुझे तौबा कराई और अल्लाह और उस के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताबेदारी (गुलामी)का अहद कराया । मौलाना साहब ने मुझ से मालूम किया कि यह फोन नंबर आप को किस ने दिया है । मैं ने कहा मुज़फ्फरनगर के फुलाँ गाँव के महमूद साहब ने । मौलाना साहब ने पूछा कि अब तुम क्या करोगी ? मैं ने कहा कि मैं ने सब सोच लिया है और महमूद साहब ने वाअदा किया है कि वह सब मेरी ज़िम्मेदारी संभालेंगे । मौलाना साहब ने मुझे दुआएँ दीं और कहा कोई मुश्किल हो तो जब चाहें मुझे फोन कर लेना ।

सवाल : उस के बाद आप ने क्या किया ?

जवाब : मैंने महमूद साहब को जो अब मेरे अब्बा हैं, फोन किया कि मैं ने इस्लाम कुबूल कर लिया है । उन्होंने मालूम किया कैसे ? मैं ने कहा हज़रत साहब ने मुझे फोन पर कलमा पढवाया और बताया कि फोन पर और सामने कलमा पढने

में कोई फर्क नहीं है । मैं ने अब्बा जी से कहा कि अब मैं ऋषिकेश में नहीं रह सकती । अब्बाजी ने मुझ से कहा,बेटी ना तुम ने हमें देखा,न हम ने तुम्हें देखा,तुम कौन हो ? तुम्हारे बाप क्या करते हैं ? मैं ने कहा,मेरे पिताजी का बहुत बडा आश्रम है और मैं एम.एस.सी कर रही हूँ । अब्बाजी ने कहा कि बेटी तुम ऐसे बडे घराने की लडकी हो,मैं तो बिल्कुल गरीब आदमी हूँ । मैं ने कहा,कि मैं आप के यहाँ आकर मजदूरी कर के गुज़ारा कर लूँगी, उन्होंने कहा,मेरा लडका पंद्रह साल का है,वह अभी कुछ नहीं करता,मैं ने कहा मैं उसे पाल कर परवरिश (पालन पोषण)कर लूँगी । उन्होंने कहा कि तुम गोश्त खाती हो ? मैं ने कहा गोश्त से मुझे घबराहट होती है मगर मैं गोश्त खाने लगूँगी । उन्होंने कहा कि मेरे मुर्गे की दुकान है । 100 रुपये कमाता हूँ और मैं कसाई हूँ,तुम कैसे हमारे यहाँ रहोगी ? मै ने कहा कि मैं भी कसाई बन जाऊँगी । उन्होंने कहा, पूरी ज़िंदगी गुजारना है दो चार दिन क़ी बात नहीं है । मै ने कहा वअदा तोडना इस्लाम में काअबा को ढा देना है । उन्होंने कहा कि हम हज़रत से मश्वरा करके फिर तुम्हें बताएँगे ।

सवाल : उस के बाद क्या हुआ ?

जवाब : अब्बाजी ने हज़रत साहब को फोन किया कि बहुत ज़रुरी मिलना है । मौलाना साहब ने कहा कि लगातार सफर में हूँ। फुलत अभी दो हफ्ता आना नहीं होगा,उन्होंने कहा कि बंबई भी होंगे तो मैं आ जाऊँगा । मुझे बहुत ज़रुरी मिलना है । हज़रत साहब ने कहा आप के करीब काँधला के करीब एक गाँव रिठोडा है वहाँ आजाना । अब्बाजी वहाँ पहुँचे । मौलाना साहब को पूरा माज़रा बताया,हज़रत साहब ने उन से कहा,कि आप बडे खुशकिस्मत हैं आप उस लडकी को ले आइये और आप को पूरे घराने को जान देनी पडे तो ऐसी सच्ची मोमिना के ईमान की हिफाज़त करनी चाहिए और उन से कहा कि मेरा नाम भी आमेना रखना और शादी की कानूनी कारवाई और वकीलों के पते वगैरा दिए । मेरे लिए शिर्क के

माहौल में मिनट महिने से लग रहे थे । मुझ से रहा नहीं गया और दो रोज बाद मैं खुद अकेली पता मालूम करके अब्बाजी के घर पहुँच गई । दो रोज़ मैं वहाँ रही, उस के बाद मुझे लेकर मेरठ गए और रास्ते में फुलत हज़रत साहब से मिल कर जाना तय हुआ, मेरी खुशकिस्मती थी कि हज़रत साहब फुलत में थे । सिदरा बहन । मैं बयान नहीं कर सकती कि हज़रत साहब को देख कर मेरा क्या हाल हुआ, मैं हज़रत साहब से बच्चों की तरह चिमट गई । मैंने हज़रत साहब को देखा, ख्वाब में जिन साहब ने मेरी उन साधुओं से जान बचाई थी वह चश्मा और टोपी लगाए मौलाना साहब, मौलाना कलीम ही थे । मैं बेइख्तियार बोल उठी । आप ही थे, आप ही थे । मैं उन्हें देख कर ऐसी जज़्बाती (भावुक)हो गई, यह भी ख्याल नहीं रहा कि पहली बार एक अंजाने मर्द से मैं जवानी में मिल रही हूँ। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई बच्ची अपनी माँ से मिल रही हो । मेरठ में निकाह और कुबूले ईमान की कारवाई पूरी कराके हम गाँव पहुँचे । एक महीना में मैं ने नमाज़ याद की । रोज़ाना फज़ाइले अअ्माल पढती । घर के लोग मुझ से बहुत मुहब्बत करते । गाँव की औरतें मेरे साथ रहतीं ।

हमारे अब्बाजी के एक रिश्तेदार की हमारे अब्बाजी से बहुत लढाई है उन्हें मालूम हो गया । उन्होंने थाने में शिकायत कर दी कि यह लोग ऋषिकेश से एक लडकी को अगवा कर लाए हैं । थाने ने ऋषिकेश राबता किया । वहाँ पर एफ.आइ.आर लिखी हुई थी । ऋषिकेश पुलिस आ गई और मुकामी पुलिस के साथ दस बजे मुझे और मेरे अब्बाजी को उठा कर ले गई । जीप में मैं और अब्बाजी बैठे थे मैं ने अब्बाजी से कहा, मैं ड्रायव्हर को आवाज देती हूँ जैसे यह गाडी हल्की हो आप फौरन कूद जाना । अब्बाजी ने कहा तुम्हारा क्या होगा ? मैं ने कहा अल्लाह पर भरोसा रखिए मेरे अल्लाह मुझे मेरे घर भेज देंगे । मैंने ड्रायव्हर को आवाज दी, ड्रायव्हर साहब, ज़रा रुकिए । गाडी जरा साठ किलो

मीटर पर आई तो अब्बाजी कूद गए गिरे और चोट लगी। पीछे से गाँव वाले पथराव कर रहे थे इसलिए पुलिस नहीं रुकी और भाग गई।

सवाल : उस के बाद क्या हुआ ?

जवाब : उस के बाद मेरे अल्लाह ने मेरा ईमान बनाया । फजाइले आअ्माल के हिकायाते सहाबा के किस्से मैं ने पढ लिए थे । उन का मजा लिया । मेरे घर वालों ने मुझे बहुत सजाएँ दीं और लेडीज पुलिस ने मुझे बुरी अज़िय्यतें(तक्लीफें)दीं और मारा। मैं ने हर बार उन से कह दिया । मेरे जिस्म की बोटी बोटी कर लो तब भी जो कलमा और ईमान रुएँ रुएँ और खून के कतरे कतरे में बस गया है वह निकल नहीं सकता । मेरे जिस्म से खून निकलता देख कर देखने वाले रोने लगते पीटने वाले मेरे हाल को देख कर रोने लगते मगर मुझे तकलीफ के बजाए मजा आता । मुझे लगता जिस अल्लाह की मुहब्बत में मैं सताई जा रही हूँ वह मुझे देख रहा है । वह कितना खुश हो रहा होगा । मेरी माँ ने दो दफा मेरा गला घोंटा । मेरे बडे भाई मुझ पर बार बार चिढते । बस एक मेरे रिश्ते की खाला थीं जिन्हें अल्लाह ने नर्म कर दिया था । बार बार मुझे छुडातीं । मेरी शादी करने का प्रोग्राम बनाया गया । मैं ने साफ साफ कह दिया कि शादी मेरी हो चुकी है । अब जिस की मैं हूँ उस के अलावा मुझे कोई छू भी नहीं सकता । यह मुसलमान की जान है कोई आप के आश्रम के अय्याशों की चाहत नहीं । मैं यहाँ शिर्क में हरगिज ज़िंदा नहीं रह सकती या मुझे मार दो या मुझे जाने दो । अगर मुझे इस घर में रखना चाहते हो तो बस एक ही रास्ता है कि घर वाले मुसलमान हो जाएँ । मार मार कर लोग थक गए और हार गए । कई बार मुझे ज़हर देने का प्रोग्राम बनाया । एक दो बार मेरे अब्बाजी को भी हार कर फोन किया कि इस लडकी को ले जाओ । वह आने की तैयारी करते मगर फिर उन को मना कर देते । एक रोज़ मेरे पिताजी (वालिदसाहब)ने अब्बाजी को फोन किया कि हम इस लडकी को रुखसत तो कर देते मगर किस तरह

करें कि आप मुसलमान और हम हिंदु हैं । अब्बाजी ने कहा कि इस का इलाज तो बहुत आसान है कि आप मुसलमान हो जाएँ और अगर आप मुसलमान हो जाएँगे और आप लडकी को रुख्सत ना करना चाहेंगे तो मैं अपना इकलौता लडका रुख्सत करके आप को दे दूँगा । वह चुप हो गए ।

एक रोज़ मेरे घरवाले मुझे मार रहे थे । मेरी खाला ने मुझे छुडाया । जब सब लोग चले गए तो मेरी खाला ने कहा, अंजु तू जिस मालिक पर ईमान लाई है अगर वह तुझे चाहता है तो उस से कहती क्यों नहीं ? कि मुझे यहाँ से निकाल ले । खाला यह कह कर चली गईं मैंने वुज़ू किया । कमरा बंद किया और दो रकअत सलातुलहाजत (जरुरत की नमाज़)पढी और खूब अपने रब से फरियाद की । मेरे अल्लाह । मुझे ना कोई शिकायत है और ना कोई शिकवा है । मेरे लिए आप का यह करम क्या कम है कि मुझ गंदी को शिर्क की नगरी में ईमान नसीब किया और मुझ गंदी को अपने नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम के मज़लूम सहाबा की तरह मार खाना नसीब हुआ । मेरे अल्लाह । आप ने मेरे लिए सारी तक्लीफों को मसर्रत (खुशी)की चीज बना दिया । मैं कहाँ और ईमान कहाँ । मगर मेरे अल्लाह मेरी खाला यह सोचेंगी कि इस का खुदा इसे नहीं चाहता या वह कुछ नहीं कर सकता । मेरे मौला । आप मुझे मेरे शौहर के घर उन के ज़रिये पहुँचादें ।

सवाल : फिर क्या हुआ ?

जवाब : मेरे पिताजी (वालिदसाहब) ने आज़िज आकर आश्रम के लोगों से मश्वरा किया,सब ने मश्वरा दिया कि लडकी अधर्म हो गई है अब धरम में नहीं आ सकती । जितना इस को मारा जाएगा पूरे ऋषिकेश में रो रो होगी इसलिए अच्छा है कि इस को इस के शौहर के घर खामोशी से पहुँचा दिया जाए । मेरे पिताजी ने मेरे अब्बाजी को फोन किया । आप हम से डर रहे हो,हम आप से डर रहे हैं । हम दोनों एक दरमियान की जगह तय करें वहाँ हम अंजू को ले कर आ

जाएँ और आप वहाँ आ जाएँ। सहारनपूर तय हो गया। अब्बाजी ने अपने जानने वाले का पता दिया। अगले रोज सुबह को मेरे पिताजी (वालिदसाहब) और खाला मुझे लेकर सहारनपूर आ गए। हमारे अब्बाजी भी आ गए और खुशी खुशी हम लोग अपने शौहर के यहाँ आ गए। मैं ने अपनी खाला से कहा। खाला। आप ने देखा, इधर मैं ने अल्लाह से कहा, उधर अल्लाह ने मेरी सुनी। खुद मेरे पिताजी को मजबूर किया कि मुझे पहुँचा दें। मेरी खाला, क्या ऐसे अल्लाह पर ईमान के बगैर जीना अच्छा है ? मेरी खाला बहुत हैरत में आ गईं मैं ने सहारनपूर में उन को ईमान कुबूल करने के लिए कहा वह तैयार हो गईं। चलते चलते मैं ने उन को कलमा पढवाया।

सवाल : गाँव में पहुँच कर क्या हुआ ?

जवाब : गाँव वालों को खबर हो गई थी। पूरा गाँव इस्तेक्बाल (स्वागत) के लिए बाहर आ गया। पूरे गाँव में ईद हो गई। और अब मैं खुशी खुशी रह रही हूँ। मैं मिलने के लिए एक प्रोग्राम में हजरत साहब के यहाँ आई, हज़रत साहब ने मुझे पूरे गाँव की औरतों में काम के लिए कहा, अलहम्दुलिल्लाह बहुत सी मुसलमान औरतें जो पहले नमाज़ रोज़े और दीन से दूर थीं वह नमाज़ की पाबंद हो गईं। मेरे अल्लाह का करम है पाँच नमाज़ के अलावा तहज्जुद और अकसर नफली (फायदे वाली) नमाज़ें पढने लगीं। कोशिश करती हूँ नफली रोजे भी शुरु करुँ। कुरआन शरीफ पढ रही हूँ। मेरे घर वाले मुझ से बहुत मुहब्बत करते हैं।

सवाल : गोश्त आप खाने लगी हैं ?

जवाब : मेरे अल्लाह ने गोश्त हलाल किया है । मेरे अल्लाह ने खानों का सरदार गोश्त को रखा है । अब गोश्त मेरे लिए मरगूब गिजा (पसंद का पदार्थ)है इस्लाम तो कहते ही इस को हैं कि अपने अल्लाह और उस के रसूल स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम की पसंद को अपनी पसंद बना लें । मेरे अल्लाह का करम है मुझे यह मालूम हो जाए कि मेरे नबी स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह पसंद है बस अब वह मुझे पसंद हो जाता है और दिल से पसंद हो जाता है । मुझे पहले मीठा अच्छा नहीं लगता था अपने स्कूल की लडकियों के साथ मिल कर असल में कि मेरा जाएका (स्वाद)बिगड गया था कि मैं मीठा नहीं खाती थी मगर मुझे मालूम हुआ कि मेरे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम मीठे को पसंद करते थे । बस मीठा पसंद हो गया और अब मुझे यह महसूस होता है कि मुझे पहले भी मीठा पसंद था।

सवाल : आप के घर वालों से आप का राबता (संपर्क) है ?

जवाब : मेरे वालिद और बहन के फोन आते रहते हैं उन्होंने आने का वाअदा किया है ।

सवाल : उन को आप ने दअ्वत नहीं दी ?

जवाब : अभी उन के लिए दुआ करनी शुरु की है । सच्ची बात यह है कि दुआ भी की नहीं बस इरादा है एक दुआ जिस को दुआ कहते हैं हो जाए तो फिर वह ईमान में ज़रुर आ जाएँगे । असल में दुआ भी अल्लाह ही कराते हैं । बस

अल्लाह वह दुआ करवा दें । इस का इंतेज़ार कर रही हूँ ।

सवाल : आमेना बहन । अरमुगान के कारिईन के लिए कुछ पैगाम आप देंगी ?

जवाब : मेरे हज़रत जी की तकरीर मैं ने सुनी कि अल्लाह ने हिदायत उतार दी है। हर कच्चे पक्के घर में इस्लाम को दाखिल करने का फैसला हो चुका है । अब अगर मुसलमानों ने अपनी ज़िम्मेदारी ना निभाई तो अल्लाह अपने बंदों की हिदायत के लिए मुसलमानों के मोहताज नहीं हैं । हज़रत फरमाते हैं कि ऋषिकेश के गढ से मुझे हिदायत मिलना इस की तरफ से मुसलमानों को वारनिंग है । इस से पहले कि दूसरे रास्तों से हिदायत का काम लिया जाए मुसलमानों को अपने दाइयाना (निमंत्रक)मनसब पर खडा हो जाना चाहिए ।

सवाल : बहुत बहुत शुक्रिया । आप से हालात सुन कर ईमान ताज़ा हो गया ।

जवाब : बहन । बस दुआ कीजिए कि अल्लाह तआला मौत तक ईमान पर साबित व कायम रखे ।

[मुस्तफाद : अज़ माहनामा अरमुगान , जून 2008]

••••••

2 मौत से पहले ईमान मिला जन्नत का नज़ारा देखी

ईमान के साथ एक दिन जीने मे जो मजा है। सैंकडों साल बगैर ईमान रहकर जीने मे वह मजा नहीं यकीन ना आये तो कुछ वक्त के लिए मुसलमान बनकर देखलें । मेरी आँख खुल गई और मेरे दिल मे यह शौक पैदा हुआ की कुछ रोज के लिए मुझे भी मुसलमान होकर देखना चाहिये ।

असमा ज़ातुलफैजैन

अस्मा जातुलफौजैन : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
आएशा : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सवाल : आयेशा दीदी अबकी मर्तबा तो आप बहुत ज़माने के बाद आयीं क्या बात है ?
जवाब:-अस्मा बहन मैं तो तडप रही थी मगर हज़रत साहब से फोन नही मिल पाता। ना जाने किस तरह इस मर्तबा फोन पर बात हुई तो मैने वक्त लिया और आ गई ।
सवालः-असल मे हमारे यहाँ फुलत से एक उर्दु मैग्ज़िन अरमुगान निकलती है अबी ने मुझे हुकम दिया था की आप आने वाली है मै आप से इसके लिए एक इंटरव्यु लूँ।
जवाबः अरमुगान ! हाँ मै अरमुगान को खूब जानती हुँ ।मै तो कुछ कुछ उर्दु पढने लगी हुँ और अरमुगान भी अटक अटक कर पढ लेती हूँ ।
सवालः आप पहले अपना खानदानी परिचय कराएँ ।
जवाबः मै जिला फिरोज़पूर पंजाब के एक कस्बे के सिख घराने मे 3 जून 1965

मे पैदा हुई। मेरे पिताजी श्री फतेह सिंग थे । वह इलाके के पढे लिखे और जमीनदार लोगों मे थे । मेरा पुराना नाम बलविंदर कौर था । मैंने अपने शहर के गुरु गोंविंद सिंग कॉलेज से ग्रॅज्युएशन किया । मेरी शादी जालंधर के एक पढे लिखे खानदान मे हो गयी । मेरे शौहर उस वक्त पुलिस मे एस.ओ.(S.O.) थे। उनकी बहादुरी और अच्छी कारकर्दगी की वजह से प्रमोशन होते रहे और वह D.S.P. बन गये । मेरे दो बेटे और एक बेटी है और तीनों पढ रहे है ।

सवाल: आप अपने कुबूल इस्लाम के बारे मे बताइये ?

जवाब: मेरी एक छोटी बहन आशा कौर थी । उसकी शादी भी मेरे पिताने एक पुलिस थाना इंचार्ज से कर दी थी। वह बहुत खुबसुरत थी । उसका शौहर (पति)उसको बहुत चाहता था । शादी के बाद वह अकसर बीमार रहने लगी । रोज़ रोज़ उसको कुछ ना कुछ होता रहता था इलाज कराते तो कुछ ठीक हो जाती। फिर बीमार हो जाती । उसके शौहर ने उसका देहली मे इलाज कराया और लाखों रुपये खर्च किये मगर कोई खास फायदा नही हुआ। मजबूरन सयानों और झाडफूंक वालों को दिखाया । किसीने बताया की इसपर तो उपरी असर है मगर इलाज कोई नही कर पाता । किसी ने बताया की मालेर कोटला मे एक साहिबा है वह इलाज करती है उनको वहाँ भेजा गया । उन्होने झाडा फूंका । उसको बडी राहत हुई लेकिन उन्होने आशा से कहा ,जब तुम को दो चार रोज की तकलीफ बर्दाश्त नही होती , तो तुम दोजख की हमेशा की तकलीफ को कैसे बर्दाश्त कर सकती हो? इसलिए उस तकलीफ की फिक्र करो और उसका इलाज ये है कि तुम ईमानवाली हो जाओ और अगर तुम मुसलमान हो जाओगी तो मुझे उम्मीद है कि तुम यहाँ भी ठीक हो जाओगी । फिर मै तुम्हे अपने हजरत साहब के पास भेजूँगी वह दुआ करेंगे । मुझे उम्मीद है की अल्लाह तआला तुम्हे ज़रुर ठीक कर देगा। आशा ने उनसे कहा की मै अपने शौहर से मश्वरा करुंगी उन्होने आशा से कहा की ईमान लाना इतना ज़रुरी है कि उसमे शौहर से इजाज़त की भी ज़रुरत नही बल्कि शौहर अगर मुखालिफत (विरोध) भी करे बल्कि वह इस बात पर मारे या छोड दे तो भी इंसान की भलाई इसी मे है की वह ईमान कुबूल कर ले ताकि अपने पैदा करने वाले मालिक को राज़ी करके हमेशा की जन्नत हासिल करले। आशा ने कहा फिर भी घरवालों से मश्वरा करना और सोचना समझना तो ज़रुरी

है । ऊन्होने कहा तुम जल्दी मश्वरा करके आ जाओ। तो मै तुम्हे कलमा पढाकर अपने हज़रत के पास भेज दूंगी । वह वहाँ से भटिन्डा आयी और अपने शौहर से कहा मुझे बहुत आराम मिला है मगर बाजी कहती है कि अगर तु मुसलमान हो जाये तो बिल्कुल ठीक हो जाएगी । उसके शौहर उससे बहुत मुहब्बत करते थे । बोले तु कुछ भी करले और कुछ भी बन जा ,मगर तु ठीक हो जाये मुझे खुशी ही खुशी है उसने फोन पर बाजी से बात की,कि मुझे हज़रत साहब के यहाँ जाने का पता बता दे। मै उनके पास जाकर ही मुसलमान होना चाहती हूँ । उन्होने हज़रत का फोन नंबर दिया 25 मई 2004 को सुबह सुबह आशा ने हज़रत साहब (मौलाना मुहम्मद कलीम साहब) को फोन किया। आशा ने मुझे बताया कि मै ने हज़रत साहब से कहा कि मै इस्लाम लेने के लिए आना चाहती हूँ । मेरे शौहर मेरे बच्चे और घर का कोई बंदा मुसलमान नही होगा। अकेले मै मुसलमान होंगी । मौलाना साहब के मालुम करने पर आशा ने उनको मालेर कोटला को बाजी से जो बातें हुई थी बताई । हज़रत साहब ने आशा से कहा तुमने उनसे ही कलमा क्यों न पढ लिया, आशा ने इसरार किया की मुझे कलमा आप ही के पास पढना है । मौलाना साहब ने कहा मुझसे पढना है तो अभी फोन पर पढलो । आशा ने कहा ,नही आपके पास आकर ही कलमा पढुँगी। मौलाना साहब ने कहा ,बहन मौत ज़िंदगी का कोई इत्मीनान नही । तुम तो बीमार भी हो, तंदुरुस्त आदमी के भी एक साँस का इत्मीनान नही कि अगला साँस आएगा भी कि नही । इसलिए कलमा फोन पर पढलो । जब यहाँ आओगी तो दोबारा नया कर लेना । मौलाना साहब के कहने पर आशा ने कहा कि पढवा दीजीए। मगर असल तो मै आकर ही पढूंगी । मौलाना साहब ने कहा असल तो इसी वक्त पढलो ,नकल यहाँ आकर कर लेना। वह तैयार हो गई । मौलाना साहब ने उसे कलमा पढवाया। उसको मोटी मोटी बातें समझायी और कहा की अब तुम्हे नमाज़ याद करनी है और किसी भी गैरुल्लाह की इबादत से बचना है। नाम मालूम करके मौलाना साहब ने उस से कहा, तुम्हारा इस्लामी नाम आशा से बदल कर आयेशा हो गया है। यह हमारे रसूल (प्रेषित) स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम की बीवी साहिबा का नाम भी है। फोन पर बात करके उसने खुशी खुशी सारे घरको बताया । अपने शौहर को भी बताया मै भी जालंधर से उससे मिलने आयी हुई थी। मुझे भा

बतायामुझे ज़रा बुरा भी लगा कि धर्म बदल कर यह कैसी खुश हो रही है। मौलाना साहब से फोन पर बात करके और कलमा पढकर ना जाने उसको क्या मिल गया था । मै बार बार उसके मुंह को देखती थी जैसे फुल खिल रहा हो । अजीब सी चमक उसके चेहरे से फुट रही थी । मै ने उससे कहा भी कि आशा आज तेरा चेहरा कैसा दमक रहा है। बोली, मेरे चेहरे पर ईमान का नूर (प्रकाश)चमक रहा है । सारा दिन इस कदर खुश थी कि शायद दस साल मे पहली बार घरवालोंने उसे ऐसा खुश और तंदरुस्त देखा। कई साल के बाद उसने अपने हाथों से खाना बनाया । खूब जिद करके सबको खिलाया सोने से पहले वह नहायी और कलमा पढना शुरू किया। एक कागज पर उसने वह लिख रखा था । पहले उसने उसे खूब याद किया और फिर जोर जोर से पढती रही । अचानक वह बहकी बहकी बातें करने लगी। यह महल सोने का कितना अच्छा है? यह किसका है ? जैसे किसी से बात कर रही थी । बहुत खुश होकर बोली की यह मेरा है, यह मेरा है, यह जन्नत का महल है। बहुत खुश हुई । अच्छा हम जन्नत मे जा रहे है । थोडी देर मे कहने लगी फूलों के इतने गुलदस्ते किस के लिए लाए हो ? कितने प्यारे फूल है ये ! अच्छा तुम लोग हमे लेने आए हो । थोडी देरमे हँसकर बोली अच्छा हम तो अपनी जन्नत मे चले तुम्हारी जेल से छूटकर और ज़ोर ज़ोर से फिर तीन बार कलमा पढा और बैठी बैठी बेड पर एक तरफ को लुढक गई । हम सभी लोग घबरा गये । उसको लिटाया । भाई साहब डॉक्टर को लाने चले गये । डॉक्टर साहब आये तो उन्होने कहा की यह तो मर चुकी है, मगर वह जैसे हँसते हुये सो गई हो, घर मे कोहराम मच गया । घर मे मश्वरा हुआ की यह मुसलमान होकर मरी है । अगर हम लोगो ने उसको अपने मज़हब के मुताबिक जलाया तो कभी हम पर कोई बला आ जाये। सुबह को जीजा ने मालेर कोटला बाजी को फोन किया कि आशा का रात मे इंतेकाल (देहांत)हो गया है । हमारे यहाँ तो मुसलमान नही है । उनके क्रिया कर्म के लिए मालेर कोटला से कुछ लोग आये । दस बजे तक एक गाडी भर के मालेर कोटला से मर्द औरते आ गयी और उनको दफन किया सन 47 के बाद पहली मर्तबा इस शहर मे कोई आदमी दफन हुआ था कब्रस्तान अभी तक मौजूद था ।

सवाल: ये तो आपने अपनी बहन के मुसलमान होने की बात बताई है ,बात तो

वाकअी हैरतनाक है ।मौत भी किस कदर काबिले रश्क । जिंदगी मे ना कोई नमाज पढी ,ना कोई रोजा रखा ,ना कोई इस्लामी अमल किया और कैसी पाक साफ गुनाहों से पाक दुनिया से गयी । कैसा काबिले रश्क इन्तेकाल हुआ । मगर आपसे मैने अपने इस्लाम कुबूल करने का वाकिआ ज़िक्र करने की दरख्वास्त (विनती)की थी वह सुनाईये ?

जवाबः असल मे मेरा इस्लाम आईशा के इस्लाम से जुडा हुआ है । आशा और मुझ मे हद दर्जा मुहब्बत थी । उसकी अचानक मौत ने मुझे तोड कर रख दिया था। मगर उसकी मौत और इस्लाम कुबूल करने के बाद एक दिन की ज़िंदगी मुझे बार बार सोचने पर मजबूर करती थी कि इस दुनिया की जेल से वह जन्नत के महल की तरफ सिर्फ एक कलमे की बरकत (वृध्दी,सौभाग्य)से पहुँच गयी । वह किस तरह हँसते हुये दुनिया से गयी । मैने अपने मैके और ससुराल मे कई लोगों को मरते देखा । किस तरह तडप तडप कर कितनी मुश्किल से जान निकली । मै सोचती की आशा को क्या मिल गया जिसकी वजह से इतना मुश्किल मरहला (पडाव,समस्या) आसान हो गया । एक रात मैने ख्वॉब देखा ,आशा बहुत खूबसूरत हीरे और मोती टँके कपडे पहने तख्त पर खूबसूरत तकिया लगाये बैठी है ,ताज सर पर लगा है । जैसे कोई रानी या शहज़ादी हो । मैने उससे सवाल किया की आशा तुझे इतनी आसान मौत क्यों कर मिल गई ? बोली ईमान की वजह से और दीदी मै तुझे सच बताती हुँ कि मुझे ईमान के साथ सिर्फ एक दिन ही तो मिला है, ईमान के साथ एक दिन जीने मे जो मज़ा है ,सैंकडो साल बगैर इमान रहकर जीने मे वह मज़ा नही । यकीन ना आये तो कुछ वक्त के लिए मुसलमान बन कर देख लें । मेरी आँख खुल गयी और मेरे दिल मे यह शौक पैदा हुआ की कुछ रोज़ के लिए मुझे भी मुसलमान होकर देखना चाहिये ।मैने अपने शौहर से अपनी ख्वाहिश का ज़िक्र किया की मै हफ्ता दो हफ्ते के लिए मुसलमान होना चाहती हूँ और देखना चाहती हूँ कि ईमान क्या चीज़ है । आशा की मौत के बाद चुँकी हरवक्त गमगीन रहती थी और चुपके चुपके कमरा बंद करके रोती रहती, तो मेरे शौहर ने मुझे इजाज़त दे दी कि तुझे तसल्ली (संतुष्टी)हो जाएगी । तू करके देखले मगर ये सोच ले की कभी तू भी आशा की तरह एक दिन बाद मर जाए । मैने कहा अगर मै मर गयी तो शायद मै भी जन्नत मे चली

जाऊँ और आप कोई अच्छी दूसरी बावी कर लीजिये । मगर देखीए वह मेरे बच्चों को ना सताए। दो राज़ बाद मैने अपने बहनोई से मालेर कोटला वाली बाजी का फोन नंबर लिया और उनसे हज़रत साहब (मौलाना मुहम्मद कलीम साहब) का फोन नंबर लिया और मैने उनसे फोन पर कहा कि मै हज़रत साहब के पास जाना चाहती हूँ और मकसद ये है कि मै एक हफ्ते के लिए मुसलमान होना चाहती हूँ । वह बहुत हँसी कि मुसलमान होना कोई नाटक या ड्रामा तो नही है की थोडी देर के लिए अपना रुप बदल ले। फिरभी उन्होने खुशी का इज़्हार (प्रकट)किया । आप हमारे हज़रत साहब के पास जायेंगी तो वह आपको बहुत अच्छी तरह समझा देगे । मैने फोन हज़रत साहब को मिलाया । कई रोज़ की कोशिश के बाद उनसे बात हो पायी । मैने उनसे मिलने की ख्वाहिश का ज़िक्र किया । वह मुझसे मिलने आने की वजह मालुम करते रहे और बोले आप मुझे खिदमत बताइये क्या मालुम फोन पर ही वह मसअला (समस्या)हल हो जाये मुझे ख्याल आया कि कहीं मुझे फोन पर ही कलमा पढवा दे और मुसलमान होने को कहे । इसलिए मैने बताना नही चाहा। मौलाना साहब ने मुझसे कहा,बहन मै बिल्कुल बेकार आदमी हूँ अगर आप हाथ दिखाना चाहते है ,या जादू वगैरा का ईलाज कराना चाहती हैं,या कोई तावीज़ गंडा वगैरा बनवाना चाहती हैं, तो हमारे बाप दादाओं को भी यह काम नही आता । आप मुझे मिलने का मकसद बताइये अगर वह मकसद यहाँ आकर हल हो सकता है तो सफर करना मुनासिब (ठीक)है इतना लंबा सफर करके परेशान होने से क्या फायदा होगा ? मौलाना साहब ने जब बहुत ज़ोर दिया तो मुझे बताना पडा कि मै एक हफ्ते के लिए मुसलमान होना चाहती हूँ और मै उस आशा की बडी बहन हूँ जिसको आपने फोन पर कलमा पढवाया था और उसका उसी रात मे इंतेकाल हो गया था । आशा का नाम सुनकर मौलाना साहब ने बडी मुहब्बत से कहा,अच्छा अच्छा आप ज़रुर आईये और जब आपको सहूलत हो आप आ जाइये। मुझे आप बता दीजिए । मै आपके लिए अपना सफर मुलतवी (कँसल) कर दुंगा । मौलाना साहब ने मुझे जालंधर से आने का रास्ता बताया की शालीमार एकसप्रेस से सीधे खतौली उतरें और स्टेशनसे आपको कोई लेने आजायेगा। सफर की तारीख तय हो गयी । कोई मुनासिब आदमी मेरे साथ जानेवाला नही था। मैने अपनी ननसुस (शौहर के रिश्ते की नानी) को तैयार किया। घर मे काम

करने वाली भी और नानी भी तीनो हम लोग 14 नवंबर की सुबह नौ बजे खतौली पहुँचे । खतौली हज़रत साहब की गाडी लेने के लिए आ गयी थी । फुलत आराम से पहुंच गये । मौलाना साहब फुलत मे मौजूद नही थे। मगर आपकी अम्मी ने मुझे बताया कि हज़रत साहब अभी दोपहर तक फुलत पहुंच जाएँगे इंशाअल्लाह। हम लोगों ने नहा कर नाश्ता किया और थोडी देर आराम किया और उसके बाद घर की औरतों से मुलाकात हो गयी और मैने अपने आने की गर्ज़ बतलाई । मुनीरा दीदी और अम्मी जानने मुझे समझाया की एक हफ्ते के लिए कोई मुसलमान नही हो सकता । ये तो मौत के लिए फैसला करना होता है । मै परेशान हो गयी की मुझे अपना मज़हब और सब कुछ बिल्कुल छोडना पडेगा ,ये किस तरह हो । दोपहर दो बजे मौलाना साहब आ गये । बाहर बहुत से मेहमान आये हुये थे । मौलाना साहब दो मिनट के लिए हमारे पास आये। हमे तसल्ली दी। बहुत खुशी हुई आप आए । आईशा मरहुमा (दिवंगत)की वजह से आपके पूरे खानदान से मुझे बहुत तअल्लुक हो गया है। मेरा वापसी का निज़ाम (व्यवस्था)मालूम किया जब मैने बताया की मै तीन रोज़ के लिए आयी हुँ। तो कहा असल मे बाहर बहुत से मेहमान आये हुये है। जीन मे कई ऐसे है जो तीन रोज़ से पडे हुये है । रात को इंशाअल्लाह इत्मिनान से मिलेंगे । अस्मा बहन । आपने मुझे हज़रत साहब की किताब आपकी अमानत आपकी सेवा मे लाकर दी। मैने शाम तक उसको तीन दफा पढा । मेरा दिल ईमान को हमेशा के लिए कुबूल करने के सिलसिले मे साफ हो गया । मगरिब की नमाज़ पढकर मौलाना साहब हमारे पास आए मुझे ईमान की ज़रुरत के बारे मे बताया । मरने के बाद की जिंदगी मे जन्नत दोज़ख और अपने पैदा करने वाले को राज़ी करने के बारे में बताया आपकी अमानत पढकर मेरे जहन में एक हफ्ते के लिए इस्लाम कुबूल करने का ख्याल खत्म हो गया था । मैं ने अपने इस्लाम कुबूल करने के सिलसिले में आमादगी (तैयारी)का इज़्हार किया तो मुझे इस्लाम का कलमा पढवाया। घर की सब औरतें जमा थीं। मैं ने कहा आप मेरा नाम जो आशा का नाम रखा था रख सकते हैं ?उन्होंने कहा, क्यों नहीं,आपका नाम भी आइशा रखते हैं,और आइशा हमारे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम की बहुत ही लाडली अहलिया मोहतरमा (आदर्णीय पत्नी) है ।

अस्मा तुम्हें याद होगा कि मैं ने मौलाना साहब से दो सवाल किये थे ।

मैं ने देखा मौलाना साहब बात तो हम से कर रहे थे, मगर रुख उन का आप के घरवालों की तरफ था । मैं ने सवाल किया कि आप हम से मुँह फेर कर क्यों बात कर रहे हैं ? तो मौलाना साहब ने कहा इस्लाम औरतों और मर्दों के दरमियान पर्दे का हुक्म देता है । वे सब औरतें जिन से इस्लाम के कायदे के मुताबिक शादी हो सकती है वे सब औरतें एक मर्द के लिए ना महरम (वैध)हैं । उन से पर्दा करने का इस्लाम हुक्म देता है । सच्ची बात यह है कि मुझे पर्दे के पीछे से आप से बात करनी चाहिए थी मगर मुझे ख्याल हुआ कि आप को बडी अजनबियत (परायापन)सी लगेगी इसलिए मैं ने सामने आकर अपने रुख को दुसरी तरफ करके नामहरम पर निगाह ना डालने के इस्लाम के हुक्म पर अमल किया । ईमान की दअ्वत जैसी सब से महबूब इबादत (प्रिय भक्ती)में किसी ना महरम पर निगाह पडने के गुनाह के साथ असर नहीं रहता ।

मैं ने कहा,मेरी बहन आशा ने जब आप से इमान ले आने की बात कही तो इतना इंकार करने पर भी आप ने उनको फोन पर कलमा पढवाया मैं इसलिए आप से आने की गरज़ नहीं बता रही थी कि कहीं आप मुझे भी फोन पर कलमा पढवा कर ना टाल दें । मगर आप ने मुझे फोन पर कलमा पढने के लिए नहीं कहा इस की क्या वजह है ? हज़रत साहब ने जवाब दिया कि,फोन पर कलमा पढवाना टालना नहीं है,बल्कि ना पायेदार,पानी के बुलबुले की तरह की फानी (नाशवान)जिंदगी का ख्याल और सच्ची हमदर्दी है । वाकई ना जाने मुझे क्यों ख्याल नहीं आया,मैंने गलती की खुदा ना करे आपका रास्ते में या उस दौरान इंतेकाल हो जाता तो क्या होता ? या मेरा इंतेकाल हो जाता तो खुद मेरे लिए बडी महरुमी (वंचना)थी । ना जाने किस ख्याल में मुझ से यह भूल हुई और फिर आप चार पाँच रोज़ इस्लाम से महरुम (वंचित) रहीं और इतनी बडी ज़रुरत और खैर में ताखीर (देर) हो गई । अल्लाह तआला मुझे मआफ फरमाये । वाकई मैंने बडी गलती की । असल मे अल्लाह तआला काम करने वालों के दिलों में खुद ही तकाजे (माँगें)डालते हैं । आप एक हफ्ते के लिए इस्लाम कुबूल करना चाहती थी जाहिर है ये कोई खेल थोडी है ।

इकबाल एक शायर है, उन्होंने कहा है ।

ये शहादतगहे उलफत में कदम रखना है
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना ।

इस्लाम कुबूल करना तो अपनी चाहत को,अपनी अना (गर्व) को कुर्बान कर देना है ।इसलिए आप के साथ फोन पर बात करना काफी नहीं था । इसलिए अल्लाह ने दिल मे फोनपर कलमा पढवाने की बात नही डाली । आशा से बात करके तो मुझे खुद अंदर से लग रहा था कि अगर उस ने इसी वक्त कलमा ना पढा तो शायद उस की मौत एक दो रोज़ में हो जाये।

हजरत साहब ने समझाया कि अब हर कुरबानी देकर इस ईमान को कब्र तक साथ ले जाना है । इस लिए आप पर मुश्किल भी पड सकती है । कुरबानियाँ देनी पड सकती हैं । एक मिट्टी का बर्तन भी कुम्हार से कोई खरीदता है तो ठोंक ठोंक कर देखता है । इतना कीमती ईमान लाने वाले को आजमाया भी जा सकता है अगर आप ईमान पर जमीं रहें तो मौत के बाद की ज़िंदगी में यह महसूस होगा कि कितने सस्ते दामों में यह नेअमत (देन)मिली है। हज़रत साहब ने घर के लोगों को मुझे नमाज़ और खाने वगैरा के तरीके सिखाने को कहा । मेरी नानी और काम करने वाली के बारे में मालूम किया अम्मीजान और मुनीरा दीदी-उन लोगों को समझाती रहीं । अगले रोज हज़रत साहब सफर पर चले गये । हमारी वापसी से दो घंटे पहले लौटे । हमारी बुवा और नानी को समझाया - आप इस दौलत से महरुम क्यों जा रही हैं । काफी हद तक तो वह पहले ही तैयार हो गयी थीं ।हज़रत साहब के समझाने से वे कलमा पढने को तैयार हो गयीं । उन को कलमा पढवाया और बुवा का नाम हज़रत ने मारिया और नानी का नाम हज़रत ने आमेना रखा । खुशी खुशी हम बामुराद रुखसत हुए । घर के लोगों ने हमें ऐसी मुहब्बत से रुखसत किया जैसे मैं इसी घर में पैदा हुई हूँ । उसी घर की एक फर्द (सदस्य)हूँ । ना जाने क्यों आज तक मैं जब फुलत या देहली आती हूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं अपने मैके आती हूँ ।

सवाल : घर जाने के बाद आप के शौहर का इंतेकाल हो गया था उस वक्त आप को कैसा लगा ? इंतेकाल किस तरह हुआ ज़रा बताइये ?

जवाब : मौलाना साहब ने मुझे बताया था कि अब अपने रिश्तेदारों से मुहब्बत का हक ये है कि आप सब को दोजख की आग से बचाने की फिक्र करें और अपने

शौहर को भी इस्लाम की तरफ लाएँ । बच्चों को भी मुसलमान करें । मुझे यह भी बताया था कि इस्लाम के लिए तुम्हें आज़माइश (परिक्षा)सहनी पडेगी । मुझे ऐसा लगा जैसे हज़रत साहब देखकर कह रहे थे । मुझे सख्त इम्तेहान से गुज़रना पडा।मैं ने जाकर अपने शौहर से अपना पूरा हाल बताया की अब मै हमेशा के लिए मुसलमान हो गई हूँ । और उन पर ज़ोर दिया कि आप भी मुसलमान हो जाएँ । वह मुझ से बहुत वालिहाना (बहुत)मुहब्बत करते थे । पहले तो सरसरी तौर पर लेते रहे । जब मैं ने ज़ोर देना शुरु किया तो उन्होंने मुखालिफत (विरोध)शुरु की और मुझे इस्लाम पर रहने से रोका मैं अपने अल्लाह से दुआ करती । मैं ने हज़रत साहब से फोन पर बात की । एक मुसलमान और एक सिख मियाँ बीवी की तरह रह सकते हैं ? तो हजरत ने बताया कि सच्ची बात ये है कि मुसलमान होने के बाद आप से उन का शौहर बीवी का रिश्ता नही रहा और निकाह (शादी) टूट गया। मगर इस उम्मीद पर आप एहतियात (दक्षता)के साथ उन के साथ रहें कि उन को ईमान नसीब हो जाए और बच्चों की ज़िंदगी ईमान और मुस्तक्बिल (भविष्य) का मसअला भी हल हो जाए । ये मालूम करके मुझे उन के साथ रहने में बडी घुटन महसूस होने लगी रोज रात को हम में लडाई होती । आधी आधी रात गुज़र जाती । मुझे हज़रत साहब ने अल्लाह से दुआ के लिए कहा और बताया कि तहज्जुद (आधी रात)की नमाज़ में दुआ करो । एक रात सारी रात ही नमाज़ पढती रही -मेरे अल्लाह आप के खज़ाने में किस चीज़ की कमी है ? आप मेरे शौहर को हिदायत क्यों नही दे सकते ? मेरे अल्लाह ने मेरी दुआ सुन ली (अगली रात जब मैं ने उन से मुसलमान होने पर जोर डाला तो उन्होंने मुखालिफत (विरोध) नही की । और बोले,रोज़ राज़ के झगडों से मैं भी आजिज़ आ गया हूँ । अगर तू इस में खुश है तो चल मैं भी मुसलमान हो जाता हूँ । कर ले मुझे मुसलमान । मैं ने कहा,मेरी खुशी के लिए मुसलमान होना कोई मुसलमान होना नहीं बल्कि पैदा करने वाले दिलों का भेद जानने वाले मालिक को राज़ी करने के लिए मुसलमान होना है । मैं ने उन को हज़रत साहब की किताब ' आपकी अमानत आपकी सेवा में ' दी पहले भी मैं ने उन को यह किताब पढवाना चाही तो वह फेंक देते मगर इस रोज़ उन्होंने वह किताब ले ली और पढना शुरु की। पूरी किताब बडे गौर से पढी। जैसे जैसे वह किताब पढते रहे। मैं ने महसूस किया। उन का चेहरा बदल

रहा है और फिर उस किताब मे से जोर जोर से तीन बार कलम - ए -शहादत पढा और बोले, यह कलमा अब मैं तेरी खुशी के लिए नही बल्कि अपनी खुशी और अपने रब की खुशी के लिए पढ रहा हूँ । मैं बेइख्तियार उन से चिमट गई । मै बयान नही कर सकती दो महिने के मुसलसल (लगातार)कोहराम के बाद मेरे घर में खुशी आई थी । अगले रोज मालूम हुआ कि उन का रोपड ट्रान्सफर हो गया है । वहाँ गए । एक हफ्ता गुजरा था कि वहाँ चीफ मिनिस्टर का दौरा था । उन के प्रोग्राम मे वह मसरुफ थे ।एक जगह सिक्युरिटी का मुआयना करने के लिये वह गये और कॉलेज की बाउंड्री के नीचे खडे थे । तेज हवा चली और हवा का एक ऐसा बगोला आया की बाऊँड्री का वह हिस्सा जिस के नीचे वह खडे थे उन के उपर गिर गया और उस दीवार के नीचे दब कर उसी वक्त उन का इंतेकाल हो गया।

अस्मा बहन । मैं बयान नहीं कर सकती कि यह हादसा (दुर्घटना)मेरे लिए कितना सख्त था । मगर मेरे अल्लाह का करम है उस ने मुझे हिम्मत दी ईमान पर उस का उलटा असर नहीं हुआ । मुझे अंदर से इस बात का एहसास दिल को थामें रहा कि उन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया था और वह जन्नत में चले गये। जहाँ चंद दिन के बाद मुझे भी इंशाअल्लाह जाना है उन के घर, उन के क्रियाकर्म (तजहीज़ व तदफीन) पर बडा हंगामा हुआ । मैं ने कहा, मैं हरगिज़ उन को जलने नहीं दूँगी । मैं इस लाश की वारिस हूँ । मुझे इसका कानूनी हक है मगर घर के सब लोग जिद कर रहे थे कि यह हमारे खानदान का फर्द (सदस्य) है । D.G.P.,A.D.G.P., I.G., D.I.G.सब मौजूद थे बहुत मेहनत के बाद यह तय हुआ कि उन की समाधी बना दी जाए । उन की समाधी बना दी गई और मैंने एक मौलाना साहब को बुलाकर उन की जनाज़े की नमाज़ समाधी बनाने के बाद पढवाई ।

सवाल : उस के बाद आप जालंधर आ गईं ।

जवाब : रोपड छोडकर मैं जालंधर आ गई । हज़रत साहब के बताने के बाद मैंने अपनी इद्दत(130दिन घरमें)पूरी की मेरे भाई लंदन मे रहते हैं। उन्होंने मुझे कहा कि आप इंग्लैंड आ जाएँ । मैं ने पासपोर्ट बनवाया एक रोज़ मैंने काबे (हज स्थान)को ख्वाब में देखा उठकर मैं ने फोन पर हज़रत साहब से बात की, उन्होंने

बताया कि आप पर हज फर्ज़ होगा मगर कोई महरम होना ज़रुरी है आप का कोई महरम नहीं है इसलिए आप किसी से शादी कर लें । मैं अपने बच्चों के मुस्तक्बिल (भविष्य) के वजह से लाख कोशिश के बावजुद अपने को राज़ी नही कर पाई। मगर ना जाने क्यों मुझे हज के जाने की जुनून की हद तक धुन लग गई । उस के लिए बार बार देहली और फुलत का सफर किया । मगर एजंटों के पास बार बार कोशिशों के बावजूद कोई सूरत ना बन सकी । आप और घर के सब लोग हज को चले गये और मैं तडपती रह गई । यह हज से महरुमी खुद मेरे लिए बडा इम्तेहान था । मैं बहुत रोया करती थी । अपने अल्लाह से फरियाद (याचना)किया करती थी मुझे ऐसा लगता था कि शायद अब भी मैं हज को चली जाऊँ । बकरीद के 3 दिन पहले जब मुझे ख्याल आया कि अब हज के 3 दिन बाकी हैं इसलिए कि मुझे यह मालूम था कि हज बकरईद के दिनों में होता है । मैं सुबह तहज्जुद की नमाज में रोते रोते बेहोश हो गई । मैंने नीमबेदारी (अर्धनिद्रा)में देखा मेरे सर पर एहराम (हज का पहराव)का स्कार्फ बंधा है और मैं अरफात (हज का मैदान)में हूँ और फिर मिना (एक घाटी) के लिए चली । गरज मुकम्मल (संपूर्ण)हज किया । मेरी आँख खुली और होश आया मैं बयान नहीं कर सकती कि मुझे कितनी खुशी हुई । मैं ने किसी तरह हज़रत साहब का मक्का मुकर्रमा का फोन लिया और खुशी खुशी तकरीबन 25 मिनिट पूरे हज की तफसील बताई । हज़रत साहब खुद हैरत में रह गये ।

सवाल : अबी बता रहे थे कि पिछले साल आप हज को गई थीं इस साल तो हम हज में बार बार आप का जिक्र कर रहे थे और अफसोस करते रहे ?

जवाब : मैं अपने अल्लाह के कुर्बान जाऊँ कि उस ने मेरी हज की दुआ सुन ली पहले साल तो मुझे बगैर जाए हज करा दिया अगले साल मैं ने अपने भाई पर कोशिश की और उस को बाहर का सफर कराने यानी हज का लालच देकर मुसलमान होने पर ज़ोर दिया और बताया कि गुरुनानकजी भी हज को गए थे । कोशिश के बाद वह मुसलमान हो गये । और हम दोनों को पिछले साल हज की सआदत नसीब हो गई ।

सवाल : अरमुगान के हवाले से आप मुसलमानों को कोई पैगाम देना चाहेंगी?

जवाब : बस मैं अपनी बहन आइशा की बात दोहराती हूँ की ईमान की नेअमत

की कद्र करें और ईमान के साथ एक दिन सैंकडों साल के बगैर इमान की जिंदगी से अफज़ल (श्रेष्ठ) है और फिर सारे जहानों के लिए रहमतवाला नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम के उम्मती होने की हैसियत से सारे इंसानों को इस दुनिया की कैद से जन्नत मे ले जाने की फिक्र करें। मेरे और मेरे घरवालों के लिए दुआ करें कि सब का खात्मा ईमान पर हो आमीन, बहुत बहुत शुक्रिया।

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान फुलत सितंबर 2006 सफ्हा 24-31]

●●●●●●

3 मेरे इस्लाम लाने का ज़रिया सौकन बनी

एक रोज़ सुबह ग्यारह बजे मैं (जैनब) उस (आइशा) के पास गई । उस का चेहरा खुशी से चमक रहा था । जुमे का दिन था उस ने कहा, एक खुशी की बात सुनाऊँ । अब अल्लाह से मिलने के लिए और जन्नत में जाने के लिए मुझे इंतज़ार नहीं करना पडेगा । रात को मैं ने ख्वाब देखा हमारे हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए थे और मुझ से फरमाया । आएशा, यह दुनिया तो कैदखाना है । तुम कब तक यहाँ रहोगी? पीर के दिन हम तुम्हें जन्नत के लिए लेने आएँगे । यह कह कर बहुत हंसी । बस तीन रोज़ और हैं जैनब, बस फिर वहीं मिलेंगे । बहुत इत्मिनान से वहाँ मज़े में साथ रहेंगे । पीर के दिन असर की नमाज़ के बाद अचानक कहने लगी, लो मेरे नबी स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो लेने आ गए। ज़ोर ज़ोर से दुरुद पढने लगी । उठने की कोशिश की मगर हिलने की हिम्मत ना हुई अचानक कलमा-ए-शहादत पढा, दो हिचकियाँ आईं और इंतेकाल हो गया ।

अस्मा उम्मतुल्लाह

असमा उम्मतुल्लाह : अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

जैनब चव्हान : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

सवाल : जैनब आपा । आप के आने से बहुत खुशी हुई । आप की ज़ात (व्यक्तित्व)अल्लाह तआला की हिदायत की अजीब निशानी है । जब अबी से आप की कहानी सुनी थी ख्याल होता था कि अबी कोई अफसाना सुना रहे हैं ।

Maktaba Ashraf

बहुत इश्तियाक था मुलाकात का । अल्लाह तआला ने मुलाकात करादी और यह मौका दिया कि अबी ने ज़िम्मेदारी लगादी कि आप की कहानी आप की ज़बान से सुनूँ और कारिईने अरमुगान की खिदमत में हदिया पेश करुँ ।

जवाब : सच्ची बात यह है अस्मा । कि तुम्हारे बचपन के किस्से जो मौलाना साहब के हम जैसे जहन्नम के रासते पर पडे लोगों के ईमान का ज़रिआ बनाने का ज़रीआ बने । मैं ने भी दो मर्तबा हज़रत की तकरीर (प्रवचन) में सुने थे । इसलिए मुझे भी बडी हसरत थी कि तुम से मिलूँ अल्लाह ने मेरी भी पुरानी मुराद पूरी कर दी ।

सवाल : चलिए,अल्लाह का फज़्ल हुआ दोनों का काम बन गया । आप को अबी ने बता ही दिया है कि अरमुगान के लिए आप से कुछ बातें करनी हैं । इसलिए कुछ बातें पूछ लूँ ।

जवाब : जी । बस आज मैं दिल्ली सिर्फ इस लिए आई हूँ ।

सवाल : आप अपना खानदानी तआर्रुफ कराइये ।

जवाब : मैं राजस्थान के चोरु जिला के एक राजपुत खानदान में 20 एप्रिल 1968 को पैदा हुई । हमारे पिताजी हाय स्कूल में प्रिंसपल थे । इब्तिदाई तालीम गाँव के एक स्कूल में हुई । बाद में चोरु में एक डिग्री कॉलेज से मैं ने बी.ए किया। हनुमान गढ के एक पढे लिखे खानदान में 6 जुन 1990 को हमारी शादी हुई । मेरे शौहर(पति) मध्यप्रदेश में रतलाम में नायब तहसीलदार थे । वह हॉकी के बहुत अच्छे खिलाडी रहे हैं और उन को इसी बुनियाद पर नौकरी मिली थी । दो साल मैं अपनी ससुराल हनुमान गढ में रही । बाद में हम रतलाम जिला की एक तहसील में जहाँ मेरे शौहर की मुलाज़िमत थी वहीं रहने लगे । ट्रान्सफर की वजह से उज्जैन और बाद में मंदसौर में छ: साल रहे । इस दौरान मेरे यहाँ दो बेटे और एक बेटी पैदा हुए । 2000 में मेरे शौहर का प्रमोशन हुआ और वह तहसील दार बन कर भोपाल की एक तहसील में चले गए । घर परिवार सब कुछ अच्छा था । हम दोनों में बहुत मुहब्बत थी । अचानक ना जाने कया हुआ हमारे घर को किसी की नज़र लग गई और अगर मैं यह कहूँ कि हिदायत की हवा लग गई । अस्मा बहन । मेरा हाल अजीब है , मेरी ज़िंदगी का बिगाड मेरे संवरने का ज़रिआ बन गया ।

सवाल : हाँ हाँ । वही मैं तो सुनना चाहती हूँ । अल्लाह ने आप की इस्लाम की तरफ कैसे रहनुमाई की ? ज़रा तफसील से बताइये ।

जवाब : मेरे शौहर के दफ्तर में एक ब्राह्मण लडकी क्लर्क थी । बहुत खूबसूरत और एक्टिव्ह (फअआल) बल्कि अगर मैं कहूँ कि ओव्हर एक्टिव्ह तो यह बात भी सच होगी । उस लडकी की हर अदा में, उस की शक्ल में, उस की आवाज़ में, उस के अंदाज़ में गर्ज़ हर चीज़ में बला की कशिश थी । अस्मा बहन। मेरे शौहर की खता नहीं । बल्कि वह लडकी वैसी थी कि पत्थर की मुर्ती भी उस के सामने पिघल जाती । मेरे शौहर अपने को बहुत बचाने की कोशिश करते रहे और संभलने की कोशिश करते रहे मगर अल्लाह ने मर्द व औरत के रिश्ते में जज़्बा रखा है वह बच न सके और उस लडकी से उन को तअल्लुक हो गया । अब हर वक्त बस उस की मुहब्बत में घुलते रहते थे । उस का मुझे सौ फीसद यकीन है कि जब तक उन्होंने शादी नहीं की उन में जिस्मानी तअल्लुकात नहीं हुए । मगर ज़ाहिर है कि एक जिस्म दो दिल तो होते नहीं । उस से मुहब्बत के साथ उन का मुझ से तअल्लुक कम होना शुरु हो गया । वह शुरु में तो बहुत कोशिश करते रहे कि मुझे कुछ पता न लगे मगर बात छुप न सकी और दफ्तर में भी लोगों के इल्म में आ गया। मुझ से भला कैसे बर्दाश्त हो सकता था । इंतेशार रहने लगा । बात बिगडती गई और उन्होंने प्रोग्राम बनाया कि मुझे छोडकर उस से शादी कर लें । उस के लिए उन्होंने मुझे हनुमान गढ छोडा । मई 2000 में बच्चों की छुट्टियाँ थीं । वह देहली गए, मुझे बताया कि मुझे ट्रेनिंग में जाना है। देहली में आशा शर्मा ने उन के साथ एक कमरे में रहने से मना किया कि पहले शादी करें उस के बाद एक कमरे में रह सकते हैं । उन्होंने दो कमरे शुरु में होटल में लिए । उस के बाद वकीलों से मश्वरा किया । एक वकील ने मश्वरा दिया कि कानूनी गिरफ्त से बचने का सब से अच्छा तरीका यह है कि आप दोनों मुसलमान होकर शादी कर लें । यह राय उन को पसंद आई । मेरे शौहर ने आशा को भी उस के लिए तैयार किया । शुरु में एक हफ्ता तक तो वह इस्लाम कुबूल करने से मना करती रही मगर बाद में बहुत दबाव देने पर राज़ी हो गई । वह दोनों जामा मस्जिद देहली गए वहाँ के इमाम बुखारी साहब ने उन को मुसलमान करने से मना कर दिया । कई मस्जिदों में मेरे शौहर गए मगर कोई मुसलमान करने और कलमा पढवाने के

लिए तैयार न हुआ । किसी वकील ने उन्हें बताया कि पुरानी देहली में सरकारी रजिस्टर्ड काजी होते हैं । वह निकाह पढाते हैं । मेरे शौहर ने उन का पता मालूम किया और पुरानी देहली के काजी साहब के पास गए । उन्होंने कहा पहले आप दोनों मुसलमान होकर मुसलमान होने का बयाने हलफी सरकारी वकील से बनवाकर लाओ । मेरे शौहर ने कहा आप हमें मुसलमान बना लो । उन्होंने मुसलमान करने से इन्कार कर दिया और आप के वालिद हज़रत मौलाना कलीम साहब के पास जाने को कहा । वह दोनों अगले रोज़ फुलत गए तो मालूम हुआ कि मौलाना साहब देहली गए हुए हैं । एक मौलाना साहब ने उन को कलमा पढवा दिया और बताया कि मुसलमान होने के लिए मौलाना साहब का होना ज़रुरी नहीं है । आप मेरठ या देहली से किसी सरकारी वकील (नोटरी) से अपने कागज़ात बनवालें । मेरठ के एक गुप्ताजी का पता भी दिया । उन्होंने मेरठ जाकर बयाने हलफी बनवाया उस के बाद काजी साहब ने अपनी फीस ले कर उन दोनों का निकाह पढवादिया और निकाह को अदालत से रजिस्टर्ड कराने को कहा । आशा ने हमारे शौहर से कहा, जब हम मुसलमान हो गए हैं तो फिर हमें इस्लाम को पढना भी चाहिए । उन्होंने उर्दु बाजार से हिंदी और अंग्रेजी में इस्लाम पर किताबें खरीदीं और हिंदी कुरआने मजीद भी लिया । उन को किसी ने मौलाना साहब से मिलने का मश्वरा दिया ओखला में एक मस्जिद में तलाश और कोशिश से उन की मुलाकात भी हो गई । मौलाना साहब ने उन को अपनी किताब " आपकी अमानत आपकी सेवा में " दी और समझाया कि बिलाशुबह अपने खानदान, अपने फूल से बच्चों और ऐसी नेक बीवी को छोडना खुद कैसी अजीब चीज़ है मगर अगर आप सच्चे दिल से इस्लाम कुबूल करें तो इस उलझी हुई ज़िंदगी में अल्लाह के कब्जे में सब कुछ है । वह अच्छी ज़िंदगी अता करेंगे। मौलाना साहब ने यह भी कहा कि आप को अपनी पहली बीवी और बच्चों बल्कि सब खानदान वालों पर दअ्वत का काम करना चाहिए । कम अज़ कम दुआ तो हिदायत की अभी से शुरु कर देनी चाहिए । मेरे शौहर बताते हैं कि उन्होंने कुरआन की आयत पढ कर यह बात बताई कि जो भी मर्द हो या औरत अच्छे काम करेगा शर्त यह है कि वह मोमिन हो तो अल्लाह तआला उस को अच्छी और पाकीज़ा ज़िंदगी अता फरमाएँगे।

सवाल : हाँ । कुरआने मजीद की आयत : *मन अमिल सॉलिहन मिन जकरिन औ उनसा व हुवा मोमिनुन फलनुहयियन्नहू हयातन तैय्यीबह* इसका तर्जुमा यह ही है ।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًامِنْ ذَكَرٍاَوْاُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰا تً طَيِّبَةً

आगे बताइये ।

जवाब : पहले ज़रा इस आयत का तर्जुमा कीजिए ।

सवाल : जो भी मर्द हो या औरत नेक अमल करेगा शर्त यह है कि वह मोमिन हो हम उस को ज़रुर पाकीजा ज़िंदगी अता करते हैं ।

जवाब : हाँ यही बिल्कुल यही आयत है । मेरे शौहर कहते हैं ।इस आयत ने मेरी ज़िंदगी को रौशन किया है । पूरी आयत उन को याद है । सच्ची बात यह है *फलनुहयियन्नहू हयातन तैय्यीबह* فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰا تً طَيِّبَةً
कैसी सच्ची बात कही है ।

सवाल : हाँ तो आगे सुनाइये कि आप को ईमान कैसे मिला । यह तो आशा के इस्लाम का ज़िक्र आप कर रही हैं ?

जवाब : हाँ बहन । इसी से जुडा है मेरा इस्लाम भी । हुआ यह कि मेरे शौहर को तो शुरु में इस्लाम को पढने का मौका न मिला । मगर आशा को पढने का शौक था। जैसे जैसे इस्लाम को वह पढती गई इस्लाम उस के अंदर उतरता गया । बच्चों की छुट्टियाँ खत्म हो गईं मेरे शौहर की भी छुट्टियाँ खत्म हुईं तो वह भोपाल पहुँचे मगर मुझे हनुमान गढ से नहीं बुलाया । मुझ से राब्ता (संपर्क) भी बहुत कम किया । मुझे फिक्र हुई तो मैं ने अपने छोटे भाई को भोपाल भेजा । इत्तेफाक से आशा रात को घर गई थी । उस का नया इस्लामी नाम आइशा था । मेरे भाई ने मालूम किया कि यह लडकी आप के घर रात में कौन है ? उन्होंने कहा दफ्तर काम के लिए बुलाया है । मेरा भाई उन से बहुत लडा । तीसरे रोज़ मुझे उस ने फोन करके बुलाया । मैं अपने पिताजी के साथ भोपाल महुँची । कई रोज़ तक झगडा चलता रहा । आखिर में उन्होंने वह कागज़ात कुबूले इस्लाम के निकाल कर मेरे सामने रख दिए । मेरे लिए इस से ज़्यादा अफसोस और सदमे (दुखः और धक्का) की क्या बात थी। मेरे वालिद ने वकीलों से मश्वरा किया और एफ आई आर दर्ज करवाई और अदालत में कई रोज़ गए । पुलिस आई ।उन को

गिरफ्तार करके ले गई । कुछ रोज़ के बाद जमानत तो हो गई मगर दफतर से उन को मुअत्तल (सस्पेंट) कर दिया गया । मेरे घरवाले मेरी मुहब्बत में मेरे शौहर के दुश्मन होगए । जगह जगह से उन पर मुकदमे चलवाए । ज़िंदगी उन के लिए मुश्किल होगई । आशा इस दौरान इस्लाम को पढती रही । और वह बहुत मज़हबी मुसलमान बन गई वह भी सस्पेंड होगई । घर रह कर उस ने कुरआने मजीद पढ लिया और कुछ मुसलमान औरतों से राब्ता (संपर्क) किया । वह इज्तिमाअ में जाने लगी, पर्दा करने लगी, बुरकाअ मंगवालिया, मेरे और मेरे घर वालों की तरफ से जब हद दर्जा की मुखालिफतें हुईं और मेरे ससुराल वाले भी मेरे साथ थे तो आइशा और मेरे शौहर ने मश्वरे से तय किया कि हमें देहली जाकर मौलाना कलीम साहब से मश्वरा करना चाहिए । वह देहली पहुँचे । मौलाना साहब से आएशा ने कहा,हज़रत अलहम्दुलिल्लाह मुझे तो इस्लाम समझ में आ गया है । मेरे दिल मे तो यह आता है कि अगर सारी ज़िंदगी जेल और मुश्किलात में गुज़ारनी पडे और मेरा ईमान सलामत रह जाए तो मरने के बाद की ज़िंदगी में जन्नत बहुत सस्ती मिलेगी । इसलिए मेरे दिल में आता है कि इन की पहली बीवी ने एक ज़िंदगी इन के साथ गुज़ारी है और बहुत मुहब्बत और खिदमत के साथ गुज़ारी है । उस बेचारी की क्या खता है । यह अगर उस के साथ जाकर रहना चाहें तो मुझे कोई एअतेराज़ नहीं अलबत्ता यह दिल चाहता है कि इन का ईमान बचा रहे । यह उन के साथ जाकर रहें और उन को मुसलमान करने की कोशिश करें अगर वह मुसलमान हो जाएँ तो उन से निकाह कर लें मुझे चाहें तलाक दे दें या रखें । इस के लिए ज़रुरी है कि कुछ वक्त जमाअत में लगालें । ताकि वहाँ जाकर मुर्तद न हों । मौलाना साहब ने इस राए से इत्तेफाक किया और बहुत शाबाशी दी । फिर मेरे शौहर को इस पर राज़ी किया और कहा आप आइशा की बात मान लीजिए । आप चालीस रोज़ जमाअत में लगा आएँ ।आप की ज़िंदगी के सारे मसाइल (समस्याएँ) , मुझे उम्मीद है कि इंशाअल्लाह ज़रुर हल हो जाएँगे वह तैयार हो गए और मौलाना साहब ने निजामुद्दीन से उन को जमाअत में भेज दिया । गुजरात में उन का वक्त लगा । हैदराबाद की जमाअत के साथ वक्त बहुत अच्छा लगा । उन को बहुत अच्छे ख्वाब दिखाई दिए और अलहम्दुलिल्लाह इस्लाम उन के अंदर उतर गया । जमाअत से वापस आए तो

वह आइशा के यहाँ गए । आएशा ने उन्हें हनुमान गढ जाकर बात करने को कहा। मगर उन की हिम्मत न हुई आएशा खुद एक अच्छी दाइया बन गई थी । उस के बचपन की कई सहीलियाँ उस की कोशिश से मुसलमान हो चुकी थीं । आइशा ने मुझे फोन किया कि आप भी मसऊद साहब (मेरे शौहर का इस्लामी नाम मसऊद है) से कब तक लडाई और मुकदमा बाजी करती रहेंगी आप एक बार दस मिनिट की मेरी बात सुन लीजिए । बस एक रोज़ के लिए भोपाल आ जाइये । मैं उन से अलग होने को तैयार हूँ । मैं ने उस को शुरु में तो बहुत गालियाँ सुनाईं । मगर उस अल्लाह की बंदी ने हिम्मत न हारी । बार बार फोन करती रही और जब मैं किसी तरह तैयार न हुई तो उस ने मुझ से यह कहा कि अच्छा फिर हम अपने अल्लाह से कह कर बुलवाएँगे । आइशा बताती थी उस के बाद उस ने दो रकअत सलॉतुलहाजत (ज़रुरत की नमाज़) पढी और अल्लाह के सामने फरियाद की। मेरे अल्लाह । जब मैं आप पर ईमान लाई हूँ और आप मुझ से मुहब्बत करते हैं तो आप उस के दिल को नर्म कर दीजिए और मेरे मौला उस की हिदायत का फैसला फरमाकर उस को यहाँ भेज दीजिए । उस के बाद तहज्जुद में दुआ करती रही । उस अल्लाह वाली का अल्लाह के साथ अस्मा बहन बहुत नाज़ का तअल्लुक हो गया था । उस की दुआएँ मेरे गले का फंदा बन गईं । तीन दिन के बाद मेरे दिल मे एम.पी जाने का तकाज़ा (माँग) पैदा हुआ । मैं अपने तीनों बच्चों को छोड कर अपने भाई के साथ वहाँ पहुँची । मेरे शौहर की तो मुझ से मिलने की हिम्मत न हुई। आएशा मेरे पास आई और मुझे इस्लाम कुबूल करने को कहा और मुझे समझाया कि उन के साथ यहीं रहने के लिए एक ही रास्ता है कि आप भी मुसलमान हो जाओं और मुसलमान हो कर आप का निकाह दोबारा उन से होगा अगर आप उन के साथ मुसलमान हो कर रहो तो मैं अलग होने को तैयार हूँ । वह रोकर मेरे पैर पकडती और खुशामद करती रही । मरने के बाद के हालात (स्थितियाँ) और जहन्नुम (नर्क) की बात करती रही । उस की बात मेरे दिल में घुसती चली गई। यहाँ तक कि मेरे दिल में आया कि मैं मुसलमान हो जाऊँ । मैं ने मुसलमान होने को कह दिया । वह मुझ से चिमट कर खुब रोई और मेरे शौहर को फोन करके बुला लिया । एक औरत को फोन करके उन के शौहर हाफिज़ साहब को बुलाया । उन्होंने दो लोगों को मज़ीद (अधिक) बुलाकर मेहरेफातमी)

(पैगंबर साहब की बेटी बीबी फातेमा का मेहर) पर मेरा निकाह उन से पढवादिया। वह अपने कपडे लेकर मेरा घर छोड कर चली गई । चंद रोज़ फातेमा आपा जिन के यहाँ इज्तिमाअ होता था उन के यहाँ रही और फिर एक छोटा मकान किराए पर ले लिया । एक हफ्ता तक वह थोडे वक्त के लिए मेरे यहाँ आती और मुझे मुबारकबाद देती, मेरी बलाएँ लेती और कहती, जैनब तुम कितनी खुशकिस्मत हो कि अल्लाह ने तुम पर कैसा रहम किया कि तुम्हें ईमान दिया अब इस ईमान की कद्र जब होगी जब तुम उस को पढोगी । वह एक ऐसी लडकी थी जो अब शायद जन्नत में रहती थी । बस उस का जिस्म दुनिया में था । मगर उस का दिल व दिमाग और सोच जन्नत व आखिरत में रहती थी वह इस दुनिया को बिल्कुल एक धोके का घर, एक सफर जानती थी उस की बातों में ऐसी सच्चाई और मुहब्बत और खुलूस होता कि मुझे वह दुनिया में अपनी सब से बडी खैरख्वाही (शुभेच्छा) दिखाई देने लगी । एक हफ्ता बाद एक रोज़ मुझ से कहा कि अब मैं इस घर में नहीं आऊँगी अब आप कुँछ वक्त के लिए मेरे कमरे पर आया करें । मैं उन के कमरे पर जाने लगी । अपने शौहर से सारे मुकदमे हम ने वापस ले लिए। मैं दफ्तर के वक्त में कई घंटे उस के पास गुज़ारती । उस ने मुझे कुरआने मजीद पढाया और उर्दु शुरु कराई । एक रोज़ सुबह ग्यारह बजे मैं (जैनब) उस (आएशा) के पास गई । उस का चेहरा खुशी से चमक रहा था । जुमआ का दिन था उस ने कहा, एक खुशी की बात सुनाऊँ । अब अल्लाह से मिलने के लिए और जन्नत में जाने के लिए मुझे इंतेज़ार नहीं करना पडेगा । रात मैं ने ख्वाब देखा, हमारे हुज़ूर स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम तशरीफ लाए थे और मुझ से फरमाया : आइशा यह दुनिया तो कैदखाना है । तुम कब तक यहाँ रहोगी ? पीर के दिन हम तुम्हें जन्नत के लिए लेने आएँगे । यह कह कर बहुत हंसी । बस तीन रोज़ और हैं जैनब। बस फिर वहीं मिलेंगे । बहुत इत्मिनान से वहाँ मज़े में साथ रहेंगे । मुझे बहुत अजीब सा लगा । अगले रोज़ मैं वहाँ गई तो वह कल की तरह हश्शाश बश्शाश (बहुत खुश) थी । मुझे पढाया और मुझ से कहा कि अल्लाह ने हमें ईमान दिया है । तो अब हमें दुसरे लोगों को ईमान की दअ्वत देकर दोज़ख की आग से बचाने की कोशिश करनी चाहिए । इतवार के रोज़ मैं वहाँ पहुँची तो मैं ने देखा वह चादर ओढे हुवे है । मैं ने कहा आइशा आप को क्या हुआ ? उन्होंने

बताया कि मुझे सुबह से बुखार आ रहा है । मैं उस को बहुत ज़ोर दे कर डॉक्टर के यहाँ ले गई, दवा दिलवाई । और कहा कहो तो मैं रुक जाऊँ । या फिर आप हमारे यहाँ ही चलें अकेले बुखार में रहना ठीक नहीं । वह बोली मोमिन अकेला कहाँ होता है और यह शेर पढा :

तुम मेरे पास होते हो जब दूसरा कोई नहीं होता

सवाल : शेर यूँ है ।

तुम मेरे पास होते हो गोया जब कोई दूसरा नहीं होता

जवाब : हाँ हाँ । जैसे भी हो, मैं चली आई, मैं ने ख्वाब देखा कि मैं उस के पास घर में हूँ । अचानक एक बहुत हसीन खूबसूरत नूरानी शक्ल के हज़रत तशरीफ लाए । हज़रत मौलाना कलीम साहब भी उसी घर में हैं । मुझ से कहा, यह हमारे रसुल स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम हैं । आएशा को लेने के लिए तशरीफ लाए हैं । उस के बाद वह आएशा का हाथ पकडकर ले गए । मेरी आँख खुली तो मुझ पर ख्वाब की खुशी होने के बजाए कि पहली मर्तबा प्यारे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई थी अजीब सदमा सा हुआ । रात के तीन बज रहे थे मैं ने उठ कर तहज्जुद की नमाज़ पढी और बहुत रोई । सुबह सवेरे मैं आइशा के घर पहुँची, बुखार उसको बहुत ज़्यादा था । मैं ने पानी की पट्टियाँ उस के सर वगैरा पर रखीं उस से उस को राहत हुई । मुझ से कहा जैनब । तुम्हारी ज़िंदगी को मैं ने अजीरन किया, मुझे मुआफ करना । खुदा के लिए दिल से मुआफ कर देना । मगर इस मुश्किल के बाद यह ईमान जो आप को मिला है फिर भी बहुत सस्ता सौदा है । बस मेरी आप से एक आखरी इल्तिजा (प्रार्थना) है कि तीनों बच्चों को आलिम और दाअी (पंडित और निमंत्रक) बनाना । यह दीन का काम करेंगे तो तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारे लिए सवाब (पुण्य) का कारखाना लगा रहेगा। मैं ने कुछ खाने के लिए कहा, तो उन्होंने कहा कि दूध ज़रा सा पियुँगी । मेरे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दूध अच्छा रिज़्क है । पीने और खाने दोनों का काम करता है । मैं ने दूध दिया तो गर्म था । बोली, ज़रा सा ठंडा करदो । ज़्यादा गर्म खाने की हदीस में मुमानिअत (मनाही) आई है । दूध ठंडा करके दिया, दूध पिया ।कमज़ोरी बढती गई, सर में दर्द की शिकायत की, मैं ने गोद में सर रख कर दबाना शुरु किया । असर के बाद अचानक कहने

लगी । लो मेरे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम तो लेने आ गए । ज़ोर ज़ोर से दुरुद पढने लगी । उठने की कोशिश की मगर हिलने की हिम्मत न हुई । अचानक कलमा-ए-शहादत पढा दो हिचकियाँ आईं और इंतेकाल हो गया ।

सवाल : फिर उन के कफन दफन का क्या इंतेज़ाम हुआ ?

जवाब : न जाने किस तरह फातेमा आपा आ गईं । बस उन्होंने सब लोगों को खबर करदी । न जाने कैसी खुश्बू उस के जनाज़े से फूट रही थी । घर तो घर मुहल्ला खुश्बू से मुअत्तर हो गया । बडी ताअदाद में लोगों ने जनाज़े में शिरकत की (शामिल हुए) ।

सवाल : आप के शौहर का क्या हुआ, क्या उन्होंने उसे तलाक दे दी थी ?

जवाब : असल में आइशा मेरे शौहर से इसरार करती थी कि जैनब की खुशी के लिए मुझे तलाक दे दो । मगर उन्होंने तलाक नहीं दी थी । उन के इंतेकाल का उन पर बहुत असर पडा । उन की ज़िंदगी बिलकुल खामोश हो गई ।

सवाल : और आपको कैसा लगा ?

जवाब : यह बिल्कुल अजीब व गरीब इत्तेफाक है । सच्ची बात यह है कि एक औरत के लिए सौकन का वुजूद सब से बडा काँटा होता है मगर मेरे अल्लाह जानते हैं यह फैसला करना मुश्किल है कि आएशा के इंतेकाल का मुझे गम ज़्यादा हुआ या मेरे शौहर को । बस मैं इतना ज़रुर कह सकती हूँ कि अगर कोई मुझ से सौ कसमें देकर यह सवाल करे कि दुनिया में पूरी ज़िंदगी में मुझे सब से ज़्यादा महबूब कौन है तो मैं बगैर सोचे समझे यह कहुँगी मेरी सब से महबूब और खैरख्वाह (शुभ चिंतक)शख्सियत (व्यक्तित्व) अल्लाह और उस के रसुल के बाद आइशा मर्हूमा है । वह ज़मीन पर एक ज़िंदा वली थी । असमा बहन सच्ची बात यह है कि मैं अपने शौहर पर उन हालात में जिस कद्र रोती थी उस से सौ गुना ज्यादा मुझे आएशा के इंतेकाल का सदमे ने रुलाया ।

सवाल : आप ने अपने बच्चों की तालीम का क्या किया ?

जवाब : मैं ने बच्चों को स्कूल से उठा लिया । मेरे दोनों बेटों का नाम हसन और हुसैन है । उन दोनों को एक बडे मदरसे में दाखिल किया । अलहम्दुलिल्लाह हसन के 26 परे हिफ्ज़ हो गए हैं । हुसैन के 4 पारे हुए हैं और फातेमा बेटी भी अलहम्दुलिल्लाह हिफ्ज़ कर रही है । उस के 6 पारे हिफ्ज़ हो गए हैं । मेरी

ख्वाहिश है वह दाओ बनें और आलिमे दीन (धर्म पंडित) बनकर हज़रत ख्वाजा मुईनोद्दीन अजमेरी की तरह दअ्वत का काम करें ।

सवाल : आप के शौहर का क्या हाल है ?

जवाब : उन को आएशा के इंतेकाल का बडा सदमा है । हमारे पास रहने लगे हैं । बार बार कहते हैं अब दुनिया से दिल भर गया है । बस अल्लाह तआला ईमान पर खातेमा (अंत) करादे । लेकिन ज़्यादा परेशान होते हैं तो मौलाना साहब के पास उन को भेज देती हूँ वह कुछ दअ्वत पर उभारते हैं । अब भी उन को ले आई हूँ । अलहम्दुलिल्लाह इस मर्तबा उन्होंने हश्शाश बश्शाश रहने का वाअदा किया है ।

सवाल : आप के शौहर अबी से मिलने आते रहते हैं ?

जवाब : वह अबी से बैअत हैं । आइशा भी उन से बैअत थी । और मैं और मेरे छोटे बच्चे भी हज़रत से बैअत हैं । मैं ने जब बैअत के लिए कहा था तो हज़रत ने बहुत मना किया, उन्होंने कहा बैअत तो ज़रुर होना चाहिए मगर किसी अल्लाह वाले और कामिल शेख (गुरु) से बैअत होना चाहिए । जिस्म की बीमारी में जब आदमी अच्छे से अच्छे तबीब (डॉक्टर) को तलाश करता है तो रुह (आत्मा) की बीमारी में तो और भी अच्छे से अच्छे शेख को तलाश करना चाहिए । हज़रत ने फरमाया कि जो खुद आखरी दर्जे में बीमार हो वह क्या किसी का इलाज कर सकता है । मैं तो अपने शेख के हुक्म की तामील में तौबा कर लेता हूँ । कि शायद सच्चे तालिब (इच्छुक) की बरकत से अल्लाह तआला मेरे गुनाह मआफ फरमादें । मेरे शौहर ने कहा हज़रत हमें आप की बरकत से अल्लाह तआला ने कुफ्र व शिर्क की बीमारी से निकाल लिया आप के अलावा हमें तबीब मिलेगा । बहुत इसरार करने पर हज़रत ने हम सब को बैअत कर लिया ।

सवाल : बहुत बहुत शुक्रिया जैनब आपा । वाकई आप की जिंदगी एक अजीब जिंदगी है ।

जवाब : अस्मा बहन । मेरी ज़िंदगी में और भी अजीब अजीब वाकिआत हैं जिन को अगर मैं बतादूँ तो एक लंबी किताब बन जाए मगर इसवक्त हमारी गाडी का वक्त करीब है । अभी बाहर से बार बार तकाज़ा आ रहा है फिर किसी वक्त आकर सारी कहानी सुनाऊँगी ।

सवाल : ज़रुर जैनब आपा । अब की मर्तबा आप चंद रोज़ के लिए आइये फिर हम कुछ औरतों को इकठ्ठा करेंगे उस वक्त आप सुनाइयेगा ।
जवाब : अस्मा । यह नहीं हो सकता । बस तुम्हें सुना सकती हूँ । औरतों के सामने मैं कोई मौलवी नहीं हूँ । मुझे तो बहुत रुआब हो जाता है ।
सवाल : अच्छा ठीक है । अल्लाह हाफिज़ , अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह ।
जवाब : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह ।

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान , मार्च 2009]

••••••

(4) फूंक का असर देखकर मै ईमान लाई

अस्मा ज़ातुलफौज़ैन

अस्मा ज़ातुलफौज़ैन : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
डॉ.सफिया : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सवाल : डॉक्टर साहिबा ! अबी (पिताजी)का अजमेर से फोन आया था उन्होने बताया कि आपका फोन आया था मै आपको बुलालूँ और आपसे कुछ बातें करुँ।

Maktab Ashraf

आपके इल्म मे होगा की हमारे यहाँ फुलत से अपने खूनी रिश्ते के भाई बहनों खुसूसन (विशेषत:)बिरादराने वतन (देशबंधुओं)तक उनका दअ्वती हक पहंचाने और उनको दोज़ख से बचाने की फिक्र और ज़िम्मेदारी पैदा करने और मुसलमानों को बेदार (जागृत)करने के लिए एक उर्दु मेगजिन निकलती है उसमे इस्लाम के दस्तरख्वॉन पर आनेवाले नये खुश किस्मत भाइयों की आप बीती हर माह शाया (प्रकाशित)की जा रही है । अबी की ख्वाहिश (इच्छा)थी की 2005 के शुमारे (अंक)मे आपका इंटरव्यू शाए हो जाय ।

जवाब:- असल मे मै पंद्रह रोज़ से मौलाना साहब को फोन करने की कोशिश कर रही थी। मेरे पास उनके यु.पी. और देहली के मोबाईल थे मगर मिल नहीं रहे थे। कल इत्तेफाक (योगायोग)से फोन मिल गया। उन्होने मुझे पहले देहली घर का नंबर दिया और बहुत ताकीद की कि आप फोन करके ज़रुर चली जाएँ । इसलिए की मेग्ज़िन प्रेस मे जाना है और बिल्कुल आखरी तारीख है ।मुझे मौलाना साहब ने बताया कि ये इंटरव्यूज़ दअ्वत का माहौल बनाने में बडा रोल अदा कर रहे है । तो मुझे ख्याल हुआ कि मेरा भी इसमे कुछ हिस्सा (शेअर)हो जाय,आप मुझसे जो चाहे मालूम करे।

सवाल: शुक्रिया । आप पहले अपना तआर्रुफ (परिचय)करायें ।

जवाब: मेरा पुराना नाम सरोज शालनी है । मै 24 सितम्बर 1978 मे लखनऊ के पास मोहनलाल गंज के एक ब्रहमण खानदान मे पैदा हुई । मेरे वालिद डॉक्टर के.ए.शर्मा प्रोफेसर थे और कॉर्डीऑलॉजी मे D.M.किया था। उसके बाद काफी ज़माने तक वह पंथ हॉस्पीटल मे रहे ।दस साल से लखनऊ मे घर के करीब कोशिश करके ट्रान्सफर करा लियाँ। मेरी माता (वालिदा) घरेलु खातून है। मेरे वालिद मिजाज़ के लिहाज़ से बिल्कुल हिंदुस्तानी है । वह सिर्फ मश्रिकी तहज़ीब (पूर्वीय संस्कृति)से इत्तेफाक (मान्यता)रखते है । इसलिये उन्होने अपने घरवालों पर दबाव देकर बहुत से डॉक्टरों को छोडकर मेरी वालिदा को पसंद किया और शादी की। मेरे दो भाई है,एक बनारस युनिवर्सिटी मे रीडर है और दुसरे बी.एच.एल.मे इंजिनियर है। दोनो मुझसे बडे है। मैने इंटर सायंस बायोलॉजी मे फर्स्ट डिवीज़न से पास किया और फिर P M T मुकाबला पास किया । लखनऊ मेडीकल कॉलेज से M.B.B.S. किया और मौलाना आज़ाद मेडीकल

देहली से M.D.किया अपने वालिद की ख्वाहिश पर कॉर्डीऑलॉजी (हृदयरोग) को मुंतखब (चुना) किया अब मै A I M S मे D.M.भी कर रही हूँ और आजकल A I M S मे डिपार्टमेंट ऑफ कार्डीऑलॉजी में मुलाज़ेमत भी करती हूँ । मैं ने अब से एक साल,छ:माह,चार रोज़,दो घंटे पहले 20 मई 2004 को बृहस्पतीवार (बरोज़ जुमेरात) ग्यारह बजे ग्रीन पार्क की मस्जिद में जाकर आपके वालिद साहब के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया ।

सवाल : अपने इस्लाम कुबूल करने के वाक़िओ (घटना)और उसके असबाब (कारणों) को आप ज़रा तफसील (विस्तार) से बताइये ।

जवाब : जून 2003 में I.C.C.U.बच्चों के वार्ड में ड्युटी पर थी । मैंने देखा कि एक मौलाना साहब हरियाणा के एक बच्चे को देखने आये । बच्चों के पास सिर्फ एक (Attendent)तीमारदार(सेवक) के रहने या खडे होने की इजाज़त होती है । बच्चे के वालिद बाहर चले गये । मौलाना साहब ने बच्चे पर फूंका। पूरे वार्ड में आठ बेड थे सिर्फ एक मरीज़ मुसलमान था । बच्चे को फूंकते देखकर बराबर वाले मरीज़ की माँ ने भी मौलाना साहब से अपने बच्चे को फूंकने के लिए कहा । बच्चे की माँ हरियाणा वाले बच्चे के पास खडी हो गई। मौलाना साहब ने दूसरे बच्चे पर भी दम किया । उसको देखकर बराबर वाली माँ ने भी अपने बच्चे को फूंकने के लिए कहा । एक के बाद एक छ: बच्चों के पास मौलाना साहब आकर खडे हुए और फूंकते रहे। डॉक्टर त्यागी जो डिपार्टमेंट के हेड थे । उनके राउंड का टाईम था । मै सामने से देखकर वॉर्ड मे आयी और मौलाना साहब से पूछा आपका मरीज़ कौन है ? आप कभी इस मरीज़ के पास कभी उस मरीज़ के पास आ रहे है और फूंक रहे है यह I.C.C.U. है यहाँ पर इंफेकशन (Infection) का खतरा रहता है ।

मौलाना साहब ने कहा ये सारे मरीज़ मेरे है । इसलिए कि हमे हमारे बडों ने यह बताया है कि सारे इंसान एक माँ बाप की औलाद है ।इसलिए यहाँ पर एडमिट हर मरीज़ से मेरा खूनी रिश्ता है। जिस मालिक ने आपको और हमे पैदा किया है उसको यह तेरा मेरा बिल्कुल पसंद नही और जो चीज़ हम पढकर फूंक रहे है वह उसी मालिक का कलाम (वाणी)है जिसने अपने कलाम (वाणी)मे यह बात कही है ।अपने सच्चे संदेश वाहक हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की

ज़ुबान से यह बात कहलवाई और हज़रत इब्राहीम वह है जिनके नाम पर भारत के लोग अपने को ब्राहमण (ब्राहमी) कहलाते है की "जब मै बीमार होता हुं तो वह मालिक मुझे शिफा देता है यानि ठीक करता है" । आप रोज़ देखती होंगी आप अपनी सोच से अच्छी अच्छी दवा मरीज़ को देती है और मरीज़ ठीक होने के बाद मर जाता है और बाज़ मर्तबा इलाज मे गलती होती है और मरीज ठीक हो जाता है। ऐसी बात मैने पहली बार सुनी थी। पिछले हफ्ते हमारे वार्ड के छ : बच्चे एक्सपायर्ड (मरगये) हो गये थे । उनमे से चार बच्चे तो बहुत सुंदर थे और दो हफ्ते तक वॉर्ड मे रहने की वजह से मुझे भी उनसे बहुत ताल्लुक (प्रेम)हो गया था । उनकी मौत से दिल पर बहुत सदमा (आघात)था। मौलाना साहब की मुहब्बत भरी बातें सुनकर मुसे ऐसा लगा कि मुझे उनकी कुछ और बातें सुननी चाहीये। मैने मौलाना साहब से अपने कैबीन मे आने को कहा ।मौलाना साहब ने मेरी दरख्वास्त कुबूल की, मौलाना साहब ने मुझसे कहा,आप मेरी छोटी बहन या मेरी औलाद की तरह है और मुहब्बत से मुझे बुलाकर लायी है तो मेरी आपसे दरख्वास्त है कि अपने वॉर्ड मे आने वाले मरीज़ को अपना बच्चा,अपना भाई समझे और उनके दर्द और तकलीफ को इस तरह लें। मालिक ने आपको कैसा अच्छा मौका दिया है कि आपको परेशान हाल लोगों के दर्द मे शरीक (सहभागी)किया है । आपको खूब अंदाज़ा होगा कि जिस माँ का बच्चा हो और वह इतना बीमार हो की ICCU मे एडमिट हो और सरकारी अस्पताल मे ऐसे मरीज़ आते है जिन का कोई सहारा नही हो, उनके साथ ज़रा सी हमदर्दी आप करे तो उनके रुएँ रुएँ बल्कि अंतर्आत्मा से आप के लिए दुआएँ निकलेंगी । आखिर मे मौलाना साहब ने बडे दर्द से मेरा नाम पूछा और बोले डॉक्टर शालनी ! आप मेरी खूनी रिश्ते की बहन है,इसलिए मै आपको यह नसीहत करता हूँ बल्कि वसीयत करता हूँ और वसीयत उसको कहते है जो कोई मरने वाला अपने बच्चों से मरने के वक्त अपनी आखरी बात के तौर पर कहता है कि आप वार्ड मे आने वालों का इलाज सबसे बडी पूजा समझ कर करें आपको सैंकडो साल की तपस्या और कठिन पूजा (मुश्किल इबादत) मे मालिक के यहाँ वह जगह नही मिलेगी जो किसी परेशान हाल मरीज़ और उसके मुसीबत ज़दा माता पिता को तसल्ली (संतुष्टी)देने से मिलेगी।

मैने मौलाना साहब का बहुत शुक्रिया अदा किया और वाअदा किया की मै कोशिश करुंगी । मौलाना साहब चले गये । डॉक्टर साहब के राउंड के बाद मैने पानीपत हरियाणा के उस बच्चे के बाप से मालूम किया कि यह मौलाना साहब कौन है उसने बताया कि यह हमारे हज़रत जी है । वह बहुत अच्छे आदमी है उनके हाथों पर हजारों लोग मुसलमान हो गये । काफी दिनों तक मौलाना साहब की बातों का मेरे दिल पर असर रहा खास तौर पर यह बात कि ये सारे मरीज़ मेरे है जिस मालिक ने हमे पैदा किया । उसको ये मेरा तेरा बिलकुल पसंद नही। मैने ये भी महसूस किया कि मौलाना साहब के फूंकने से मरीज़ों की हालत मे अजीब फर्क आया है और सारे मरीज़ ठीक होकर वार्ड से गयें । लेकिन कुछ दिन गुज़रने के बाद ज़हेन (स्मरण)से बात निकलती गई । मौलाना आज़ाद मेडीकल कॉलेज मे मेरी एक रुम पार्टनर डॉक्टर रीना सहगल थी वह गाईनी मे M.S.कर रही थी और बाद मे वह सफदरजंग अस्पताल मे गाईनी डिपार्टमेंट मे मुलाज़िम हो गई। हम लोगों मे खास दोस्ती है । एक दिन उन्होने मुझे खाने पर बुलाया ।

खाने के बाद बातें हो रही थी,उनके यहाँ मुसलमान काम करने वाली आती थी । वही खाना वगैरा बनाती थी । मैने उनसे कहा तुमने मुसलमान खाना बनाने वाली क्यों रख रखी है ? कोई हिंदू नही मिली? वह कहने लगी यह बडीअच्छी लडकी है । बहुत ईमानदार है । कई बार मेरा पर्स गिर गया । जुँ का तुँ मुझे लाकर वापस दिया । बातों बातों मे मुसलमानों के बारे मे बातें होने लगी । डॉक्टर रीना कहने लगी जैसे जैसे हमारे देश बल्कि पूरे संसार मे मुसलमानों के खिलाफ मीडिया मे बातें आ रही है लोग मुसलमान होते जा रहे है ।कैसे कैसे बडे लोग मुसलमान हो रहे है। मायकल जैकसन के बारे मे तुम्हे मालूम होगा वह भी मुसलमान हो गया। हमारे हॉस्पीटल मे कार्डीओलॉजी मे एक नौजवान डॉक्टर बलबीर नाम के है वह भी दो एक साल पहले मुसलमान हो गये है। और वह तो बस यह चाहते है कि पूरे अस्पताल के लोग मुसलमान हो जाएँ । एक मरीज़ के सिलसिले मे उन्हे चेक अप को बुलाया ।बस मुझसे कहने लगे अगर मरने के बाद नर्क से बचना है तो ईमानवाले हो जाओ। ये सुन कर मुझे अपने वॉर्ड मे आए मौलाना साहब याद आ गये और उनकी सारी बातें ताज़ा हो गई। मैने डॉक्टर रीना से कहा आप मुझे डॉक्टर बलबीर से ज़रुर मिलाएँ।उन्होने अगले

रोज़ फोन करने को कहा और बताया की इतवार के दिन डॉक्टर बलबीर को मैने कमरे पर बुलाया है । आप दस बजे मेरे कमरे पर आ जाएँ । इतवार के रोज़ मै डॉक्टर सहगल के कमरे पर गयी । डॉक्टर बलबीर भी आ गये । साँवले रंग के बहुत ही सज्जन नौजवान जैसे किसी गहरी सोच मे गुम हो । मैने उनसे मालुम किया । आपने कितने दिन पहले इस्लाम कुबूल किया । उन्होने बताया आठ नौ साल पहले । मैने वजह मालूम की तो उन्होने बताया कि सिर्फ और सिर्फ इस्लाम ही सच्चा और सबसे पहला और सबसे अंतिम धर्म है और इस्लाम के बगैर मरने के बाद की जिंदगी मे ना तो मोक्ष है ना मुक्ती (नजात) और हमेशा हमेशा की नर्क है और इस्लाम कुबूल करना आपके लिए भी उतना ही ज़रुरी है जितना मेरे लिए। मैंने मालूम किया कि आप ने नाम भी बदल लिया है,उन्होने बताया कि हाँ मेरा इस्लामी नाम वलीउल्लाह है जिसका अर्थ (माना) है अल्लाह का यानि ईश्वर का दोस्त। मैने उनसे कहा एक डेढ साल पहले मेरे वॉर्ड मे एक मौलाना साहब आये थे । उन्होने मुझसे कुछ बातें की थी । वे आज तक मेरे दिल को लगी हुई है । वह वार्ड के हर मरीज़ को फूँक रहे थे ।मेरे मालुम करने पर की आपका मरीज़ कौनसा है उन्होने कहा की सारे मरीज मेरे है । हम सब एक माँ बाप की औलाद खूनी रिश्ते के भाई है । ये तेरा मेरा पैदा करने वाले मालिक को बिल्कुल पसंद नही । डॉक्टर बलबीर कहने लगे मौलाना साहब ने ये बातें बिल्कुल सच्ची कही थी । ये तो इस्लाम के और हम सबके रसूल हज़रत मुहम्मद स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने अपने आखरी हज के भाषण मे कही थी । मैने कहा वह भाषण छपा हुआ मिलता है ? उन्होने कहा हाँ हमारे नबी का हर बोल पूरी तरह सुरक्षित (महफूज़) है और छपा हुआ मिलता है। मै किसी से लेकर डॉक्टर रीना के हाथ आपको भिजवा दूंगा। दो चार रोज के बाद डॉ. रीना सहगल ने मुझे वह पम्प्लेट जिसमे अंग्रेज़ी मे हमारे नबी स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के आखरी हज का खुत्बा (उपदेश)इंग्लिश ट्रान्सलेशन के साथ था, लाकर दिया । उसको पढकर मै हैरान रह गई, खास तौर पर औरतों के बारे में बार बार उनकी चर्चा मेरे दिल को और लग गई। मुझे मौलाना साहब की याद आयी । और खयाल हुआ क्या अच्छा होता कि मै मौलाना साहब का पता ले लेती। मैने हॉस्पीटल मे पुराने मरीज़ों की फाईलें तलाश की कि पानीपत के मराज़ का पता मिल जाये तो मै खुद मराज़ के घर जाकर मौलाना साहब

का पता मालुम करुँ मगर मुझे पता नही मिल सका । इस्लाम को पढने और इस्लाम के बारे मे जानने का शौक हो गया था।मैने डॉक्टर बलबीर का फोन लिया और उनसे मिलने के लिए वक्त तै किया। सफदरजंग हॉस्पीटल जाकर उनके वॉर्ड मे उनसे मिली । उनसे इस्लाम को जानने के लिए लिटरेचर देने को कहा। दूसरे रोज़ वह मेरे हॉस्पीटल मे आए और मुझे एक छोटी सी किताब"आपकी अमानत आपकी सेवा मे"हिंदी मे दी और उन्होने कहा की इस्लाम की ज़रुरत और उसके बारे मे जानने के लिये यह छोटी सी किताब सौ किताबों की एक किताब है बस यह किताब आपको यह सोचकर पढनी है कि एक सच्चा हमदर्द सिर्फ मुझसे यह बात कह रहा है और आप किताब पढेंगी तो आपकों खुद ऐसाही लगेगा । मैने इस किताब के लेखक के हाथ पर ही इस्लाम कुबूल किया है । किताब के दो शब्द किताब की जान है उनको पढकर आप किताब और किताब के लिखने वाले को जान जाओगी डॉ. बलबीर ने मुझे बताया की वह देहली के पास यु.पी. के एक शहर के राजपूत खानदान से तअल्लुक (संबंध)रखते है किताब देकर और कुछ देर चाय वगैरा पीकर वह चले गये । मैने वॉर्ड मे बैठकर वह किताब बस एक बार मे पढ डाली । किताब पढकर मुझे मौलाना साहब की बहुत याद आयी । किताब ने मेरे दिल मे अपनी जगह बना ली थी मैंने किताब को पढकर डॉ. बलबीर को फोन किया और उनसे कहा कि किताब के लेखक की और कोई किताब मुझे दिजीए और अगर उनसे मुझे आप मिला सकें तो आपका मुझपर बडा आभार (एहसान)होगा । चार रोज 18 मई को मैं ने किताब को पढकर डॉ. बलबीर को फोन किया और उनसे कहा कि किताब के लेखक की और कोई किताब मुझे दीजीए और अगर उनसे मुझे आप मिला सकें तो आपका मुझपर बडा आभार (एहसान)होगा । चार रोजको डॉ. बलबीर का मेरे पास फोन आया । उन्होने बताया की अगर आप छुटटी ले सकती हों तो "आपकी अमानत"....के लेखक मौलाना मुहम्मद कलीम साहब से ग्रीन पार्क की मस्जिद में मुलाकात हो जाएगी। मै फौरन तैयार हो गयी । हम ऑटो से ग्रीन पार्क मस्जिद मे पहुंचे। मौलाना साहब ग्यारह बजे के बजाय साढे दस बजे वहाँ पहुँच गये थे । उनको आगे का सफर करना था । मौलाना साहब को देखकर मुझे इतनी खुशी हुई की मैं उसे भूल नही सकती।जब मैने देखा कि"आपकी अमानत" के

लेखक मौलाना कलीम वही मौलाना साहब है जो डेढ साल पहले मेरे वॉर्ड मे हरियाणा के बच्चे को देखने आये थे और जिनको मै इस कदर तलाश कर रही थी मुहब्बत और अकीदत (श्रध्दा)से मौलाना साहब के कदमों मे गिर गई । मौलाना साहब ने बहुत सख्ती से मना किया और मुझसे कहा अब क्या देर है ?"आपकी अमानत"पढने के बाद आपको कोई शक रह गया है । मै हालाँकि मौलाना साहब से मिलने आयी थी । मगर अपने को रोक नही सकी और मैने मौलाना साहब से कहा कि मै मुसलमान होने ही आयी हूँ। मौलाना साहब बहुत खुश हुए और मुझे फौरन कलमा पढाया और मेरा इस्लामी नाम सरोज शालनी की जगह सफिया शालनी (एस. शालनी) रखा । मौलाना साहब ने मुझे कुछ किताबें लिखकर दी और नमाज़ याद करने और पढने की ताकीद की ।

सवालः इस्लाम कुबूल करने के बाद आपने उसका ऐलान किया या नही ?

जवाबः मौलाना साहब ने मुझे ऐलान करने के लिए सख्ती से मना कर दिया । मगर फिर भी मैने अपने खास खास लोगों से ज़िक्र (उल्लेख)कर दिया । कभी कभी मुझे बहुत जोश सा भी आता है कि इस्लाम जब हक है तो उसे छुपाना और घुटघुटकर जीना कैसा ? मगर मुझे यह खयाल आता है कि जब एक ऐसे आदमी को जिसकी वजह से बिल्कुल तसव्वुर (कल्पना)के खिलाफ इस्लाम की रोशनी एक गंदी को मिली रहेबर (मार्गदर्शक)मान लिया है तो अब उसका कहा मानना ही अच्छा है।

सवालः अपनी दोस्त डॉक्टर रीना सहगल को आपने बता दिया ?

जवाबः मैने न सिर्फ ये कि उसको बता दिया बल्कि मै और डॉक्टर वलीयुल्लाह दोनो उसपर लगें रहे और उसने भी अलहम्दुलिल्लाह कलमा पढ लिया है मगर वह शादीशुदा है । उनके शौहर डॉ.बी.के.सहगल अपनी क्लिनिक करते है । बडे सख्त मज़हबी घराने से तअल्लुक (संबंध)रखतेहै और इधर चंद सालों से वह राधास्वामी सत्संग से जुड गये है इसलिए उनकी वजह से वह दबी हुई है ।

सवालः डॉ.वलीयुल्लाह से आपका राब्ता (संपर्क)है ?

जवाबः असल मे डॉक्टर वलीयुल्लाह खुद दिल के बीमार हो गये उन को दिल की एक ऐसी बीमारी हो गई जिससे दिल रफ्ता रफ्ता (धीरे धीरे)कमज़ोर हो जाता है और फिर उसमे पेस मेकर लगाना पडता है वह अपने इलाज के सिलसिले

मे मुझ से ज्यादा राब्ते (संपर्क) मे रहे । मैने इलाज मे बहुत दिलचस्पी ली । उनकी शादी एक सरकारी मुलाजमत पर लगी हुई लडकी से हुई । उन्होने उसे शादी से पहले बता दिया था और शर्त भी तय कर दी थी की पहले मुसलमान होकर निकाह करना होगा फिर खानदानी रिवाज के मुताबिक शादी होगी उन्होने उसे कलमा पढवाकर निकाह भी किया। मगर बाद मे वह इस्लाम की तरफ ज़्यादा दिलचस्पी ना रख सकी। उनकी मुलाज़ेमत भी उसमे हाईल (रोक) रही । इस्लाम से उनकी बीवी को दिलचस्पी ना होना उनको घुन की तरह खाती रही और वह दिलके ब्रीमार हो गये ।एलोपैथीक इलाज कारगर ना हुआ तो मौलाना साहब ने उनको युनानी दवा और कुछ खमीरे वगैरा बताए। अल्लाह का करम कि वह दो माह मे तकरीबन बिल्कुल ठीक हो गये । मौलाना साहब ने उनको मश्वरा दिया कि वह अरब मुल्कों मे चले जाएँ और अपनी बीवी को वहीं बुला लें । उनको माहौल मिल जाएगा । अल्लाह का शुक्र है ,उनको सऊदी अरब मे मुलाज़ेमत मिल गई और अब गुजिश्ता माह उन्होने अपनी बीवी को बुला लिया है ।

उनके जाने से उनका मसअला (समस्या)तो हल हो गया मगर मै अकेली सी हो गई । डॉ.रीना जिनका नाम आपके अबी के मश्वरे से फातेमा रखा गया था । उनके शौहर पर डॉक्टर वलीयुल्लाह काम कर रहे थे । अब उसमे कमी आयी है मै ज़रा खुलकर उनसे बात नही कर सकती।

सवालः क्या आपके वालिद और वालिदा को भी आपके मुसलमान होने का इल्म हो गया है ?

जवाबः हाँ मैने अपने वालिद को साफ साफ बता दिया है उन्होने खुश दिली से कुबूल नही किया । मगर अब रफ्ता रफ्ता उनकी कम अज कम नागवारी (नाराज़ी) कम होती जा रही है ।

सवालः आपकी शादी हो गयी या नही ?

जवाबः मेरे वालिद मेरे शादी के सिलसिले मे छ:सात साल से फिक्रमंद है। बहुत अच्छे अच्छे रिश्ते खुद उनके 'शागिर्दो (शिष्यों)के आए।मगर मेरे अल्लाह को कुछ और ही मंजूर था । इसलिए मै अपने को तैयार ना कर सकी और DM का बहाना करके मना कर दिया । मैने मौलाना से कई बार अपने इस्लाम के

ऐलान की इजाज़त मांगी मगर उन्होने अभी खामोशी से घर वालों पर काम करने को कहा। जब मैंने अपनी नमाज़ रोज़ा की तकलीफ का जिक्र किया तो मौलाना साहब ने डॉ. वलीयुल्लाह के जाने के बाद मुझे भी किसी अरब मुल्क मे मुलाज़ेमत के बहाने जाने को कहा और डॉ. वलीयुल्लाह से भी उन्होंने फोन पर किसी जगह के लिए बात की । अलहम्दुलिल्लाह जद्दाह मे किंग अब्दुल अजीज़ अस्पताल मे मेरा तकर्रुर (नियुक्ती) हो गया है और मुझे दो साल के लिए छुटटी मिल गई है। तीन माह से मै तैयारी मे छुटटी पर हूँ ।

अस्माबहन ! आपने शादी का ऐसा सवाल किया है कि यह सवाल खुद आपके लिए लतीफ़ा है कि शायद आपके इल्म मे हो कि PGI चंदीगढ के एक सर्जन डॉक्टर असअ़द फरीदी से आपका रिश्ता आया था और वह बहुत कोशिश मे थे की आपसे उनका रिश्ता हो जाये । वह अपने अस्पताल की तारीख मे शेरवानी और दाढीवाले अकेले डॉक्टर थे । मगर मुकद्दरसे आपका रिश्ता अलीगढ मे हो गया था । मौलाना साहब ने एक बार मुझसे मालूम किया कि अगर आप राज़ी हो तो मै कोशिश करुँ । मैने मौलाना साहब से कहा की मेरे लिए तो इससे ज़्यादा खुशी की कोई बात नही हो सकती । मगर एक तरफ तो आप इस्लाम का ऐलान करने की इजाज़त नही देते दूसरी तरफ यह फैसला किस तरह हो सकता है? उन्होने मुझसे कहा है कि आप पहले राज़ी हों तो मै मसअला हल करता हूँ । मैने मंज़ूरी दे दी । उन्होने डॉ.असअ़द और उनके वालिद और वालिदा से मुझे मिलाया। दोनो तरफ लोग मुतमइन और खुश हुये । उन्हों ने चंद लोगों को बुलाया और मेरा निकाह कर दिया । अल्लाह का करना डॉ.असअ़द का पोस्टिंग भी जद्दाह किंग अब्दुल अजीज़ अस्पताल मे हो गयी उन्होने भी अप्लाय कर रखा था । वह जद्दाह 6 सितंबर को चले भी गये । मेरा वीज़ा वगैरा आनेवाला है । खुदा करे जल्दी आ जाये । मेरी ख्वाहिश है कि अल्लाह तआला इसी साल ही हज करा दे ।

सवाल: एक दाढी शेरवानी वाले मुसलमान से शादी आपको अपने माहौल के लिहाज़ से अजीब सी नही लगी ?

जवाब: अलहम्दुलिल्लाह बिल्कुल नही । मेरे अल्लाह का शुक्र है की इस्लाम की हर बात मुझे अंदर से पसंद है । सच्ची बात यह है की इस्लाम मेरे अंदर का

फितरी महजब (स्वाभाविक धर्म)है जब मैने सुना की मेरे शौहर डॉक्टर असअ्द PGI की तारीख मे शेरवानी दाढीवाले अकेले डॉक्टर है तो मेरा दिल चाहा कि मै इस्लाम का ऐलान करके बुर्का ओढ लुँ और ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टिट्यूट ऑफ मेडीकल साईंस मे अकेली बुर्के वाली डॉक्टर बनुँ । मगर मौलाना साहब ने मेरे इस जज़्बे की बहुत हौसला अफजाई करते (हिम्मत बढाते)हुए अभी दो चार साल सऊदी अरब रह आने को कहा । मेरा खयाल है और मुझे इस खयाल से भी मज़ा आता है कि पूरे अस्पताल मे अकेली बुर्के वाली नवमुस्लिम डॉक्टर पूरे अस्पताल के लोगों के इस्लाम के जानने की तरफ एक कदम ज़रुर होगा ।

सवाल: आपने अपने वालिदैन की इजाज़त के बगैर शादी करली । इससे आपके वालिदैन (माता पिता)को तकलीफ नही होगी?

जवाब: मेरा निकाह तो अचानक ही हो गया । मगर मौलाना साहब ने मेरे वालिद वालिदा को जब लडके को दिखाया और बताया की पैसे अंगूठी,जहेज़ के बगैर यह शादी हो गयी और समाज के झगडे से बचने के लिए ये करेंगे कि पहले डॉक्टर असअद साहब जायेगे और बाद मे डॉक्टर शालनी जायेगी किसी को पता भी ना लगेगा और बाद मे यह ख्याल रहेगा कि सऊदी अरब जाकर यह शादी हुई होगी तो बिरादरी और अजीज़ों को ज़्यादा बुरा नहीं लगेगा ।वे राज़ी हो गये खुसूसन डॉ.असअद को देखकर बहुत खुश हुये।बार बार मुझसे मेरे वालिद कहते की शालनी तेरी किस्मत है।चाँदसा दुल्हा तुझे मिल गया । वाकअी वह मुझसे बहुत खुबसुरत है।वह डॉक्टर असअद को देहली एयरपोर्ट तक छोडने आये और बहुत प्यार भी किया ।

सवाल: वाकई आप बहुत खुश किस्मत है । अल्लाह ने गैब से आपका ऐसा अच्छा इंतेजाम (व्यवस्था) किया ?

जवाब: बिला शुब: (नि:संकोच)मेरे अल्लाह का बहुत करम है।मै जब भी खयाल करती हूँ । अपने अल्लाह के हुजूर सज्दे मे देर तक पड जाती हूँ । वाकई मै इस लायक कहाँ थी? कुफ्र और शिर्क के अंधेरे मे मुझे इस्लाम नसीब हुआ ये इस गंदी पर मेरे मालिक का करम है ।

सवाल: आपने अपने घरवालों को इस्लाम की दअ्वत नही दी ?

जवाब: अल्लाह का शुक्र है मैं रफ्ता रफ्ता काम कर रही हूँ और अब इस्लाम से

उन सभी का फासला बहुत कम होता जा रहा है।

सवाल: अरमुगान के वास्ते से मुसलमानों को आप कोई पैगाम देना चाहेंगी?

जवाब: मेरे दिल मे यह बात आती है की "साईंस और टेकनॉलॉजी की इस तरक्की याफ्ता (प्रगतीशील)दुनिया को सिर्फ इस्लाम की ज़रुरत है और इस्लाम के बगैर यह दुनिया बिल्कुल कंगाल है । अस्मा बहन ये मै कोई शायरी नही कर रही हूँ । बल्कि इस तरक्की याफ्ता (प्रगतीशील)दुनिया को बहुत करीब से देखकर यह बात कहती हूँ । इस कंगाल दुनिया को सिर्फ इस्लाम बना सकता है वरना यह दुनिया दिवालीया हो गई है । इसके दिवालियेपन और अंधेरे का इलाज सिर्फ और सिर्फ इस्लाम है । और यह दौलत सिर्फ और सिर्फ मुसलमान के पास है । फिर भी इस कंगाल दुनिया से हम मरऊब (प्रभावित)क्यों है ? मुझे अफसोस (दु:ख,खेद)और हैरत (आश्चर्य)होती है जब मै यह महसूस (बोध)करती हुँ कि इस दिवालिया और अंधेरी दुनिया मे अपने पास दिवालियापन का इलाज और सबसे बडी दौलत रखने के बावजूद हम एहसास -ए -कमतरी (न्यूनगंड)मे मुब्तला क्यों है ? हमे इसपर शुक्र करना चाहिये बल्कि फख्र होना चाहिये और इस दिवालिया दुनिया पर तरस खाना चाहिये हमे इस माना मे अपने को सुखी और दुनिया को हकीर समझना चाहिये ।बस्स......

सवाल: बहुत बहुत शुक्रिया डॉक्टर सफिया ! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाही फी अमानील्लाह

जवाब: आपका शुक्रिया अस्मा बहन । व अलैकुम अस्सलामु व रहमतुल्लाही व बरकातुहू ।

(मुस्तफाद - माहनामा अरमुगान वलीयुल्लाह फुलत दिसंबर 2005 स.13-19)

••••••

5 इस्लाम की सतरपोशी पसंद आई और मै ईमान लाई

मेरा पैगाम है कि एक दूसरे की खैर ख्वाही करें । हिंदुओं से मेल जोल रखें । ये सरहदें और दूरीयाँ गिराएँ । हिंदू कौम मुस्लिम धर्म के बारे में जानने के लिए बेचैन मुतजस्सिस (खोजी,उत्सुक)रहती हैं । करीब आएँ। लोग जोंक दर जोंक इस्लाम में खिंचे चले आएँगे ।

<u>सफूरा यासमीन</u>

मैं ने शहनाज बहन की दिली तमन्ना और कोशिश से नवमुस्लिम जमीला साहिबा को गरीब खाने पर आने की दअ्वत दी। अहलिया मौलाना ज़ुल्फिकार की बहन अफसाना साहिबा के हमराह जमीला साहिबा तशरीफ लाईं । सलाम व दुआ के बाद चाय पानी के दौरान ही शहनाज़ बहन कापी पेन लेकर बैठ गई । तब मैं ने कहा कि अरमुगान और अल्लाह की पुकार जैसे शुमारे में जो भाई बहन अपनी असल की तरफ यानि ईमान के अंदर आ जाते हैं तो लोगों की तरगीब के लिए उन के इंटरव्यु छापे जाते हैं और उस के बेहद अच्छे नताइज सामने आ रहे हैं और यह बेहद मकबूल है शहनाज़ बहन बोली कि हिंदुस्तान में ही नहीं,सऊदी अरब,बर्तानिया, अफ्रीका में भी ये इंटरव्युज़ बेहद मकबूल हैं और नफा दे रहे हैं और लोग अपने खर्च से उन की कापियाँ कराकर तकसीम कराते (बाँटते)हैं, तब जमीला बहन तैयार हुईं । वरना यह नजरिया (दृष्टीकोण)रखती थीं कि मैं जो कुछ हूँ खुदा के लिए हूँ और खुदा से अज्र (बदला)की तालिब (इच्छुक) हूँ दुनिया की शोहरत (प्रसिध्दी)भी अजीज़ नहीं , हस्बे मामूल (हमेशा की तरह)हमारा पहला सवाल था ।

सवाल : आपका पहला नाम क्या था ?

जवाब : जमीला बहन । मेरा पहला नाम पुष्पा था ।

सवाल : आप के वालिद का नाम ?
जवाब : मेरे वालिद का नाम शिवराम भगत था, वालिदा का नाम सुमी बाई था।
सवाल : आपका तअल्लुक किस खानदान से और किस जगह से था ?
जवाब : मेरा तअल्लुक पंजाब राजपूरा जिला पटियाला के भगत खानदान से था। हम लोग तीन बहनें थीं ।
सवाल : आप ने इस्लाम क्यों कुबूल किया ? और अपने पुराने मज़हब को कैसे छोडा ?
जवाब : सीधा सच्चा जवाब तो यह कि मेरे अल्लाह को मुझ से प्यार था और मेरे रब ने फिर करम किया कि ईमान की दौलत से नवाज़ा और कुफ्र को मुझ से दूर किया और बज़ाहिर (स्पष्टत:)मुस्लिम औरत की सतरपोशी (शरीर ढकना)मेरे इस्लाम लाने का सबब बनी (आगे बोली) मेरी बहन । मेरी एक लंबी दास्तान है। शहनाज़ बहन, अफसाना बहन और मैं तीनों बरजस्ता (उत्सुक्ता से)बोले।
सवाल : हाँ हाँ।वही तो आप सब बताइये और बिला झिझक बताइये?
जवाब : (तब उन्होंने अपनी हयात को परत दर परत खोलना शुरु किया) हमारा घराना गरीब था । मेरी वालिदा की बहन की शादी एक बडे घराने में हुई । जब मेरी शादी हुई उस वक्त मेरी उम्र 20 साल थी । मेरी खाला ने सोचा की मेरी भांजी भी बडे घराने में आजाए, इसलिए उन्होंने अपने देवर के बेटे से जो की सीबीआई अफसर थे । मेरी शादी करा दी । मेरी वालिदा अमीर गरीब के खौफ (डर)की वजह से शादी पर आमादा ना थी । एक तरह से जबरदस्ती यह शादी करायी गई । शादी के बाद मालूम हुआ की जिन से मेरा बंधन बंधा है वह बेहद लापरवाह और शराबी हैं । ससुराल में मेरा हाल तो नौकर से भी बदतर था और मैं कठपुतली की तरह ससुराल मैके में घुमाई जाती रही । 1980 में मेरी शादी हुई और 1983 में मेरा बेटा पैदा हुआ । उस वक्त मैं बेहद सितम रसीदा हालत (अन्याय ग्रस्त)में अस्पताल में थी । मेरी माँ ने भी मेरी परवाह छोड दी । बेचारी क्या करती हालात ही ऐसे थे । मैं ने लोगों के झाडू बर्तन तक किये और ऐसे हालात में दो बेटे और एक बेटी की खुदा ने मुझे माँ बना दिया। अल्लाह ने मुझे दिमाग बहुत तेज दिया। मैंने 1980 में सिलाई कढाई के कारखाने में 250 रुपये माहाना तनख्वाह पर काम शुरु किया । वहीं से मेरा इस्लाम से तअल्लुक जुडा ।

वह कारखाना किसी हिंदु का था, लेकिन उस में नौकर मुसलमान थे और मुसलमान बरेलवी थे । मैं साडी पहनकर कारखाना जाती और मेरा ब्लाऊज बगैर आस्तीन का होता था । मुस्लिम नौकर लडके बोले, '' बहन जी आप हमारा ईमान खराब करती हैं । मैं बोली, ईमान क्या? वे बोले, हम लोग मुसलमान हैं और हमारे यहाँ मुस्लिम औरत सतरपोश यानी ढकी छुपी रहती है और इसलिए मर्दों का ईमान भी सलामत रहता है और औरतों का भी ।

मैं ने कहा, ईमान क्या है ? बोले, एक कलमा है जो पढ लिया जाता है । मैं बोली की, वे तो मुसलमान औरतें हैं अपने धरम की वजह से करती हैं । मुस्लिम वर्कर बहुत दर्दमंदी से बोले कि, बहनजी आप चाहें जो भी हों हमारा दिल चाहता है कि आप भी हमारी माँ बहनों की तरह कपडे पहनो । मेरे दिल में उन के ईमान की और सतरपोशी की बात घर कर गई और मैं सोचने लगी कि कैसा अच्छा ईमान है उन का और उन के यहाँ किस कदर औरत की इज्जत की जाती है, मेरा दिल बेकरार हो उठा उन वर्कर के ईमान के अंदर आने के लिए । अगले दिन में मैं ने कहा, भाई मैं तुम्हारे ईमान में आना चाहती हूँ, मुझे क्या करना होगा ? एक कलमा है वह पढना होगा । मैं ने कहा, जल्दी मुझे पढाओ । बोले हम नहीं पढा सकते, हमारे बाबा पढायेंगे और वह फ्लाँ दिन आते हैं । अब मुझे उस फ्लाँ दिन का बेकरारी से इंतेजार रहने लगा । खुदा खुदा करके वह दिन आ गया। एक लंबासा चोगा और तरह तरह की गले में मालाएँ पहने और हरी टोपी पहने बाबा कारखाने में तशरीफ ले आए और उन्होंने रुमाल पकडवाकर कहलवाया, स्वल्ली अलैका या मुहम्मद, या अल्लाह, या मुहम्मद, या अली अलमदद कर मदद (जमीला बहन ने जब यह कलमा सुनाया तो हमें हँसी भी आई और तअज्जुब (आश्चर्य) भी हुआ) हम लोग बीच में बोले यह कलमा नहीं है । वह बोली की हाँ हाँ यह उस जमाने का मेरा इमान था । भई जैसे कहा, जो बताया, मैं ने कहा और पढा और बहुत जमाने तक हर वक्त यह विर्द जबान पर रखती थी और फिर बताया गया कि कब्रों पर जाना है । मैं उन बाबा की मुरीद बन गई और मैं ने हिंदुस्तान के बडे बडे मजारों पर हाजरी दी और जैसे वहाँ होते देखती, करती ।

इधर मैं ने साडी की जगह सूट पहन्ना शुरु किया और खुद कपडे

डिज़ाईन करना शुरु किया और मेरी डिज़ाईन ड्रेस की बहुत कीमत लगी । मैं ने अलग से मशीन खरीदी और खुद डिज़ाईन करके ड्रेस तैयार की और बाज़ार में फरोख्त की, मेरा कारोबार चल निकला, 1982 में ओखला फेस-2 में मैंने अपने कारखाने की बुनियाद डाली और अलग से मुस्लिम वर्कर रखे । मुझे कमाने की धुन लग गई और अल्लाह ने भी इस काबिल बना दिया कि मैंने नेहरु नगर में 3 मंजिला एक पूरा कैंपस खरीदा । हाँ एक बात और याद आई । जब मैं कारखाने में काम करती थी । बाबा को खानकाह की ज़रुरत थी । मेरी माँ ने एक दुकान मेरे नाम कर दी थी, वही उन की कुल जायदाद थी। बाबा को खानकाह (आश्रम, मठ)के लिए ज़मीन की ज़रुरत थी सुल्तानपूर गौसाबाद में मैंने अपनी माँ से कहा, वह दुकान के कागज़ात दे दो और मुझे एक मकान खरीदना है । मैं ने माँ से झूठ बोला, वरना माँ कभी कागज़ात ना देती । मैं ने कागज़ात लेकर वह दुकान उस ज़माने में 12 हज़ार की फरोख्त कर (बेच)दी । 11 हज़ार उन बाबा को खानकाह के लिए दे दिए । एक हज़ार खुद रखे उस वक्त सर्विस करती थी 250 रुपये तनख्वाह 3 बच्चे और खुद और मकान किराये का । एक हज़ार किराया जमा किया और दिल्ली कोर्ट पटियाला हाउस में जाकर बाकी पैसे से इस्लाम कुबूल करने की कारेवाई पूरी की । बस फिर खुदा के नाम पर देने की धुन सवार थी। मैं चाहती थी कि कमाऊँ और खुदा के लिए लुटाऊँ । मुझे कमाने की धुन लग गई । नेहरु नगर में खुदा ने जायदाद (संपत्ती)दिलवा दी वहाँ जो वर्कर काम करते थे । वे वर्कर नमाज़ पढते थे । वे नमाज़ पढने जाते और बाहर जाकर नमाज़ के बहाने पिक्चर देखने चले जाते और मैं नमाज़ियों को ही काम देती थी मगर वर्कर चालाकी करते।मैं ने सोचा मुझे ऐसी जगह कारखाना की तलाश करनी चाहिए जहाँ मस्जिद कारखाने से मिली हुई हो। तब मै ने हाजी कॉलोनी, गफ़ूर नगर में ज़मीन खरीदी और कारखाना उधर शिफ्ट किया लेकिन उधर चूँकी मैं अकेली काम करती थी और मुस्लिम एरिया में मस्जिद की वजह से मैं शिफ्ट हुई थी ताकि वर्कर नमाज़ ज़रुर पढें और देर तक गायब भी ना हों कि कारखाने मे काम का नुकसान ना हो लेकिन उधर के मुसलमानों ने मुझे बहुत तंग किया कि यह कैसी मुसलमान बनी हैं लडकों से काम कराती हैं, तरह तरह की बातें ।मेरा जहन परेशान हो गया हत्ताकि मेरा कारखाना ठप होने लगा और मैं बच्चों के पास

नेहरु नगर चली गई । काम बिल्कुल बंद कर दिया की इस्लाम में वर्कर से काम करवाना जायज़ नहीं और मैं गरीबी में चली गई । फाके होने लगे । मैंने कतरन बेचना शुरु की और फिर कुछ सहारा शुरु हुआ । इधर कुछ और अच्छी मुसलमान बहनें मिलीं । उन्होंने कहा आप को गलत बताया गया,आप अपना कारोबार शुरु कीजिए ये अफसाना है ,इसके शौहर मौलवी ज़ुल्फिकार ने मेरी बडी रहनुमाई (मार्गदर्शन)की । उस ने मुझे अपनी माँ बना लिया और हकीकी माँ की तरह मेरा ख्याल रखने लगा । मैं ने हाजी कॉलोनी में कारखाना शुरु किया और नाइटी टॉप और पटियाला शलवार की डिज़ाइनिंग करके मार्केट में फरोख्त शुरु कर दी और यहाँ भी मैं ने इमारत बनाली और खुद भी उधर ही शिफ्ट हो गई और तब मै ने जाना कि जिस इस्लाम पर मैं चलती हूँ,कब्र परस्ती,वगैरा वह सही नहीं । कलमा सही तरह पर यहीं पढा । नमाज़ यहाँ आकर सीखी । कुरआन करीम पढा । तब्लीगी जमात की बहनों से मेलजोल पैदा हुआ । मैं ने जब नमाज़ सीखी और उस को अदा किया तो समझ में आया कि हदीसे नबवी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम - "नमाज़ मोमिन की मेराज (उँचाई) है " वाकई मेराज़ है । (यह सब कहते हुए आबदीदा (आँसुपुर्ण)हो गईं हमें उनकी कैफियत देखकर उनपर बडा रश्क (इर्ष्या)आया । हम ने कहा कि आप तो बडी वली सिफत (इशमित्र,गुणी)और उंची हस्ती हैं) जमीला बहन बोली मैं तो कुछ भी नहीं और फिर तडप से बोली कि किसी तरह काश मेरी वह नमाज़ की कैफियत लौट आए और मुझ से कहने लगी कि कोई अमल बताओ कि मुझे नमाज़ में पहले की तरह मामला हो । हम ने कहा कि अल्लाह बेहद रहीम व करीम है उस से गिडगिडाकर जो मांगो मिलता है। जमीला बहन बरजस्ता बोलीं कि मेरे साथ तो हमेशा ही जब जब माँगा सब कुछ मिला,बंदा बडा ना शुक्रा है,बेवफा है,उसे माँगना ही नहीं आता,माँगता ही नहीं हम ने कहा ।

सवाल : अपने कोई खास लम्हात (क्षण)बताइये ?

जवाब : रमजानुल मुबारक का महिना था । रोजे बराबर रखती रही,नमाजें भी अदा करती । लेकिन नमाज खडे होकर ना पढ सकती मुझे शुगर हो गई और घुटनों ने काम करना बंद कर दिया। जहाँ मैं रहती हूँ वहाँ मेरे ऐसे पोर्शन हैं कि बा आसानी किरायेदार भी रखती हूँ । लैलतुल कद्र (रमजान की 27)की रात आ

गई । सब लोग खडे होकर नवाफिल में मसरुफ (मग्न) थे । मैं भी उसी रात जाग रही थी । पैरों के दर्द की वजह से उठ ना सकती थी । किसी मुस्लिम बहन ने भी मुझे इस रात के बारे में कुछ खास ना बताया और मेरा दिल फटा जा रहा था कि कोई आए मुझे तसल्ली दे । इस रात की अज़मत (बडाई)के बारे में मुझे बताए । मैं ऐसे में कैसे इबादत करुँ । मेरी मदद करें फिर बेबसी की कैफियत तारी हुई मैं बैठे बैठे सज्दे में जा गिरी और इसी तरह मालिक के सामने आहोफुगाँ (रोना धोना)की तडप तडप कर रोई । रोते रोते ज़ोर ज़ोर से मेरी चीखें लग गईं । मुझे कुछ होश ना रहा बस खुदा और मैं फरियादी (याचक)और बेबसी ऐसी की इबादत और नमाज़ भी खडे होकर ना पढ सकूँ । उस का एहसास हुआ कि यकायक मुझे लगा कि मैं खडी हो सकती हूँ और मैं सीधी खडी हो गई और उस रात मैं ने खडे होकर खूब नमाज़ अदा की और मैं चलने फिरने से माज़ूर (मजबूर)चलने फिरने लगी और कई साल तक मैं ऐसी रही कि मुझे कोई बिमारी नहीं थी । शुगर भी खत्म हो गई आगे बोली की बस बहन हम बहुत निकम्मे हैं । फिर दुनिया दारी में फंस गई और फिर वही बिमारी ।

मैं ने फज़ाइले आमाल पढना शुरु की । जब मैं ने यह पढा कि जिसका बेटा हाफिज़े कुरआन होगा उस को आखिरत (परलोक)में उस बेटे की माँ को जन्नत में ताज पहनाया जाएगा । मैं तडप गई कि अल्लाह अब मैं क्या करुँ मेरे दो बेटे हैं उन की शादी हो चुकी । बच्चे भी हो गए और क्यों कि मैं बस स्वल्ली अलैका या मुहम्मद अलमदद कर मदद और कब्रों पर जाने को मुसलमान समझती थी बस खुद ही मुसलमान बनी रही । वे खानदानी हालत पर रहे, उन की शादी मैं ने गैरमुस्लिम लडकी से की और मुझे फिर इस नेअमत से महरुमी ने दुखी कर दिया । मैं ज़ारोकतार (लगातार)रोई कि सब हाफिज़ों की माओं को ताज पहनाया जाएगा। मेरे लिए कोई ताज ना होगा मेरा कोई बेटा हाफिज़ नही । एक पडोसन दीनदार (धार्मिक)थी । मेरे हर वक्त के रोने को देखकर कहने लगी, तुम मेरे बेटे को पढालो ।हाफिज़ बना लो दूसरों ने कहा कि कोई गरीब बच्चा पढालो । मैं ने गरीब बच्चे की तलाश शुरु कर दी । एक बच्चा जिसका नाम एहतेशाम था उस को पढाने के लिए सहारनपूर मदरसा सोकडी में छोडा और वह अलहम्दुलिल्लाह हिफ्ज़ कर रहा है । फिर मुझे लोगों ने कहा ऐसे ताज नही पहनाया जाएगा आप

बिन माँ बाप का बच्चा तलाश करो उस को हिफ्ज़ कराओ । अब मैं और रोने लगी और लगता था कि रोते रोते जान चली जाएगी कि हाय महरुमी मुझे ताज ना पहनाया जाएगा । अब मैंने किसी गैरमुस्लिम गरीब की झुग्गी झोंपडी में तलाश शुरु कर दी । एक बच्चा खुदा ने मुझे मिलवाया, जो बिन माँ बाप का है अब्दुल्लाह उस का नाम रखा । उसे रायपूर, सहारनपूर की तरफ लेकर गई और उसे पढा रही हूँ । माशाअल्लाह (ईशकृपा)उसका 12वाँ पारा है । रायपूर में पढ रहा है । दोनों बच्चों के लिए कपडा खर्च वगैरा ले जाती हूँ । मेरा पोता मेरे पास रहता है 13 साल का है । उसे हौजवाली मस्जिद में भेजा हुआ है । अमन नाम है दुआ करो वह भी हाफिज़ हो जाए । आमीन । यह सब सुनते हुए हम सन्नाटे में गुंग बैठे हुए थे कि या अल्लाह फज़ाइले आमाल की हदीस पढी और किस तरह अमल पैरा हुई और हमारा क्या हाल है कि हम पैदाइशी मुसलमान हिफ्ज़ तो हिफ्ज़ नाज़ेरा पढाना भी कस्रे शान और सबसे पहले इंग्लिश मीडियम स्कूल की दौड । रुआँ रुआँ खौफे खुदा से खडा हो गया कि हमारे इस स्कूल की वजह से खुदा हमारे साथ कैसा मामला फरमाएगा । मैं ने कहा, जमीला बहन आप काबिले मुबारकबाद हैं दुआ करें अल्लाह हमें भी आप की तरह बना दे । आमीन । सुम्म आमीन ।

हम हालाँकी काफी वक्त ले चुके थे मगर दिल चाहता था कि अपनी रुदाद सुनाई जाए और हम सुनते जाएँ । हम ने कहा और कुछ खास बताइये । बोली - फज़ाइले आमाल में पढा कि सूद खोर के साथ यह मामला होगा कि उस के पेट में साँप बिच्छू होंगे ।

हमारे यहाँ हफ्ते में इज्तिमाअ होता है । और मैं पंजाब वगैरा भी जाती हूँ। वहाँ हिंदू बहनें मेरा वअ्ज़ (प्रवचन)सुनती हैं । जालंधर में मैं ने जब यह सूद वाली हदीस सुनाई तो सब ने यकीन कर के वहाँ सूद लेना देना छोड दिया ।हिंदु होकर और वे बेचैन रहती है कि अपने धर्म की और बात बताओ । तब मैंने कहा,आप प्रोग्राम बनाएँ इंशाअल्लाह हम लोग भी चलेंगे दावत के उपर बात करेंगे । बोली की जी । लोग प्यासे हैं मुझे तो कुछ ज्यादा मालूम नहीं,बस फज़ाइले आमाल और कुरआन हिंदी तर्जुमे से पढा है आप लोग अगर आगे आएँ तो लोग प्यासे खडे हैं। ज़रा से इशारे की देर है । दामने इस्लाम में आ जाएँगे (तब और अपने उपर शर्मिंदगी हुई और अपने साथ तमाम मुस्लिम लोगों से

शिकवा (तकरार)हुआ कि वाकई हम अपने ही दायरे में रहते हैं,खाना पीना और अपने बच्चों को खिलाना पिलाना और इंजीनियर,डॉक्टर वगैरा की आरज़ू रखना, यही मक्सदे हयात (जिंदगी का निशाना)समझे हुए हैं । अल्लाह से हम ने तौबा की और कुछ करने का अज़्म किया) आगे सिलसिल ए कलाम (बात)को ज़ारी रखने के लिए हम ने पूछा --

सवाल : शहनाज़ बहन बता रही थीं कि आप शौहर से 25 साल बाद मिली हैं और आप के शौहर भी मुसलमान हो गए हैं और आप का दो बारा निकाह हुआ है, यह सब क्या किस्सा है ?

जवाब : जमीला बहन बोली कि मेरे शौहर ने 25 साल से मेरा और मेरे बच्चों का कोई खर्च नहीं उठाया । अब वह पिछले दिनों रिटायर्ड हुए और उन्होंने फंड के पैसे से एक फ्लॅट खरीदा और हालात कुछ ऐसे बने कि वह फ्लॅट उन्हें गिरवी रखना पडा, नाचार मेरे नेहरु नगर वाले फ्लॅट में जहाँ मेरे दोनों लडके अपनी फॅमिली के साथ रहते हैं । उन को वहाँ आना पडा मैं बराबर सब रिश्तेदारों से मिलती हूँ जब कुछ दिन बाप को बेटे और बहू के पास रहते हो गए तो बडी बहू ने उन्हें बाहर कर दिया । अब यह दूसरे बेटे के घर में गए । देखती क्या हूँ कि एक दिन मेरी बडी बहू उन को खाना देती है ऐसे जैसे किसी कुत्ते को डालते हैं। मैं ने कहा, तुम इस तरह करती हो, इस तरह तो किसी कुत्ते को भी ना देते हों । खैर मैं हस्बे मामूल खर्च देने के लिए रायपूर हाफिज़ बच्चे के पास गई । वहाँ एक देहली जामिया मिल्लिया का बच्चा सर्विस छोडकर गया है अब हिफ्ज़ करता है । रायपूर मे रहता है । खुदा ने उसे दीन पर लगा दिया है । वह बोला अम्माँजी । मुझे आप से एक बात करनी है उसे मेरी सब कहानी का हाल उस नवमुस्लिम बच्चे ने बता दिया होगा । बोला आप के शौहर मुश्रिक हैं । आप पर फर्ज़ है कि आप अपने शौहर को दीन की दअ्वत दें ।मुझे उन के सुलूक की वजह से उन के साथ कोई तअल्लुक महसूस नहीं होता था । मैं ने कहा,बेटे वह तो बहुत बडे शराबी हैं,शराब के बगैर वह रह नहीं सकते । वह बच्चा बोला,अम्माँ अगर आप को शराब का ग्लास भर कर दीन की दअ्वत देनी पडे । आप दीन की दावत दें। यह दअ्वत देना इतना ज़रुरी है । मुझे उम्मीद है, इंशाअल्लाह वह ज़रुर ईमान ले आएँगे आप ऐसे जज़्बे वाली हैं । आप यह काम हर हाल में करें । अब मैं घर

आ गई । मैं ने फोन उठाया उधर से फोन उन्होंने उठाया । मगर मैं कुछ हिम्मत ना कर सकी । अजीब शर्म महसूस हुई, मगर दिल में अल्लाह से गिडगिडाई - ऐ अल्लाह । ईमान की दअ्‌वत दे दूँ ऐसी हिम्मत अता कर । मेरी बहन हिंदू है मगर वह भी सब कलमा दरुद जानती है वह भी बहनोई की ऐसी दुरगत से दुखी थी । वह रोज़ कहती की तू मुसलमान बन जा तेरी जिंदगी बन जाएगी। देख मेरी बहन की मुसलमान बनने से कैसी जिंदगी बनी हुई है । रोज़ राज़ कहती रही, एक दिन देखती क्या हूँ कि जबरदस्ती मेरे शौहर को मेरे घर ले आई है । मैं नाराज़ हुई की तू इस मुश्रिक (द्वैवतवादी) शराबी को क्यों लेकर आई है । वह बोली, यह मुसलमान बनने को तैयार है । गफ्फार मंजिल की मस्जिद में सुबह 10 बजे किसी मौलाना का बयान हुआ । उन को वहाँ लेकर गए और वहाँ पर मौलाना ने उन को कलमा पढाया और निकाह भी पढाया । उन्ही का बयान था । वह कलमा पढकर जाने लगे। मैं रुठी रुठी थी । मेरे बेटे ज़ुल्फिकार ने उन से कहा मेरी जमीला माँ को समझाइए । पर्दा किये बैठी हैं । पर्दा छोड दें और नाराज़ी भी खत्म कर दें । मौलाना ने मुझे समझाया मेरी समझ में बात आ गई । मगर 25 साल से अलग रहती हूँ । अजीब सा हिजाब आता है । वैसे जितना कुछ हो रहा है । खिदमत कर रही हूँ । आज 22 दिन हो गए, शराब को हाथ तक नहीं लगाया है ।

सवाल : आप उन की नमाज़ वगैरा के बारे में और तमाम अर्काने इस्लाम (इस्लाम के कार्य) के बारे में क्या फिक्र करती हैं ?

जवाब : माशाअल्लाह । पाँचो वक्त मस्जिद में जा रहे हैं । किसी ने कहा कि फुलत मे एक बहुत बडे हज़रत जी हैं उन से ज़रुर मिलवाइये वह 3 दिन के लिए फुलत गए, मगर हज़रत जी नहीं मिल सके । हम ने कहा आप उन को देहली बटला हाऊस दारे अरकम में भेजिए । वहाँ उन को फायदा होगा और हज़रत जी से मुलाकात भी हो जाएगी । जमीला बहन कहने लगीं । आप की बडी मेहरबानी होगी अगर आप उन की तरबियत का इंतेज़ाम फर्मा दें । मैं ने अपने दिल में ख्याल किया कि काश जगह जगह पर तरबियत सेंटर कायम हो जाएँ और खुदा से दिल ही दिल में दुआ की कि रब्बुल आलमीन (संसारों का पालनहार) मुझे इस काबिल बना दे कि नवमुस्लिम भाई बहनों को आशियाना (छत्रछाया) फराहम (उपलब्ध) कर सकूँ और तरबियत के लिए दर्दमंद, पुरखुलूस स्कॉलर जमा कर

दूँ कि उन लोगों को लगे कि हम इस्लाम में आकर अमन में आ गए, जन्नत मे आ गए। मुहब्बत की छाँव में आ गए।(हालाँ कि काफी देर हो चुकी थी मगर सब से अहम सवाल उन की औलाद के बारे में पूछना बाकी था मैं ने कहा।)

सवाल : जमीला बहन। जब आप शुरु में अलाहिदा (अलग) और अपने बलबूते पर अपने बच्चों के साथ हैं तो फिर आपने अपने बच्चों को हिंदू कैसे रहने दिया?

जवाब : (वह बोलीं) बस किसी मुसलमान ने मुझे कुछ बताया नहीं सच पूछिए तो इधर हाजी कॉलोनी में सही मुसलमान मैं खुद ही बनी हूँ। वैसे मेरे दोनों लडके बिस्मिल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह सब पढते हैं। बडी बहू तो कट्टर है लेकिन छोटी बहू नर्म दिल है। छोटा बेटा मेरे साथ काम करता है बल्कि अब फॅक्ट्री दुकान सब कुछ वही संभालता है। बस बहू से डरता है।

हम ने कहा। ऐसा करते हैं कि आप के बेटे की बीवी को दावत खाने पर बुलाते हैं और हम कुछ कोशिश करके देखते हैं। वह बहुत खुश हो गईं। बोलीं, नहीं मै पहले आप की दावत करुँगी और अपनी बहू को बुलाऊँगी, सवेरे अपने घर आने की दावत भी दे दीजिए। हम ने कहा की ठीक है मगर नेक काम में देर नहीं होनी चाहिए। कुछ देर खामोशी तारी रही और सब सर झुकाए बैठे थे। ऐसा महसूस हो रहा था कि हम किसी और देश की बातें सुन रहे हैं मैं ने कहा अफसाना आप भी बहुत खुश किस्मत हैं और काबिले मुबारक बाद भी कि बीच में ही जमीला बहन बोली, मेरा यह मुँह बोला बेटा ज़ुल्फिकार और बहू अफसाना मिसाली बहू बेटे हैं। मैं उन के साथ हज भी कर चुकी हूँ। और इन दोनों के लिए बेहद तअरीफी कलिमात बोलती गईं और दुआओं का दरिया बहाती रहीं और मैं सोच ही रही थी कि शहनाज़ बहन की वजह से जावेद अशरफ साहब की वजह से अल्लाह कितने अच्छे अच्छे मिसाली लोगों से हमारा तअल्लुक जोड रहा है। जमीला बहन ने जिस तरह से उन बेटे बहू की कुर्बानी, ईसार खुलूस व मुहब्बत का तज़्किरा किया। अगर लिखना शुरु कर दूँ तो इंटरव्यु और लंबा हो जाएगा और डर है छपने से रह जाए। मैं तो शहनाज, अफसाना, जमीला साहिबा की गिरवीदा (प्रेमी) हो गई और अपने हाल पर नदामत (शर्म) और शर्मिंदगी की अल्लाह दुनिया में अब भी दौरे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम की नकल करने वाले लोग मौजूद हैं और हमारा क्या होगा ? अपने में मस्त रहते हैं सच

लिख रही हूँ मेरा रोंगटा रोंगटा खौफे खुदा से काँप रहा था और काँपता है । आप सब लोगों से दुआओं की दरख्वास्त है कि अल्लाह हमें दीन की खिदमत (सेवा) के लिए चुन ले आमीन । सुम्मआमीन । अब एक और सवाल मेरे दिल में मचल रहा था कि मै ऐसी इबादत गुज़ार और खुश अखलाक मिलनसार और सदका खैरात (दान) करने वाली और तब्लीग (प्रचार) के लिए हर वक्त चलत फिरत करने वाली के अल्लाह से मामलात सरगोशीयो (बातें) भी अजीब तरह की होती हैं । हालाँ कि यह ज़रुरी नहीं, नेकी की शर्त है मगर गुमान ऐसा कुदरती होता है - मैं ने कहा ।

सवाल : कुछ खास अल्लाह की करम फरमाइयाँ (कृपाएँ) सुनाइए ?

जवाब : मैं ने एक ख्वाब देखा कि मेरा एक कमरा है जो बेहद हसीन हरे तोतिया रंग का है कि रंग का हुस्न बयान से बाहर है । वहाँ मैं और एक आदमी मस्जिद में पडे हुए हैं । बडी हसीन ना काबिले बयान औरतें, हीरे जवाहरात, जमर्रद, मोतियों के थाल लिये बैठी हैं ।

दूसरा ख्वाब की मैं ला इंतेहा उंचाई पर खडी हूँ । बेहद सफेद लिबास में और मेरे चारों तरफ बेहद शफाफ पानी, मेरी आँख खुल गई, ताबीर तो अल्लाह जानता है, क्या है ।मगर बेहद सुकून महसूस होता है एक बार देखा कि चटियल मैदान है मै और मेरा पोता अमन मेरे साथ है कि जबर्दस्त ज़लज़ला (भूकंप) आता है बडा खौफनाक मैं अलहम्दु शरीफ पढने लगती हूँ कि एक दम ज़लज़ला अल्हम्दु पढने से रुक जाता है (अब काफी देर हो चुकी थी और उन को घर जाने की जल्दी भी थी क्योंकि उन के शौहर जो कि पहले कैलाश और अब जमील अहमद हैं अकेले थे हम ने उन का शुक्रिया अदा किया और आखरी सवाल किया ।

सवाल : अरमुगान पढनेवालों के लिए कोई पैगाम ?

जवाब : मेरा पैगाम है कि एक दूसरे की खैर ख्वाही करें । हिंदुओं से मेल जोल रखें । ये सरहदें और दूरीयाँ गिराएँ । हिंदू कौम मुस्लिम धरम के बारे में जानने के लिए बेचैन मुतजस्सिस (उत्सुक) रहती हैं करीब आएँ । लोग जोक दर जोक इस्लाम में खिंचे चले आएँगे । (सलाम दुआ और आईंदा मुस्तकिल (बारबार) मुलाकात के वादों के साथ वह हमारे घर से रुखसत हुई और अब मैं सोच रही हूँ

कि सिर्फ एक जाहिल अनपढ वर्कर के सतरपोशी के ख्याल से एक बहन ईमान मे आ गई उन के ज़रिये हुफ्फाज़ और खानदान का इस्लाम में आना और तब्लीग गैर मुस्लिमों में और मुसलमानों में करना खानकाह बनवाना, मस्जिदों और मदरसों में देना दिलाना और ज़ाने कितने खैरख्वाही के कारनामे हैं और अगर जो आम लोग हैं हमारे हिंदुस्तान के और बैरुनी हिंदुस्तान के उठ खडे हों और एक जुमला ही खैरख्वाही (अच्छा चाहने) का किसी हिंदू भाई बहन से बोल दे तो बीस करोड मुसलमान हिंदुस्तान में हैं और बाकी दुनिया में कितने होंगे ।दुनिया अमन (शांती) का गहवारा बन जाएगी काश मुसलमान अपना मंसब (पद) पहचाने और अगर कुछ भी ना कर सके तो इतनी तो मेरी इलतिजा (विनती) है, ज़रुर करें कि अपने उन खूनी रिश्ते के भाई बहन के लिए रात को तन्हाई में आँखों से दो आँसू गिरा लिया करें कि अल्लाह उन के लिए ईमान की हिदायत मुकद्दर फर्मा दे।आमीन अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह ।

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान जुलै 2008]

••••••

⑥ आप की अमानत किताब ने दिल बदल दिया

एक छोटी सी किताब " आपकी अमानत आपकी सेवा में " सबीहा ने लाकर दी । उस किताब का नाम एक इंसान के लिए ऐसा दिल को छू लेने वाला है कि नाम पढकर एक अजीब तलब पैदा हो जाती है कि हमारी क्या अमानत है मालूम करें "दो शब्द" उस में मौलाना वसी ने लिखे हैं । मेरा ख्याल है कि "दो शब्द" की तो तीन लाईन पढने के बाद कोई आदमी इस किताब को पढे बगैर नहीं रह सकता और बिल्कुल मुसलमानों और इस्लाम के बारे में दिल में दुश्मनी और नफरत रखने वाला इंसान भी दो शब्दों को पढने के बाद इस किताब को गैर की बात समझ कर नहीं पढ सकता है । उस का दिल व दिमाग इस किताब के लिखने वाले को अपना सच्चा दोस्त समझकर ही इस को पढेगा । मैं इस किताब को लेकर घर आई और बस । किताब पूरी पढी । आप की अमानत ने मेरी अंदर की दुनिया को बदल दिया ।

सिदरा जातुल फौज़ैन

सिदराजातुलफौज़ैन : अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
खुदैजा : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सवाल : आप देहली कब तशरीफ लाई हैं ?
जवाब : हम तीन दिन से देहली में हैं । मेरे शौहर(पति) डॉ.साहब भी साथ थे ।

हज़रत ने हमें मर्कज़ भेज दिया था कि तीन रोज़ हम दोनों मर्कज़ में लगाएँ । बहुत ही अच्छा लगा । कल जुमेरात भी थी अलहम्दुलिल्लाह हज़रत मौलाना सअ्द साहब की तकरीर (प्रवचन) भी कल सुनने को मिली । यूँ तो वहाँ हर वक्त दीन की बातें होती रहती हैं । मर्कज़ की औरतें भी बहुत मुहब्बत से मिलीं । बहुत अच्छा लगा ।

सवाल : आप से शायद अबी ने बता दिया होगा कि अरमुगान के लिए आप से कुछ बातें करनी हैं ।

जवाब : हाँ । आज शाम को हमारी गाडी है । हज़रत ने हम से बताया था । मर्कज़ में तीन दिन लगाकर जुमआ ओखला में पढना है खुदैजा का इंटरव्यु मुसना लेंगी । हम हज़रत के हुक्म पर आए हैं । डॉक्टर साहब जामिआ में किसी साहब से मिलने चले गए हैं और मुझे यहाँ छोड गए हैं ।

सवाल : आप अपना खानदानी तआर्रुफ कराइये ।

जवाब : मैं मग्रिबी यु.पी.के एक बडे कसबे में एक ताजिर लाला खानदान में 3 सितंबर 1984 को पैदा हुई । मेरा खानदानी नाम सीमा गुप्ता था । इब्तिदाई तालीम कसबा के मुहल्ला के एक स्कूल में हुई । प्रायमरी के बाद गर्ल्स इंटर कॉलेज से इंटर किया । उस के बाद बी.कौम किया । फिर प्रायव्हेट सोशियोलॉजी (समाजियात) से एम.ए किया । मेरे दो भाई और एक बहन हैं । एक भाई बडे हैं और दो भाई बहन छोटे हैं । हमारे पिताजी (वालिद साहब) किराना की थोक की दुकान करते हैं । बहुत शरीफ भले आदमी हैं । मेरी माताजी (वालिदा) भी बहुत नेक और भली औरत हैं ।

सवाल : अपने कुबूले इस्लाम के बारे में बताइये ?

जवाब : हमारे कसबे में हिंदु मुसलमान दोनों रहते हैं । बडी तादाद में मुसलमान हमारे मुहल्ले से मिले हुए मुहल्ले में रहते हैं । जिन से हमारे घर का बहुत गहरा तअल्लुक है । वालिद साहब का किराने की दुकान की वजह से सब से लेनदेन भी था । हमारी दीवार से एक घर छोडकर एक ज़मीनदार खान साहब रहते थे । उन के बच्चे हमारे साथ प्रायमरी स्कूल में पढते थे । हमारा और उन का एक दुसरे के घर आना जाना था । उन की एक लडकी सबीहा खान मेरे साथ इंटर तक पढती रही । उस से मेरी बहुत दोस्ती थी । उन का घराना बहुत साफ सुथरा और

दीनी घराना है । सबीहा का एक बडा भाई बहुत शरीफ और बहुत खुबसूरत था। वह मुझे देखता तो सबीहा से कहता सीमा तो बिल्कुल ऐसी लगती है जैसे हमारे घर की ही फर्द (सदस्य) हो । यूँ वह बहुत शर्मीला नौजवान था । मैं घर मे होती तो वह शर्म की वजह से बाहर चला जाता । मुझे कुछ उस के साथ अजीब सा लगाव हो गया था । मैं कभी सबीहा से कहती कि सबीहा तुम्हारा भाई तो लडकियों से भी शर्मीला है । सबीहा कहती,बहन अब तो ज़माना उलटा हो गया है । अब लडकियाँ कहाँ शर्माती हैं,लडके ही शर्माते हैं । इस तरह कभी कभी ज़माने की खराबियों की बात शुरु हो जाती । एक अख़्बार में बेशर्मी और बेहयाई की खबर,एक बाप के अपनी बेटी के साथ मुँह काला करने की,एक सगे मामूँ की बेशर्मी की खबर पढी तो हम देर तक ज़माने के खराब होने का ज़िक्र करते रहे। मै ने कहा,कि कलयुग आ गया है । उस के ठीक करने के लिए हमारे धार्मिक ग्रंथ में आया है कि कल्कि अवतार आएँगे और वह इस बिगाड को सुधारेंगे । मैं ने कहा,पता नहीं,हमारे जीवन (ज़िंदगी) में कल्कि अवतार आएँगे या नहीं,या हमारे मरने के बाद आएँगे । सबीहा ने कहा,कि सीमा जिन कल्कि अवतार की तुम बात कर रही हो वह तो आकर चले गए । मैं ने कहा,तुम कैसे कहती हो ? वह बोली,मैं तुम्हें एक किताब देती हूँ । उस ने अलमारी से एक छोटी सी किताब " कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब " निकाली और मुझे दी। देखो यह बहुत बडे स्कॉलर हैं । पंडित वैदप्रकाश उपाध्याय जिन की यह किताब है । मैं ने वह किताब ले ली। उसी दिन मैं ने सबीहा से उन के भाई के साथ अजीब लगाव का ज़िक्र किया । उस ने बताया कि भाई जान भी तुम्हें पसंद करते हैं । मगर शर्म की वजह से तुम्हारे सामने नहीं आते । मैं ने कहा,क्या तुम्हारे भाई जान शादी के लिए हिंदु हो सकते हैं ? उस ने कहा,कि एक मुसलमान का हिंदु होना तो नामुमकिन है । हाँ इस्लाम को जानता ही न हो तो दूसरी बात है। इसलिए कि इस्लाम ऐसा हक और सच्चा मज़हब है कि अगर आदमी इसे जानने के बाद इस्लाम छोडना चाहे तो छोड नहीं सकता । दिल से इस्लाम के हक होने का यकीन नहीं निकल सकता उस ने कहा हमारी आँखें देख रही हैं कि दिन निकल रहा है अब अगर कोई मुझ से यह कहे दस लाख रुपये ले लो और यह कहो कि रात हो रही है,या फिर राइफल की गोली सर पर लगाकर कहे कि कहो

रात हो रही है तो हो सकता है कि किसी बडे लालच और किसी खौफ से ज़बान से कह दूँ कि हाँ रात हो रही है । मगर मेरा दिल और ज़मीर यह कहता रहेगा कि दिन को रात कैसे समझूँ, जानूँ और यकीन करुँ । सबीहा ने कहा, सीमा अगर तुम इस्लाम को पढोगी और सच्चाई जानने की कोशिश करोगी तो तुम भाई जान को हिंदु बनाने के बजाए खुद ज़रुरी समझोगी कि शादी तो हो मगर मुझे मुसलमान बन जाना चाहिए । मैं ने कहा, सबीहा यह बात तो है कि मुसलमान अपने मज़हब में बहुत कट्टर होते हैं । दुसरे मज़हब वाले इतने कट्टर नहीं होते । सबीहा ने कहा, कि हर आदमी जो सच पर होता है मज़बूत होता है और जो खुद ही शक में हो वह कैसे किसी बात पर जम सकता है । बहुत देर तक हम बात करते रहे, दिन छुपने को हो गया । मैं घर आ गई । सबीहा की बातों के बारे में सोचती रही । रात को सोते वक्त मैं ने वह किताब उठाई और पढी, छोटी सी किताब थी । पूरी पढ डाली तो हैरत हुई कि वह कल्कि अवतार तो हज़रत मुहम्मद स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं यह किताब देवबंद में छपी है । इस के पीछे कुछ और किताबों के नाम भी लिखे थे । नराशंस और अंतिम ऋषि, इस्लाम एक परिचय मरने के बाद क्या होगा ? इस्लाम क्या है ? आपकी अमानत आपकी सेवा में, वगैरा । मैं ने अगले रोज़ सबीहा से कहा यह किताबें मुझे चाहिएँ । उस ने कहा, इस में से " आपकी अमानत आपकी सेवा में " तो हमारे मामूँ मौलाना के यहाँ मिल सकती है । मैं तुम्हें लाकर दूँगी मैं ने उन से कहा, भूल मत जाना, उस को मामूँ के यहाँ जाने का मौका न मिला मैं तकाज़ा करती रही । दस रोज़ तक मैं कहते कहते बेचैन सी होती रही । दस रोज़ के बाद एक छोटी सी किताब "आपकी अमानत आपकी सेवा में " सबीहा ने ला कर दी । इस किताब का नाम पढकर एक अजीब तलब पैदा हो जाती है कि हमारी क्या अमानत है मालूम करें "दो शब्द" उस में मौलाना वसी ने लिखे हैं । मेरा ख्याल है कि "दो शब्द" की तो तीन लाईन पढने के बाद कोई आदमी इस किताब को पढे बगैर नहीं रह सकता और बिल्कुल मुसलमानों और इस्लाम के बारे में दिल में दुश्मनी और नफरत रखने वाला इंसान भी दो शब्दों को पढने के बाद इस किताब को गैर की बात समझ कर नहीं पढ सकता है । उस का दिल व दिमाग इस किताब के लिखने वाले को अपना सच्चा दोस्त समझ कर ही इस को पढेगा । मैं इस किताब को लेकर घर आई और बस । किताब पूरी

पढी । मैं ने अपनी छोटी बहन और माँ से कहा कि मैं आप को बहुत अच्छी चीज़ पढकर सुनाऊँगी,उन को बिठा लिया और पढना शुरु किया,वह सुनती रहीं और बोलीं यह किस की किताब है । मैं ने कहा,मुज़फ्फरनगर के एक मौलाना जी की लिखी किताब है । मेरी माँ ने कहा उन से तो ज़रुर मिलना चाहिए । इस किताब के पीछे टायटल पेज पर भी कुछ किताबों के नाम लिखे थे । इस्लाम एक परिचय,मरने के बाद क्या होगा ? इस्लाम क्या है ? कितनी दूर कितने पास ? वही एक एकता का आधार , नराशंस और अंतिम ऋषि, कल्की अवतार और मुहम्मद साहब, वेद और कुरआन वगैरा , मेरी माँ ने कहा,बेटी यह सारी पुस्तकें (किताबें) मंगाले ।

सच्ची बात यह है मुसना बहन । आपकी अमानत ने मेरी अंदर की दुनिया को बदल दिया । मैं बस यह सोचती थी कि इस समाज में मैं मुसलमान होकर किस तरह रहूँ । अगर घर छोडकर जाऊँ तो मैं लडकी जात कहाँ जाऊँगी। कौन मुझे रखेगा ? मेरे जाने के बाद मेरे घर और सज्जन लोग कैसे जियेंगे ? बस एक अजीब ख्यालात का तूफान मेरे दिल व दिमाग पर था । इस्लाम को और जानने की ख्वाहिश पैदा हो गई । मैं ने अपनी एक दूसरी सहेली फातेमा को पाँच सौ रुपये दिये और इन किताबों को मंगाने के लिए कहा । एक हफ्ता बाद उस ने सिर्फ मरने के बाद क्या होगा ? लाकर दी और बाकी पैसे वापस दे दिए कि और किताबें मिली नहीं । मैं ने मरने के बाद क्या होगा ? किताब को पढा । जन्नत दोज़ख का ऐसा हाल और गुनाहों की सज़ाओं का ऐसा ज़िक्र इस किताब में है कि बेहिस से बेहिस आदमी भी खौफ खा जाए । इस किताब को पढने के बाद जन्नत दोज़ख मेरी आँखों के सामने बिल्कुल आँखों देखी चीज़ बन गई । रात को सोने लेटती तो हर वक्त मेरी आँखों के सामने कब्र का,हश्र (हिसाब के दिन)का,और जन्नत दोज़ख का मंज़र (दृश्य) चलता रहता था दोबारा मैं ने ख्वाब में जन्नत देखी और दोज़ख तो न जाने कितनी बार दिखाई दी । अब मैं ने अपनी माँ से मुसलमान होने की ख्वाहिश ज़ाहिर की । उन्होंने कहा कि दीन से दुनिया संभालनी मुश्किल होती है। आजकल के समाज में धर्म बदलना आसान नहीं है । बस अंदर से सच को सच समझो यह भी काफी है । वह मालिक दिलों के भेद को जानता है । मैं ने सबीहा से कहा, कि अगर मैं मुसलमान हो जाऊँ तो तुम्हारे भाई मुझ से शादी कर

सकते हैं या नहीं ? उस ने कहा कि वह कई बार मुझ से कह चुके हैं कि अगर सीमा मुसलमान हो जाए तो अम्मी अब्बू उस से मेरी शादी कर सकते हैं या नहीं। मैं उन से बात करुँगी । सबीहा के भाई का फोन आया तो उस ने उन से बात की। मुझे बताया कि भाई जान कह रहे हैं कि अगर मैं अम्मी अब्बू को राज़ी कर लूँ और सारी कानूनी कारवाई कर लूँ और सीमा के घरवाले भी राज़ी हों और वह सच्चे दिल से मुसलमान हो जाए तो मैं शादी करके बहुत खुशी महसूस करुँगा । मगर मैं कोई खतरा मोल नहीं ले सकता । इस दौरान मैं ने किसी तरह कुरआन शरीफ का हिंदी तर्जुमा हासिल कर लिया । उस को पढना शुरु किया, साथ साथ मैं अपनी माँ को सुनाती थी । मुझे बाज ऐसे ख्वाब दिखाई दिए जिन के बाद मुसलमान होने की बेचैनी बहुत ज़्यादा बढ गई । रातों को देर तक मुझे नींद नहीं आती थी । मैं मुँह हाथ धोकर कुरआन पढने लगती । बात यहाँ तक बढी कि मैं ने घर छोडने का फैसला कर लिया । इस सिलसिले में मुझे किसी ने बताया कि फुलत " आपकी अमानत आपकी सेवा में " के लेखक (लिखने वाले) मौलाना साहब के यहाँ तुम्हारे लिए यह काम आसान है । मै ने एक पंद्ररह साल के मुसलमान लडके को तैयार किया । जो बहुत दीनदार था और उस के साथ फुलत पहुँची । मौलाना साहब सफर पर गए हुए थे । वहाँ पर कुछ लोगों ने मुझ से इस्लाम कुबूल करने की गर्ज़ मालूम की । मैं ने कहा सिर्फ इस्लाम कुबूल करना और हक को मानना , मुझे कलमा पढवाया गया और मेरठ भिजवाकर एक वकील साहब से सर्टिफिकेट बनवादिया गया । एक मौलाना के घर में रही । उन की बहनों ने मुझे बहुत मुहब्बत से रखा । एक हफ्ता के बाद मौलाना साहब आए।

सवाल : आप की घर मे तलाश नहीं हुई ?

जवाब : मेरी घर में तलाश ही नहीं हुई ,मेरा आना पुरे इलाके में कयामत (प्रलय) बन गया । जब ढूँढ पडी और खानदान वाले इकठ्ठा हुए तो मेरी छोटी बहन ने बतादिया कि वह सबीहा के भाई से शादी करना चाहती थी हालाँकि अब ऐसा कुछ नहीं था । अब सिर्फ मुझे इस्लाम कुबूल करना था । उस पर पूरे इलाके के हिंदु समाज मे एक तूफान खडा हो गया । सबीहा के घर वालों की मुसीबत आ गई । उन्होंने लाख कहा कि हमारा लडका अभी मुल्क के बाहर है ।

मगर लोग कहते रहे कि आप ने ही उस लडकी को गायब किया है । अखबारों में खबरों पर खबरें छपती रहीं । कई बार बिल्कुल आमने सामने फसाद (दंगा) होने को हुआ । कुछ समझदार लोगों ने मुआमले (प्रकरण) को ठंडा किया ।

सवाल : उस के बाद क्या हुआ ?

जवाब : मौलाना साहब एक हफ्ते के बाद फुलत आए तो उन्हें लोगों ने मेरे बारे में बताया । मौलाना साहब ने कहा, कि वहाँ के लोगों के मेरे पास फोन आए । मैं ने कहा, हमारे यहाँ इस तरह की कोई लडकी नहीं आई है । पूरे इलाके में फसाद होने को है । बहरहाल मुझे बुलाया और मुझ से कहा, कि वहाँ तो यह मशहूर है कि तुम किसी लडके से शादी करना चाहती हो । मुझ से कहा कि तुम सच सच बताओ मै ने कहा कि पहले मैं वाकई ऐसा ही चाहती थी मगर अब सिर्फ इस्लाम पढ कर मैं मुसलमान हुई हूँ । मैं कुछ रोज़ इस्लाम पढना चाहती हूँ अगर उस लडके से बाद में शादी हो जाए तो अच्छा है वरना आप जिस से चाहें मेरी शादी करदें । मौलाना साहब ने मुझे देहली भेज दिया । वहाँ के कुछ वकीलों से बात हुई तो उन्हों ने कहा कोई लडका इन से शादी को तैयार हो जाए तो सब से बेहतर कानूनी आसानी इस मे है । मौलाना साहब ने कहा, आगरा में एक डॉक्टर हैं उन्होंने मुझ से किसी नवमुस्लिम से शादी के लिए कहा है विजयवाडा के रहने वाले हैं । अगर तुम कहो तो मैं तुम्हें उन के यहाँ भेज दूँ । मुझे तकल्लुफ (सोच) हुआ, मैं रोने लगी, तो मौलाना साहब समझे कि मैं उसी लडके से शादी करना चाहती हूँ । हमारे इलाके में बात और बिगड गई तो मौलाना साहब ने मुझ से कहा इस वक्त बेहतर यह है कि तुम अपने घर चली जाओ और अपने घर वालों पर काम करो । मैं ने कहा, वहाँ जा कर मैं बिल्कुल बेबस हो जाऊँगी। आप मुझे कुफ्र व शिर्क में न भेजें । आप वहाँ मेरी कैसे मदद कर सकते हैं ? मौलाना ने कहा, बहन आप चली जाओ । मैं अल्लाह के भरोसे पर तुम से वाअदा करता हूँ कि तुम्हारे वालिद और वालिदा के साथ अल्लाह आप को निकालेंगे । मुझे यकीन नहीं आता था । मैं बहुत रोई । बार बार मुझे पानी पिलाया गया । मौलाना साहब के जो साथी मुझे देहली ले गए थे उन्होंने मुझे बहुत समझाया कि हज़रत की बात मान लो । अल्लाह तआला तुम्हारे लिए ज़रुर रास्ता निकालेंगे मै ने कहा आप मेरी शादी किसी मज़दुर से, झाडू देने वाले से, किसी फकीर से करदें मगर मुझे

वहाँ न भेजें । उन्होंने कहा कि अब हज़रत ने कहा है उस के खिलाफ हम तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकते । मैं मजबूरन रोते हुए घर जाने पर राज़ी हो गई। बस में मुझे टिकिट दिलवाकर बिठा दिया गया । मग्रिब के बाद मैं अपने घर पहुँची और मैं ने सब खानदान वालों के सामने अपनी माँ से कहा, क्या मैं आप से दस रोज़ के लिए कह कर नहीं गई थी कि मैं तीर्थ पर जा रही हूँ । और मुझे सपने में जाने को कहा गया था । आप ने घरवालों को क्युँ नहीं बताया ? आज दस दिन में मैं आ गई कि नहीं ? सबीहा के घर वालों और बहुत से लोगों को पुलिस ने उठा रखा था। किसी तरह छोडा गया । मेरे खानदान वाले जमा हुए और मुझ पर बरसने लगे, मैं ने सोचा, खुदैजा तू हक पर है, हक वालों को डरना नहीं चाहिए । मैं ने कहा कि मैं ने इस्लाम कुबूल कर लिया है और मेरा नाम सीमा नहीं खुदैजा है और इस्लाम से मुझे कोई नहीं हटा सकता । मेरी फूफू और एक ताए ने मुझे बहुत मारा और न जाने कैसी बुरी बुरी गालियाँ दीं । हमें मालूम है तू मुसलमान होने का ढोंग भर कर मुँह काला करने गई थी और ऐसी बुरी बुरी सुनाईं कि बयान करना मुश्किल है । मेरी माँ और बाप अलबत्ता बिल्कुल नर्म थे । मेरी माँ तो अंदर से इस्लाम की सच्चाई को मान चुकी थी । मुझे करीब के बडे शहर मे मेरे ताया के यहाँ पहुँचा दिया गया । मैं वहाँ नमाज़ पढने की कोशिश करती तो घर वाले मेरे साथ बहुत ज़्यादती (अति) करते एक रात मै बारा बजे इशा की नमाज़ पढने लगी। मेरे ताए के लडके ने मेरी कमर पर सजदे में एक बहुत भारी चक्की जो पुराने ज़माने की वहाँ थी वह रख दी । मेरा दम निकलने को हो गया । मुझे सहाबा के हालात याद आए । मैं ने कुछ खाने से इन्कार कर दिया मुझे उन के यहाँ नापाकी की वजह से भी खाने को दिल नहीं चाहता था और मुझे यह भी डर था कि यह मुझे ज़हर दे देंगे । मेरे ताया ने मेरे माँ बाप को बुलवाया और फिर मेरी बुवा (फूफू) के यहाँ मुझे भिजवा दिया गया । मैं ने कहा मैं किसी के घर का खाना नहीं खाऊँगी । उस में ज़हर का खतरा है । बाज़ार का खाना खाऊँगी जो माँ लाकर देंगी । मेरी बुवा के यहाँ मेरी इतनी एहतियात के बावजूद मुझे तीन मर्तबा ज़हर देने की कोशिश की गई । मगर जिस को अल्लाह रखे उसे कौन चखे । एक बार बिल्ली ने खीर गिरादी । एक बार मुझे पहले ख्वाब दिखाई दे गया और एक दफा मेरी बुवा के पोते ने वह खा लिया । पंद्रह दिन तक उसे अस्पताल में रहना पडा ।

जान तो बच गई मगर गुर्दे (किडनियाँ) खराब हो गए ।

सवाल : वहाँ से फिर अल्लाह ने किस तरह निकाला ?

जवाब : अल्लाह ने हज़रत के वाअदे की लाज रख ली । हज़रत बताते है कि तुम्हें मैं ने फसादात और हालात खराब होने के डर से भेज तो दिया मगर जैसे ही तुम चली तो मेरे कान में गैब से किसी ने कुरआन की यह आयत पढी जिस मे अल्लाह ने उन औरतों को जो ईमान कुबूल करके हिजरत के लिए आईं यह यकीन होने के बाद कि वह उस में सच्ची है काफिरों (इनकारियों) के पास लौटाने से मना किया गया है ।

सवाल : हाँ हाँ अबी बार बार बहुत अफसोस के साथ कह रहे थे कि कुरआने हकीम की मैं ने खिलाफवरजी की है । पहले से ख्याल नहीं आया । सब लोग दुआ करो अल्लाह मुझे मुआफ फरमाए ।

जवाब : आप को मालूम है वह आयत ।

सवाल : हाँ । बार बार अबी उसे पढते थे ।

يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ط

اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ج فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ط

या अय्युहल्लज़ीन आमनू इजाजाअकुमुल मुमिनातु मुहाजिरातिन फमतहिनूहुन्न । अल्लाहु अअलमु बिईमानिहिन्नु । फ़अिन अलिमतुमू हुन्ना मुमिनातिन फला तरजिऊहुन्न इललकुफ्फार ।

इस का तर्जुमा यह है : ऐ इमान वालो । जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें वतन छोडकर आएँ तो उन को जाँच लो । अल्लाह खूब जानता है उन के ईमान को । फिर अगर तुम उन को ईमान पर जानो तुम उन को काफिरों (इनकारियों) की तरफ मत फेरो ।

जवाब : हज़रत बताते हैं कि इस आयते शरीफा ने मुझे झंझोड कर रख दिया । मैं बार बार सलॉतुत्तौबा पढता और अल्लाह के हुज़ूर दुआ करता, मेरे अल्लाह । मैं बहुत बडा मुजरिम हूँ, मुझ से अंजाने में कुरआने हकीम की खिलाफ वर्ज़ी हो गई । मेरे अल्लाह । मेरी बच्ची कैसी बिलकती हुई वापस गई । मेरे अल्लाह ।

मैं ने आप के भरोसे उस से वाअदा कर लिया है । आप अपने गंदे बंदे के वाअदे की लाज रख लीजिए । मेरे अल्लाह । मेरे बिगाड को आप के अलावा कौन संवार सकता है । मौलाना साहब ने मुझे बताया, कम अज़ कम पंद्रह दिन तक हर दुआ में बस तुम्हारे लिए दुआ करता था और तुम्हारे वापस आने के शुक्र में रोज़ों, सदकों, और नफलों की नज्र मानता था अल्लाह ने हज़रत की दुआ और वाअदे की लाज रखी । छः महीने मुझ पर एक से एक सख्त गुज़रा । इस दौरान इन छः महीनों की दास्तान मैं सुनाऊँ तो एक लंबी किताब हो जाएगी । मैं ने एक डायरी भी लिखी है । मेरी माँ मेरे साथ रोती रहती । छः महीना के बाद मेरी माँ ने मेरे बाप को राज़ी कर लिया कि एक नवमुस्लिम लाला खानदान के डॉक्टर साहब जो विजयवाडा के हैं, से मेरी शादी करदें , माला डाल कर शादी हो जाएगी बाद में वह निकाह कर लेंगे ।

सवाल : वह आप की माँ को कैसे मिले ?

जवाब : असल में मेरी माँ की एक पुरानी सहेली थी । जिन को हम हकीकी मौसी (खाला) की तरह जानते थे । वह भी मेरे साथ मुसलमान हो गई थीं । मगर उन्होंने इस्लाम जाहिर नहीं किया था वह त्यागी खानदान से थीं । वह मेरे साथ होने वाले ज़ुल्म से वाकिफ थीं । हमारे यहाँ एक तबलीगी जमाअत आई वह पानी पर दम करवाने के बहाने उस जमात से मिलीं और मेरी दास्तान सुनाई उस जमाअत में वह डॉक्टर साहब जो सात महीने पहले मुसलमान हुए थे, हज़रत के एक साथी की कोशिश से, किसी तरह अपनी नौकरी से छुट्टी लेकर घर वालों से ट्रेनिंग के बहाने जमाअत में आए थे । अमीर साहब ने कहा उन के दाढी भी नहीं आई है अगर उन से शादी हो जाए तो अच्छा है । यह भी लाला हैं । यह अपने घर वालों को तैयार कर लेंगे । इस बात पर तय हो गई । डॉक्टर साहब ने जमाअत में पंद्रह दिन चिल्ला छोड कर मुझे वहाँ से निकालने के लिए अपने अमीर साहब के मश्वरे से घर का सफर किया और घर वालों से मुझ से शादी करने का ख्याल ज़ाहिर किया । मेरे पिताजी ने खानदान वालों को कह कर कि दूर चली जाएगी तो मुसलमानों से दूर हो जाएगी । राज़ी करके मेरी शादी कर दी। 11 लोग मेरी सुसराल से आए । डॉक्टर साहब मुझे लेकर हनीमून के बहाने यहाँ देहली और शिमला वगैरा ले कर आए हैं मौलाना साहब से फोन पर उन का

राबता (संपर्क) था । मुझे लेकर यहाँ आए और मुझे उन के साथ देख कर बस मत पूछिए कि मौलाना साहब का क्या हाल हुआ । बार बार खुशी से रोते थे, कहते थे मेरे अल्लाह । आप कैसे करीम हैं । अपने गुनाहगार बंदे के साथ आप का क्या मुआमला है । कुरआने हकीम की सरीह खिलाफ वर्जी (खुला विरोध) करके एक मोमिना को कुफ्फार (गैर ईमान वाले) में लौटा देने वाले मुजरिम के वाअदे की आप ने कैसी लाज रखी । मौलाना साहब ने बताया कि 25 रोज़े मैं ने नज्र माने हैं । दो सौ नफिलें और तीन हज़ार सदका, तुम्हारे वापस आने के लिए । मौलाना साहब ने बडी हैरत और खुशी से बताया कि जिन आँध्रा के डॉक्टर साहब के पास तुम्हें भेज कर शादी करने को कहता था वह डॉक्टर शारिक यही हैं । जिस के साथ मेरे अल्लाह ने तुम्हारी शादी करके मेरे घर भेज दिया ।

सवाल : अजीब बात है ?

जवाब : अल्लाह तआला अपने दीन की दअ्वत का काम करने वाले की, सच्ची बात यह है कि बडी नाजबरदारी करते हैं ।

सवाल : आप की वह छः महीने की तकलीफें झेलने की कहानी वाली डायरी आप के पास है ?

जवाब : अभी नहीं लाई । मैं उस का झेरॉक्स कराके आप को भेजुँगी । हज़रत साहब ने कहा है कि वह हम छपवाएँगे । मौलाना साहब ने कहा वह किस्तवार अरमुगान में छपवाने के लायक है ।

सवाल : अब आप के शौहर अपने घरवालों के साथ में रहते हैं ?

जवाब : नहीं । वह अभी वहाँ महाराष्ट्र नागपूर में एक सरकारी अस्पताल में आरज़ी (टेंम्परेरी) मुलाज़िमत पर हैं । देहली में उन्होंने अपलाई किया था । अलहम्दुलिल्लाह इंटरव्यु भी हो गया और उन्होंने एमडी के लिए क्वालिफाई कर लिया है । अब हम जल्दी देहली आ जाएँगे हम दोनों ही बस साथ रहते हैं ।

सवाल : आप के माँ बाप का क्या हुआ ?

जवाब : मैं ने उन को परसों देहली बुलाया था । हुमायूँ के मकबरे के पार्क में मुलाकात हुई वह अब अपना कसबा छोडकर हमारे साथ रहने का प्रोग्राम बना रहे हैं । अलहम्दुलिल्लाह दोनों मुसलमान हो गए हैं ।

सवाल : बहुत बहुत शुक्रिया खुदैजा बहन । वाकई ईमान तो आप का है । हम लोग तो खानदानी मुसलमानों को ईमान व इस्लाम की क्या कद्र हो सकती है । आप हमारे लिए दुआ कीजिए । कुछ हिस्सा इस ईमान का हमें भी नसीब हो जाए ।

जवाब : मुसना । आप के घर के जूतों के सदके में मुझे ईमान मिला है । आप कैसी बातें कर रही हैं । आप के घर के लिए मेरी सात पुश्तें दुआ करें तो कम है।

सवाल : यह आप की बडाई की बात है । बहरहाल बहुत बहुत शुक्रिया । अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

जवाब : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह । मैं इंशा अल्लाह जल्द ही देहली आ जाऊँगी फिर इत्मिनान से बातें करेंगे । और भी मज़े की बातें होंगी । डॉक्टर साहब आ गए हैं, बाहर खडे हैं अच्छा मैं चलती हूँ ।

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान, एप्रिल 2009]

••••••

7 स्कूल के साथी कलीम साहब और मुतालए का शौक

अरमुगान के वास्ते से मैं कारिईन बहनों की खिदमत में यह दरख्वास्त पेश करुँगी कि एक मुसलमान की ज़िम्मेदारी पूरी इंसानियत तक इस्लाम के पैगाम को पहुँचाना है । इस में मर्दों के साथ औरतों को भी मुकल्लफ बनाया गया है । बल्कि इस्लामी दअ्वत की तर्तीब तो तारीखे इस्लाम में यह मिलती है कि इस्लामी दअ्वत की मदअूअ मर्दों से पहले औरतें हैं । हमारे नबी स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सारे रुफका, मोहसिनीन और महरम राज मर्दों के होते हुए गारे हिरा में पहली वही के नुज़ूल के बाद अपनी दअ्वत का सब से पहला मदअूअ अपनी रफीके हयात हज़रत खदीजा रजि. को बनाया था । इस से यह बात साबित होती है कि औरतों को भी अपनी ज़िम्मेदारी समझना चाहिए बल्कि मर्दों से ज्यादा समझना चाहिए ।

अस्मा जातुल फौज़ैन

अस्मा जातुल फौजैन : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

डॉ.इरम साहेबा : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

सवाल : आप बडे वक्त पर तशरीफ लाईं । अबी से आप का तज़्केरा (चर्चा)सुनते रहते थे । फरमा रहे थे कि अरमुगान के लिए आप से इंटरव्यु लेना है । शायद आप के इल्म में होगा कि हमारे यहाँ फुलत से एक मेग्ज़िन उर्दु में अरमुगान के नाम से निकलता है जिस में इस्लाम कुबूल करने वाले नवमुस्लिमों के इंटरव्यु का सिलसिला शुरु किया गया है ।

जवाब : हाँ । मैं ने कुछ पर्चे देखे हैं मगर मैं अब नवमुस्लिम कहाँ हूँ मेरी प्यारी तुम से कम अज कम दस साल कब्ल (पहले)से मैं जाहिरी तौर पर मुसलमान हो गई थी और हकीकतन (असल में) और मिजाज़न (स्वभाव से) तो पैदाइशी तौर पर मुसलमान हूँ ।

सवाल : बात तो आप की सच है । यूँ तो हर बच्चा इस्लामी फितरत (स्वभाव धर्म)पर ही पैदा होता है ।

जवाब : आम तौर पर हर बच्चा इस्लाम पर पैदा होता है यह तो हमारे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम का मुबारक इर्शाद है । इस में किस को शक हो सकता है । मगर हमारे खानदान खास तौर पर हमारे पापा (वालिद) खुद भी मिजाज़न मुसलमान थे यानी उनको सौ फीसद इस्लामी मुआशिरत (समाज)कुबूले इस्लाम से पहले पसंद थी ।

सवाल : बराए करम पहले आप अपना तआर्रुफ कराएँ ।

जवाब : मेरा नाम इरम है । मेरे वालिद डॉ.अनिल मोदी बीजापूर कर्नाटक के रहने वाले थे । वह आँजहानी पीलू मोदी जो सोशलिस्ट पार्टी के सदर के हकीकी भतीजे थे । उन्होंने अमरीका से एम.डी किया था और बहुत अच्छे फिजीशियन थे । कुछ दोस्तों और जानने वालों के इसरार पर वह मेरठ आ गए थे और बैंक स्ट्रिट पर एक कोठी खरीद कर उस के एक हिस्से में अपना क्लिनिक बनाया था । मेरे दो भाई मुझ से छोटे एक का नाम तारिक और दूसरे को नाम शारिक है । 12वीं क्लास तक मेरी तालीम बीज़ापूर में हुई । मेरठ आने के बाद मैं ने मेरठ कॉलेज में बी.एस.सी में दाखला लिया बी.एस.सी के बाद पी.एम.टी मुकाबले में बैठी और मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस के तीन साल मुकम्मल करने के बाद अपनी बुवा के इसरार पर लंदन चली गई । वहीं एम.बी.बी.एस और बाद में एम.एस किया और दिल्ली के एक सैय्यद घराने के

डॉक्टर सैय्यद आमिर से मेरी शादी हुई जो अच्छे न्युरोलॉजिस्ट हैं । लखनऊ संजय गांधी पी.जी.आए में हम दोनों का तकर्रुर (नियुक्ती)हो गया । अलहम्दुलिल्लाह हम दोनों प्रोफेसर हो गए । हमारी बुवा लंदन में रहती हैं । उन के कोई औलाद नहीं है । उन का बहुत इसरार था कि हम दोनो लंदन आ जाएँ । उन के हद दर्जे इसरार पर 2001 में तीन साल पहले हम ने मुलाजेमत छोडी और लंदन चले गए । हमारी ननद की शादी मेरे छोटे भाई शारिक से हो रही है जिस की वजह से हमारा हिंदुस्तान आना हुआ है ।

सवाल : अपने कुबूले इस्लाम के बारे में बताइये ।

जवाब : असल में मेरे वालिद साहब को इस्लामी मुआशिरत बहुत पसंद थी । बिरयानी, कोरमा और कबाब के दिलदादा थे । न यह कि वह उर्दु जानते थे बल्कि फारसी भी अच्छी जानते थे । पारसी मज़हब से उन का खानदानी तअल्लुक था । उस के बावजूद उन्होंने मेरा नाम इरम मेरे छोटे भाइयों का नाम शारिक और तारिक रखा। खुद अपना नाम डॉक्टर अनिल वारिस मोदी लिखने लगे थे । बीजापूर में हम रहते थे । जुनूबी हिंद का माहौल बडा साफ सुथरा है । हम लोग मेरठ आए तो यहाँ का माहौल अजीब था । खुसूसन मेरठ कॉलेज में देहात के जाट और चौधरी तलबा(छात्र) बडी छिछोरी हरकतें करते थे । वह इस कदर हरकतें करते थे कि मेरा ख्याल था कि मुझे पढाई छोडनी पडेगी और किसी दूसरे कॉलेज को सिलेक्ट करना पडेगा लेकिन अल्लाह को इसी गंदे माहौल में मेरी हिदायत का फैसला करना था । उन्हीं गंदे लडकों में चंद शरीफ लडके भी पढते थे उन में आप के अबी भी थे जिन की शराफत से हमारे सब साथी यहाँ तक कि असातेजा (अध्यापक)भी मरऊब (आकर्षित)थे । उन को लोग एहतेरामन कलीम भाई कहते थे । मैं ने बारहा देखा कि लोग किसी फिल्म की बात करते हुए कलीम भाई आ जाते । लोग फौरन खामूश हो जाते । अपनी क्लास में वह जहीन (बुध्दीमान)समझे जाने वाले लोगों में थे । आवाज़ भी बहुत अच्छी थी । वह शायरी भी करते थे और अच्छे मुसव्विर (चित्रकार)भी थे । हमारे कॉलेज में एक पूरे सूबे (राज्य)का मुकाबला था उस में उन्होंने अव्वल दर्जे का इनआम हासिल किया था । कलीम भाई को क्लास में इस तरह की गंदी हरकतों से बहुत अज़ियत (तक़लीफ)होती थी । मैं घर में वालिद साहब से उन की शराफत का ज़िक्र करती।

पापा मुझ से उन को कभी घर बुलाने को कहते थे । वह रोज़ाना फुलत अपने गाँव खतौली के रास्ते से बजरिअे रेल मेरठ छावनी और फिर मेरठ कॉलेज से अप डाऊन करते । कभी कभी बेगम पुल से वह कॉलेज जाते हुए पैदल हमारे घर के सामने से गुजरते । एक रोज सुबह मैं ने उन को आवाज दे दी और अपने वालिद से मिलवाया । मेरे वालिद उन से और वह खुद मेरे वालिद से बहुत मुतअस्सिर (प्रभावित)हुए । हमारी क्लास के ज्यादा छिछोरे लडके अकसर मेरठ कॉलेज के होस्टल मे रहते थे । रक्षाबंधन का त्योहार आया ।कलीम भाई साढे आठ बजे हमारे घर आए और मुझ से कहा, इरम बहन क्लास के गंदे माहौल से हम लोग आजिज़ हैं चलो राखियाँ खरीद लो और होस्टल चलते हैं । मैं ने 25 राखियाँ खरीदीं और कलीम भाई के साथ होस्टल पहुँचे और तमाम जाट और चौधरी स्टूडेंटस को भैय्या भैय्या कह कर राखियाँ बांध दीं । वह लोग बहुत शर्मिंदा से हुए और हमारी क्लास का माहौल बदल गया । इस हिकमते अमली (युक्ती)ने मुझे बहुत मुतअस्सिर किया । मैं ने पापा मम्मी को भी बताया,जिस की वजह से हमारी मम्मी पापा उनका हद दर्जा एहतेराम करने लगे। मुझे उर्दु जुबान सीखने का शौक था । मेरे पापा की भी ख्वाहिश थी कि मैं उर्दु पढूँ । उन का ख्याल था बलकि वह बहुत जोर देकर कहते थे कि उर्दु जुबान से अच्छी और शाइस्ता तहजीब (शालीन संस्कृती)आती है । मैं ने कलीम भाई से फरमाइश की वह हमें उर्दु पढादें । उन्होंने वक्त न होने का उज्र किया मगर उन्होंने उर्दु डिपार्टमेंट जाकर एक साहब मौलवी मसरुर को तलाश किया जो उर्दु में एम.ए.कर रहे थे और उन को तैय्यार किया कि मुझे उर्दु पढाएँ । वह मुझे लायब्रेरी में आधा घंटा रोज़ उर्दु पढाने लगे । मुझे उर्दु बहुत जल्द आ गई । कलीम भाई ने मुझे " इस्लाम क्या है ? " और " मरने के बाद क्या होगा ? " पढने को दीं । मुझे इन किताबों ने बहुत मुतअस्सिर किया । "मरने के बाद क्या होगा ?" ने मेरी नींद उडादी । मुझ पर मौत के बाद के अज़ाब (यातना)का सख्त खौफ था । मैं ने अपना हाल उन से बताया तो उन्होंने मुझे मरने के बाद की आफियत के लिए ईमान कुबूल करने को कहा । मैं ने पापा से मश्वरा किया उन्होंने मुझे सोच समझकर फैसला करने को कहा कि तुम बडी हो गई हो । अपनी मर्ज़ी से फैसला कर सकती हो । 1 जनवरी 1974 को मैं ने लायब्रेरी में ही कलीम भाई के हाथ

पर इस्लाम कुबूल कर लिया । अलहम्दुलिल्लाह मेरे वालिदैन ने मेरे फैसले पर कोई एअतेराज (आपत्ती)नहीं किया । 1979 में बुवा के इसरार (आग्रह)पर मैं लंदन चली गई और 1984 में एम.एस. करके मेरठ वापस आई । कलीम भाई को मेरे वालिद ने शादी का सिलसिले में इख्तियार दे दिया । अलहम्दुलिल्लाह उन्होंने मेरे लिए इन्तहाई मौजूँ (योग्य)रिश्ता तलाश किया और दिल्ली के एक सैय्यद घराने में मेरी शादी हो गई । मेरे शौहर डॉक्टर आमिर डी.एम.हैं और अच्छे न्युरोलॉजिस्ट हैं । वह बहुत दीनदार,खलीक इन्सान हैं । जहाँ रहे लोग उनकी कद्र करते हैं । उनकी शराफत से मऊब रहते हैं वह अपने फन में भी माहिरीन (विशेषज्ञ)में शुमार किये जाते हैं ।

सवाल : इस्लाम कुबूल करने के बाद आप ने कैसा महसूस किया ?

जवाब : असल में जैसा कि मैं ने पहले भी कहा कि मैं और हमारा पूरा घराना खुसूसन हमारे वालिद साहब फितरतन मुसलमान थे । मुझे इस्लाम कुबूल करने के बाद ऐसा लगा जैसे सुबह का भूला शाम को अपने घर आजाता और उसको बडी राहत महसूस होती है ।

सवाल : लंदन के मग्रिबी माहौल में अपने को मुसलमान समझ कर आप को कैसा महसूस होता है ?

जवाब : लंदन में आने के बाद अलहम्दुलिल्लाह हम लोग शरीअत पर अमल के सिलसिले में ज़्यादा हस्सास (सचेत)हो गए हैं । मेरे शौहर ने यहाँ आकर दाढी रख ली है । खुद मैं यह महसूस करती हूँ कि मुझे बेपर्दगी से कम अज़ कम उरयानियत (नंगापन)से सख्त कराहियत (घृणा) हो गई है। हम दोनों अलहम्दु लिल्लाह तहज्जुद पाबंदी से पढते हैं । कम अज़ कम शिफा को अल्लाह के हाथ होना हमारे लिए हक्कुलयकीन (विश्वसनीय सत्य)हो गया । मुसलमान मरीज़ भी खासी तअदाद में हमारे यहाँ आते हैं। मरीज को ओ.टी. में मेज पर लिटाकर पहले मैं उसको कलमा पढवाती हूँ,उसको तसल्ली भी देती हूँ और यह भी समझाती हूँ कि हो सकता है कि मौत वाकेअ हो जाए इसलिए अच्छी तरह दिल को अल्लाह की तरफ मुतवज्जोह कर लीजिए । गैरमुस्लिम मरीज आते हैं तो हमारी क्लीनिक एक रुहानी शिफाखाना भी है । हम दोनों की मेजों पर बहुत अच्छा इस्लामी लिटरेचर रहता है । जिस में से अपने अपने हिस्से का हर मरीज़

ले कर जाता है । असल में हम ने मग़्रिब को बहुत करीब से देखा है । बेहयाई और माद्दियतज़दा (लौकिक अभिलाशाग्रस्त)मग़्रिबी दुनिया बेचैन है और उन में अकसर लोग ज़िंदगी की लज़्ज़त और सुकून से महरुम खुदकुशी (आत्महत्या) के किनारे खडे दिखाई देते हैं । उन की बेचैनी और इज़्तिराब (बिखराव) का इलाज सिर्फ इस्लाम की मुकद्दस ताअ्लिमात (पवित्र शिक्षा) हैं । काश, उनको इस नेअ्मत से आश्ना (परिचित) कर दिया जाए।

सवाल : गैरमुस्लिम मरीज़ों को लिटरेचर देने से कुछ दअ्वती नताइज भी सामने आ रहे हैं ?

जवाब : अलहम्दुलिल्लाह,हम दोनों की दअ्वत पर इन तीस सालों में दो सौ तिहत्तर लोग मुसलमान हो चुके हैं । हमारे ससुर हज़रत सैय्यद अबुलहसन अली नदवी (रह) से बैअत थे और वह दिल्ली से अमरीका चले गए थे । मेरे शौहर भी उन के एक खलीफा मौलाना वली आदम साहब से बैअत का तअल्लुक रखते हैं । हम लोग अपने लंदन में क़याम का मक़सद इस्लाम की दअ्वत समझते हैं । मुझे सब से ज़्यादा खुशी इस बात की है कि मेरी बुवा जो मुझे मेरे माँ बाप से ज़्यादा चाहती थीं उन्होंने हमारे लंदन आने के दो माह बाद इस्लाम कुबूल कर लिया था और गुजिश्ता साल उन का बहुत अच्छी ईमानी हालत में कलमअे तय्यिबा पढते हुए मुसल्ले (नमाज़ की चटाई)पर इंतेकाल हुआ ।

सवाल : कुबूले इस्लाम के बाद भी आप ने इस्लाम के मुतालअे का सिलसिला जारी रखा ?

जवाब : अलहम्दुलिल्लाह कलीम भाई ने मुझे इस पर जोर दिया कि मैं रोज़ाना का निसाब (पाठयक्रम)तय करके इस्लाम का मुतालआ (वाचन)करुँ । मैं ने इरादा किया कि औसतन 50 सफ्हे (पृष्ठ)रोज़ाना पढूँगी मगर 50 सफ्हों का निसाब तो मुझ से नहीं हो सका अलबत्ता अगर मैं कहूँ कि इन तीस सालों में मैं ने 25 सफ्हे रोज़ाना से कम नहीं पढे होंगे तो इंशाअल्लाह यह बात बहुत एहतियात के साथ सच होगी । मैं ने एक सौ से ज़ाईद सीरत की किताबों को पढा है । हज़रत मौलाना अली मियाँ की सब किताबें और हज़रत मौलाना थानवी की सारी किताबें तकरीबन मैं ने पढी हैं । हज़रत मौलाना मौदूदी को भी मैं ने पढा है। इस के अलावा लंदन में इस्लाम पर रोज़ नई किताबें छपती हैं । हम लोग ईसाइयों के

यहाँ से छपने वाली किताबों को देखते रहते हैं ।

सवाल : इस तरह तो आप ने लाखों सफ्हात पढ डाले हैं ।

जवाब : अलहम्दुलिल्लाह 25 सफ्हात से कम तो औसत किसी भी तरह नहीं रहा होगा । इस औसत से साल में दस हज़ार के करीब सफ्हात हो जाते हैं । शुरु में मुझे मुतालअे का शौक नहीं था । कलीम भाई ने मुझे ज़ोर दिया कि जबरदस्ती आप को निसाब पूरा करना है । एक मोहसिन का हुक्म समझ कर मैं ने चंद माह जबरदस्ती मुतालआ किया । अब यह हाल है कि खाना न खाने से ऐसा नहीं लगता जैसा मुतालआ न करने से तिश्नगी (प्यास)महसूस होती है । कई बार नई किताब नहीं मिलती तो पुरानी किताब दोबारा पढती हूँ । इस तरह अलहम्दुलिल्लाह हमारे यहाँ एक अच्छा कुतुब खाना जमा हो गया है और उसका कुछ न कुछ हिस्सा ज़हन (ध्यान)में भी महफूज़ (सुरक्षित)हो जाता है ।

सवाल : आप के कितने बच्चे हैं और वह कहाँ तालीम हासिल कर रहे हैं ?

जवाब : मेरे तीन बच्चे हैं । बडे बेटे का नाम हसन आमिर और छोटे का हुसैन आमिर है और बच्ची का नाम फातेमा ज़हरा है । दोनों बेटे ड्यूजबरी के मदरसे में तालीम हासिल कर रहे हैं । हसन ने जिस की उम्र दस साल से ज़्यादा है हिफ्ज़ मुकम्मल कर लिया है और आलमियत का पहला साल है । हुसैन की उम्र नौ साल है उस के सोलह पारे हो चुके हैं । फातेमा एक इस्लामी स्कूल में दूसरी क्लास में पढ रही है । उन के वालिद ने उस को कुरआने हकीम घर पर पढाया है । हम दोनों ने प्रोग्राम बनाया है कि अपने बच्चों को रोज़गार से बेफिक्र कर देंगे और इतना नज़्म कर देंगे कि उन को कमाने की फिक्र न रहे और वह यकसूई(एकाग्रता) के साथ ज़िंदगी को दअ्वत के लिए वक्फ कर सकें ।

सवाल : आप ने अपने वालिद और वालिदा की फिक्र नहीं की ?

जवाब : अलहम्दुलिल्लाह मैं ने जिस साल एम.एस.सी.किया । फारिग होकर मैं हिंदुस्तान आई तो मैं ने कलीम भाई को बुलाया और वालिद साहब पर काम करने की दरख्वास्त की उन्होंने वालिद साहब को बहुत सी किताबें दीं । हज़रत मौलाना अली मियाँ की किताब '' नबीये रहमत '' ने उन को बहुत मुतअस्सिर किया ।

वह इस्लाम से पहले से ही मुतअस्सिर थे मगर इतनी उम्र तक एक

मज़हब में रहने और खानदान के लोगों खुसूसन अपने चचा पीलू मोदी साहब और उनके खास दोस्त आर.के.करंजिया की वजह से उनको झिझक थी । मेरी शादी डॉक्टर आमिर से उन्होंने बाकायदा इस्लामी तरीके बल्कि मुसलमानों के तरीके पर यानी रिवाज़ के मुताबिक की और खूब खर्च किया । ज़ाहिर है खूब खर्च करना खुद इस्लामी तरीका नहीं । मगर मुसलमानों ने इसी तरीके को इख्तियार किया है । हम लोगों के पी.जी.आई मुलाज़ेमत के दौरान एक बार गोमती नगर में हमारे यहाँ दो रोज़ के लिए आए । हम दोनों ने छुट्टी ले ली और उन से इस्लाम कुबूल करने पर इसरार किया वह शुरु में टलाते रहे कि रस्म से क्या होता है ? मैं दिल व दिमाग से तुम लोगों से पहले मुसलमान हूँ । मगर मेरे शौहर ने कहा, बिला शुबह असल चीज़ तो दिल व दिमाग का इस्लाम है और हम इसी को इस्लाम की रुह मानते हैं । मगर रुह के लिए जिस्म भी ज़रुरी है अगर जिस्म न हो तो रुह किस चीज़ में पडेगी। आप कलमा पढ लीजिए । वह तैय्यार हो गए और उन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया । मम्मी भी उन के साथ थीं। पापा मुसलमान होने के बाद मम्मी को मनाना हमारे लिए आसान हो गया । उन्होंने भी कलमा पढ लिया । मेरठ आकर दो माह के बाद उनको सख्त तरीन हार्टअटेक हुआ । उन के दिल की दो वॉलें खराब हो गई थीं । हम उन को लखनऊ ले गए मगर ज़िंदगी का फैसला करने वाला अपना फैसला कर चुका था। लखनऊ में ही उनका इंतेकाल हो गया और वहीं तदफीन हुई । अलहम्दुलिल्लाह आखरी वक्त उन का ईमान के लिहाज़ से बहुत अच्छा था और वह अपने इस्लाम पर हद दर्जा अल्लाह की ताअरीफ और शुक्र करते थे।

सवाल : आप के भाइयों का क्या हाल है ?

जवाब : मुझ से छोटे भाई तारिक ने सी.ए.किया और मुंबई में एक बडे कारखाने में मॅनेजर है । उन की शादी मुंबई के एक तब्लीगी घराने में हुई है । छोटे भाई शारिक ने बी.ई.किया है वह लखनऊ में एक होटल मॅनेजर हैं । उनकी शादी मेरे शौहर की छोटी बहन राशेदा से हो रही है । अभी 29 जून को उनका निकाह होना है । इंशाअल्लाह ।

सवाल : आप को खुद अल्लाह ने हिदायत से नवाजा है और आप खुद दअ्वत का काम कर रही हैं । दअ्वती ज़िंदगी में आप का तअ्स्सुर क्या है कि किसी

गैरमुस्लिम की हिदायत के लिए क्या चीज सब से ज़्यादा मोअस्सर (परिणामकारक) होती है ?

जवाब : यूँ तो यह इल्म और अक्ल का जमाना है । बेचैन और बिलकती इंसानियत के लिए इल्म और अक्ल के पैमाने पर पूरे उतरने वाले मज़हब का तआर्रुफ ही इंसान को हद दर्जा मुतअस्सिर करता है मगर मैं अपने कुबूले इस्लाम और अपने वास्ते से हिदायत पाने वाले लोगों के हालात पर गौर करने से इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि आप अपनी तकरीरी दअ्वत से लोगों को काईल तो कर सकते हैं मगर इस दर्जा मुतअस्सिर करने के लिए कि एक ज़िंदगी के तरीके पर रहने वाला आदमी मज़हब तब्दील करने पर आमादा हो जाए इस के लिए आप की दअ्वत के साथ आप के किरदार (चरित्र)की अजमत (महानता)ज़रुरी है । मैं समझती हूँ हमारे घराने को मुशर्रफ ब इस्लाम करने बलकि हम दोनों को दअ्वत पर खडा करने में आप के अबी की फितरी शराफत और मुजस्सम दअ्वती किरदार सब से अहम ज़रिआ रही । किताबों के साथ नबीयों को भेजना खुद मेरे ख्याल में बडी दलील है । इंसान को किताब के साथ अफराद चाहिए यानी कौल के साथ किरदार की ज़रुरत होती है तब कहीं इंकलाब बरपा होता है।

सवाल : शुक्रिया इरम फूफू । मैं आप की बहुत मश्कूर हूँ,आप कारिईन के लिए कोई पैगाम देना चाहेंगी । खुसूसन कारिईन में मस्तूरात भी होती हैं । उन के लिए कोई खास पैगाम ।

जवाब : अरमुगान के वास्ते से मैं कारिईन बहनों की खिदमत में यह दरख्वास्त पेश करुँगी कि एक मुसलमान की ज़िम्मेदारी पूरी इंसानियत तक इस्लाम के पैगाम को पहुँचाना है । इस में मर्दों के साथ औरतों को भी मुकल्लफ बनाया गया है । बल्कि इस्लामी दअ्वत की तर्तीब तो तारीखे इस्लाम में यह मिलती है कि इस्लामी दअ्वत की मदअूअ मर्दों से पहले औरतें हैं । हमारे नबी स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सारे रुफका, मोहसिनीन और महरम राज मर्दों के होते हुए गारे हिरा में पहली वही (ईशवाक्य)के नुजूल (उतरने)के बाद अपनी दअ्वत का सब से पहला मदअूअ अपनी रफीके हयात (जीवनसाथी)हज़रत खदीजा (रजि) को बनाया था । इस से यह बात साबित होती है कि औरतों को भी अपनी ज़िम्मेदारी समझना चाहिए बल्कि मर्दों से ज़्यादा समझना चाहिए । मैदाने दअ्वत

में गैरमुस्लिम अकवाम (समाज)खुसूसन मग्रिबी (पश्चिमी)दुनिया से करीब होकर उन को इस हकीकत से भी वाकफियत (पहचान)होगी कि जिस माद्दियत और ठरयानियतजदा मग्रिबी तहज़ीब की चकाचौंध से हम मरऊब हो रहे हैं और इसको हम तरक्की की मेअराज (उंचाई)समझ रहे हैं । वह किस कदर पस्ती का शिकार है । वह बेचैनी और इज्तिराब में खुदकुशी के दहाने पर खडी इस्लामी तालीमात की किस कदर प्यासी है और दीने इस्लाम की नेअमत से नवाज़ कर अल्लाह तआला ने हमारे ऊपर किस कदर बडा एहसान क्या है ?

सवाल : दिल चाहता था कि आप से आप की तफ्सीली दअ्वती कार गुज़ारी के बारे में माअलूमात हासिल की जाएँ मगर आप को जल्दी जाना है । इंशाअल्लाह आइंदा मुलाकात में फिर इस्तेफादा किया जाएगा । बहुत बहुत शुक्रिया ।

जवाब : ज़रुर । वाकई दअ्वती ज़िंदगी में बडे तजुर्बात और हिदायत के हैरतनाक वाकिआत हम दोनों की ज़िंदगी में पेश आए हैं इंशाअल्लाह अब की मुलाकात में ।

فِی اَمَانِ اللّٰہِ، اَسْتَوْدِعُکُمُ اللّٰہَ دِیْنَکُمْ وَ اَمَانَتَکُمْ وَ خَوَاتِمَ اَعْمَالِکُمْ ۔

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान, जुलै 2004]

••••••

⑧ मदीना मुनव्वरा की मकीन एक खुशकिस्मत खातून

मेरी सब मुसलमानों से दरख्वास्त है कि वह अपना मन्सब पहचानें और गैरमुस्लिमों से राब्ता कायम करें और साथ ही अपने किरदार को इस्लाम से आरास्ता करें और अपने आप को मुजस्सम दअ्वत बनाएँ और अपने अमल से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम का तआर्रुफ कराएँ। अगर हमारे नबी सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम का उसवा लोगों के सामने आजाए तो लोग एक्टरों, लीडरों, खिलाडियों को आइडियल बनाने के बजाए सिर्फ और सिर्फ हमारे नबी सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम को आइडियल बनाएँगे । इस से ज़्यादा पुरकशिश कोई और किरदार हो ही नहीं सकता । दुसरे यह कि रेडियों, टी.वी.और मीडिया के वास्ते से (हुदूदे शरीअत में रहकर) इस्लाम लोगों तक पहुँचाया जाए और इसके लिए तहरीक चलाई जाए ।

अस्मा ज़ातुल फ़ौज़ैन

अस्मा ज़ातुल फ़ौज़ैन : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
शहनाज़ : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

सवाल : शहनाज़ फूफू । अलहम्दुलिल्लाह हमारी हाज़री प्यारे नबी स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शहर में हुई है । इस मोहसिन शहरे मुकद्दस का हक है कि यहाँ नबवी दर्द और दअ्वत्ते दीन का जजबा हासिल किया जाए । आप हमारे अरमुगान से वाकिफ हैं । कुछ ज़माने से दाअवती जज़्बा पैदा करने के लिए इस में खुशकिस्मत नवमुस्लिमों के इंटरव्यु शाअेअ किये जा रहे हैं । अबी की ख्वाहिश है कि मैं आप से कुछ बात्तें करुँ ताकि वह बातें आईंदा किसी शुमारे (अंक)में शाअेअ होना बडी बरकत की बात होगी ?

जवाब : मुझ से फोन पर भाई कह रहे थे । ज़रुर मेरे लिए भी खुशी की बात होगी । ताकि इस अजीम और मुबारक कारे दअ्वत में मेरा भी हिस्सा हो जाए।

सवाल : आप अपना खानदानी तआर्रुफ कराइये ?

जवाब : मैं जम्मूँ शहर के एक पढे लिखे मल्होत्रा खानदान में पैदा हुई । मेरी पैदाइश 4 मई 1975 को हुई । मेरे वालिद कुलदीप मल्होत्रा कॉमर्स के लेकचरार थे । मेरी वालिदा बहुत शरीफ और मुसीबत ज़दा खातून थीं । कम उम्री ही से वह बीमार हो गई थीं और किस्मत की बात यह है कि शादी के बाद भी उन को सुख चैन नहीं मिल सका । मेरी उम्र 5 या 6 साल की होगी कि उनका इंतेकाल हो गया। मेरे एक बडे भाई थे । संदीप मल्होत्रा उन की उम्र 10 साल थी । एक मर्तबा मेरी वालिदा मुझे दरिया में डालने के लिए ले गईं । एक आदमी ने उन को दरिया के पुल पर खडा देखा तो वजह मालूम की । वह बोलीं, मैं अपनी इस बच्ची को दरिया में डालने आई हूँ । उन्होंने कहा कि अगर मेरी तरह इस का भी मुकद्दर खराब हुवा तो सारी जिंदगी मुसीबत भरेगी । इस से तो अच्छा है अभी मर जाए । उस आदमी ने खुशामद की और समझाया कि इस बच्ची की तक्दीर तो बहुत अच्छी होगी । तुम इस की फिक्र न करो और इस को दरिया में न डालो। उस ने न जाने किस हमदर्दी में यह अलफाज कहे थे कि मेरी वालिदा ने मुझे दरिया में डालने का इरादा मुल्तवी कर दिया । मुझे घर ले आई और एक साल बाद उन का इंतेकाल हो गया । मेरी वालिदा के इंतकाल के छः माह बाद मेरे वालिद ने दूसरी शादी कर ली । सौतेली माँ (अल्लाह तआला उन के एहसान का बदला अता फरमाए) उन का बर्ताव मेरे साथ बडा सख्त था । मुझ पर काम का बहुत बोझ रहता था । सख्त हालात में मैं ने मॅट्रिक पास किया । मेरा घर मेरे लिए

जेल बल्कि जहन्नुम की तरह था । मैं घर के मजालिम से इस कदर तंग आ गई कि कई बार खुदकुशी की नाकाम कोशिश की । एक बार नींद की बहुत सारी गोलियाँ खालीं। कई बार पहाड पर चढ कर गिरने की कोशिश की । मगर मेरे करीम अल्लाह को मुझे नवाजना था । इसलिए खुदकुशी की कोई कोशिश कामियाब नहीं हुई । मेरी सौतेली वालिदा हमारे वालिद साहब को मेरे खिलाफ शिकायत लगाकर भडकाती रहतीं । वह मुझ पर तरस खाने के बजाय मुझे डाँटा करते । मैं मंदिरों में जाती , मजारों पर जाती और बजाय पूजा के मैं यह सवाल करती कि मुझे बताओ मेरी अंधेरी रात की सुबह कब होगी । होगी भी या नहीं? मगर वह बेजान मेरे सवाल का जवाब क्या देते । काश मैं कुरआन की इस सदा को जानती तो इन बेजान चीजों से मुंह न मारती । मैं आज कुरआने हकीम पढती हूँ तो ख्याल आता है कि कुरआन की यह आयत मेरे ही बारे में नाजिल हुई थी,

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ۝ سورة فاطر:١٤

अगर तुम उन को पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार नहीं सुनते और अगर सुनते तो तुम को जवाब नहीं देते और कयामत के दिन मुनकर होंगे । तुम्हारे शरीक ठहराने के और कोई खबर रखने वाले की तरह नहीं बतलाएगा ।

एक रोज़ मैं ने एक कब्र में मुर्दे को दफन होते देखा तो मैं ने अपनी सहेली से कहा मेरी कब्र ही बनाना । मुझे जलाना नहीं । मेरी सौतली माँ रोज मुझे डांटने और वालिद साहब से डंटवाने के लिए नई नई बातें निकालती थीं । उन्होंने एक रोज मुझ पर पर्स से पाँच सौ रुपये निकालने का इल्ज़ाम लगाया। मेरी बर्दाश्त की हद हो गई । मुझे यह ख्याल आया कि उन्होंने आज मुझ पर चोरी का इल्ज़ाम लगाया है मेरा वुजूद उन को गवारा नहीं । न जाने कल कोई इस से बडा इल्ज़ाम मुझ पर लगादें । मेरे पास 100 रुपये थे । चंद जोडी कपडे और वह रुपये लेकर मैं निकल पडी और घर हमेशा के लिए छोड दिया ।

सवाल : अपने कुबूले इस्लाम के बारे में बताइये ?

जवाब : मैं ने असल में वही बताने के लिए बात शुरु की है । मेरी सौतेली माँ का एहसान है कि उन के मज़ालिम (अन्याय)ही मेरी हिदायत का सबब बने । मेरे करीम और हादी रब के कुर्बान ।जिस ने जुल्म के अंधेरों से निकाल कर मुझ पर

रहमत और हिदायत की बारिश फरमाई । मैं घर से निकली तो एक कपडे बैग मेरे हाथ में था । हमारा घर एक तंग गली में था । मैं गली से निकल रही थी , मेरे वालिद कॉलेज से आ गए । वह मेरे बराबर से निकले मगर उन की निगाह मुझ पर नहीं पडी । वरना वह मुझे इस तरह सामान के साथ जाता देख कर वापस ले जाते । और न जाने क्या करते । मैं रेल्वे स्टेशन पहुँची । घर से बाहर कभी निकली नहीं थी । मैं ने देहली का टिकट लिया और देहली ट्रेन में बैठ गई । मुझे यह भी मालूम नहीं था । किस डिब्बे में बैठना चाहिए । फौजियों के एक डिब्बे में चढ गई । उन बेचारों ने लडकी समझ कर जगह दे दी । गाडी चली । रिजर्वेशन टी टी आया । फौजियों के डिब्बे में मुझे देखा तो टिकट मालूम करने लगा । बराबर में बैठे फौजी ने कहा यह मेरी बहन है । यह मेरे अल्लाह की मदद थी । उस फौजी ने बहन बनाने के बाद सारे रास्ते मेरा बहन की तरह ख्याल रखा उपर की बर्थ खाली करके उस पर सोने को कहा और बार बार तसल्ली देता रहा। बहन तुम फिक्र न करो ।

मैं आराम के साथ देहली पहुँची । स्टेशन से बाहर निकली तो सामने सिटी बस आती दिखाई दी । मैं उस पर चढ गई । मेरी सीट के आगे दो नौजवान लडके बैठे थे । जो आपस में बातें कर रहे थे । उन की बातों से मुझे शराफत का एहसास हुआ । मैं ने उन से कहा , भैय्या मुझे यहाँ देहली में कोई गर्ल्स होस्टल बता दो । उन्होंने मुझ से मेरा पता मालूम किया मैं ने अपना पता बता दिया । वह मेरी मुश्किल को भांप गए । उन्होंने कहा , गर्ल्स होस्टल दूर है आप ऐसा करें कि हमारी बहन से मिल लें । थोडी देर वहाँ आराम करें । वह पढी लिखी हैं । आप को गर्ल्स होस्टल खुद पहुँचा देंगी । उन के घर में कोई मर्द नहीं है । मुझे उन की शराफत की वजह से इत्मीनान हो गया । वह मुझे साउथ एक्सटेंशन अपनी बहन के यहाँ ले गये । उन की बहन ने मेरे साथ बहुत अच्छा सुलूक किया। नाश्ता वगैरा कराया । एक दो रोज इत्मीनान से रहने को कहा और इत्मीनान दिलाया कि मैं खुद आप को अच्छे होस्टल में ले चलूंगी ।उन की बहन ने मुझे अपने एक अजीज़ इशरत साहब से मिलने को कहा कि उन से मिलने के बाद ही मैं होस्टल वगैरा का फैसला करुँ । मैं इशरत साहब के ऑफिस गई उन्होंने कुछ देर बात करके अपने ऑफिस की एक औरत को

बुलाकर उन के साथ अपनी बेवा बहन के पास भेज दिया । उन के एक अज़ीज़ आरिफ साहब थे जो उन के यहाँ आते थे । उन्होंने मुझे मूर्ती पूजा के बारे में समझाया । उन की बातें मेरी अक्ल को बहुत भाई और मुझे मूर्ती पूजा बडी हिमाकत लगने लगी । एक के बाद एक कई मुसलमानों के मुआमिलात उन की शराफत और एक जवान लडकी के साथ मोहतात (सावधान)शराफत और कुछ कुछ इस्लामी तालीमात के तआरुफ ने मुझे इस्लाम की तरफ रागिब (प्रवृत्त)किया और एक रोज़ मैं ने आरिफ साहब से मुसलमान होने की ख्वाहिश ज़ाहिर की । उन्होंने मुझे समझाया कि ईमान हर इंसान की सब से बडी ज़रुरत है मगर तुम परेशान हाल हो हमारे यहाँ रह रही हो किसी मजबूरी या हमारी थोडी सी हमदर्दी का बदला देने के लिए इस्लाम कुबूल करना ठीक नहीं । लेकिन सोच समझ कर अपनी सब से बडी ज़रुरत जान कर इस्लाम कुबूल करना चाहती हो तो इस से ज़्यादा हमारे लिए खुशी की बात और क्या होगी । कि हमारी एक बहन हमेशा हमेशा की दोज़ख (नर्क) की आग से बच जाय । मैं ने बहुत इत्मीनान और खुशी से इस्लाम कुबूल करने को कहा । उन्होंने मुझे कलमा पढवाया । मैं ने इस्लामी तालीम हासिल करने की ख्वाहिश जाहिर की तो उन्होंने मुझे मेवात भेज दिया ।

सवाल : मेवात के देहाती माहौल में तो आप को बडा अजीब सा लगा होगा ?

जवाब : इब्तिदा में जरा परेशानी हुई मगर बाद में मानूस हो गई । इस्लामी तालीम के सिलसिले में मेरा वहाँ रहना बहुत मुफीद साबित हुआ । नमाज वगैरा अलहम्दुलिल्लाह अच्छी तरह याद हो गई । नौ दस महीने में कुछ कुरआन शरीफ और उर्दु पढना भी आ गई ।

सवाल : मौलाना जावेद अशरफ नदवी से आप की शादी किस तरह हुई ?

जवाब : मेवात से देहली आई तो आरिफ साहब ने बाराबंकी के एक लडके से मेरा रिश्ता कर दिया । वह लडका दीनदार नहीं था । मेरे लिये अब दीन ही सब कुछ था । मैं ने डरते डरते आरिफ साहब से कहा कि मेरे लिए किसी दीनदार लडके को तलाश करें । चाहे बिल्कुल फकीर ही क्युँ न हो । मेरी ख्वाहिश पर उन्होंने वह रिश्ता रद्द कर दिया । आरिफ साहब ने अपनी लडकी के रिश्ते के लिए कौमी आवाज में इश्तेहार दिया था । वह इश्तेहार मौलाना (जावेद अशरफ नदवी साहब) ने देखा । उन की शादी हो गई थी मगर बदकिस्मती से बल्कि

मेरी खुशकिस्मती से वह शादी निभ नही सकी और तलाक हो गई । उन के वालिदैन का इंतकाल हो गया था । इश्तेहार देखा तो भाइयों की मर्जी के बगैर आरिफ साहब के यहाँ रिश्ते के लिए पहुँचे । शायद आरिफ साहब ने उन की दूसरी शादी की वजह से या मेरी मुहब्बत में ,या अपनी बेटी से जोड न बैठने की वजह से मेरे बारे में बताया और मुझ से शादी करने को कहा । इस दौरान मैं ने अपनी आप बीती और कुबूले इस्लाम की कहानी ''कडवा सच, किताब के तौर पर लिख ली थी । आरिफ साहब ने मौलाना को वह किताब दिखाई । मौलाना किताब देख कर बहुत मुतअस्सिर हुए और मुलाकात की ख्वाहिश ज़ाहिर की । मुलाकात हुई और निस्बत (संबंध)तय हो गई । चंद रोज़ के बाद एक दिन जोहर की नमाज में मेरा निकाह हो गया । मौलाना मुझे अपने घर नहीं ले जा सकते थे। खानदान और बिरादरी की मुखालिफत (विरोध)का खौफ था । इस लिए लखनऊ ले गए फिर अपने एक और साथी मुफ्ती अब्दुल हमीद साहब के पास मुंबई ले गए । उन के यहाँ एक साल रखा । मुफ्ती साहब और उन की वालिदा ने मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया कि हकीकी माँ और भाई भी नहीं कर सकते ।

सवाल : आप मदीना मुनव्वरा किस तरह आईं ?

जवाब : मेरे अल्लाह के करम की हवा चली थी कि करम पे करम होता गया । मौलाना साहब (मौलाना जावेद अशरफ नदवी) का मदीना युनिवर्सीटी में दाखला हो गया । मौलाना ने किसी तरह मुझे उमरा के वीजा पर यहाँ बुला लिया । अल्लाह तआला ने मुझे मदीना की मुहब्बत अता की थी । मेरा दिल वापसी को न चाहा और सालों तक गैर कानूनी तौर पर यहाँ रही । मेरे तीन बच्चे अल्लाह ने मुझे मदीना मुनव्वरा में अता किये । मदीना की गलियों में खो जाने का मज़ा मेरे करीम अल्लाह ने मुझे चखाया । मौलाना की शक्ल में मुझे अल्लाह तआला ने इंतेहाई नर्मखू (नर्म तबीअत),हलीम(सब्रवाला),सलीमुत्तबअ(अच्छी तबीअत वाला),और करीमुन्नफ्स (मेहरबान) शौहर अता किया । उस पर मदीना मुनव्वरा की रिहाइश (रहना) अता करके मेरे सारे गम भुला दिये ।

सवाल : हजरत मुफ्ती आशिके इलाही बुलंद शहरी रहमतुल्लाह अलैह के घराने से आप का तअल्लुक कैसे हुवा ?

जवाब : हमारे शौहर मौलाना साहब में शर्म बहुत है किसी बडे आदमी या

आलिम से मिलते हुए झिझकते हैं । मुझे मालूम हुवा कि हमारे यहाँ के बडे आलिम हज़रत मुफ्ती साहब यहाँ रहते हैं । मैं उन के घर गई और हज़रत मुफ्ती साहब की बीवी (अम्मी जान) से मिली । पहली मुलाकात के मेरे तआर्रुफ ने उन को मुझ पर शफीक बना दिया । उन्होंने हज़रत मुफ्ती साहब से मेरा ज़िक्र किया। मुफ्ती साहब पर गैर मुस्लिमों में दअ्वत का बहुत गलबा हो गया था । जिस की वजह से वह आप के अबी मौलाना कलीम साहब से बहुत तअल्लुक रखते थे । उन्होंने हमारे शौहर को बुलवाया और दोनों ने मुझे अपनी बहन बना लिया और वाकई माँ बाप की तरह मेरी सरपरस्ती फरमाई । अम्मी जान अब भी ज़ोअफ (बुढापे) के बावजूद मेरे बच्चों के कपडे अपने हाथ से सी कर पहनाती हैं । मैं किसी की दअ्वत कर दूँ तो कोई चीज खुद बना कर ले आती हैं । वह मुझ से मेरे बच्चों से किस कदर मुहब्बत करती हैं मै बयान नहीं कर सकती । हज़रत मुफ्ती साहब मेरे पूरे खानदान से हद दर्जा मुहब्बत फरमाते हैं । अलहम्दुलिल्लाह हज़रत के घराने वाले बेटे बेटियाँ भी मुझ से बिल्कुल बहनों जैसा सुलूक करते हैं। बल्कि सब बहनों से ज्यादा मेरा ख्याल रखते हैं ।

सवाल : हमारी अम्मी जान (दादी) भी तो आप को बेटी कहती हैं और आप को बहुत याद करती हैं उन से आप का तअल्लुक किस तरह हुवा ?

जवाब : आप के अबी मौलाना कलीम साहब से मेरे शौहर मौलाना जावेद साहब के कुछ तअल्लुकात थे । एक बार वह वालिदा को लेकर उमरा के लिए आए । मैं उन से मिलने गई और मदीना मकीन होने की वजह से कुछ ज़ियाफत (दावत) की कोशिश की । उन को मुझ से मुहब्बत हो गई । मैं तुम को तजुर्बे की बात बताती हूँ खिदमत में अल्लाह ने बडी तासीर रखी है । आदमी अगर खिदमत का आदी हो तो पत्थर जैसे दिल में भी जगह बना लेता है । मुझे अपने बडों की खिदमत का पैदाइशी शौक है । किसी बडे के कपडे धोने, उस के सर पर मालिश करने ,या पाँव दबाने में बहुत मजा आता है । बूढी औरतों को तो खिदमत की ज़रुरत भी होती है और बडों का क्या जरा सी देर में कलेजे से दुआएँ देने लगते हैं । अगर जरा सा आराम कुर्बान करके आदमी किसी की खिदमत कर ले तो फिर इन दुआओं से दुनिया और आखिरत बनती है । मैं ने बडों की दुआओं में बडी तासीर देखी है ।

सवाल : मदीना मुनव्वरा में पूरी दुनिया से लोग आते हैं । मैं ने सुना है आप का कोई दूर का जानने वाला या मिलने वाला आ जाए एक पाँव पर आप उस के लिए खडी हो जाती हैं । पाँच छोटे छोटे बच्चे और आप ट्युशन भी पढाती हैं क्या आप थकती नहीं हैं ?

जवाब : मेरे अल्लाह ने मुझे मदीना मुनव्वरा की सुकूनत (रहना)का शर्फ बख्शा है । यहाँ के पानी और फिजा में इकराम(इज्जत), ज़ैफ (खाने की दावत)और मेहमानों की खातिरदारी (मेहमानी) रखी है । हम गैरइख्तियारी तौर पर मजबूर होते हैं कि मदीना के मेहमानों की खिदमत और ज़ियाफत (दावत) का मजा लें । मेरे दिल में आता है कि हमारे रसूल स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम के मेहमान हैं और आप स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम तक हमारे हालात पहुँचते हैं । अपने मेहमानों की ज़ियाफत से आप किस कदर खुश होते होंगे । जब यह बात हो तो थकन का क्या मतलब । मेरी प्यारी । इस ख्याल से भी खुशी और मजा महसूस होता है कि हमें रसूल स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मेहमानों की जियाफत और खिदमत का शर्फ मिल रहा है । मैं तो बच्चों की खिदमत भी अल्लाह का हुक्म समझ कर करती हूँ और ट्युशन अपने शरीफ और मसाइल के बोझ तले दबे हुए शौहर का बोझ कम करने के लिए पढाती हूँ । मुझे अलहम्दुलिल्लाह इस निय्यत की वजह से हर काम में मज़ा आता है । करने के बाद फरहत होती है। वाकई हमारे दीन ने हमें निय्यत को खालिस करने का हुक्म देकर एहसान किया है । निय्यत ठीक हो तो हर चीज में मजा है ।

सवाल : सुना है आप मदीना मुनव्वरा से जाना पसंद नहीं करतीं । यहाँ पर रोजगार वगैरा के मसाइल भी बहुत हुए और दूसरी जगहों से बुलावे भी बहुत आए ?

जवाब : असल में मदीना जिस ने देख लिया वह जन्नत के अलावा कहीं जाना चाहे ऐसा कैसे हो सकता है । मेरी ख्वाहिश और आखरी तमन्ना है कि बकीअ पाक (मदीने का पाक कब्रिस्तान) की खाक मुझे मिल जाये । तुम भी दुआ करना (रोते हुए) मैं यहाँ के कबूतरों को देखती हूँ तो दुआ करती हूँ कि या अल्लाह । आप ने बकीअ पाक के दाने उन को मुकद्दर कर दिए मेरे लिए अपने नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम के कदमों की यह खाक मुकद्दर फरमा दीजिए ।

सवाल : आप ने अपने घर वालों की कुछ खैर खबर नहीं ली । उन्होंने आप को तलाश भी नहीं किया ?

जवाब : शायद उन्होंने तो मुझे तलाश नहीं किया । असल में उन्होंने तो यकीन कर लिया था कि मैं ने खुदकुशी करली है । गुज़िश्ता साल से मेरे वालिद और भाई से मेरा राब्ता हुआ है । यहाँ मदीना मुनव्वरा में जम्मु के एक तालिबे इल्म पढते थे । उन्होंने मेरे वालिद को मेरा पता बता दिया । वह बेचैन हो गए । मैं वीजा लगवाने हिंदुस्तान गई थी जब ही झिझक कर बार बार हाँ और ना ना करके एक जगह मेरी उन से पुरानी देहली में मुलाकात हो गई । वह बहुत रोए और जब मैं ने सारे हालात बताए तो वह बहुत नादिम हुए । अब वह मुझे दूसरे तीसरे रोज फोन करते हैं । मौलाना जावेद अशरफ और मैं ने उन को इस्लाम की दअ्वत भी दी है । उन्होंने बुतपरस्ती छोड दी है । हम लोगों ने आप के अबी मौलाना कलीम साहब से दरख्वास्त की है बल्कि उन्होंने खुद ही उन का पता लिया है उन्होंने अपने साथियों को लगाया है और उम्मीद दिलाई है कि वह इंशाअल्लाह ज़रुर इस्लाम कुबूल कर लेंगे ।

सवाल : आप की सौतेली वालिदा हयात हैं उन से भी राब्ता किया ?

जवाब : हाँ । वह भी जिंदा हैं उन से भी मैं ने फोन पर एक बार बात की वह बहुत मआफी माँग रही थीं । मगर मैं अपनी किस्मत के बनने और गम के अंधेरे की सुबह होने में सब से बडा एहसान उन का ही मानती हूँ । कि उन के मज़ालिम ही मेरी हिदायत का ज़रिआ बने । मैं ने मुलतज़िम पर और हर खास मौके पर अपने एक बडे मोहसिन की तरह उन के लिए दुआएँ की हैं । मेरे अल्लाह की अजीब शान कि उन के सारे मज़ालिम मुझे आखरी दर्जा के एहसान लगते हैं । उन के लिए मैं बिलक बिलक कर हिदायत की दुआएँ करती हूँ । गुज़िश्ता हज के मौके पर अरफात में मैं ने सब से ज्यादा उन के लिए हिदायत की दुआ माँगी ।

सवाल : बच्चों की तालीम के लिए आप का क्या इरादा है ?

जवाब : यहाँ सऊदी अरब के स्कूलों में तर्बीयत का नज्म बहुत अजीब है । हमारा इरादा है कि हमारा एक एक बच्चा दाऔ बने और दीन की खिदमत करे । अलहम्दुलिल्लाह मैं ने हज़रत मुफ्ती आशिके इलाही की तफसीर " अन्वारुल बयान, का हिंदी तर्जुमा हज़रत की हयात में शुरु किया था । मेरी ख्वाहिश है कि

अल्लाह तआला कुरआने हकीम की यह खिदमत मुझ से ले ले । इसलिए हम लोग मदरसे से ज्यादा घर पर उन की तालीम व तर्बीयत की फिक्र में हैं ।

सवाल : अरमुगान के वास्ते से आप मुसलमानों के लिए कुछ पैगाम देना चाहेंगी ।

जवाब : मैं दरख्वास्त ही कर सकती हूँ कि वह अपना मनसब पहचानें और गैरमुस्लिमों से राब्ता कायम करें और साथ ही अपने किरदार को इस्लाम से आरास्ता करें और अपने आप को मुजस्सम दअ्वत बनाएँ और अपने अमल से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम का तआर्रुफ कराएँ। अगर हमारे नबी सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम का उसवा(आदर्श) लोगों के सामने आजाए तो लोग एक्टरों,लीडरों,खिलाडियों को आइडियल बनाने के बजाए सिर्फ और सिर्फ हमारे नबी सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम को आइडियल बनाएँगे । इस से ज़्यादा पुरकशिश कोई और किरदार हो ही नहीं सकता । दूसरे यह कि रेडियों, टी.वी.और मीडिया के वास्ते से (हुदूदे शरीअत में रहकर) इस्लाम लोगों तक पहुँचाया जाए और इसके लिए तहरीक चलाई जाए ।

दूसरी दरख्वास्त यह है कि मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे भी अपने दीन की दाअवत के लिए कुबूल कर लें और मुझ से कुछ काम ले लें । बस मेरी यही हसरत है कि मैं और मेरी नसलें दीन की खिदमत खुसूसन दीन की दअ्वत के लिए कुबूल हो जाएँ । हमारे बाज मुतअल्लिकीन (संबंध रखने वाले) कहते हैं कि तुम लोग इतने दिनों से मदीना में रहते हो । घर भी नहीं बनाया ? मैं अकसर उन से कहती हूँ कि हम मदीना में बकीअ पाक का पेवन्द बनने के लिए पडे हैं । दुनिया बसाने के लिए तो हम पैरिस जाते या न्युयार्क जाते । यह उन के जवाब के लिए कहती हूँ । वरना मेरा ख्याल है कि दुनिया की जिंदगी का मज़ा और राहत भी मदीना मुनव्वरा की जिंदगी में है । पैरिस के लोगों को इस की खाक भी नसीब न होगी ।

सवाल : बहुत बहुत शुक्रिया । शहनाज फूफू । आप हमारे लिए भी दुआ कीजिए । आप पर तो बडा रश्क आ रहा है ?

जवाब : प्यारी अस्मा । तुम्हारा नाम कब से सुनते थे और अरमुगान में पढते थे। तुम को देखने को आँखें तरसती थीं । हम तुम पर रश्क करते हैं । हम मदीना

मुनव्वरा में रह रहे हैं । हमें नबीये अकरम स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम के शहर में रहना नसीब हो गया है मगर तुम तो नबीये अकरम स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम का काम बल्कि महबूब तरीन काम कर रही हो । अल्लाह तआला इस में और बरकत अता फरमाए । अल्लाह तआला तुम को मदीना मुनव्वरा बल्कि हरमैन शरीफैन की बार बार ज़ियारते खास कुबूलियत और बरकत के साथ नसीब फरमाए । आमीन ।

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान - दिसंबर 2004]

●●●●●●

Maktab Ashraf

9 इस्लाम लाने मे देर की वजह मुसलमानो का गंदा रहना था

हमारी जिंदगी इस्लामी किरदार का नमूना होनी चाहिए। ईस्लामा की हर अदा में कशिश है । देखिये पचास से जाईद (ज्यादा) अफराद (आदमीयों) पर मुश्तमल (आधारित) खानदान की हिदायत का जरीआ सिर्फ अब्दुर्रहमान साहब के वाअदे पर चुंगी जमा करने का अमल हुवा बलकि हमारे वास्ते से मुसलमान होने वाले सभी लोगों का जरीआ उन का एक इस्लामी अमल हुवा ।

अस्मा ज़ातुल फ़ौज़ैन

अस्मा ज़ातुल फ़ौज़ैन : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सलमा अंजुम : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सवाल : आप की खिदमत में कारिईने अरमुगान के लिए कुछ ज़रुरी बातें करने के लिए हाज़िर हुई हूँ ।
जवाब : मेरे लायक जो खिदमत हो मेरे लिए लायके सआदत है ।
सवाल : बराए करम अपना मुख्तसर तआर्रुफ कराएँ ?

Maktab Ashraf

जवाब : मेरा नाम अब अलहम्दुलिल्लाह सलमा अंजुम है । मेरा पहला नाम मधू गोयल था । मैं गाजीयाबाद के एक बहुत मज़हबी हिंदु गोयल खानदान में पैदा हुई। मेरे वालिद लाला सिंगल सेन गोयल एक मामूली सब्जी के ताजिर थे और मेरे बचपन में इंतकाल कर गए थे । मेरी परवरिश (पालन पोषण) मेरी वालिदा कैलाश वती और बडे भाई बाबु जगदीश गोयल के जेरे साया (निगरानी में) हुई हम लोग गाजीयाबाद के करीब गुलधरगाँव में रहते थे । मेरी वालिदा माजिदा जिन का इस्लामी नाम उम्मे नसीम है और मेरे सब से बडे भाई बाबु जगदीश जिन का इस्लामी नाम कलीम गाजी है और दुसरे भाई हेमकुमार जो अलहम्दु लिल्लाह अब मौलाना नसीम गाजी हैं । मेरी छोटी बहन भी जिस का नाम अब अस्मा है अपने पूरे खानदान के साथ अलहम्दुलिल्लाह मुसलमान हैं । मेरी तीन बडी बहनें मुसलमान नहीं हुईं । जिन में एक हयात है उन का नाम लजा है और दो राजेश्वरी और लीलावती का इंतकाल हो गया है ।

सवाल : अपने खानदान के इस्लाम लाने के सिलसिले में जरा बताइये ?

जवाब : मेरे बडे भाई बाबूजगदीश बडे मज़हबी हिंदु थे और उन्हें हिंदु मज़हब की बडी गहरी मालूमात थी । इस्लाम और मुसलमानों से उन को बडी नफरत सी थी । मुसलमान के यहाँ से सब्जी लेना भी वह पसंद नहीं करते थे और अगर खरीदते तो बहुत धोकर पकवाते थे । वह गाजीयाबाद नगर पालिका में चुंगी इंस्पेक्टर थे । वह हिंदु मज़हब को अपने मालिक को खुश करने और उस तक पहुंचने का सहारा समझते थे । वह मज़हब से बहुत अकीदत का तअल्लुक रखते। एक रोज़ वह एक चुंगी पर जाँच के लिए गए । दोपहर का वक्त था । गाजीयाबाद भट्टे के एक मुसलमान जनाब अब्दुर्रहमान साहब जो चूडियों का कारोबार करते थे । किसी हफ्तेवारी बाजार में दुकान लगाने के लिए चूडियाँ ले कर आए मगर उन के पास चुंगी के पैसे नहीं थे । उन्होंने चुंगी पर आकर दरख्वास्त की कि मैं शाम में वापसी में चुंगी के पैसे दे दूँगा । मुझे शाम पाँच बजे तक की मोहलत दे दी जाए । बाबुजी ने कहा कि वापसी पर भी कोई चुंगी देता है ? उन्होंने जवाब दिया कि बाबुजी मुसलमान देते हैं । बाबुजी को यह बात लग सी गई और वह बावजूद दूसरी जगह के तकाजों के शाम तक वहीं बैठ गए कि देखता हूँ मुसलमान किस तरह चुंगी देता है । अब्दुर्रहमान साहब वक्त से कब्ल

ग्राहकों की भीड से दुकान समेट कर पाँच बजे से 15 मिनिट कब्ल चुंगी पर आए और चुंगी जमा करादी । बाबुजी उन के इस ईफाए वाअदा (वाअदा पूरा करना) से मुतअस्सिर (प्रभावित) हुए और फिर उन से दोस्ती कर ली । हकीकत यह है कि ईफाए वाअदा का यह इस्लामी अंदाज ही हमारे खानदान के लिए हिदायत का ज़रिआ बना । बाबुजी ने इस्लाम का मुतालआ (वाचन) शुरु किया। घर आए एक संजीदा मुसलमान जनाब काजी जमील साहब बाबुजी को मिल गए। उन्होंने बाबुजी को इस्लामी लिट्रेचर मुहय्या किया और साथ में छोटे भाई नसीम गाज़ी को भी करीब किया । बाबुजी इस्लाम के मुतालअे से बहुत मुतअस्सिर हुए और उन्होंने दोस्तों और अजीजों से इस्लाम की तअ्रीफ शुरु की और इस्लाम कुबूल करने का इरादा जाहिर किया । उन्होंने उन को रोकने की बहुत कोशिश की । मगर छोटे भाई (हेमकुमार) मौलाना नसीम गाज़ी ने इस्लाम कुबूल कर लिया । इस दौरान लोगों ने दबाव देने और इस्लाम से बाज रखने (दूर रखने) के लिए एक झूटे कत्ल के मुकदमे में फंसा दिया । मुकदमा शुरु हुवा । गाज़ीयाबाद का एक बडा बदमआश सादिक था । उस को मालूम हुवा कि मुकदमे की तारीख है और लोग झूटी गवाही देने आएँगे । वह अदालत के बाहर चाकू वगैरा लेकर बैठ गया कि जो झूटी गवाही देने आएगा । आज अपना अंजाम देखेगा । उस के डर की वजह से लोग गवाही देने नहीं आए । मुकदमे में बाबुजी बरी हो गए । सादिक की इस हमदर्दी से बाबुजी और भी मुतअस्सिर हुए और उन्होंने भाभी और बच्चों से मशवरा किया और पूरा खानदान मुशर्रफ ब इस्लाम हो गया । पाँच बेटे और चार बेटियाँ जिस में तीन बलरियागंज से आलिम हैं । सब मुसलमान हो गए । मौलाना नसीम गाज़ी जिस वक्त मदरसा अलफलाह बलरियागंज में पढते थे । उन्होंने घर वालों पर बहुत काम किया । उन की कोशिश से मेरी छोटी बहन अस्मा मुसलमान हुई । और उन की शादी आजम गढ के एक मुअज्ज़ज़ (इज्ज़तदार) खानदान में हुई । उन के शौहर जामेआ में एक बडे ओहदे (पद) पर हैं । उस के बाद नसीम भाई वालिदा और मुझ पर बहुत मेहनत करते रहे । वह बडे दर्द भरे खुतूत (लेटर) हमें लिखते थे उन का एक दर्द भरा खत "नवमुस्लिम बेटे का अपनी माँ के नाम खत, क `उन्वान से शाअेअ (प्रकाशित) भी हुआ । चंद सालों की फिक्र और कोशिश से

मेरी वालिदा भी मुसलमान हो गईं ।

सवाल : आप अपने इस्लाम के सिलसिले में कुछ बताइये ?

जवाब : मैं अपने बारे में बताने जा रही हूँ । मुझे बचपन से इस्लाम से बडी चिढ थी । उस की बुनियादी वजह यह थी कि हमारे इलाके और गाजीयाबाद के अकसर इलाके में मुसलमानों को देखती थी । कि वह बहुत गंदे रहते हैं और उन के घर भी बहुत गंदे होते हैं । नसीम भाई जब भी गाजीयाबाद आते । एक घंटा मुझे समझाते । मुझे उनका समझाना बहुत बुरा लगता । कभी कभी मैं कानों में उंगलियाँ दे लेती । कभी रुई लगा लेती । उन की तरफ पीठ फेर कर दीवार की तरफ मुँह करके लेट जाती । मगर वह कहते रहते । एक बार वह मुझे आज़मगढ ले गए । वहाँ मैं ने बहुत सलीके और सफाई का ख्याल रखने वाले खानदानी मुसलमानों को देखा । गाजीयाबाद के इब्राहीम खाँ के घर मुझे ले गए । उन के घर की औरतों से मैं मुतअस्सिर हुई । वह दस साल तक मुझे समझाते रहे । कभी कभी वह रोने लगते । मुझे इस्लाम की बातें तो समझ में आती थीं । मगर मैं गंदे मुसलमानों में शामिल होना नहीं चाहती थी । मुझे डर रहता कि इन मुसलमानों में खास तौर पर अब्दुर्रहमान साहब के बेटे से मेरी शादी कर दी जाएगी । इस लिए मैं मुसलमान होते हुए डरती थी । एक बार मैं आजमगढ गई हुई थी । नसीम भाई मेरी खुशामद करते थे । एक रोज़ उन की डबडबाई आँखें देख कर मेरा दिल भर आया । मैं ने कहा , भय्या । तुम क्या चाहते हो । उन्होंने कहा, मधू बहन ,इस्लाम का कलमा पढ कर हमेशा की आग से बच जाओ । मैं ने कहा, अच्छा पढाओ और मैं ने कलमा पढा और इस्लाम कुबूल कर लिया । नसीम भाई की खुशी की कोई इंतेहा नहीं थी । वह खुशी में मुझे गले लगाकर फूट फूट कर रोने लगे । इसलिए कि तकरीबन दस साल की मुतवातिर (लगातार) कुढन लगन और मुसलसल दअ्वती कोशिश के बाद अल्लाह तआला ने मेरे दिल को इस्लाम के लिए खोला यह तकरीबन 28 साल पुरानी बात है ।

सवाल : आप की शादी किस तरह हुई ?

जवाब : शादी के सिलसिले में मेरी कुछ शराइत थीं । एक ज़माने तक सख्त तरीन मज़हबी हिंदु रहने की वजह से फौरन जहनसाज़ी नहीं हो सकी थी । इसलिए मेरी पहली शर्त थी कि मैं किसी दाढी वाले शख्स के शादी नहीं करुँगी,

लडका अलग रहता हो, ज्यादा भाई बहन वगैरा न हों यानी बडा खानदान न हो। मुझे इस्लाम कुबूल किए हुए तकरीबन एक साल हुवा था। हकीम अलीमोद्दीन संभली ने हमारे शौहर महमूद साहब से शादी के लिए कहा। वह उस वक्त रोज़गार के लिए खतौली से फुलत आकर रहने लगे थे। उन्होंने अपनी वालिदा से मशवरा किया और फिर खतौली भाइयों से मशवरा करने के लिए गए। वहाँ आप के दादा हाजी मुहम्मद अमीन साहब उनके खानदान के बुजुर्ग थे। उन्होंने ताईद की। गाजीआबाद आ गए कि रिश्ता पक्का करेंगे और इशारे से आप के अबी (मौलाना कलीम साहब) को दाअवत देते आए। रिश्ते पर आमादगी (मंजुरी) देख कर लोगों का मशवरा हुवा कि निकाह कर दिया जाए। असल में उन को मेरी तरफ से इत्मीनान नहीं था। बहरहाल सादगी से निकाह हो गया। अजीजों और घर वालों में से सिर्फ आप के वालिद (कलीम भाई) शादी में शरीक हुए। दो माह बाद हमारे भाई और वालिदा ने मुझे सादगी से मेरे शौहर के साथ इस तरह रुखसत कर दिया जैसे कई साल की शादी शुदा लडकी को रुखसत कर देते हैं।

सवाल : आप को अब कैसा महसूस होता है। महमूद चचा जान ने तो इतनी अच्छी दाढी भी रख ली है।

जवाब : मुझे बहुत अच्छा महसूस होता है। मेरे शौहर महमूद साहब एक अच्छे शौहर हैं। एक मिसाली मुसलमान हैं। मुझे उन के साथ शादी पर फख्र है। मैं उस पर अल्लाह का शुक्र करती हूँ। उन की दाढी मुझे बहुत अच्छी लगती है। बल्कि अब मुझे इस्लाम की हर चीज बहुत अच्छी लगती है। मेरे खानदान के अकसर लोगों के दाढियाँ हैं। बडे भाई, बाबूजी मर्हुम तो बहुत बहादुर मुसलमान थे। हिंदु के मुहल्ले में रहते थे। बाबरी मस्जिद के कजिये और उस से कब्ल गाज़ीयाबाद में बारहा फसादात हुए। मुसलमान दोस्तों के फोन आते थे कि हम आप को लेने आ रहे हैं। इन हालात में आप का वहाँ रहना ठीक नहीं हैं। बाबुजी बडे एअतेमाद से जवाब देते अगर आप इत्मीनान दिला दें कि मुसलमानों के मुहल्ले में मलिकुलमौत (मौत का फरिश्ता) नहीं आ सकते और हिंदुओं के मुहल्ले में मौत वक्त से पहले आजाएगी तो मैं आने को तैयार हूँ और मोडा बिछाकर सडक पर बैठ कर मशरुअ हुलिये (इस्लामी हुलिये)में अखबार पढने

बैठ जाते । उन का ईमान बडा कवी था ।

कुबूले इस्लाम के बाद हमारे खानदान को हिंदुओं ने बडी धमकियाँ भी दीं और बडे लालच भी दिए । राम गोपाल शालवाला वगैरा बारहा मिलने आए और करोडों रुपये की पेशकश की । कि आप किसी शर्त पर इस्लाम से बाज आजाइये । मगर उन्होंने हक के मुकाबले पर लालच और खौफ को ठुकरा दिया और ज़िंदगी भर न सिर्फ खुद मजबूत मुसलमान रहे बल्कि उन की वजह से अल्लाह ने खासे (कई) लोगों को हिदायत दी । मेरे दूसरे भाई मौलाना नसीम गाजी भी जो अलहम्दुलिल्लाह मुल्क के मशहूर दाओ हैं । इंसानी रिश्ते के भाइयों को दोज़ख की आग से बचाने के लिए बगैर किसी सियासी फिक्र और लालच के मुखलिसाना दाअवत पर जोर देते हैं । अलहम्दुलिल्लाह उस का फायदा जमाअते इस्लामी के लोगों को भी हुवा है । खासे लोग उन की दअ्वत से मुशरफ ब इस्लाम हुए हैं । अलहम्दुलिल्लाह ।

सवाल : अगर खुदा न ख्वास्ता आप को हिदायत न मिलती तो ?

जवाब : अगर खुदा न ख्वास्ता मुझ को हिदायत न मिलती इस तसव्वुर से भी काँप जाती हूँ । मेरा रुआँ रुआँ काँप जाता है । देखिये अभी मेरा हाल खराब हो रहा है । मेरी दो बहनें इस्लाम के बगैर दुनिया से चली गईं । वह इस्लाम के करीब हो गई थीं । मगर उन के मुकद्दर में हिदायत नहीं थी । मेरे वालिदा भी इस्लाम से महरुम दुनिया से रुखसत हुई । जब मैं सोचती हूँ तो नींद उड जाती है और कभी कभी मुसलमानो पर मुझे बहुत गुस्सा आता है । दस साल तक मैं। सिर्फ इसलिए मुसलमान नही हुई कि मैं जिन अकसर मुसलमानों को देखती थी वह बहुत गंदे रहते थे । उन का रहन सहन और माहौल जिन में चोरी चकारी, जुँवा और जिहालत है । मेरे लिए हिजाब बना रहा । अगर मुसलमान इस्लाम पर हकीकत में अमल करते तो मेरी बहनें और वालिदा ईमान से महरुम न जाते ।

सवाल : चच्ची जान । अच्छा यह बताइये आप गोश्त नहीं खाती मगर आप मुर्ग और गोश्त इस कदर लजीज बनाती हैं आप को कैसा लगता है ?

जवाब : मेरे शौहर महमूद साहब एक अच्छे मुसलमान शौहर हैं । मैं कुछ नमाज़, जिक्र वगैरा तो ज्यादा नहीं कर पाती । अपनी इबादत यही समझती हूँ कि मैं एक अच्छी मुसलमान बीवी बनूँ । मैं ने अपने आप को अपने शौहर के लिए

बिल्कुल वक्फ कर दिया है । वह गोश्त के बहुत शौकीन हैं । इसलिए मुझे गोश्त बनाने का शौक हो गया है । मैं गोश्त खाने के हुक्म को अल्लाह की नेअमत समझती हूँ । मैं ने अपने बच्चों को तरगीब देकर गोश्त का शौकीन बनाया है । मैं कोशिश के बावजूद नहीं खा पाती । तो इसे अपनी माअजूरी बल्कि महरुमी समझती हूँ ।

सवाल : माशाअल्लाह । आप ने अपने बच्चों की बडी अच्छी तर्बीयत की है । आएशा भाभी , सफिया भाभी और सलमान भाई आप के तीनों बच्चे बहुत सआदत मंद और नेक मुसमलान हैं । आप ने उन की किस तरह तर्बीयत की ?

जवाब : बच्चों की तर्बीयत में मुझ से ज्यादा उन के वालिद का हाथ है वह बहुत अच्छे और सच्चे मुसलमान हैं । अकसर गैर मुस्लिम मुहल्ले में रहे । मगर पडोसियों के महबूब रहे और जब मुहल्ला छोड कर आए तो हिंदुओं ने रोते हुए रुखसत किया । पक्की मोहरी मुहल्ले में एक छोटे मकान में हम एक जमाने तक रहे । मालिके मकान एक इंतेहाई मज़हबी हिंदु था । राम किशोर नाम था । दो मजामीन में एम.ए.था । मगर वह हमारे शौहर के अख्लाक व हमदर्दी से हद दर्जा मुतअस्सिर था । और इस्लाम की तरफ माइल हो गया था । कहता था महमूद साहब जिस कदर देवताओं की पूजा करता हूँ । हाल खराब होता जाता है सोचता हूँ यह झूटे भगवान छोड दूँ । और आप की तरह एक सच्चे मालिक का हो जाऊँ । उस के मुकद्दर में हिदायत नहीं थी बेचारा महरुम दुनिया से चला गया। मैं ने बच्चों को मुसलमान बनाने की फिक्र की और बचपन से नमाज पढने के वक्त दल के सर रहती थी । गैरमुस्लिमाना आदतों से बचने को कहती थी मुझे इस्लाम कुबूल करने के बाद जिस तरह पहले मुसलमान बुरे लगते थे गैर मुस्लिम बुरे लगने लगे । इसलिए मैं बावजूद गैर मुस्लिमों के मुहल्ले में रहने के बच्वों के लिए यह पसंद नहीं करती थी कि वह गैरमुस्लिम बच्चों से दोस्ती करें । बल्कि उन के साथ खेलें ।

सवाल : आप के हिंदु अजीजों से अब कैसे तअल्लुकात हैं ?

जवाब : इस्लाम कुबूल करने से पहले हम लोगों की इक्तेसादी हालत (माली हालत) अच्छी नहीं थी । हम लोग गरीबी की ज़िंदगी गुज़ारते थे । मगर इस्लाम कुबूल करने के बाद अल्लाह ने हम को सब कुछ दिया। हमारे भाइयों और भांजों

ने अपने हिंदु रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक किया अब वह लोग मिलते जुलते हैं और शादी गमी में शरीक होते हैं । हम से तअल्लुकात बनाए रखना उन की ज़रुरत बन गई है । नसीम भाई फायदा उठाकर उन पर काम कर रहे हैं ।

सवाल अरमुगान के वा.ने से आप मुसलमानों को कोई पैगाम देना चाहेंगी ?

जवाब : मुझे सिर्फ यह कह.ा है कि मुसलमान गंदे न रहें इस की वजह से लोग इस्लाम में आने से रुकते हैं । इस्ला.म ने पाक और सफाई को किस कदर अहमियत दी है । हमें तो दुनिया को सफाई और पाकी का सलीका सिखाना चाहिए । हमारी ज़िंदगी इस्लामी किरदार का नमूना होनी चाहिए। इस्लाम की हर अदा में कशिश है । देखिये पचास से जाइद (ज़्यादा) अफ़राद (आदमीयों) पर मुश्तमिल (आधारित) खानदान की हिदायत का ज़रिआ सिर्फ अब्दुर्रहमान साहब के वाअदे पर चुंगी जमा करने का अमल हुवा बल्कि हमारे वास्ते से मुसलमान होने वाले सभी लोगों का जरिआ उन का एक इस्लामी अमल हुवा । अफसोस हम खुद गंदे रहते हैं और कम अज़ कम हिंदुस्तान में गंदगी मुसलमानों की शनाख्त (पहचान) समझी जाने लगी है । हमें इस बुराई को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए ।

सवाल : बहुत बहुत शुक्रिया सलमा चच्ची जान। आप हमारे लिए दुआ कीजिए।

जवाब : जरुर । आप भी मेरे लिए दुआ करें आप अल्लाह की नेक बंदी हैं ।

अल्लाह हाफिज़ ।

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान - फरवरी 2004]

(10) मेरी दिलचस्पी कुरआन करीम से बड गई

मेरा ख्याल यह है कि मुसलमान बहनें इस्लाम की नेअमत की कद्र नहीं पहचानतीं । वह भी इस नंगी तहज़ीब के ज़हर में अपना जाएका (मजा) खो बैठी हैं । बाज (कुछ) मुस्लिम मुहल्लों में जाकर पहचानना मुश्किल होता है कि यह मुसलमानों का मुहल्ला है । बेपर्दगी बल्कि बेहयाई और उरयानियत हद दर्जा फॅशन होती जा रही है । इस्लाम से पहले की औरतों के हालात और तारीख (इतिहास) ज़रुर पढनी चाहिए । मैं समझती हूँ इस से इस्लाम के औरतों पर एहसानात का एहसास होगा और दीने फितरत की कुछ कद्र मालूम होगी ।

अस्मा उम्मतुल्लाह

अस्मा उम्मतुल्लाह : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
हलीमा सअदिया : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सवाल : अम्मी ने कहा था कि आप आएँगी तो मैं आप के हालात के सिलसिले में आप से कुछ मालूमात कर लूँ ।
जवाब : किस लिए उन को तो सब मालूम है ।

Maktaba Ashraf

सवाल : असल में फुलत में हमारी जमीअत शाह वलीयुल्लाह से एक उर्दु माहाना मेग्जिन निकलता है । उस में इस्लाम के साए में आने वाले खुश किस्मत भाई और बहनों के हालात मालूम करके शाअेअ करने का सिलसिला शुरु किया गया है ताकि पुराने मसलमानों को इबरत हो ।
जवाब : मेरे हालात से क्या इबरत होगी । मैं तो खुद अपने हाल पर शर्मिन्दा हूँ मगर खैर कुछ मालूम करना हो तो मालूम कर लो ।
सवाल : आप अपना मुख्तसर तआर्रुफ (परिचय) कराएँ ।
जवाब : मैं जुनूबी देहली के एक हिंदु सैनी खानदान से तअल्लुक रखती हूँ । मेरे वालिद डी.डी.ए.में चीफ एकाउंटेन्ट है । मेरे तीन भाई हैं तीनों आअला (उंची) पोस्टों पर अलग अलग मिनिस्टरियों में अफसर हैं । मैं ने अंग्रेजी में एम. ए. और मास कॅम्युनिकेशन में डिप्लोमा किया है । मैं भी मुल्क की एक अहम विज़ारत में सेक्रेटरी की पोस्ट पर काम करती हूँ । मैं ने अपने लिए अपना इस्लामी नाम हलीमा सअदिया तजवीज़ किया (चुना) है । अगरचे मुझे इस नाम से बहुत कम लोग याद करते हैं । मेरी उम्र 33 साल से कुछ ज़्यादा है ।
सवाल : अपने इस्लाम कुबूल करने के बारे में बताइये ?
जवाब : हुकूमते हिंद ने अपने मुलाजिमीन को गैरमुल्की ज़बान सिखाने के लिए एक इंस्टीटयुट कायम किया था । जिस में दफ्तर की तरफ से मुझे अरबी जुबान सीखने के लिए भेजा गया । अरबी सिखाने वाले अकसर मुसलमान असातेजा (शिक्षक) थे । उन्होंने अरबी के साथ उर्दु भी सिखानी शुरु की । हमारे वालिद साहब अच्छी उर्दु जानते हैं और बहुत अच्छी उर्दु बोलते हैं । इसलिए मुझे उर्दु सीखने में कोई मुश्किल पेश नहीं आई । हमारे असातेजा में एक उस्ताद डॉक्टर मोहसिन उस्मानी साहब थे । उन्होंने ने तमाम ही स्टूडेंन्टस को अरबी पढाने के साथ साथ इस्लाम का तआर्रुफ भी कराया और थोडी सी अरबी की शुध बुध हो जाने के बाद हमें कुरआने हकीम से अरबी पढवाने लगे । डॉक्टर मोहसिन साहब जो इस वक्त देहली युनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे । उन्होंने हम सभी अरबी पढने वालों को हिंदी और अंग्रेजी में इस्लाम पर लिट्रेचर फराहम किया । आपके वालिद की किताब "आप की अमानत, भी ला कर दी । वाकई वह दर्द की जुबान में लिखी गई किताब है। इस किताब के पढने के बाद मेरी कुरआन शरीफ

से दिलचस्पी बढ गई और बिलआखिर अल्लाह ने मुझे हिदायत दी और मैं ने डॉक्टर साहब को खुशखबरी दी कि मैं इस्लाम कुबूल करना चाहती हूँ। उन्होंने मुझे कलमा पढवाया। उस के बाद मैं इस्लाम की मालूमात और नमाज़ वगैरा सीखने के लिए मर्कज निज़ामुद्दीन जाने लगी। जहाँ पर जुनूबी हिंदुस्तान के एक मौलाना साहब के घर जाकर मैं नमाज़ वगैरा याद करती और चंद मुसलमानों से मेरे तअल्लुकात हो गए थे। मैं उन के घर पर मेरा आना जाना हो गया।

सवाल : आप के घर वालों को आप के कुबूले इस्लाम का इल्म होगया है ?

जवाब : नहीं अभी तक उन को मेरे मुसलमान होने का इल्म नहीं है।

सवाल : तो आप के लिए बडी मुश्किल रहती होंगी ?

जवाब : बिला मुश्किल तो है मगर उस से ज्यादा मेरे सामने और मुश्किलें हैं।

सवाल : आप बहुत मायूस सी महसूस हो रही हैं। आप के सामने क्या मुश्किलात हैं।

जवाब : मेरी बहन। मेरी जिंदगी का सब से बडा दर्दनाक पहलू यह है कि मैं ने कुरआने हकीम अरबी सीखने के लिए एक किताब समझ कर पढा यह तो कुरआने हकीम का एहसान है कि उस से मुझे अल्लाह और मालिक की पहचान हो गई और जाहेरी तौर पर मुझे कलमा पढ कर मुसलमान होने की भी तौफीक हो गई मगर कुरआने पाक की बातों पर जो यकीन होना चाहिए था। वह बिल्कुल नहीं हुवा। मैं कलमा पढती हूँ और इस ख्याल से कलमए तय्यिबा बहुत पढती हूँ कि शायद पढते पढते अंदर उतर जाए। मगर मुझे साफ महसूस होता है कि लाइलाह इल्लल्लाह मेरे गले से नीचे नहीं उतरता जैसे सिर्फ जुबान से ही मुसलमान हूँ। दिल से मुसलमान न हूँ। मुझे देवताओं और बुतों की पूजा तो बडी हैरत की बात लगती है। लाइलाह इल्लल्लाह कह कर जिस तरह हर चीज़ की नफी की कैफियत अंदर उतरनी चाहिए। उस का कोई अदना हिस्सा भी मैं अपने अंदर नहीं पाती। न दोज़ख का खौफ न मरने के बाद के हिसाब व किताब का डर जैसा उस का हक है मैं अपने अंदर नहीं पाती। मिसाल के तौर पर मैं मुसलमान हूँ तो नमाज़ मेरे अल्लाह ने मुझ पर फर्ज की है और नमाज़ न पढने या कम अज कम कजा करने पर मरने के बाद की सजा की खबर पर मुझे जाहेरी तौर पर यकीन है। तो मुझे हर हाल में नमाज़ को अपने वक्त पर पढना

चाहिए मगर मेरा हाल यह है कि मैं देखती रहती हूँ कि मौका मिले । माँ बाप बहन भाई से छुप कर नमाज़ पढने का मौका मिल जाए । तो पढती हूँ अगर मौका न मिले तो कभी कभी कजा भी हो जाती है । गोया घर वालों का खौफ अल्लाह के खौफ और दोज़ख की आग के से ज्यादा है । यह भी कोई ईमान है । मैं नमाज़ पढती हूँ । आदमी नमाज़ पढता है । सज्दे में जाता है । मुझे सज्दे में जाना बहुत अच्छा लगता है और शायद मैं अपने आप को सब से ज्यादा सुकून और लज्जत में सजदे में महसूस करती हूँ बल्कि मैं सजदे की हालत में अपने को सब से ज़्यादा अच्छी भी लगती हूँ । मेरी ख्वाहिश होती है कि जिस तरह सजदे की हालत में हर इंसान इस दुनिया में आया है उसी हालत में मेरी मौत आए । मगर जिस तरह इंसान को अपनी तमाम तर कमजोरियों के एअतेराफ के साथ अपने पुरे वुजूद को अपने अजमत वाले रब के हुजूर बिछा देना चाहिए । इस तरह का सजदा मुझे आज तक एक भी नसीब नहीं हुवा । मैं कभी सारी सारी रात बेचैन रहती हूँ कि इस हाल में अगर मौत आ गई तो यह तो मुनाफिक की मौत होगी ।

يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ

शायद यह आयत मेरे बारे में नाजिल हुई है ।

सवाल : यह तो आप के ईमान की दलील है । आप ने शादी नहीं की ?

जवाब : मेरे घरेलू हालात ऐसे नहीं कि मेरी शादी किसी मुसलमान से हो इस लिए मैं ने घर वालों से इब्तिदा ही में शादी के लिए मअज़ेरत कर ली थी । मगर अब मुझे हकीकी ईमान हासिल करने के लिए इस तरफ तवज्जोह हो गई है । मैं सोचती हूँ किसी सच्चे मुसलमान से शादी कर लूँ कि उस के साथ रह कर मुझे हकीकी ईमान नसीब हो जाए । मर्कज निज़ामुद्दीन के एक मौलाना साहब से मैं ने कहा था उन्होंने मुझे एक साहब से मिलवाया । उन्होंने मुझ से कहा कि मैं आप से शादी करने को तैयार हूँ और आप पर किसी तरह की जाहेरी पाबंदी भी न होगा।अगर आप घर वालों को दिखाने के लिए मंदिर जाना चाहेंगी तो जा सकती हैं बल्कि आप कहेंगी तो मैं आप को मंदिर छोड आया करुँगा । मुझे बहुत मायूसी हुई कि यह शख्स जब खुद आधा हिंदु बन्ने को तैयार है तो मुझे ईमान कहाँ से आ जाएगा । मैं ने मअज़ेरत कर दी । मैं सिर्फ ऐसे आदमी से शादी करने को सोच सकती हूँ । जो मुझे इस्लाम की छोटी छोटी बातों पर

जबरदस्ती अमल कराए ।

सवाल : आप तो सरकारी मुलाजिम हैं मुलाजिमत का क्या होगा । फिर तो आप को पर्दे में घरेलू ज़िंदगी गुजारनी पडेगी ?

जवाब : मैं नौकरी छोड दूँगी । मैं औरतों के लिए नौकरी , रोज़गार करना बल्कि घर से बाहर रहना बोझ समझती हूँ । औरत बच्चे भी पाले,घर का काम भी करे और नौकरी भी करे ? अल्लाह ने उस का जिस्म कमजोर बनाया है । उस के लिए मुलाज़ेमत बिल्कुल गैरफितरी है । मैं पर्दे को औरत की बुनियादी ज़रुरत समझती हूँ । मैं दफ्तर में रह कर तो गैरमुस्लिम औरतों के लिए भी पर्दे को बडी नेअमत समझती हूँ । औरत अगर बेपर्दा रहेगी तो उस को मर्दों की हवस भरी निगाहों को सहना पडेगा । यह औरत के लिए बडी जिल्लत और शर्मिंदगी की बात है । एक गाय गाडी में जुडना पसंद नहीं करती । न जाने औरतों को क्या हो गया है जानवरों से गई गुजरी हो गईं ।

सवाल : आप कुरआन शरीफ पढती हैं ?

जवाब : युँ तो अल्लाह का करम है जब से मैं मुसलमान हुई हूँ । बल्कि मैं ने ज़ाहिरी तौर पर कलमा पढा है उस रोज से मुझ से कुरआन शरीफ पढने के सिलसिले में नागा नहीं हुई । अल्लाह का शुक्र है ' अम ' का पारा मुकम्मल, सुरऐ मुल्क , सुरऐ मुजम्मिल, सुरऐ रहमान, सुरऐ यासीन,और सुरऐ अलिफ लाम मीम सजदा , मुझे हिफ्ज़ याद हैं । सोते वक्त सुरऐ मुल्क और अलिफ लाम मीम सजदा और सुबह सवेरे यासीन शरीफ तो रोज़ाना पढती हूँ । आधी सुरऐ कहफ भी याद हो गई है । इंशाअल्लाह जल्दी पूरी याद हो जाएगी । जुमआ के रोज़ सुरऐ कहफ और स्वलातुत्तस्बीह भी पढती हूँ । कभी कभी मैं जुमेरात के रोज़े भी रखती हूँ मगर बगैर ईमान के आअमाल किस काम के ? मैं कुरआने हकीम में आअराबियों का हाल पढती हूँ ।

قَالَتِ الْأَعْرَابُ اٰمَنَّا قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْئًا سورۂ حجرات ۱۴

तर्जुमा : अअराबी लोग कहते हैं हम ईमान लाए (ऐ नबी) आप कह दीजिए तुम ईमान नहीं लाए हो इसलिए कहो कि हम (जाहिरी ईमान) इस्लाम लाए । इस

लिए कि ईमान तुम्हारे दिलों मे अब तक दाखिल नहीं हुवा और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो तो वह तुम्हारे अअमाल में कुछ कमी नहीं करेगा । सच्ची बात यह है कि मुझे ऐसा लगता है कि यह आयत सिर्फ मेरे बारे में नाजिल हुई है वरना ईमान के साथ मुकम्मल इताअत ज़रुरी है ।

सवाल : आप की हिस बहुत बढी हुई है । आप पर रश्क आ रहा है । हाल तो हमारा भी इस से बहुत गिरा हुआ है मगर हमें इस का एहसास तक नहीं ।

जवाब : मेरी बहन आप तो बचपन से मुसलमान हैं आप एक बडे साहेबे ईमान की बेटी हैं आप मेरे हाल को कहाँ समझ सकती हैं ।

सवाल : आप हमारे लिए दुआ कीजिए आप का तअल्लुक अल्लाह के साथ बहुत कवी है ।

जवाब : काश । आप की बात सच्ची होती तो मेरी जिंदगी एक अच्छी ज़िंदगी होती ।

सवाल : आप की जिंदगी बहुत अच्छी और काबिले रश्क है ।

जवाब : अल्लाह आप की जुबान मुबारक करे ।

सवाल : बहुत बहुत शुक्रिया । जजाकुमुल्लाह , अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाह

जवाब : आप का बहुत बहुत शुक्रिया , व अलैकुमुस्स्लाम व रहमतुल्लाह

सवाल : आप मुसलमान बहनों से कुछ कहना चाहेंगी ?

जवाब : मेरा ख्याल यह है कि मुसलमान बहनें इस्लाम की नेअमत की कद्र नहीं पहचानतीं । वह भी इस नंगी तहज़ीब के जहर में अपना जाएका (मजा) खो बैठी हैं । बाज (कुछ) मुस्लिम मुहल्लों में जाकर पहचानना मुश्किल होता है कि यह मुसलमानों का मुहल्ला है । बेपर्दगी बल्कि बेहयाई और उरयानियत हद दर्जा फैशन होती जा रही है । इस्लाम से पहले की औरतों के हालात और तारीख (इतिहास) ज़रुर पढनी चाहिए । मैं समझती हूँ इस से इस्लाम के औरतों पर एहसानात का एहसास होगा और दीने फितरत की कुछ कद्र मालूम होगी ।

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान - एप्रिल 2004]

●●●●●●

(11) नमाज़ पढकर अल्लाह से मांगा, अल्लाह ने दिया

मुझे सिर्फ दो बातों की धुन है एक तो यह कि हमारे मुसलमान भाई बहन जिन को बाप दादों से इस्लाम मिल गया है उन्होंने इस प्यारे दीन की कद्र नहीं की बल्कि अफसोस होता है कि दीन की बातों को वह बोझ समझते हैं । जैसे पर्दा ,नमाज ,वगैरा को वह इस नेअ्मत की कद्र करें । अपने अल्लाह और रसूल पर यकीन करें । और ईमान के बाद उस की मदद को देखें और जब वह ईमान की अहमियत को नहीं समझते, तो उन को उस का दर्द और फिक्र नहीं कि कोई ईमान पर मरे या बगैर ईमान दोजख में जाए । हमें पूरी इंसानियत को दोजख से बचाने की फिक्र करनी चाहिए ।

मौलाना अहमद अव्वाह नदवी

अहमद अव्वाह : अस्सलामु अलैकुम
खैरुन्निसा : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सवाल : आप का नाम ?
जवाब : खैरुन्निसा ।

सवाल : आप कहाँ की रहने वाली हैं ? कुछ अपना तआर्रुफ कराएँ ।

जवाब : मैं थाना भवन के करीब एक गाँव की रहने वाली हूँ । मेरा पुराना नाम शालिनी देवी था । मेरे वालिद का नाम चौधरी बली सिंग था । मेरी शादी हरियाणा में पानीपत जिला के एक कसबा में कृपाल सिंग से हुई । अपने पहले शौहर के साथ चौदह साल रही । अब से आठ साल पहले मेरे अल्लाह ने मुझे इस्लाम की दौलत से नवाजा । अल्लाह के शुक्र से मेरे पाँच बच्चे हैं जो मेरे साथ मुसलमान हैं ।

सवाल : अपने इस्लाम लाने के बारे में कुछ बताएँ ।

जवाब : मुझे बचपन से ही अपने हाथों की बनाई हुई मुर्तियों की पूजा दिल को नहीं भाती थी । मैं पेड,पौधों , फूलों, चाँद सितारों , को देखती तो सोचती कि ऐसी खूबसूरत और सुंदर चीजों को बनाने वाला कैसा सुंदर होगा । हमारी ससुराल के गाँव में यू.पी. के बहुत से मुसलमान कपडे वगैरा की तिजारत (व्यापार) के लिए आते थे । वह मुझे एक मालिक की पूजा और अल्लाह के आखरी रसूल हजरत मुहम्मद स्वल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें बताते । मेरे साथ मेरे बच्चे भी बडी दिलचस्पी से उन की बातों को सुनते । उन के जाने के बाद मेरे छोटे छोटे बच्चे मुझ से बातें करते कि माँ । हम सब मुसलमान होते तो कितना अच्छा होता । कुछ दिनों के बाद मैं ने मुसलमान होने का फैसला कर लिया और गंगोह के इलाके के दो मुसलमानों के साथ जाकर अपने बच्चों समेत मुसलमान हो गई ।

सवाल : इस्लाम लाने के बाद आप के ससुराल वालों और मायके वालों की तरफ से मुखालिफत (विरोध) नहीं हुई ?

जवाब : इस्लाम का नाम आते ही मेरे घर वालों और ससुराल वालों ने कयामत बरपा कर दी । मेरे छोटे छोटे बच्चों को बेहद सताया । हम सभी को जान से मारने के लिए हर मुमकिन कोशिश की । मगर मौत व ज़िंदगी का मालिक हमारी हिफाज़त करता रहा । मेरे अल्लाह पर मुझ को भरोसा रहा । और हर मोड पर मैं मुसल्ले पर जाकर फरियाद करती रही और अल्लाह ने हर मोड पर मेरी मदद की।

सवाल : घर और ससुराल के लोगों की तरफ से आप की दुश्मनी और अल्लाह

की मदद की कुछ बातें बताएँ ।

जवाब : मैं किस मुँह से अपने मालिक का शुक्र अदा करूँ । मेरे घर वालों और ससुराल वालों ने (जो बडे जमीनदार भी थे और बडे ताकतवर भी) मुझे मिटाने की हर मुमकिन कोशिश की । दो चार रोज तो वह समझाते रहे । और जब मैं ने उन को फैसला सुनाया कि मैं मर तो सकती हूँ मगर इस्लाम से नहीं फिर सकती तो फिर उन्होंने मेरे साथ बडी सख्ती की । मुझे पेड से टांग दिया गया । दसियों लोग मुझ लाठी डंडों से पीटते थे । मगर वह लाठियाँ न जाने कहाँ लग रही थीं। मैं अपने मालिक से फरियाद करती थी और मुझे ऐसा लगा कि मुझे नींद आ गई और मैं बेहोश हो गई । बाद में मुझे होश आया तो पोलिस वहाँ मौजूद थी । और वे लोग भाग गए थे । मुझे लोगों ने बताया कि इस पिटाई में अपनी लाठी से मेरे चचा और जेठ के हाथ टूट गए । वह मेरे बच्चों को मुझ से छीन कर ले गए। मेरे बडे बेटे जिस का नाम मैं ने उस्मान रखा है ,उस को घर ले जाकर बहुत मारा। दो रोज के बाद वह जान बचाकर घर से चला गया । थाना भवन अपने एक मुसलमान दोस्त के यहाँ वह फिर पकडा गया । उस को मारने के लिए बदमआशों के साथ मेरे घर वाले आ गए । तेरा साल का बच्चा और आठ दस लोग छुरा चाकू ले कर उसे जान से मारने लगे । उस बच्चे ने छुरी छीनने की कोशिश की और जान बचानी चाही । न जाने किस तरह उन में से एक आदमी के पेट में वह छुरी घुस गई और वह फौरन मर गया । इतने में एक बस आ गई। बस वाले ने बस रोक दी । सवारियाँ उतरीं तो वह लोग भाग गए । वहाँ एक लडका जिस के सारे जिस्म पर जख्म थे और आदमी मरा हुवा पडा था । पोलिस आ गई और लडके को जेल भेज दिया । जेल में पिटाई होती रही । लडके ने साफ बयान दिया कि छुरी छीनते हुए मेरे हाथ से इस के पेट में घुस गई । लडके को आगरा जेल में भेज दिया गया । मैं रातों को मुसल्ले पर पडी रहती । मैं ने अपने सहारे के लिए तालिब नाम के एक आदमी से निकाह कर लिया । औरतें मुझे डरातीं । मुसलमान औरतें भी मुझे चिढातीं कि तेरे बच्चे अब तुझे मिलने वाले नहीं और तेरे बच्चे की जमानत कोई नहीं करेगा ।

मेरा बच्चा उस्मान आगरा जेल में नमाज पढता और दुआ करता। एक दिन उस ने ख्वाब में देखा कि एक पर्दा आसमान से आया और

लोग कह रहे हैं कि बीबी फातेमा आसमान से उस्मान की जमानत कराने आई हैं। एक हफता के बाद आगरा की एक बडी दौलत वाली औरत ने उस्मान की जमानत कराई । वह मुज़फ्फर नगर आया करती थी । जमानत हो गई तो मैं ने दीन सीखने के लिए उस को जमाअत में भेज दिया । मैं अपने चार बच्चों की वजह से रोया करती और मेरे बच्चे भी बहुत तडपते । मेरी बडी बच्ची छुप कर नमाज़ पढती । उस को नमाज़ पढता देख कर मेरी ससुराल वालों ने उस पर मिटटी का तेल डाल दिया और आग जलानी चाही मगर मेरे अल्लाह ने बचाया। चार बार दिया सलाई जलाई मगर एक बाल भी नहीं जला । मेरे जेठ देवरों ने मशवरा करके खीर पकाई और खीर में ज़हर मिला दिया । वह मेरी दोनों बडी बच्चियों को खिलाई । मगर कुछ भी न हुवा । मेरी जेठानी ने यह सोचा कि ज़हर था ही नहीं । उस ने खीर चखी और फौरन मर गई ।

मेरा बेटा उस्मान जमाअत से आया । मैं और वह पानीपत के पास से एक जगह जा रहे थे । हमें ससुराल वालों ने घेर लिया । गोलियाँ चलाई गोलियाँ बच बच कर निकल जाती थीं । 23 फायर उन्होंने किए । 23वाँ फायर उन में से एक आदमी के लगा और वह मर गया ।

मैं अपने अल्लाह से अपने बच्चों को मांगा करती । मेरे अल्लाह मुझे मेरे बच्चे मिल जाएँ । एक रोज़ एक मौलाना गौस अली शाह मस्जिद में आए । उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम की माँ का किस्सा सुनाया कि अल्लाह ने फिरऔन के घर से उन को उन की माँ से कैसे मिलवाया । मैं घर गई और सजदे में पड गई । मेरे अल्लाह जब तू मूसा अलैहिस्सलाम को मूसा की माँ की गोद में पहुँचा सकता है तो मेरे बच्चों को मुझ से क्युँ नहीं मिला सकता । मैं तुझ पर ईमान लाई हूँ । मैं फरियाद करने किस से जाऊँ । मैं तेरे अलावा किसी से फरियाद नहीं करुँगी । सारी रात सजदे में पडी रही । मेरी आँख लग गई । कोई कह रहा है अल्लाह की बंदी । खुश हो जा । तेरे बच्चे तेरे साथ ही रहेंगे। सुबह को मेरा बच्चा उस्मान पानीपत सेकरनाल के लिए बस अड्डे गया । उस ने देखा कि तीनों बहनें छोटे भाई के साथ बस से उतरीं । वह मौका देख कर अंदाजे से पानीपत आ रही थीं । चारें को लेकर वह खुशी खुशी घर आया । मैं सारी रात सजदे में पडी रही । मेरे मालिक आप कितने अच्छे हैं आप कितने

प्यारे हैं । अपनी दुखियारी बंदी के बच्चों को खुद ही भेज दिया । उस के बाद से पाँच छ: बार ऐसा हुवा कि मेरी ससुराल के लोग मुझे और मेरे बच्चों को तलाश करते हैं । हम उन को देख लेते हैं । मगर ऐसा लगता है कि वह अंधे हो जाते हैं । मुझे हर मोड पर मेरे मालिक ने सहारा दिया । मैं उस मालिक के किस मुँह से गुण गाऊँ ।

सवाल : आप ने अपने बच्चों की तर्बीयत का क्या इंतेजाम किया ?

जवाब : मेरे लडके उस्मान ने कुरआन शरीफ पढ लिया । हर साल जमाअत में जाता है । अब काम कर रहा है । मैं दम करके भेज देती हूँ और बेफिक्र हो जाती हूँ कि हिफाजत करने वाला मालिक उस की हिफाजत करेगा ।

मेरी दो बडी लडकियों की शादी अल्लाह ने करादी है । दोनों लडके बहुत दीनदार और नेक हैं । मेरी बच्चियाँ भी बहुत पक्की और नेक मुसलमान हैं। उन की शादी के वक्त मेरा बेटा आगरा जेल में था । मेरे अल्लाह ने जमानत का इंतेजाम करा दिया । और उस ने अपनी बहनों को खुशी खुशी रुख्सत किया। अब वह अल्लाह के शुक्र से बरी हो गया है । छोटी बच्ची और बच्चा मदरसा में पढ रहा है ।

सवाल : आप माशाअल्लाह पर्दे में रहती हैं और नमाज़ की भी खूब पाबंदी करती हैं । आप को कैसा लगता है ?

जवाब : मैं ने ईमान लाने के बाद कदम कदम पर अपने मालिक की मदद देखी। मुझे नमाज़ में बहुत मजा आता है । मैं ने छ: साल से तहज्जुद ,इशराक,चाश्त और अव्वाबीन नहीं छोडी । मैं ने क्या नहीं छोडी सच यह है कि मेरे मालिक ने मुझ से पढवाई । मुझे कोई ज़रुरत होती है तो मैं मुसल्ले पर चली जाती हूँ । और अपने मालिक से फरियाद करके दिल को यकीन हो जाता है कि अब ज़रुरत पूरी हो जाएगी । और मुश्किल हल हो जाएगी । मैं पर्दा को अपने मालिक का हुक्म समझती हूँ । मुझे पर्दे में ऐसा लगता है कि मैं किले में आ गई । और मेरे मालिक मुझे इस किले में देख कर खुश हो रहे हैं । मुझे तो अजीब सा लगता है पूरे पानीपत में बहुत कम औरतें पर्दा करती हैं ना के बराबर । पता नहीं हम कैसे मुसलमान हैं । न अल्लाह पर भरोसा , न यकीन, मेरा तो ईमन है कि अगर अल्लाह पर यकीन और ईमान को मुसलमान समझ जाएँ तो चाँद सितारे साथ

चलने लगें ।

सवाल : आप की बेटियाँ भी पर्दा करती हैं ।

जवाब : अल्लाह का शुक्र है कि मेरी बेटियाँ पक्का पर्दा करती हैं । उन को देख कर ससुराल में भी पक्का पर्दा होने लगा । भला ऐसे रहीम व करीम ने हमें पर्दा का ,हमारी शैतान से हिफाज़त के लिए ,तोहफा दिया और हम उसे दूसरे लोगों की तरह कैद समझने लगें । मुझे तो बेपर्दा हिंदु औरतों को भी देख कर तरस आता है । मैं सच कहती हूँ । मैं ने सुना था कि औरत अपने उपर पडने वाली निगाहों को खूब ताड लेती है । मुझे तो मुसलमान होने और पर्दे मे रहने से पहले रिशतेदार और गैर रिशतेदार हर मर्द की आँखों से ऐसा लगता था कि यह कपडे उतार कर मेरी इज्जत लूटने वाला है । मुझे बहुत गुस्सा भी आता था और शर्म भी । मेरे अल्लाह ने मुझे ऐसा दीन दे दिया जिस ने मुझे इस अजाब (यातना)से बचा लिया ।

सवाल : मुसलमान भाई और बहनों से आप कुछ कहना चाहेंगी ?

जवाब : मुझे सिर्फ दो बातों की धुन है एक तो यह कि हमारे मुसलमान भाई बहन जिन को बाप दादों से इस्लाम मिल गया है उन्होंने इस प्यारे दीन की कद्र नहीं की बल्कि अफसोस होता है कि दीन की बातों को वह बोझ समझते हैं । जैसे पर्दा , नमाज़ , वगैरा को वह इस नेअमत की कद्र करें । अपने अल्लाह और रसूल पर यकीन करें । और ईमान के बाद उस की मदद को देखें और जब वह ईमान की अहमियत को नहीं समझते तो उन को उस का दर्द और फिक्र नहीं कि कोई ईमान पर मरे या बगैर ईमान दोजख में जाए । हमें पूरी इंसानियत को दोजख से बचाने की फिक्र करनी चाहिए ।

सवाल : आइंदा आप का क्या प्रोग्राम है ?

जवाब : मेरा इरादा कुरआन शरीफ हिफ्ज़ करने का है । मैं ने बात पक्की कर रखी है । मुझे फुलत जाकर कुरआन पाक हिफ्ज करना है और अपनी दोनों बच्चियों को दीन की सिपाही और दअ्वत देने वाला बनाना है । बडा बच्चा तो काम पर लग गया है । छोटे बच्चे को मैं चाहती हूँ कि वह अजमेर वाले हज़रत की तरह लाखों लोगों को मुसलमान बनाए । मैं रोज़ाना तहज्जुद में अपने अल्लाह से दुआ करती हूँ कि मेरे अल्लाह तू ने बुत बनाने वाले के घर मे इब्राहीम को पैदा

किया । तेरे लिए क्या मुश्किल है ? छोटे बच्चे को आलिम ,हाफिज़ और दीन का दाअी बनाना है । मेरे अल्लाह मेरी तमन्ना ज़रुर पूरी करेंगे । उन्होंने मेरा कोई सवाल आज तक रद्द नहीं किया ।

सवाल : बहुत बहुत शुक्रिया । आप हमारे लिए भी दुआ कीजिए ।

जवाब : मैं किस लायक हूँ आप भी मेरे लिए दुआ कीजिए । अल्लाह तआला आप को हमारे नबी अहमद स्वल्ललल्लाहुअलैहि व सल्लम का सच्चा वारिस बनाए । आमीन ।

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान - जुन 2003]

••••••

Maktab Ashraf

12 ख्वाब मे हज़रत ईसा अलै.ने इस्लाम की दाअवत दी

मुझे एक ईसाई लडकी ने बायबल दी , मजहब से बचपन से मुझे लगाव था । असल में सच्चे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम का इरशाद है कि हर बच्चा फितरत पर पैदा होता है । उस के माँ बाप उस को यहूदी नसरानी या मजूसी बना देते हैं । बाज लोग ऐसी फितरत के होते हैं । कि उन पर माहौल का असर दूसरों के मुकाबले में कम होता है शायद मेरी फितरत ऐसी ही थी । मुझे शिर्क के इन बखेडों मे घुटन महसूस होती थी और दिल में बार बार घर छोडने का तकाजा होता था । अपने खानदान के मज़हब से मेरा दिल मुतमईन (संतुष्ट) नहीं था । मुझे यह ढोंग और बेतुका सा लगता थ।जैसे बस बे जान कोई ड्रामा हो । इस लिए अंदर से जैसे मुझे हक की प्यास लगी थी । मैं ने बायबल पढी मगर उस में तीन में एक और एक में तीन की भूल भुलैय्याँ मेरे ज़हन की उलझन बनी रही । मैं ने ख्वाब देखा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ फरमा हैं । और फरमा रहे हैं कि मेरा मज़हब तो इस्लाम है ।

असमा जातुल फौजैन

असमा जातुल फौजैन : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
आएशा बाजी : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह
सवाल : आएशा बाजी कितनी हैरत की बात है कि अरमुगान में कितने लोगों का कारगुजारी छपी है मगर आज तक आप से इंटरव्यु नहीं लिया । मैं ने कई बार अबी से कहा कि आएशा बाजी का इंटरव्यु ज़रुर छपना चाहिए ।
जवाब : मुझे खुद ख्याल होता था मैं ने उमर के अब्बु से कई बार कहा कि हज़रत जी से कहो इस कारे खैर (भले कर्म) में हमारा भी नाम आजाए । क्या खबर यही हमारी नजात (मोक्ष)का ज़रीआ बन जाए । हज़रत ने कई बार फोन पर कहा मगर हर काम का एक वक्त होता है इसलिए पिछले महीने हज़रत ने हुक्म दिया कि यहीं घर आकर इंटरव्यु देना है ।अगले माह ही छपना है अल्लाह का शुक्र है कि उस का वक्त आ गया ।
सवाल : आप का खानदानी तआर्रुफ कराइये ?
जवाब : मेरा तअल्लुक (संबंध) हरियाणा के पानीपत जिला से है । आप के इल्म में है कि हिंदुस्तान की इल्मी (शैक्षणिक),सियासी ,समाजी (सामाजिक), अदबी और रुहानी हर तरह की तारीख में पानीपत को मुल्क में बुनियादी हैसियत हासिल है । वहाँ का एक गाँव जो दरियाए जमूना के करीब हथवाला है वहाँ के शर्मा ब्रह्मण खानदान में पैदा हुई । मेरा घर बहुत मज़हबी था । मेरे चार भाई हैं और तीन बहनें मुझ से बडी हैं । और मैं सब से छोटी हूँ । हमारी बस्ती में चंद घर मुसलमानों के रहते हैं । बेचारे मजदूर यानी दुनियावी लिहाज से भी कमज़ोर हैं और दीनी लिहाज से और भी कमज़ोर । बहुत से लोगों को तो शायद यह भी मालूम नहीं कि इस्लाम क्या होता है ? बल्कि बाज़ उन में ऐसे हैं जो नाम के भी मुसलमान नहीं हैं । यानी गैरों जैसे या मिलते जुलते नाम उन के और उन के बच्चों के हैं । मैं ने स्कूल में दाखला लिया तो मेरे साथ दो तीन लडकियाँ मुसलमानों की पढती थीं । उन में से एक की वालिदा यु.पी. की थी । जिस की वजह से उन को कुछ दीनी समझ थी । वरना अकसर लडकियों को बिल्कुल मालूम नहीं था कि कलमा भी क्या होता है । प्रायमरी के बाद मेरे बडे भाई मुझे लुधियाना ले गए और वहीं पर दाखला करा दिया । और वहीं पर मै ने पहले हाय स्कूल किया फिर अलहम्दुलिल्लाह 12 वीं क्लास पास की अल्लाह को

मुझे दूसरा इम्तेहान दिलवाना था बस लुधियाना जाना ही मेरी ज़िंदगी का रुख बदलने का जरिआ बना ।

सवाल : अपने कुबूले इस्लाम के बारे में बताइये ?

जवाब : जैसा कि मैं ने बताया कि मेरे बडे भाई राजेन्द्र शर्मा लुधियाना में रहते थे वह मुझे लुधियाना ले गए । वहाँ एक मिशन स्कूल में मेरा दाखला हो गया । वहाँ मुझे एक ईसाई लडकी ने बाईबल दी , मज़हब से बचपन से मुझे लगाव था। असल में सच्चे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम का इरशाद है कि हर बच्चा फितरत पर पैदा होता है । उस के माँ बाप उस को यहूदी नसरानी या मजूसी बना देते हैं । बाज़ लोग ऐसी फितरत के होते हैं । कि उन पर माहौल का असर दूसरों के मुकाबले में कम होता है शायद मेरी फितरत ऐसी ही थी । अपने खानदान के मज़हब से मेरा दिल मुतमईन (संतुष्ट) नहीं था । मुझे यह ढोंग और बेतुका सा लगता था ।जैसे बस बे जान कोई ड्रामा हो । इस लिए अंदर से जैसे मुझे हक की प्यास लगी थी । मैं ने बायबल पढी मगर उस में तीन में एक और एक में तीन की भूल भुलैय्याँ मेरे ज़हन की उलझन बनी रही । मैं ने ख्वाब देखा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ फरमा हैं । और फरमा रहे हैं कि मेरा मज़हब तो इस्लाम है । यह मेरे लाए हुए मज़हब की बिगडी हुई शक्ल है । मेरी आँख खुली तो मुझे इस्लाम पढने का शौक पैदा हुआ । मगर लुधियाना में मेरे लिए इस्लामी लिट्रेचर मिलना बहुत मुश्किल था एक बार मैं स्कूल से जा रही थी एक मस्जिद में छोटा सा तबलीगी जलसा हो रहा था । बाहर कुछ चाय और टोपी मिस्वाक वालों ने दुकानें लगा रखी थीं । वहीं कुछ हिंदी और उर्दु की इस्लामी किताबें भी थीं । मैं ने कुछ किताबें खरीदीं । उन में हमारे नबी स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम की सीरते पाक भी थी । अब तो मुझे याद नहीं रहा कि किस की लिखी हुई थी । मैं ने उसे पढा तो मुझे लगा कि मेरी प्यास मुझे मिल गई और मुझे इस्लाम को मजीद जानने का शौक पैदा हुवा । अल्लाह ने फज्ल फरमाया कहीं न कहीं से मुझे कुछ न कुछ पढने को मिलता रहा। और मैं ने लुधियाना में ही फैसला कर लिया कि मुझे मुसलमान होना है । मालूमात की तो मालूम हुवा कि यह काम जामेअ मस्जिद देहली के शाही इमाम कराते हैं । छुटियों में मेरा घर आना हुवा तो मुझे शिर्क के इन के बखेडों में घुटन महसूस

हुई । दिल में बार बार घर को छोडने का तकाजा हुवा । मैं ने एक मुसलमान घराने से तअल्लुक पैदा किया और उन से यू.पी.ये बुरका मंगवाया और एक दिन सहरी के वक्त घर से निकल पडी । जंगल के रास्ते पैदल जमूना तक पहुंची और जमना पार करने के लिए जमूना में घुस गई । मेरे गले तक पानी आ रहा था। कई बार ख्याल आया कि शायद मैं डूब जाऊँगी । मुझे किसी ने बताया था कि ज़्यादा से ज़्यादा कमर तक पानी आता है । मगर उस रोज़ रात में बारिश हुई थी उस की वजह से पानी बढ गया । मैं दिल ही दिल में अल्लाह को याद करती रही। मेरे अल्लाह देख रहे हैं । अगर मैं डूब कर मरी तो फिर यह मौत मेरी आप की मुहब्बत में , आप की तलाश में होगी । असमा बहन । न जाने मुझे कहाँ से हौसला और हिम्मत मिली थी । अल्लाह का शुक्र है कि जमूना पार की । जमना पार करके मैं ने देहली जाने का रास्ता मालूम किया तो लोगों ने बताया कि बडोत जाकर देहली जाना होगा । एक मुसलमान भाई मुझे मिला उस ने कहा कि वहाँ पर मुसलमान होने के लिए दो जानने वाले गवाह ले जाने होंगे । वरना यह काम वहाँ नहीं हो सकेगा । मैं ने कहा तो फिर मैं क्या करुँ । मुझे ज़रुर मुसलमान होना है । उस ने कहा कि अच्छा यह है कि तुम देवबंद चली जाओ । मैं ने कहा कि मैं अकेली किस तरह देवबंद जाऊँ । उस को मुझ पर तरस आया कहा बहन । देवबंद तक मैं ही पहुँचा दूँगा । मगर हम दोनों ज़रा दूर दूर बस में बैठेंगे । अगर कोई रिश्तेदार मिल जाए तो यह मत बताना कि मैं इस के साथ जा रही हूँ । मैं ने कहा ठीक है वह मुझे पहले कैराना ,वहाँ से शामली, और फिर नानोता से देवबंद ले गया । दो बजे के बाद हम देवबंद पहुँचे । मदरसे में गए । मगर वहाँ सब ने मना कर दिया । एक मौलाना मिले । उन्होंने कहा इन को सदर दरवाज़े के सामने मौलाना असलम इत्रवालों के पास ले जाओ । वहाँ यह काम हो जाएगा । वह मौलाना असलम के यहाँ ले गए । उन्होंने हमे खाना खिलाया । बहुत तसल्ली दी और हज़रत (मौलाना मुहम्मद कलीम) से फुलत बात की । हज़रत ने कहा कि कलमा तो फौरन पढवा दीजिए । और एक दो रोज़ बाद फुलत भेज दीजिए । मुझे कलमा पढवाया और मेरा नाम आएशा रख दिया । दो या तीन रोज के बाद मुझे फुलत भेज दिया । फुलत में कुछ रोज वहाँ रही । वहाँ पर नमाज़ वगैरा सीखना शुरु की । फिर पढाई और दीन सीखने के लिए अल्लाह

तआला ने मालेर कोटला शाकिरा बाजी के यहाँ भेज दिया । वहाँ मैं ने कुरआन मजीद और दीनियात पढी । शाकेरा बाजी बडी नेक खातून हैं । उन्होंने मुझे बहुत मुहब्बत से रखा । कुरआन मजीद वगैरा मुकम्मल करके मैं वापस फुलत और देवबंद आई । और हजरत जी ने मेरी शादी देहली के एक नौजवान हबीबुर्रहमान से कर दी ।

सवाल : आप को इस नए माहौल में अजीब सा नहीं लगा ? वालिदैन के बगैर शादी आप को कैसी लगी ?

जवाब : हज़रत ने और फिर मौलाना असलम साहब और दोनों के घर वालों ने मेरे साथ बहुत मुहब्बत का मुआमिला किया और जिस बडी चीज ईमान के लिए मैं घर से निकली थी उस के मिल जाने और उस के नतीजे में आखिरत की कामियाबी ने मुझे कोई एहसास नहीं होने दिया । कभी ख्याल जाता भी था तो मैं अपने दिल को समझा लेती थी ।

सवाल : आप के ससुराल वालों ने शादी किस तरह की ?

जवाब : मेरे शौहर अलहम्दुलिल्लाह हजरत से बैअत हैं उन की वालिदा एक नेक खातून हैं । बिलकुल सुन्नत के मुताबिक सादगी से मेरी शादी की । और अलहम्दुलिल्लाह मुझे इस तरह कोई गुरबत और अजनबिय्यत नहीं महसूस होने दी।

सवाल : आप के शौहर क्या करते हैं ?

जवाब : वह एक्सपोर्ट का काम करते हैं। मगर उन पर बहुत हालात आए है। इस तरह तो शायद जिस तरह हमारे साथ हालात आए है। बहुत कम लोगों के साथ आते होंगे । मगर मेरे अल्लाह हमें हिम्मत दे देते हैं । और मेरे शौहर का दअ्वती शौक और रोज़ रोज़ की खबरें उन के हालात में हमारे लिए हौसला बनती हैं ।

सवाल : आप के घर वालों ने आप को तलाश नहीं किया ?

जवाब : शुरु में बहुत तलाश किया । थाने में रिपोर्ट भी लिखवाई । गाँव के बाज लोगों को परेशान भी किया । मैं चलते वक्त एक खत लिख कर आई थी । कि मैं न किसी लडके की वजह से जा रही हूँ । न कोई मुझे साथ ले जा रहा है । न मैं खुद कुशी करने जा रही हूँ । मुझे हक की तलाश थी वह मुझे मिल गया । उस

को पाने और अपने खुदा की होने जा रही हूँ । मेरी तलाश करना फिज़ूल है । अगर मेरे अल्लाह ने चाहा तो मैं खुद राब्ता करुँगी । लेकिन इस के बावजूद भी उन्होंने बहुत तलाश किया । मेरे वालिद का इंतेकाल तो मेरे सामने ही हो गया था । मैं किसी तरह घर की खैर खैरियत लेती रहती थी । मुझे मालूम हुवा कि मेरी माँ बहुत बीमार है और बिस्तरे मर्ग (मरने पर) पर हैं । मुझे बहुत याद आई। और फिक्र हुई कि वह शिर्क पर न मर जाए । मैं ने अपने शौहर से कहा कि कितने लोगों को आप ने कलमा पढवाया । मेरी माँ कलमा के बगैर मर जाएँगी तो ऐसे दाओ से शादी करने से मुझे क्या खाक फायदा होगा ।वह जज़्बे में आ गए। और बोले । आज ही चलते हैं । हमारी अम्मी (सास अम्माँ) बोली मैं तुम लोगों को अकेले जाने नहीं दूँगी । मैं भी साथ चलूँगी । हम लोग घर से चले । बच्चे भी साथ थे । मैं ने अपनी सास अम्माँ और शौहर से कहा कि आप यहाँ एक मुसलमान के घर ठहरें । मैं बच्चों के साथ जाती हूँ । अगर तीन बजे तक हम वापस आ गए तो आप समझना कि हम ज़िंदा हैं वरना आप चले जाना । यह सोच कर कि हम चारों को मार दिया गया । मेरी सास अम्माँ मुसल्ले पर बैठ गईं। मैं बुरका में जब घर पहुँची तो लोग हैरान रह गए । मेरी माँ मुझ से चिमट चिमट कर खूब रोई । मुझे उन्होंने नहीं छोडा । चार बज गए । मेरी सास अम्माँ बहुत घबरा गई और मैं ने अपने शौहर और ससुराल की बहुत ताअ्रीफ की तो उन्होंने मिलने की ख्वाहिश ज़ाहिर की । मैं ने कहा अब तो मुझे जल्दी जाना है । दो तीन रोज़ के बाद हम आएँगे । मैं अपने शौहर को लेकर गई । मैं ने और उन्होंने वालिदा को समझाया । अलहम्दुलिल्लाह । उन्होंने सब घर वालों को भेज कर अकेले में बात की और कलमा पढा और कहा कि मैं सच्चे दिल से कलमा पढ रही हूँ । और मुझे अपने ज़ेवर में से कई तोला सोना दिया । मेरे शौहर और मुझे और बच्चों को कपडे दिए ।

सवाल : उस के बाद भी आप लोग वहाँ गए ?

जवाब : उन की जिंदगी में दो बार और गए । मगर मेरे दो भाई बल्कि उन की बीवियाँ हमारे जाने से बहुत नाराज़ थीं । खुसूसन माँ के हर दफा कुछ देने से । इसलिए हमारे लिए मुश्किल होने लगी । फिर एक महीना के बाद मेरी वालिदा का इंतेकाल हो गया । अलहम्दुलिल्लाह । उन का कलमा पढने के बाद इंतेकाल

हुवा ।

सवाल : बाकी घर वालों का क्या रवैय्या (सुलूक) है ?

जवाब : मेरी दो बहनें और दो भाई तो मुहब्बत और तअल्लुक रखते हैं । हम उन के लिए दुआ कर रहे हैं । अल्लाह तआला उन सब को हिदायत अता फरमाएँ। असल में घर वाले तो इतने मुखालिफ नहीं हैं । जिन को मालूम हुवा वह लोग उन पर दबाव बनाते हैं । जिस की वजह से वह डरते हैं । भाई साहब ने कहा कि जब तुम को मिलना हो तो हमें बुला लिया करो । तुम्हारे यहाँ आने से हमें मुश्किल होती हैं ।

सवाल : आप के शौहर मुजीब भाई तो बडे दाओ हैं । अबी उन का बहुत ज़िक्र करते हैं । क्या वह आप को भी दअ्वत में शरीक करते हैं ।

जवाब : अलहम्दुलिल्लाह । अल्लाह ने उन को तो बहुत नवाजा है । न जाने कितने लोग बडे अहम अहम उन की दअ्वत पर मुशर्रफ ब इस्लाम हो चुके है। वह कहते हैं हमारे हज़रत कहते हैं कि दाओ को हिसाब रखना चाहिए कि कम अज़ कम एक दिन एक आदमी को उस की दाअवत पर मुसलमान होना ही चाहिए । असमा बहन कभी तो महीनों तक उन का हिसाब पूरा होता रहता है । आज कल तो एक यवमिया(दिन) से ज़्यादा उन के हाथों मुसलमान हो रहे हैं । कभी कभी काम रुक जाता है । तो बहुत परेशान होते रहते हैं । कभी कभी बस रोते रहते हैं । कि मेरे किसी गुनाह की वजह से अल्लाह ने रास्ता बंद कर दिया । हज़रत से मिलने जाते हैं । कभी कभी फोन भी नही मिल पाता । पिछले दिनों दो महीने तक हज़रत से न मुलाकात हुई न फोन मिला । दअ्वत का काम भी सुस्त हो गया । बस घर मातम कदा था । जब देखो रो रहे हैं । मैं बहुत समझाती । हो सकता है हज़रत सफर पर हों । कहते नहीं , हज़रत नाराज़ हैं । अल्लाह का शुक्र है फोन मिल गया। हज़रत ने फरमाया कि तुम मेरे कमाऊपूत हो । तुम से क्युँ नाराज होने लगा। बस फोन पर बात करके आए । जैसे ईद हो गई हो और फिर काम पर लग गए । बस तो कोई सुबह को कलमा पढ रहा है कोई शाम को । मुझे भी ख्याल हुवा कि इन की बात ही सच्ची है । हज़रत से मिले हज़रत ने फरमाया कि अल्लाह की तरफ से दाओ की हिफाज़त के लिए नज्म होता है । कि कभी दाओ यह न समझने लगे कि हमारी वजह से काम हो रहा है । जब अल्लाह

चाहे और जिस को चाहे हिदायत होती है । यह यकीन ज़रुरी है और दाअी का रोना भी अल्लाह को बहुत प्यारा लगता है । इसलिए कभी अल्लाह रास्ते खोलते है। और कभी रोकते हैं ।

सवाल : आप के बच्चे क्या पढ रहे हैं ?

जवाब : मेरे दो बेटे और दो बेटियाँ हैं । अलहम्दुलिल्लाह । चारों पढ रहे हैं। इंशाअल्लाह चारों को हाफिज़ व आलिम बनाने की निय्यत है । अल्लाह तआला हमारे अरमान पूरे फरमाए और उन चारों को दाअी बनाए ।

सवाल : अबी बता रहे थे कि आप पर बहुत हालात आते रहते हैं आप को कैसा लगता है ?

जवाब : कारोबारी और हमारे घर में बीमारी वगैरा के मसाइल आते हैं । तो अकसर सहाबा (रजी) की कुर्बानियाँ याद आ जाती हैं । कि हम ने ईमान के लिए कुछ भी कुर्बानी नहीं दी । और ज़रा हिम्मत कम सी होती है तो कोई अच्छा ख्वाब आ जाता है । अल्लाह के रसूल स्वल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम की ख्वाब मे ज़ियारत अलहम्दुलिल्लाह बहुत होती है । और महीनों उस का मज़ा और खुशी रहती है । पिछले हफते मुझे अलहम्दुलिल्लाह बडी अच्छी हालत में ज़ियारत हुई। उमर के अब्बू कहते हैं बहुत वक्त तक तुम्हारा चेहरा भी खिला रहता है ।

सवाल : कारिईने अरमुगान के लिए कोई पैगाम भी देना चाहेंगी ?

जवाब : सच्चाई और हक के लिए आदमी को कुर्बानी देनी पडती है । आदमी अज़्म (हिम्मत) करे और सच्चाई और हक जो इंसान का हक है उस के लिए अज़्म हो जाए । तो उस को पाना इंसान के लिए मुश्किल नहीं । मैं ऐसे हालात में घर से निकली थी । बस हक पर अल्लाह ने एअतेमाद (भरोसा) की ताकत से मेरी मदद फरमाई और मुझे हिम्मत दी और अलहम्दुलिल्लाह मैं अपनी मुराद को पहुंची । अल्लाह तआला बस मौत तक इस पर इस्तेकामत (धैर्य) नसीब फरमाए। कि असल मसअला तो अभी बाकी है ।

सवाल : बहुत बहुत शुक्रिया आएशा बाजी । अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

जवाब : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

[मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान - अगस्त 2009]

●●●●●●

(13) आरमेनिया जाकर इस्लाम मिला

अस्मा बहन अपने अल्लाह और अल्लाह के प्यारे रसूल सल्ल.से इंसान का अगर वालेहाना और आशिकाना और जज़्बाती ताल्लुक न हो ते फिर इंसान का दिल पत्थर की मूर्ती है। इस दिल को दिल क्या कहेंगे इस से तो फिर अच्छा है जो अपने रहमान व रहीम और करीम अल्लाह से और उस के लाडले रसूल सल्ल.अरबो दरुद व सलाम हो आप पर से भी अकीदत और जज़्बाती ताल्लुक न रखे इस्लाम किसी कौम या बिरादरी का नाम नही कि गुजर के घर मे पैदा हुआ तो गुजर,जाट के घर मे पैदा हुआ तो जाट और मुसलमान के घर मे पैदा हुआ तो मुसलमान बल्कि अल्लाह और इस के रसूल सल्ल.के हुक्म और इस के कानून इस्लाम को अपने लिए खैर समझ कर इस के सामने खुद सुपुर्दगी और इसे मानने का नाम इस्लाम है,जिसका शऊर दाअवत को मक्सदे ज़िंदगी बनाए बगैर नसीब नही हो सकता।

अस्मा उम्मतुल्लाह : अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाही वबरकातुह।

डॉ.अस्मा अली : वअलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाही वबरकातुह। आप कैसी है ?कब से आप का ज़िक्र सुनती आई हूँ,आज अल्लाह ने आप से मिलवा दिया।

सवाल :- मेरा ज़िक्र आप ने कहा सुना ?

जवाब :- डॉ.आसिफ, हज़रत के एक बहुत चाहने वाले मुरीद है वह आप का ज़िक्र करते है कि आप हज़रत की साहबज़ादी अस्मा से मिलिये, आप को बहुत दाअवती फायदा होंगा हमारे हज़रत फरमाते है कि अस्मा ने मुझे दाअवत सिखाई हैं।

सवाल :-अस्तगफिरुल्लाह, मुझ से मिल कर किसी को क्या फायदा हो सकता है,मै किसी को क्या फायदा पहुँचा सकती हूँ, आप देहली कब तशरीफ लाई हैं ?

जवाब:- हम लोग देहली मे एक हफ्ते से है, असल मे सी.सी.आई.एम. की तरफ से एक मेडिकल वर्कशॉप था इस मे मेरे शौहर डॉ.यूसुफ अली और मै दोनो शरीक होने आए थे हज़रत को डॉक्टर साहब फोन करते रहे मगर हज़रत का मुसलसल

सफर रहा कल राजस्थान के सफर से वापसी हुई तो आज हम लोगो की हाज़री हुई है मेरे शौहर के साथ उनके दो गैर मुस्लिम साथी भी बाहर हैं ।

सवाल :-आप से अबी ने बता दिया होंगा कि अरमुगान के लिए मुझे आप से कुछ बाते करनी हैं ?

जवाब:- जी हज़रत फरमा रहे थे कि मै इन लोगो से बाहर बात करु इतनी देर मे आप अस्मा को इंटरव्यू दे दें, नवंबर मे छप जाऐंगा ।

सवाल:- जी तो अपना खानदानी तआर्रुफ करा दीजिए ?

जवाब:- मेरा नाम तो अस्मा अली है ।

सवाल: मुझे बडी खुशी हुई कि पहली बार मैं अपनी हम नाम बहन का इंटरव्यू अरमुगान के लिए ले रही हूं ?

जवाब:- मुझे भी खुशी है कि डॉ.आसिफ ने मेरा नाम आप के नाम पर और आप की वजह से रखा ।

सवाल:- जी तो आप अपना खानदानी तआर्रुफ करा रही थी ?

जवाब:- मै गंगानगर राजस्थान के एक ज़मीनदार खानदान मे ६ जनवरी १९७७ ई.मे पैदा हुई।मेरे दादा राजस्थान मे बी.जे.पी के बडे लीडर है।कई बार राजस्थान गवर्नमेंट मे वज़ीर भी रहे है अक्सर एम.एल.ए और एक बार एम.पी रहे है । पिछले साल इलेक्शन मे वह पहली बार इलेक्शन हारे है।मेरे वालिद साहब भी दादा के साथ शुरु से रहे इन्होने एम.बी.बी.एस किया था ।कुछ रोज़ प्रॅक्टीस के बाद मे सियासत से जुड गए एक बार वह भी एम.एल.ए हुए । मेरा नाम कल्पना उन्होने रखा था । मेरा एक बडा और एक छोटा भाई है ।

बायो सब्जेक्ट से बारहवी क्लास की, एम.बी.बी.एस के दाखले के कई इम्तेहानो मे पास न हो सकी तो हमारे वालिद ने आर्मिनिया मे एम.बी.बी.एस मे दाखला करा दिया,वही से मै ने एम.बी.बी.एस किया और वही डॉक्टर यूसुफ अली से मेरी शादी तय हुई। कोटा मे छुट्टियो के दौरान चौथे साल मे मेरी शादी हुई और इसी साल मै ने इस्लाम कुबूल किया आज कल हम लोग हिमाचल मे एक हॉस्पीटल मे काम कर रहे हैं ।

सवाल:- अपने कुबुले इस्लाम के बारे मे ज़रा बताईए ?

जवाब:- आर्मिनिया मे मैं ज़ेरे तालीम थी मेरे क्लास फेलो डॉक्टर यूसुफ अली से मेरे ताल्लुकात हो गए । अगरचे वह दीनदार घराने से ताल्लुक रखते थे मेरा घराना

भी हिंदुवाना रिवायत का बहुत कट्टर हामी बल्कि दाई रहा है मगर आम तौर पर यह देखा गया है कि कैसी ही मशरिकी और मज़हबी रिवायात मे पले बढे लडके लडकियाँ बाहर मुल्को मे जाकर अपनी खानदानी रिवायत को बिल्कुल भूल जाते है बल्कि आम तौर पर देखा जाता है कि मशरिकी रिवायत के लोग न जाने क्यो वहाँ जाकर युरोपियन लोगो से भी ज़्यादा आज़ादी और मग्रिबी तरीको मे बह जाते है, ऐसा ही हम दोनो के साथ हुआ बहुत ही जल्द हम दोनो ने तय कर लिया कि हम दोनो को शादी करनी है यह खयाल किए बगैर कि हम दोनो दो बिल्कुल मुखालिफ मज़हबो और मुखालिफ सोच रखने वाले खानदान के हैं।

सवालः- अबी कहते है कि यह खयाल गलत है कि हिंदु और इस्लाम दो मुखालिफ मज़हब है,बल्कि यह फरमाते है कि असल मे हिंदु मज़हब जिस को मज़हबी इस्तेलाह मे सनातन धर्म कहा जाता है दीने कय्यिम इस्लाम की पुरानी बल्कि पहली शक्ल है और इस्लाम इस की आखरी और कामिल व मुकम्मल शक्ल है वेद अगर अल्लाह के कानून की पहली शक्ल है तो कुरआन इस की फाईनल और आखरी शक्ल है। बस यह है कि सनातन धर्म मज़हबी लोगो की कारफरमाई से तहरीफ का शिकार हो गया है मज़हब और दीन तो दुनिया मे हमेशा से एक ही है और एक ही रहेंगा एक अल्लाह का कानून पूरी दुनिया मे एक ही हो सकता है दो नही ।

बात तो यह बिल्कुल सच्ची है मगर दुनिया मे और जो मौजुदा हालात मे इस मे तो हिंदु व मुस्लिम दो बिल्कुल मुतसादिम(विरोधी)मज़हब समझे जाते है ।

सवालः- यह तो वाकई बात है बताईए आगे क्या हुआ ?

जवाबः- डॉ.युसुफ अली ने मुझ से कहा कि मज़हब तो अपना ज़ाती मामला है शादी से इस का क्या ताल्लुक है यह तो पुराने ज़माने की बाते थी अब दुनिया बहुत आगे निकल गई है हम लोग डॉक्टर बनने जा रहे है तुम अपने मज़हब को फॉलो करना(मानते रहना) और मै अपने मज़हब को मानता रहूँगा हम लोग हिंदुस्तान जाकर कोर्ट मैरेज कर लेंगे,मै भी तैयार हो गई डॉक्टर युसुफ अली के एक खालाज़ात भाई डॉक्टर आबिद आर्मिनिया मे रहते थे उन से डॉक्टर यूसुफ अली ने बता दिया। बहुत दीनदार और नमाज़ी नौजवान थे। उन्होने डॉक्टर युसुफ अली को बहुत समझाया कि तुम दीनदार घराने के आदमी हो तुम्हारे ताए इतने बडे आलिम है किसी काफिर मुश्रिक से किसी मुसलमान की शादी हरगिज़ नही

हो सकती कुरआन मे साफ साफ मना किया गया है सारी उम्र हरामकारी होंगी, औलाद भी हराम की होंगी, मगर उन की समझ मे नही आया दो तीन महिने तक वह कोशिश करते रहे।मजबूर होकर डॉ.यूसुफ अली के घर इत्तेला कर दी,हिंदुस्तान से घरवालो के फोन आते रहे।डॉक्टर साहब के ताया मौलाना हामिद अली के कई फोन आए। एक बार एक घंटे तक बात की मगर डॉ.यूसुफ की समझ मे नही आया वह मुसलमान करने और फिर निकाह को दर्देसरी समझते थे इन को यह भी खयाल था कि मै बी.जे.पी के नॅशनल लीडर की बेटी हूँ, मै किसी तरह मुसलमान होने को तैयार नही हो सकती । मुसलमान होने को कहने मे इन से नाराज़ हो कर इरादा तर्क न कर दूँ असल मे वह मुझे बे हद चाहते थे मुझे भी दिल चस्पी थी मगर लोगो के मिज़ाज होते है कुछ लोग बहुत जज़्बाती होते हैं मेरे मिज़ाज मे अल्लाह ने हमेशा ठहराव दिया है वह मेरे रवय्ये से यह समझते थे कि मुझे कुछ ज़्यादा उन की तरफ झुकाव नही है। फिर यह भी खयाल था कि ऐसे सरकर्दा हिंदु रहनुमा की बेटी को मुसलमान करने से एक ज़बरदस्त लॉबी उन की और उन के खानदान की मुखालिफ हो जाएगी और न जाने बात फसादात वगैरह कहाँ तक पहुँचे। डॉ.आबिद कोशिश कर के थक गए मगर डॉ.यूसुफ अली मुसलमान कर के निकाह के लिए आमादह नही हुए मगर मेरे करीम रहमान व रहीम खुदा को तो मुझ कमतरीन व ज़लील बंदी पर रहमत फरमानी थी(रोते हुए) अस्मा बहन मेरे प्यारे मोहसिन रसूलुल्लाह सल्ल. करोडो और अरबो दरुद व सलाम हो आप पर (रोते हुए)आप की आल पर,आप के अस्हाब पर,आप की शहरे मुकद्दस के तिनको पर आप ने कैसी सच्ची बात फरमाई कुछ लोग ऐसे है जिन की गर्दन पकड कर अल्लाह तआला जन्नत मे ज़बरदस्ती दाखिल फरमाऐंगे ।मेरा हाल भी अस्मा बहन कुछ इसी तरह है कि ज़बरदस्ती मेरे अल्लाह ने मुझे ईमान वालो मे शामिल कर दिया,अगर चे इस का मुझे अहसास है कि अभी मै नाम की मुसलमान हूँ मेरे करीम अल्लाह जिस ने मुझे नाम के लिए कल्पना से अस्मा अली बना दिया उस की रहमत से ही क्यूँ उम्मीद न करु कि वह ज़रुर ज़रुर मुझे मेरी सारी नाकारगी के बावजूद मोमिने हकीकी बना देंगे ।मेरे अल्लाह मेरे करीम अल्लाह माँ से सत्तर गुना ममता रखने वाले मेरे रहमान व रहीम और हादी रब ज़रुर ज़रुर मुझे कामिल मोमिना नही तो किसी दर्जे मे ईमान की हकीकत से नवाज़ कर अपने घर बुलाऐंगे बल्कि अल्लाह के खज़ाने मे क्या कमी है ज़रुर इंशा अल्लाह ज़रुर(रोते

हुए) कामिल मोमिना बनाकर बुलाऐंगे मेरे अलाह ज़रुर कामिल मोमिना बनाकर बुलाऐंगे (बहुत ज़्यादा रोने लगती हैं)

सवाल :- आप तो यह फरमा रही थी, आप जज़्बाती नही है ?

जवाबः- अस्मा बहन अपने अल्लाह और अल्लाह के प्यारे रसूल सल्ल.से इंसान का अगर वालेहाना और आशिकाना और जज़्बाती ताअल्लुक न हो तो फिर इंसान का दिल पत्थर की मुर्ती है ।इस दिल को दिल क्या कहेंगे इस से तो फिर अच्छा है जो अपने रहमान व रहीम और करीम अल्लाह से और उस के लाडले रसूल सल्ल.*अरबो दरुद व सलाम हो आप पर,* से भी अकीदत और जज़्बाती ताल्लुक न रखे सच्ची बात तो यह है कि बहन अस्मा आप इस कैफियत का अंदाज़ा नही कर सकती आप मुसलमान घर मे पैदा हुई है,पली है।बी.जे.पी के यहाँ पैदा हुई लडकी के लिए इस तरह इस्लाम लाना कैसा अजूबा है यह एहसास रोंगटे खडे कर देने वाला है और फिर बगैर तलब अपनी तलाश और अपनी हाजत के बगैर मेरी बहन ख्वाब मे भी मुझे हक की तलाश का तसव्वुर नही था न इस का एहसास था कि हक को तलाश करके इस को मानना मेरी पहली ज़िम्मेदारी है ऐसा रिवाज और माहौल नही था। आर्मिनिया मे मेरे साथ खासे मुस्लिम लडके लडकिया हिंदुस्तानी पाकिस्तानी और अरब के भी पढते थे मगर उन मे किसी को भी दाअवत का एहसास नही था। मेरे जानने वालो मे सिर्फ डॉ.आबिद थे जो बस यह चाहते थे कि डॉ.यूसुफ हिंदु या हिंदु जैसे न बने इस हाल मे मेरे अल्लाह का ज़बरदस्त कुफ्र व शिर्क की आग मे जलती हुई बंदी को इस्लाम के साए रहमत मे ढकेल देना कैसा बडा करम है इसका अंदाज़ा आप को नही हो सकता।

सवाल :- बिला शुबा बात आप की बिल्कुल सच्ची है यह एहसास खुद अल्लाह का बहुत बडा करम है जो आप पर है तो आप अपने कुबुले इस्लाम के बारे मे बता रही थी ?

जवाबः- हुआ यह कि डॉ.आबिद जब डॉ.यूसुफ को समझाकर थक गए और वह भी मुसलमान होने के लिए कहने को आमादह न हुए तो डॉ.आबिद मेरे करीब हुए और एक रोज़ मुझ से वक्त लेकर बात की और कहा बताईए क्या आप डॉ. यूसुफ अली से शादी करने वाली है?एक ज़रुरी बात आप से करना चाहता हूँ। इंसान एक समाजी हैवान है इसे पल पल खानदान,अजीज़ व अकारिब की ज़रुरत होती है आप तो बीजेपी के सरकर्दा रहनुमा की बेटी है।अगर आप ने एक

मुसलमान से कोर्ट मैरेज की तो आप के खानदान वाले तो आप से बिल्कुल कट जाऐंगे ।डॉ.यूसुफ अली साहब के घरवाले भी आप को कुबुल नही करेंगे। अगर आप मुसलमान होकर इस्लामी तरीके पर निकाह कर ले तो मै कोशिश करुंगा डॉ.यूसुफ अली के घरवाले आप को बहू बना कर कुबुल कर लेंगे और मुझे उम्मीद है के मै उनको राज़ी कर लूंगा । एक खानदान से आप कटेंगी तो एक खानदान तो आप का होंगा ।

यह बात ऐसी मुनासिब थी कि मेरे दिल को लग गई ।मैने डॉ.यूसुफ अली से कहा मै मुसलमान होकर इस्लामी तरीके पर आप से निकाह करुंगी डॉ.यूसुफ अली मुझे मना करते रहे मगर मेरे ज़हन मे डॉ.आबिद की बात ऐसी बैठ गई थी कि मै इस पर अड गई और मैने डॉ.यूसुफ अली से साफ साफ कह दिया कि मै सिर्फ इस शर्त पर आप से शादी के लिए तयार हूं कि आप मुझे मुसलमान बनाएं और फिर इस्लामी अंदाज़ मे आपके वालिदैन मुझसे आप का निकाह करें।

यह काम इनके लिए बहुत मुश्किल लगा मगर डॉ.आबिद ने इसमे बहुत अच्छा रोल अदा किया उन्होने डॉ.यूसुफ के घरवालो को समझाया कि अगर आप डॉ.यूसुफ साहब का निकाह कल्पना से नही करेंगे तो यह लोग कोर्ट मैरेज कर लेंगे बल्कि वह कोर्ट मैरेज कर रहे थे मैने बहुत कोशिश करके खानदान की इज़्ज़त बचाने के लिए खुसूसन मौलाना हामिद अली साहब के नाम की लाज बचाने के लिए महिनो मे इनको तैयार किया बहर हाल घर वाले तैयार हो गए।

चौथे साल छुट्टियाँ थी मैने इस बार घरवालो से छुट्टियो मे घर न आ सकने का बहाना बना लिया और कोटा हम लोग पहुचे डॉ.यूसुफ अली के दोस्त डॉ.आसिफ हैं जो इसी साल मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज देहली से एम.बी.बी.एस से फारिग हुए थे वह हज़रत मौलाना कलीम साहब से ताल्लुक रखते थे हज़रत के बिल्कुल आशिके ज़ार है वह मिलने आ गए डॉ.यूसुफ ने उनको सारी बात बताई उन्होने मुझसे कलमा पढने को कहा कि शादी जब होंगी हो जाऐंगी आप कलमा फौरन पढले मौत का वक्त न जाने कब आ जाए मै ने कहा जब शादी होंगी तब कलमा पढेंगे हम लोगो ने बहुत ज़ोर दिया कि एक साल और एम.बी.बी.एस करने के बाद हम लोग शादी करेंगे मगर वह ज़िद करते रहे उन्होने कहा कि कलमा भी अभी पढें और निकाह भी फौरन करले इसलिए कि कानून असल अल्लाह का है इस कानून के मुताबिक आप दोनो को मिलने देखाने और

इस तरह बोलने का हक नही हैं जब तक आप का निकाह नही होंगा आप ज़िना के गुनाहगार होते रहेंगे डॉ.आसिफ माशा अल्लाह बहुत दीनदार डाक्टर है देखने से मौलाना से लगते है मेरे शौहर उनसे बहुत ताल्लुक रखते है इन के ज़ोर देने पर यूसुफ और घरवाले राज़ी हो गए मैने कलमा पढा और डॉ.आसिफ ने मेरा निकाह पहले बस चंद घरवालो के सामने महर फातमी पर पढाया मेरा नाम अस्मा अली रखा और बताया कि हमारे हज़रत की साहबज़ादी का नाम अस्मा है जो हज़रत के बकौल उन की दाअवत की उस्ताज़(गुरु) है उनके नाम पर मैने आप का नाम रखा। इंशाअल्लाह अल्लाह आप से बहुत काम लेंगे बाद मे मौलाना हामिद अली साहब को मालूम हुआ तो उन्होने मेरा निकाह दोबारा पढाया और अदालत से रजिस्ट्रेशन और कानूनी कारवाई पुरी हुई ।

निकाह के एक हफ्ते बाद डॉ.आसिफ की फरमाईश और ज़िद पर उनके घर देहली आए डॉ.आसिफ की बहन एक गर्ल्स स्कूल मे पढाती है अरमुगान उनके यहाँ पाबंदी से आता है उन्होने मुझे सबसे पहले हज़रत की किताब आपकी 'अमानत आप की सेवा मे' पढने को दी और मुझे ज़ोर दिया कि इस किताब को आप कम अज़ कम तीन बार पढे तो आप को मालूम हुआ कि अल्लाह ने आप के साथ कैसा करम का मामला किया डॉ.आसिफ साहब की बहन सफिया बाजी बहुत ही काबिल और बहुत मुहब्बत भरी शख्सियत है मै पहली मुलाकात मे उन से मुतास्सिर हुई और मैने आप की अमानत तीन बार पढी छोटी सी इस किताब के तीन बार पढने ने इस्लाम को मेरी सब से बडी ज़रुरत के साथ मेरी पहली पसंद बना दिया मै मुसलमान इत्तेफाकन हुई थी मगर अल्हमदुलिल्लाह अब शउरी तौर पर मुसलमान हो गई थी मे ने डॉ.आसिफ साहब से दरख्वास्त की कि मै चाहती हुं कि अल्लाह ने मुझे अपने फज़ल से ज़बरदस्ती बनाया है तो मेरे शौहर जो मेरी ज़िंदगी के साथ है और जिन के साए मे मुझे अपनी पूरी ज़िंदगी गुज़ारनी है वह भी मुसलमान हो जाऐं वह मुसलमान घराने मे पैदा तो ज़रुर हो गए है मगर वह मुसलमान कहा हैं जो मुझ से गैर इस्लामी तरीके पर कोर्ट मैरेज करने पर तैयार है मुसलमान किसी कौम का नाम नही बल्कि अल्लाह उस के रसूल सल्ल. की शरिअत के सामने अपने को सरनगू(समर्पण) करने और इसे मानने का नाम है मेरी ख्वाहिश है कि मेरे शौहर भी मुसलमान हो जाए उन्होने छुट्टियो मे एक चिल्ले के लिए जमाअत मे जाने का मश्वरा दिया शुरु मे यह बात डॉ.यूसुफ अली के लिए

बडी मुश्किल थी मगर मै ने भी ज़िद की और डॉ.आसिफ ने भी ज़िद की वह ज़बरदस्ती राज़ी हो गए मगर जाते वक्त उन को बहुत ज़ोर पड रहा था वह खुद कहते है कि डॉ.आसिफ जब मुझे जमाअत मे जाने से पहले हज़रत कलीम साहब के यहॉ लेकर गए मुझे ऐसा लग रहा था कि मुझे गिरफ्तार कर के जेल मे ले जा रहे हैं चालिस दिन मै कैसे गुज़ारुँगा मगर ओखला जाकर हज़रत से मुलाकात हुई हज़रत ने चंद मिनट बात की तो वह खुश दिली से जमाअत मे जाने के लिए तैयार हो गए मुंबई की एक जमाअत के साथ उन का वक्त मथुरा मे लगा और अल्हमदुलिल्लाह वहॉ से बा कायदा दाढी बल्कि अगर यह कहूँ कि मेरे शौहर मुसलमान होकर वापस आए तो यह भी सच होंगा ।

सवालः- इस के बाद आप वापस आर्मिनिया गई ?

जवाबः- हमे वापस आर्मेनिया एम.बी.बी.एस मुकम्मल करने जाना था जाने से पहले हम सब लोग हज़रत से मिलने के लिए गए हज़रत ने हमे समझाया कि इस्लाम कुबूल कर के गोया आप की नई ज़िंदगी शुरु हुई है अब आप मुसलमान और सिर्फ मुसलमान है बल्कि खैरे उम्मत के एक फर्द होने की हैसियत से दाई है।मुसलमान को जहॉ भेजा जाता है दाअवत के लिए भेजा जाता है अब आप अपनी नियत एम.बी.बी.एस मुकम्मल करने की न करके आर्मिनिया मे दाअवत की नियत से जाए अल्हमदुलिल्लाह हम दोनो ने नियत को ठीक किया चलते वक्त हज़रत से बहुत दुआ की दरख्वास्त की और हम दोनो ने डॉ.आसिफ के मश्वरे पर हज़रत से बैत भी की और दाअवत के मक्सद से इस बार के सफर का अहद भी किया। अल्हमदुलिल्लाह इस नियत की बरकात खुली ऑखो दिखाई देती रही।अस्मा बहन शायद आप यकीन न करें एक साल मे मैने कुरआन भी एक अरब लडकी से पढा,उर्दू पढी,अरबी ज़बान मुझे एक दर्मियानी आलेमा की तरह आ गई है।अक्सर मासूरह दुआए याद हो गई और पाकिस्तान से मंगाकर मै ने सैंकडो किताबो का मुतालआ किया ।

सवालः- आप के एम.बी.बी.एस का क्या हुआ ?

जवाबः- दीन को बल्कि दाअवत को मक्सद बनाने की बरकत से मै ने पिछले चार सालो से ज़्यादा फाईनल ईयर मे नंबर हासिल किए ।

सवालः- दाअवत की नियत का क्या हुआ ?

जवाबः- असल तो वही बताना है दाअवत हमारी ज़िंदगी की धुन थी।अल्हमदुलिल्लाह

आर्मिनिया,बंग्लादेश,इंडिया व पाकिस्तान के २१ लडके लडकियाँ और हमारे कॉलेज के छः असातेज़ा मुसलमान हुए ।

सवालः- पाकिस्तान और बंग्लादेश के गैर मुस्लिम कहाँ से आ गए ?

जवाबः- बंगलादेश के दो ब्रहमण और चार सिंधी हिंद व पाकिस्तान के जो अल्हमदुलिल्लाह बडे अच्छे डॉक्टर बन कर दाअवत की नियत करके वापस हुए है । हिंदुस्तान आकर एहसास हुआ कि वहाँ काम करना ज़्यादा आसान है। अगर आदमी को धुन लग जाए तो काम यहाँ भी आसान है मगर वहाँ ज़्यादा आसान है।

सवाल आप को हिंदुस्तान लौटते हुए कितना ज़माना हो गया,आप ने दाअवत का काम नही किया आप लोग हज को भी तो गए थे ?

जवाब हमें वापस आए चौथा साल है अल्हमदुलिल्लाह हम जहाँ भी रहे बा कायदा औरतो का इज्तेमाह और हमारे शौहर बाजमाअत का एहतेमाम कराने लगते हैं दो साल हम देहली मे रहे। सफदरगंज और राममनोहर लोहिया अस्पताल मे काम किया ।अब दो साल हिमाचल मे होने वाले है ।अल्हमदुलिल्लाह २८ डॉक्टर मेरी दाअवत पर मुसलमान हो गए है जिन मे छः लडकियों की मुसलमानो से शादी हो गई है चंद ऐसी है जिन्होने ऐलान नही किया है।मेरे शौहर और हमारे वसीले से एक सौ से ज़ायद लोग अल्लाह ने हिदायत याब फरमाए हैं इनमे एक ऑल इंडिया के बहुत बडे अफसर भी हैं जो अब रिटायर हो गए है मगर ज़ाहिर है अभी बहुत कमी है अभी बहुत कुछ करना है ।

सवालः- आप के घरवालो का क्या हुआ ?

जवाबः- मै ने आर्मिनिया से आखरी साल मे भी फोन पर शादी की इत्तेला दे दी थी,मेरे वालिद और दादा ने फोन पर कह दिया कि तु हम से मर गई हैं हमे फोन मत करना। इस के बाद से मेरा फोन रिसिव्ह नही करते हैं आवाज़ सुनते ही काट देते हैं उन्होने अपने इलाके मे और लोगो मे मेरे बारे मे बता दिया कि कल्पना आर्मिनिया मे जाकर मर गई है ।

सवालः- आपने उन से राब्ते की कोई सूरत नही निकाली ?

जवाबः- मै बहुत खत लिखती हूं मगर वह जवाब नही देते मेरे घरवाले एक कट्टर तंज़ीम से सियासी तौर पर वाबस्ता है मगर ज़ाती ज़िंदगी मे अक्सर लोग अच्छे इंसान है न जाने मेरे खानदान का क्या होंगा ।मै हज़रत से जब भी मिलती हूं

बहुत गुज़ारिश करती हूँ पिछली बार जब मै गरमियो मे आई थी तो हज़रत के हाथ पकड कर खुब रोई हज़रत मेरे खानदान का क्या होंगा हज़रत मेरे दादा मेरी दादी ,मेरी मम्मी,मेरे भाई, मेरे अंकल अगर कुफ्र मे मर गए तो किस तरह दोज़ख मे जलेंगे ।हज़रत बहुत अजीब से हो गए मगर मुझे एहसास न होने दिया ज़रा मुझे होश सा आया तो हज़रत ने समझाया कि शरिअत का हर हुक्म हमारे लिए असल है आप शरिअत की निगाह मे मेरे लिए नामहरम है बुर्का पहनने से हुदूद खत्म नही होते अगर जज़्बात मे शरिअत के अहकाम का लिहाज़ करने की आंदत नही डालेंगी तो शैतान आप को बरबाद कर देंगा ।

सवालः- बुर्का आप ने कब से पहनना शुरु किया ? आप को अस्पताल मे दिक्कत नही होती ?

जवाबः- अल्हमदुलिल्लाह तीसरा साल है ।जब मै ने बुर्का पहनना शुरु किया कुछ लोग ज़रा अजनबियत महसूस करते हैं मगर अक्सर लोग मरऊब होते है ।

सवालः- कारेईन अरमुगान के लिए कुछ पैगाम आप देंगी ?

जवाबः- पहली दरख्वास्त तो मेरे खानदान वालो की हिदायत के लिए दुआ की है और दूसरी दरख्वास्त यह है कि इस्लाम किसी कौम या बिरादरी का नाम नही हैं कि गूजर के घर मे पैदा हुआ तो गूजर,जाट के घर मे पैदा हुआ तो जाट और मुसलमान के घर मे पैदा हुआ तो मुसलमान बल्कि अल्लाह और उस के रसूल सल्ल. के हुक्म और इस के कानून इस्लाम को अपने लिए खैर समझ कर इस के सामने खुद सुपुर्दगी और उसे मानने का नाम इस्लाम है,जिसका शऊर दाअवत को मक्सदे ज़िंदगी बनाए बगैर नसीब नही हो सकता ।

सवालः- बहुत बहुत शुक्रिया ,डॉ.अस्मा अली !अल्लाह तआला आप को जज़ाए खैर अता फरमाए । अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाही

जवाबः- वअलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाही व बरकातुह । शुक्रिया तो आप का मुझे अरमुगान की बज़्म दाअवत मे हिस्सेदार बनने की सआदत नसीब हुई ।

(मुस्तफाद अज़ माहनामा 'अरमुगान' नवंबर २००९ई.)

••••••

14 नबी के काम मे लगे बगैर आदमी मुसलमान नही हो सकता

चारो तरफ बगैर ईमान के लोग आग मे जल रहे है मगर कुछ भी खयाल नही मुझे तो जब मालूम हो कि कोई हिंदु मर गया तो देर तक नींद नही आती ऐसा लगे जैसे मै मरी हूँ। इतनी तकलीफ मुझे होती है असल दाअवत तो यही है कि प्यारे रसूल सल्ल.के दस्तरख्वान पर लोगो को बुलाया जाए सच्ची बात यह कि इस काम मे लगने से पहले बल्कि मै क्या इस काम मे लगी पता नही अल्लाह को क्या इस गंदी पर तरस आया अल्लाह ने हमें ज़बरदस्ती काम मे लगा दिया।

अस्मा ज़ातुल फौज़ैन : अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाही वबरकातुह।

फातेमाः वअलैकुम अस्सलाम जी ,

सवालः- आप की पैदाईश कहॉ हुई ?

जवाबः- मेरा मैका कांधला के पास जाटो का एक गॉव ऐलम है मेरे अब्बा का नाम अब्दुल रशीद है। वह खद्दर बेचते थे।

सवालः- आप की शादी कहॉ हुई।

जवाबः- मेरी पहली शादी बुढाना के पास सुलतानपूर गॉव मे हुई थी मेरे शौहर अचानक बहुत बीमार हुए ओर इन का इंतेकाल हो गया वह टी.वी. के मरीज़ थे इस के बाद मुहम्मदपूर मे मेरी शादी हो गई ऐनुद्दीन उन का नाम है मेरे शौहर सीधे आदमी है पानीपत मे खद्दर बेचते है।वह दो बातो का बहुत खयाल रखते है एक तो सौ रुपये मे ढाई रुपये सबसे पहले निकालते है दूसरे बिल्कुल ईमानदारी से कपडे बेचते हैं।

सवालः- मुहम्मदपूर मे कितने मुसलमान है ?

जवाबः- मुहम्मदपूर मे मुसलमान बस थोडे से घर हैं हिंदुओ का गॉव है। छोटी सी एक मस्जिद है मुसलमान भी बस नाम के हैं।

सवालः- आप को यह दीन के काम से कैसी दिलचस्पी पैदा हुई ?

जवाबः- मै अनपढ,जाहिल,दीन से बिल्कुल दूर नाम की मुसलमान थी हमारे गॉव मे एक जाट की घरवाली मर गई उस ने किसी दूसरी औरत को रख लिया पहली औरत की दो जवान लडकियॉ थी वह मेरे पास आया करती थी।मै चूडियॉ बेचती थी वह मुझे अम्मी कहा करती थी गॉव के अक्सर बच्चे बच्चियॉ मुझे अम्मी कहते थे गॉव वाले सभी मुझ पर एतेमाद करते थे जिस को कोई काम होता सौदा मंगवाना होता मै ला देती किसी को कोई दुख तकलीफ होती मै बुढाना ले जाकर दवा दिलवाती जाट और दूसरे लोग अपनी जवान बच्चो और बच्चियो को मेरे साथ भेज देते इन दोनो लडकियों को सौतिली मॉ और बाप ने बहुत सताया वह लडकियॉ मुझसे कहने लगी अम्मी मुझे तो इस्लाम धर्म अच्छा लगे हमे तो कही मुसलमान करवा दें मै ने सोचा दो परेशान हाल लडकियॉ परेशानी से बच जाऐंगी और दोज़ख की आग से भी बच जाऐंगी मै इन को लेकर मर्कज़ निज़ामुद्दीन चली गई वहा आपा जी ने इन को कलमा पढवाया एक का नाम अनवरी और दूसरी का नाम सरवरी रख दिया हिंदी की किताब लेकर वह नमाज़ याद करने लगी और फिर पाबंदी से नमाज़ पढने लगी मुझे भी शर्म आई कि यह कल की मुसलमान तो नमाज़ की ऐसी पाबंदी और मैं पुरानी मुसलमान नमाज़ से दूर ? मै ने भी नमाज़ शुरु कर दी मुझे यह भी खयाल आया कि इन मिट्टी की बनी हुई लडकियों की शर्म मे तो तु नमाज़ पढ़े और अपने अल्लाह के हुक्म की शर्म नही। मै नमाज़ मे खूब रोई और दुआ की मेरे अल्लाह मिया मुझे माफ कर दो मै अब आप के हुक्म और आप की मुहब्बत मे नमाज़ पढूंगी ।

फिर मै ने इन दोनो लडकियो के रिश्ते तलाश किए और पानीपत मे दो अच्छे मुसलमान तैयार हो गए दोनो के निकाह करवाए अल्लाह का शुक्र है कि बहुत खुशी खुशी उन की गुज़र हो रही है । इस के बाद मै मुहम्मदपूर आई हमारे यहॉ का एक बहुत बडा बदमाश जाट का लडका बुढाना के कसाईयो के साथ आकर आप के यहॉ फुलत मे मुसलमान बना था हज़रत जी ने इस का नाम असलम रखा था मै ने सोचा कि वह अब नमाज़ी हो गया और अपने सारे बुरे काम छोड दिए,तो मुझे और भी खयाल आया कि ऐसा बडा बदमाश मुसलमान होकर सुधर जाए तो यह जो लोग मुझसे मुहब्बत करते है अगर दीन लेलें और मुसलमान हो जाए तो कितना अच्छा हों ।

मै आने वाली औरतो और लडकियों को समझाने लगी मुझे कुछ आता

तो है नही जो कुछ अल्लाह कहलवाता मै कहती पहले एक दो लडकियाँ और इस के छः महिने के बाद एक और लडकी तैयार हुई मै ने इन को देहली ले जा कर मुसलमान कराया और अल्लाह ने रिश्ते भी दिलवा दिये इन की शादियाँ भी हो गई।

सवालः- आप को जवान पराई लडकियाँ ले जाते हुए डर नही लगा ?

जवाबः- पहली दफा डर लगा म·र मै ने सोचा कि गाँव के लोग मुझ पर एतेमाद करते है अगर किसी ने देख लिया तो कह दूँगी कि दवा लाने ले जा रही हूँ या इलाज करवाने ले जा रही हूँ और बात सच्ची भी थी कि असल इलाज करवाने ले जा रहे थे मगर बाद मे डर निकलता गया अपने अल्लाह पर भरोसा होता गया मेरे दिल मे था कि अगर कोई कहेंगा तो साफ़ कह दूँगी कि नर्क बचाने के लिए ले जा रही हूँ मगर अल्लाह का शुक्र है कि कोई नही मिला न किसी को मुझ पर शक हुआ ।

सवालः- इस के बाद भी आप ने किसी पर काम किया ?

जवाबः- एक ज़मीनदार बाप का लडका मेरे घर की दुकान मे दवाईयो का स्टोअर्स करता था वह डॉक्टर भी था वह मुझे नमाज़ पढते देखता था एक दिन मुझसे कहने लगा,अरी अम्मा तू ये नमाज़ क्यो पढती है? सामने मोमबत्ती जल रही थी मे ने कहा भैय्या मेरे भैय्या !ज़रा अपनी उंगली मोमबत्ती मे लगा वह कहने लगा मै क्युं लगाऊ जल नही जाऐंगी ? मै ने कहा बेटे जब तू ज़रा सी मोमबत्ती मे उंगली नही जला सकता तो दोज़ख की आग को कैसे सहन करेंगा ? फिर मै ने इस से कहा तू ने किसी हिंदु को मरते नही देखा? इस ने कहा देखा है। मै ने कहा इसे जलते हुए भी देखा है? इस ने कहा देखा है। मै ने कहा तू ने नही देखा वरना तू हिंदु नही रहता।दो रोज़ के बाद एक हिंदु औरत मर गई, फिर इस को शमशान ले गए वहा उस को आग लगा दी सारा कफन जल गया वह नंगी हो गई । फिर लाठियो से इसके सर को फोडा और बुरी तरह जलाया इत्तेफाक से अगले रोज़ एक मुसलमान धोबी मर गया वह इस को देखने गया बहुत अच्छी तरह नहलाया गया एहतेमाम से कफन पहनाया गया खुशबु लगाई गई कितने प्यार से इसको कब्र मे उतारा गया जब लोग मिट्टी डालने लगे तो उस ने कहा मै भी मिट्टी डाल दूं? लोगो ने कहा अगर तू नहाया धोया हो तो मिट्टी डाल दे वरना हाथ मत लगाना इस के दफनाने के बाद जब वह वापस आया तो बिल्कुल चुप रहने लगा ।

मै एक दिन बुढाना गई तो एक हदीस की किताब उस के लिए ले आई

वह इस को पढता वह चुपके चुपके नमाज़ पढने लगा उस ने अपनी बीवी से बताया । वह बीवी इसको नमाज़ पढाती रही फिर इस की बीवी ने घर के लोगो को बता दिया घर के लोगो ने इस पर ज़ुल्म शुरु किए कैसे कैसे पहाड इस पर टूटे,इस को देख कर हम सब भी रोते रहते वह पढता रहता और कहता रहता तुम मेरा गला काट दो मै अपने रब से यह कह दुंगा कि तेरे लिए मै ने ज़बान कटवा दी । इस को कमरे मे बंद करके मिर्चियो की धुनी दी।एक दिन जान बचाकर वह मेरे घर मे घुस गया मुझे खबर नही हुई इस के घरवाले मेरे पिछे पिछे घर मे आ गए मेरे घर की तलाशी ली मै बे फिक्र थी कि वह मेरे घर मे नही है मै ने चिढाने के लिए कहा कि उपर चोपारे मे देख लो? वह चोपारे मे गए वहा तीन गठरियाँ सरसो की लकडियों की खडी थी ।मै ने उन से कहा इन लकडियों को भी देख लो कही इन के पिछे रहा हो ? इन्होने फिर लकडियाँ हटा कर देखी फिर चले गए ।जब मै कवाड बंद कर के उपर गई तो वह उन लकडियों मे से निकला कहने लगा अरी अम्मी! अगर मेरे अल्लाह यहाँ इनको अंधा न करते तो, तू मुझे मरवा ही देती उस ने बताया जब वह मुझे देखने आए तो मै लकडियों के पिछे खडा था । मेरा सर उपर दिखाई दे रहा था मगर उन मे से किसी को नही दिखाई दिया उस के बाद ही हमे सच्चा ईमान नसीब हुआ। मेरा लडका इंतेज़ार भी अगले रोज़ जमाअत मे चला गया मेरी बच्चियाँ भी नमाज़ पढने लगी मेरे दोनो भाई भी ऐलम से यह किस्सा सुन कर जमाअत मे चले गए ।

सवाल:- इसके बाद क्या हुआ ?

जवाब:- हुसैनपूर के मौलाना मआज़ और हाफिज़ नवाब इस को लेकर फुलत आए और हज़रत जी ने इसको कलमा पढाया उस का शोएब नाम रखा और जमाअत मे भेज दिया ।

उस के बाद इस के घरवाले हमे सताने लगे रोज़ आते कि या तो उस का पता बताओ वरना तेरे घर के सब लोगो को मार देंगे । एक दिन जब लोगो ने बिल्कुल मारने की ठान ली तो मै बच्चो को लेकर बुढाना आ गई । और घर को ताला लगा दिया सोचा कि घर को उखाड कर दूसरा बना लेंगे मगर वहाँ के जाटो ने एक चीज़ भी निकालने नही दी और रोज़ाना पोलिस बुढाना आती जब लोग मुझे सताने लगे तो मै सिटेरी आ गई फिर फुलत आकर हज़रत जी से मुरीद हो गई ।

हो गई ।

सवालः- तुमने यह सब घरबार छोडा क्या तुम्हे इसका दुख नही ?

जवाबः- सच्ची बताऊ पहले थोडा होता था फिर मै ने सोचा कि दीन के वास्ते अल्लाह की मुहब्बत मे छोडा है तो खुश होने लगी ।

मेरे शौहर को बहुत दुख होता है वह कहते है कि तू ने हमे बरबाद कर दिया मै ने उन से कह दिया कि अपने दीन के लिए अल्लाह की मुहब्बत मे अपने प्यारे रसूल सल्ल.के रास्ते पर चलने के लिए अगर तुम भी चाहो तो मुझे छोड,दो अपने मुंह से ऐसी बात कहना गुनाह है मगर एक दिन वह कहने लगे तू मुझे मरवा देंगी ।मै तो तुझे तलाक दे दुंगा । तो मै ने यह मज़कूरह बात कही ।

सवालः- तुम्हारे बच्चो का इन हालात मे क्या खयाल है ?

जवाबः- बच्चो का बिल्कुल दुख नही,मेरा लडका इंतेज़ार चौदह साल का है वह युं कह रहा था अम्मी अभी तो घर ही छोडा हमारे नबी सल्ल. को फाके होते थे अभी तो हमे फाको का भी इंतेज़ार है मेरी दोनो बच्चियाँ शाईस्ता और गुलिस्ता खुश है वह कहती है अम्मी सामान क्या चीज़ है वह तो मर जाते जब भी छूट जाता हमारे कहा नसीब कि नबी सल्ल.की नक्ल मे घर छोडते ।

सवालः- आप के मैके वाले इन हालात मे क्या कहते है ?

जवाबः- मेरे मैके वाले सब मुझ से नाराज़ है वह न जाने कैसे लोग है क्या हो गया इन को ? जिस के घर जाती हूँ अपने घर मे घुसने नही देते कहते है कि तू हमें मरवा देंगी । मेरे अब्बा कहने लगे कोई तुझे भी कत्ल कर देंगा और तेरे बच्चो को उठाकर मार देंगा मैने कहा अगर कोई मुझे मार देंगा तो मुझे मरना तो है ही और शहादत की मौत से अच्छी तो कोई मौत होती नही जिस की हमारे नबी ने भी तमन्ना की ।मै ने अपने घरवालो से कहा मै यहाँ फुलत मे हूँ मेरे बच्चे कांधला मे है कोई मेरे बच्चो को क्या उठाऐंगा तुम सब मिल के उठवा दो मै और इन्हे मरवा दो । मै तो इस पर खुश होंगी और अपने अल्लाह से कह दुंगी मेरे अल्लाह तेरे दीन के वास्ते मै ने अपने बच्चे भी कुर्बान कर दिये ।

सवालः- सिठेरी मे रहते हुए भी आप ने किसी को दाअवत दी ?

जवाबः- हर जुमेरात को वहाँ की औरतो को आप के यहाँ इज्तेअमा मे लेकर आती हूँ कई औरते तो पक्की हो गई है कि सब को दीन पहुँचाएंगी । एक लोहार का लडका मुसलमान होने को तैयार है।अब की जुमा को हज़रत जी के पास मुसलमान

होने आऐंगा। मै तो जहॉ भी जाती हूं यही बात करती हूं। जब मै (जिंद हरियाणा) मे अपने रिश्तेदारो मे जाती हूं जहॉ मुसलमान कही के भी नही नाम तक हिंदूओ के है वहॉ सब औरतो को इकट्ठा कर लेती हूं और खूब समझाती हूं। हिंदु औरते भी आ जाती हैं बस जन्नत और दोज़ख का ज़िक्र आया और मेरे ऑखो मे आंसू आ गए(रोते हुए)अरी बहनो ! जल्दी पक्की मुसलमान बन जाओ दीन ले लो अगर ईमान के बगैर मर गई तो दोज़ख की आग मे कितनी तकलीफ होंगी। कलमा पढ लो आग से बच जाओंगी जहॉ मेरी ऑखो मे आंसू आए औरतो के दिल मोम हो जाते है मै जाना भी चाहू तो हिंदु औरते रोकती है अरी और सुना...और सुना।

मै ने कितने लोगो को हज़रत जी की किताब "आप की अमानत आप की सेवा मे" दे दी दसीयो लोगो ने तो इस को पढ कर अपने शिवजी फोड दिए। सुहेब के तीन दोस्त आए थे हज़रत जी से कलमा पढने हज़रत जी मिल नही फिर आवेंगे। मै अगर कुछ पढ लेती कुरआन पढ लेती(रोते हुए)तो मै कितने लोगो को समझाया करती बस मुझे यह ही दुख है।

सवालः- अब पढने लगो तो अब भी पढ सकती हो ?

जवाबः- एक दिन मै ने ख्वाब देखा था एक नकाब डाले हुए बुजुर्ग है कुछ कुछ दिल मे आया कि वह हमारे प्यारे रसूल सल्ल.है मुझे कुरआन शरीफ दे रहे है और कह रहे है ले पढ ले(रोते हुए)काश मैं पढी लिखी होती।

पढे लिखे लोग न जाने क्यो हमारे नबी सल्ल.के रास्ते नही चलते चारो तरफ बगैर ईमान के लोग आग मे जल रहे है मगर कुछ भी खयाल नही मुझे तो जब मालूम हो कि कोई हिंदु मर गया तो देर तक नींद नही आती ऐसा लगे जैसे मै मरी हूं। इतनी तकलीफ मुझे होती है।

सवालः- दाअवत के इस काम मे लगने से पहले और अब मे आप क्या फर्क महसूस करती है ?

जवाबः- दाअवत तो मै कभी कभी किसी मिलने वाले की करती हूं अब न तो मेरा घर है न दार ऐसे मे कहॉ दाअवत करुँ मुझे ज़रा सुकून मिल जाए और अल्लाह की मर्ज़ी हो और ज़रा सा ठिकाना मिल जाए तो फिर मै दीन मे लाने के लिए दाअवत किया करुँगी दाअवत के बहाने से लोग ईमान मे आ जाए।मेरी एक सहेली है शशी मै ने इसे हज़रत जी की किताब "आप की अमानत आप की सेवा मे" दी थी इस ने अपने घर के सारे शिव जी फोड

दिए मुझ से कहने लगी कि मै तो आर्य समाजी हो गई मै ने ढोंग छोड दिये मै ने समझाया झिंरे मे से निकली कुंए मे गिरी आर्य समाज बनने से क्या होंगा? जिस ने पैदा किया उस के समाज मे आ मुसलमान बन कलमा पढ तब होंगी मुक्ती, मेरा जी चाहता है इसकी दाअवत करु ।

सवाल असल मे तुम जो लोगो को ईमान कुबूल करने के लिए कहती हो इस को दीन मे दाअवत कहते हैं और असल दाअवत यही है इस काम मे लगने से पहले और बाद मे आप क्या फर्क महसूस करती हैं ।

जवाब (रोने लगती हैं) इस लिए तो कहती हूँ काश मै पढ लेती तुम सच कहती हो असल असल दाअवत तो यही है कि प्यारे रसूल सल्ल.के दस्तरख्वान पर लोगो को बुलाया जाए ।

सच्ची बात यह कि इस काम मे लगने से पहले बल्कि मै क्या इस काम मे लगी पता नही अल्लाह को क्या इस गंदी पर तरस आया अल्लाह ने हमें ज़बरदस्ती काम मे लगा दिया । जब तक मै ने अपने आपको काम मे नही लगाया था मै अपने को उस वक्त मै मुसलमान नही मानती और ईमान का मज़ा तो मुहम्मदपूर का घर बार छोडकर ही आया मै तो मानती नही कि नबी सल्ल. के काम मे लगे बगैर आदमी मुसलमान हो सकता है ईमान का ऐसे पता ही नही लगता जब तक दीन के काम मे लोगो को ईमान मे लाने के काम मे कुछ कुर्बानिया न करे यूँ तो नाम रख लेने से अपने आप को सब मुसलमान समझते हैं। परसो कांधला वाले हज़रत जी (हज़रत मौलाना इफ्तेखार कांधलवी)कह रहे थे सिर्फ अल्लाह अल्लाह कहने से दिल साफ नही होता अल्लाह की मुहब्बत मे कुछ करने से कुछ कुर्बानियॉ करने से कुछ मिलता है ।

सवालः- आप का बहुत बहुत शुक्रिया ! आप अल्लाह का शुक्र अदा करें कि उस ने आप को एक बडे काम मे लगा दिया और हमारे लिए भी दुआ करें ।

जवाबः- दुआ तो आप करें मै किस काबिल हूँ, मै भी दुआ करुँगी ।

अल्लाह हाफिज़

(मुस्तफाद अज़ माहनामा 'अरमुगान' अगस्त २००६ ई.)

15 इस्लाम एक आलमगीर मज़हब और जामेअ निज़ामे हयात है

यह ग्यारह दिसंबर १९९९ ई. का एक यादगार दिन था जुनूबी हिंदुस्तान के शहर कोची (बाज़ कोचीन या कोचन भी लिखते है)मे केरला लायब्रेरी कौंसिल का इज्लास (कांफ्रेंस)हो रहा था किसी को वहम व गुमान भी न था कि इस इज्लास मे एक ऐसा एलान होने वाला है जो इस इज्लास को आलमी शोहरत बख्श देंगा बल्कि इसे तारीख (इतिहास) के सफहात मे भी महफूज़ कर देंगा खुद एलान करने वाली खातून भी अपने इस एलान से आगाह न थी । जब वह तकीर करने के लिए आई तो उसने महसूस किया कि एक नूर ने उसकी ज़ात को अपनी लपेट मे ले लिया है उसके हाथ आसमान की तरफ बुलंद हुए और ज़बान से बेसाख्ता निकला या अल्लाह उसके साथ ही सारी मजलिस पर एक सन्नाटा छा गया । सन्नाटा उस वक्त टूटा जब उसने कहा 'अब मै उस की परिस्तार हूँ जो अपनी जात मे यक्ता है' यह एलान करने वाली कोई मुसलमान खातून न थी बल्कि अंग्रेज़ी और मलियालम ज़बान की बैनुल अक्वामी शोहरत याफ्ता हिंदुस्तान की हिंदु मुसन्नेफा कमला दास थी जो एलान करते ही मुसलमान हो चुकी थी इस्लाम कुबूल करने के बाद उन्होने कमला सुरैय्या का नाम पसंद किया १३ मई २००९ को वह अपने खालिके हकीकी से जा मिली ।

फरीदा रहमतुल्लाह :सुरैय्या साहिबा आप हिंदु मज़हब मे पैदा हुई पली बढी उम्र के दहाने पर वह कौनसी बात थी जिस से मुतास्सिर होकर आपने इस्लाम कुबूल किया ?

डॉ.कमला सुरैय्या : फरीदा ! मै हिंदू मज़हब के किसी भी रस्म रिवाज से कभी भी न ही मुतास्सिर हुई और न ही पाबंद रही ३० साल से ज्यादा मुझे इस्लाम को सीखने,देखने और पढने का मौका हासिल हुआ मुझे हमेशा इस्लाम से बेहद दिलचस्पी रही इस्लामी तहज़ीब ने मुझे बेहद मुतास्सिर(प्रभावित) किया

सवालः आप ने कहा मुतास्सिर किया, किस तरह से ?

जवाबः आज से ३० साल पहले दो लडके मेरे ज़िंदगी मे आए दोनो मुसलमान थे मै ने उन दोनो लडको को अपने साथ रखा बल्कि वह भी मेरे बेटे जैसे है मै ने उन्हे तालीम व तर्बियत से आरास्ता किया दोनो कुछ नाबिना(अंधे)भी थे उनका चाल चलन बर्ताव तौर तरीके से मै बेहद मुतास्सिर हुई यह दोनो लडके जिन्हे मै बेटे मानती हूँ मेरी ज़िंदगी की काया पलटने मे ज़िम्मेदार है यकीनन मै इस्लाम की तालीमात से बेहद मुतास्सिर ज़रुर हूँ ।

सवालः आपने आपके लिए पालक बेटो का ज़िक्र किया उनकी तालीमी काबलियत क्या है ? आजकल वो कहा है और क्या कर रहे है ?

जवाबः एक बेटे का नाम इनायत है यह पढ लिखकर बैरिस्टर बन गया अब कलकत्ता मे है दूसरा लडका इर्शाद है प्रोफेसर ऑफ इंग्लिश है गवर्नमेंट कॉलेज दार्जिलिंग मे सर्विस करते है ।

सवालः हिंदू मज़हब मे औरत को Simbol of godess कहा गया है मुखालिफे इस्लाम कहते है हिंदू मज़हब मे औरत की बेहद कद्र होती है ऐसे मकाम को छोडने की ज़रुरत क्यू महसूस हुई ?

जवाबः मुझे खुदा नही बनना था मुझे सिर्फ एक अच्छी इंसान बनना था मै नही चाहती मै बुत बनू और मेरी पूजा हो मुझे सिर्फ एक अल्लाह की बंदी बनकर ज़िंदगी गुज़ारना है ।

सवालः गलत साज़िश है कि इस्लाम मे औरत का कोई मुकाम नही औरत आज़ाद नही यह मर्द का जर्हो है आप इन गलत खयालात को क्या कहना चाहेंगी ?

जवाबः पता नही ! लेकिन इस्लाम मे रहकर मै आज़ाद हूँ मै अपनी मर्ज़ी की मालिक हूँ अगर आप तैराकी के लिबास (Swim Suit) मे पब्लिक मकामात पर नहाना,घूमना,फिरना और ब्यूटी कॉंटिस्ट के नाम पर औरत को बरहना(नंगा) करना उसके जिस्म की नुमाईश करना ,औरत के बदन की नापतौल और जॉंचना अगर यह आज़ादी है तो मै ऐसी आज़ादी पर लानत भेजती हूँ ।इस्लाम मे औरत का मकाम बहुत ऊँचा और महफूज़ (सुरक्षित)है ।

सवालः आप हमेशा पर्दे मे रहती है आप को इस मे क्या खूबी नज़र आई ?

जवाबः मै पर्दे को औरत के लिए तहफ्फुज़ मानती हूँ । बुर्के मे औरत के साथ छेडछाड नही की जाती मै तीस साल पहले भी बुर्का इस्तेमाल करती थी जो औरत हिजाब मे रहती है उसे समाज,मुआशरा इज़्ज़त और कद्र की नज़र से देखता है लेकिन बुर्के का गलत इस्तेमाल नही होना चाहिए ।

सवाल : क्या पर्दा औरत का मकाम ऊँचा करता है ?

जवाबः यकीनन। मै जब भी सफर करती हूँ मुकम्मल तौर से पर्दा करती हूँ खुद को पर्दे मे मुकम्मल महफूज़ समझती हूँ । पर्दे से औरत का वकार और अज़मत बढ जाती है ।

सवालः (Polygamy) खानदानो और समाज के लिए रहमत है या ज़हमत अक्सर इसकी गलत तस्वीर पेश की जाती है इन बातो मे मिडीया पेश पेश रहता है अक्सर इसका गलत फायदा भी उठाया गया है आप क्या कहेंगी ?

जवाबः शरिअत मे है इजाज़त है तो बिल्कुल सही है किस की मजाल शरिअत की मुखालेफत करें मै कहूँगी एक मर्द अगर एक से ज़्यादा औरत कर सकता है,उसकी हिफाज़त कर सकता है,उस औरत के साथ इंसाफ कर सकता है,उसे मुआशरे मे इज़्ज़त का मुकाम दिला सकता है तो उस मे बुराई क्या है शादी का मतलब सिर्फ एक दूसरे को हासिल करना नही किसी बेसहारा को अगर सहारा मिल रहा है तो मै उसे बुरा या गलत नही मानती कोई वजह नही Polygamy को Condimn किया जाए । दूसरे मज़ाहिब मे बेवा औरत को मनहूस समझा जाता है उसे गैर ज़रुरी चीज़ समझकर धुतकार दिया जाता है अगर बेवा औरत के साथ निकाह करके उसे अच्छी ज़िंदगी दी जाती है तो Condimn करने वाली कोई वजह नही ।

सवालः पडोसी मुल्क के बारे मे कुछ ?

जवाबः हमारे वज़ीरे आज़म बहुत ही अच्छे इंसान है कुछ बाहर के लोग और मिडीया भी अक्सर गलत साज़िशे करके दोनो मुमालिक के दरमियान गलत फहमी पैदा करते है कोई कहता है पाकिस्तानी हमारे दुश्मन है किसी न किसी तरीके से लोगो को एक दूसरे के खिलाफ जज़बाती बना देते है यह गलत बात है दोनो तरफ से अमन की प्यार व मुहब्बत की ताअमीरी बात होनी चाहिए ता कि दोनो मुल्क मे अमन हो दोस्ती बढे प्यार बढे ता कि मुल्क तरक्की कर सके ।

सवालः क्या हिंदू व मुस्लिम एक दूसरे के मुखालिफ है ?
जवाबः बिल्कुल भी नही । इन दोनो से अच्छा दोस्त कोई और हो ही नही सकता यह आग बहुत पहले अंग्रेज़ लगा के गए है यह गलत फहमी है अंग्रेज़ो ही ने यह अफवाह उडाई और शोर मचा दिया ।
सवालः आप ने कुबूले इस्लाम की इत्तेला दी तो आप के वालेदैन बच्चो और रिश्तेदारो का रवैय्या क्या रहा ?
जवाबः मेरे वालिद नही रहे । वालेदा उम्र की इस देहलिज़ पर है जहॉ उन्हे कोई किसी बात का एहसास नही होता ।

मेरे बच्चे बहुत समझदार है, हॉ मेरे रिश्तेदारो को ज़रुर शाक(धक्का) लगा था वजह यह नही थी कि मै ने इस्लाम कुबूल किया बल्कि मै जो परदा करती हूँ यह बात इन्हे थोडी अलग लगती है । पर्दे वाली बात कुछ खटकती है वरना मेरे घर मे किसी को एतेराज़ नही ।
सवालः आप हमेशा पर्दे मे रहती है ?
जवाबः मै समझती हूँ जब इस्लाम कुबूल किया है तो मुकम्मल तौर से पाबंद रहूँ फरमाबरदार और इताअत गुज़ार हूँ । I should be totally surrendered not halfly मै मानती हूँ अल्लाह एक है सारी दुनिया का निज़ाम इसी के हाथ मे हे वही वहदहू ला शरीक है ।
सवालः कुबूले इस्लाम के बाद आप कैसा महसूस करती है ?
जवाबः खुद को एकदम हलका पुलका महसूस करती हूँ पहले जैसे मै एक नाबीना थी रौशनी से महरुम थी शायद मेरी बातिल की ऑखे बंद थी अब लगता है एक अंधे को रौशनी मिल गई और मेरे ज़हन के दरिचे जो बंद थे वह खुल गए है मै बिल्कुल मुतमईन हूँ और बेहद खुश हूँ मेरी खुशियॉ अब Positive है मै एक दम से मज़बूत हो गई हूँ ।
सवालः इस्लाम मे तलाक और खुलअ की जो सहुलते है या आसानियॉ है उसके बारे मे आप क्या कहेंगी ?
जवाबः यह तमाम आपस के ज़ाती मसाईल है जब मियॉ बीवी मे आपस मे अनबन,तकरार,लडाई झगडे मुसलसल होने लगते है मिया बीवी एक

दूसरे से नफरत करने लगते है दोनो को एकसाथ ज़िंदगी गुज़ारना दुश्वार लगता है ऐसे मे तलाक या खुलअ के ज़रिये बात को आसानी से खत्म किया जा सकता है मै कहना चाहूगी कि अक्सर ख्वातीन मर्द को उसकी ताकत से ज़्यादा फरमाईशो का बोझ डालकर गैर ज़रुरी चीज़ो की चाह मे नफरत के दरवाज़े खोलने लगती है "Sometime domin tak min for grantel"
यह गलत बात है । बहुत से हज़रात मेरे पास ऐसी शिकायत लेकर आते है बीवी की अपनी शौहर की आमदनी देखकर फरमाईश करनी चाहिए और दोनो को आपस मे मिलजुलकर प्यार मुहब्बत से खुशहाल ज़िंदगी बसर करने की कोशिश करनी चाहिए ।

सवालः आपने मग्रिबी मुमालिक का सफर भी किया है उन मुमालिक मे इस्लाम का मुआज़ेना(तुलना) दूसरे मज़ाहिब से या उनके साथ आप को कैसा लगा ?

जवाबः जर्मनी मे मुव्मेंट बहुत मज़बूत है वैसे भी सारी दुनिया मे इस्लाम की तालीमात और तब्लीग का काफी असर पढा है लोग इस्लाम को जानने के ख्वाहिशमंद और बेचैन रहते है जब मै ने अभी मज़हब नही बदला था मेरे बहुत से खुदा थे *अस्तगफिरुल्लाह* जब मेरा बच्चा बीमार हो जाता तो डॉक्टर की दवा के बाद दुआ की भी ज़रुरत पडती है मुझे नही मालूम था किस खुदा के पास मांगू क्यूँकि हर एक के लिए अलग अलग भगवान होता है मै परेशान हो जाती थी इस्लाम मे सारी दुनिया का मालिक अल्लाह है जो सिर्फ एक है जो सबकी सुनता है ***वहदहू ला शरीक*** है बस उसी से मांगो ।

सवालः आप एक मशहूर बैनुल अकवामी शायरा और मुसन्निफा भी है कहा जा सकता है कि आप को नोबल अवार्ड मिलते मिलते रह गया क्या वजह थी ? १९८४ मे आप के साथ टारगेट बोरसी 'ज़ोरिस लेज़िंग और नंनदेन गार्डेस भी थे ?

जवाबः मेरी बद नसीबी दूसरी बात यह कि उस वक्त एक और अच्छा शायर अभी आपने नाम लिया शामिल था उन्हे कैंसर था यही वजह थी कि नोबल अवार्ड उस वक्त उन्हे दिया गया अवार्ड लेने के चंद माह बाद वह चल बसे अक्सर एक से ज़्यादा बाद Nominate होना ज़रुरी होता है ।

सवालः इस्लाम ही वाहिद मज़हब है इसका यकीन आपको कैसे हुआ ?

जवाबः मै बरसो तमाम मज़ाहिब का मुतालआ करती रही मुझे लगा दूसरे मज़ाहिब मे कई जगह की बुनियाद खोखली है इस्लाम की बुनियाद बेहद मज़बूत और मुस्तहकम है उसमे अमन है सच्चाई है सुकून है ।

फ़रीदा : आपने बिल्कुल ठीक फरमाया इस्लाम एक आलमगीर मज़हब है। जामेअ निज़ामे ज़िंदगी है कमज़ोरो का मुहाफिज़ और मजबूरो का हमदर्द है ।

सवाल : एक और आखरी सवाल आपका पैगाम हिंदु और मुस्लिम बहनो के लिए ?

जवाबः बस एक दूसरे से प्यार करो प्यार मुहब्बत मे सुकून है,तरक्की है,राहत है,अमन है मै कहूगी जहाँ प्यार नही वह जगह दोज़ख है जिस जगह दिलो मे एक दूसरे के लिए प्यार है वह जगह जन्नत है जहाँ अमन है सुकून है ।

सवालः आखरी बात लोग कहते है कि आपके कुबूले इस्लाम के पीछे किसी मर्द आदमी का हाथ है ?अगर है तो हम जानना चाहेंगे वह कौन है ?

जवाबः बिल्कुल सही सुना है आपने यकीनन उसके पीछे आदमी का हाथ है और वह है मुहम्मद सल्ल.यह अल्लाह के बंदे और रसूल है आप ही की वजह से मै ईमान ले आई और इस्लाम कुबूल किया उस एक आदमी की तालीमात ने मेरी ज़िंदगी की काया पलट दी ।

सवालः आप ने कहा आप तीस साल से इस्लाम से इस्लामी तहज़ीब से मुतास्सिर थी ज़ाहिर करने मे इतने बरस क्यूँ लगे ,किसी का डर या कोई वजह ?

जवाबः मै सिवाए अल्लाह के किसी से नही डरती । अल्लाह की बंदी हूँ शायद सही वक्त का इंतेज़ार था ।

सवालः आप सौम व सलात की पाबंद है ?

जवाबः बिल्कुल सौम व सलात की पाबंद हूँ और रात मे तीन बजे उठती हूँ तहज्जुद के साथ पंजगाना भी पाबंदी से अदा करती हूँ हमारे घर मे सुबह सवेरे इमाम साहब पढाने आते है जिनसे मै इस्लाम की तालीम हासिल कर रही हूँ इमाम साहब से हमारी मुलाकात सुबह को सुरैय्या साहेबा के ही घर पर होती थी कुरआन पाक पढती हूँ अभी खास आवाज़ से पढना सीख रही हूँ ।

सवालः केरला मुसलमान और सियासत कुछ कॉमेंट्स ?

जवाबः केरला की तरक्की मे ८५ फीसद यहा के मुसलमानो का हाथ और

साथ रहा है यहाँ की तरक्की के लिए मुसलमान पैसा पानी की तरह बहाते है यहाँ पर मुस्लिम लीग हमेशा जीत कर आती है लेकिन ये लोग कभी भी मुस्लिम तबके के मसाईल को लेकर संजीदा नही होते न ही कुछ करते है मै चाहती हूँ कि केरला मे मुसलमान संजीदगी से मुसलमान वज़ीरे आला की मांग करे बल्कि Demand करे अब वक्त आ गया है यह इंसाफ का तकाज़ा है यहाँ का वज़ीरे आला मुसलमान होना चाहिए यह उनका हक है यहाँ की मईशत मुसलमानो की वजह से सुधरी है और सँवरी भी है । मुसलमानो को आगे बढ कर अपने हुकूक की मांग करना और मनवाना ज़रुरी है ।

सवालः मुस्तकबिल के बारे मे कोई ख्वाहिश ?

जवाबः केरला की सियासत मे तब्दीली लाई जाए मै चाहती हूँ बुज़ुर्ग खवातीन के लिए एक घर बनाऊँ उस घर मे इबादत का इंतेज़ाम हो । एक मस्जिद बनाऊँ और अरबी मदरसा भी । इन बुज़ुर्गो की खिदमत करु उन्हे वह तमाम प्यार दूँ जो इन के अपनो ने कभी भी न दिया जब बाहर निकलती हूँ कितनी बेसहारा औरते सडको के किनारे फुटपाथ पर बे यार व मददगार रहती है इन के काम आऊ उन्हें तमाम अपने घरो मे जगह दूँ मै समझती हूँ मुस्लिम खवातीन समाजी काम बहेतरीन तरीके से कर सकती है जो सहुलियात भी दूसरी जगह नही है जो भी ज़िंदगी रह गई है उसे कौम व मुल्क की भलाई मे सर्फ करु यही आरज़ू है ।

(मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान अप्रेल २००३ ई.)

••••••

16 वह मुसलमान जिन्हे देखकर "सारा" मुसलमान हुई

मै ने दरअसल तीन साल कब्ल इस्लाम के बारे मे सुना था मेरे वालदैन को इस का इल्म हो गया कि इस का मुतालआ कर रही हू तो उन्होने मुझे आईंदा इस से मना किया।आखिरकार जब मै ने हाई स्कूल के लिए एक नए स्कूल मे दाखला दिया तो वहॉ पर बहुत सारे मुस्लिम तलबा थे। जब मै ने पहले वहॉ जाना शुरु किया तो जो मै पढ चुकी थी वह सब कुछ मुझे याद था और मै इस तजस्सुस मे थी कि यह लोग करते क्या है? मेरे वालदैन ने मुझसे कहा था कि मुसलमान खौफनाक जंग जौ और बदकलामी करनेवाले लोग होते है तो मै सोचती थी कि वह इसी तरह ही होगे लेकिन ऐसा नही था।मै ने वहॉ सबसे पहले तलबा से ही दोस्ताना ताल्लुकात बढाए। वह लोग बहुत अच्छे हमदर्द और दूसरे के दुख दर्द मे शरीक होने वाले थे मुझे याद है कि वह खुदा के बारे मे गुफ्तगु करते थे और मै हैरत जदा थी कि इस्लाम से इन को कितना प्यार है मै बहुत जल्द ही इनका एहतेराम के साथ अकाईद के मुताल्लीक दिल चस्पी लेने लगी एक दिन मेरे एक दोस्त ने इन से इस्लाम के मुताल्लीक पूछा तो बहुत देर तक अल्ला ,इस्लाम और रोज़ाना की ज़िंदगी के मुताल्लीक गुफ्तगु करते रहे मुझे इन पर बहुत ताज्जुब हुआ मै ने कुरआन मजीद पढना शुरू किया और इंटरनेट से इस्लाम के मुताल्लीक बहुत सारी मालुमात हासिल की और इस के बाद जल्द ही मै ने कलमा शहादत का इकरार किया और इस तरह मै ने इस्लाम कुबूल किया।

सबसे पहले मै आप को कुबूलियते इस्लाम पर मुबारक बाद देता हूँ।

सारा : व अलैकुम अस्सलाम बहुत बहुत शुक्रिया ।
मेरा नाम सारा है मेरी उमर १४ साल है हाई स्कूल की तलबा हू और अमेरिका मे रहती हूँ ।

सवाल : खुश आमदीद सारा ! मै यह देखकर वाकई हैरत जदा हू कि इस कम उमरी मे भी कोई हक की तलाश करे। क्या आप हमे बता सकती है कि इस्लाम के बारे मे पहली मर्तबा कहा सुना?

जवाब : जी हा पहली बार मै ने इस्लाम के बारे मे तीन साल पहले सुना मुझे खुदा और मज़हब के बारे मे बहुत दिलचस्पी थी और मै यह जानना चाहती थी कि दूसरे लोग किन चिज़ो पर एतेकाद रखते है। मै ने मुख्तलीफ मज़ाहिब का मुतालआ शुरु किया और इसी तरह मै ने इस्लाम का भी मुतालआ किया ।

सवालः क्या यह अजीब बात नही कि मज़हब के बारे आप स्टडी करे जब कि आप की उमर ११ साल की थी ? क्या कोई गैर मामुली चिज़ ऐसी है जो आप को आप के अतराफ व अकनाफ के बच्चो को मुमताज़ करती है?

जवाब : (मुस्कराते हुए) मै भी यह अजीब समझती हू कि ग्यारह साल की उमर मे कोई मज़हब कमे बारे मे गौर व फिक्र करे मेरी बहुत सी सहेलिया भी नही ज़ान सकी कि खुदा को जानने के लिए मेरे इंदर इतनी दिलचस्पी कैसे पैदा हुई? बात यह है कि मेरा ताल्लुक ईसाई घराने से है । मेरी परवरिश भी यही हुई तो सिर्फ मुझे ही यह बात फितरी लगती है कि मै मज़हब का ज्यादा गहराई के साथ मुतालआ करू और मै यह फैसला करू के हक क्या है?

सवाल : क्या आप ने इस वक्त कुरआन का मुतालआ किया ?

जवाब : नही इस वक्त नही ।

सवाल : मुसलमान औरत मज़लुम व मगलुब है और इस बात की ज़रुरत है कि "मगरिबी औरतो की तरह इस को भी इज़ाद किया जाए" क्या इस बात पर आप को कोई एतेराज़ है ?

जवाब : मुझे यह बात गमज़दा करती है इस दुनया मे बहुत सारे लोग यह खयाल करते है कि मुसलमान औरत मज़लुम व मगलुब है।मेरा मानना है कि हम इस कराह राज़ पर सबसे ज्यादा आजाद है अल्लाह तआला के अहकामात की इताअत के लिए इस ने हमे सब से ज्यादा आजादी बख्शी है ।

सवाल : अच्छा आप मगरिब मे औरत को किस नहज से देखती है।क्या वहाँ औरत आज़ाद है?

जवाब : नही ! मगरिब की बहुत सारी औरते मज़लुम है। हम को जिंसी खुलवाने के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है । बहुत सारी औरते ऐसे कपडे पहनती है जो मुश्किल से इन के जिस्म को ढांप सकते है। वह अपने जिस्म को दूसरो की निगाह मे पुर कशिश बनाने के लिए इस्तेमाल करती है। हम को यह समझाया जाता है कि मिडीया के मेयार के मुताबिक बडा ही मौजो और मुनासिब जिस्म हमारे पास है। यही उम्मीद की जाती है कि मिडीया जिस चिज़ का हम से मुतालबा करे हम इस को अंजाम दे और यह चीज़ हमारी और अल्लाह के हुक्म की तौहीन है ।

सवाल : तो क्या आप हिजाब (परदा) पहनती है?

जवाब : नही मै नही पहन रही हूँ। मुझे इस की बहुत ख्वाहिश है । लेकिन मेरे घर वाले इस बात से आगा नही है कि मै इस्लाम ले आई हूँ ।मै इनको इस के मुताल्लीक बाखबर करने के बाद हिजाब पहनुगी ।

सवाल : क्या आप इस बारे मे घरवालो के आगाह हो जाने के बाद कोई अंदेशा महसूस करती है।

जवाब : मै कुछ नही कह सकती और यही डर मुझे इन को बताने से बाज़ रखे हुए है।

सवाल : अल्लाह तआला से दुआ किजीए कि आप को इस की ताकत और यह कदम उठाने के लिए आप को इस्तेकामत अता फरमाए। मै यह उम्मीद करता हूँ कि जो मुसलमान भी इस इंटरव्यू को पढेगा आप की परेशानी को आसान करने के लिए अल्लाह तआला से दुआ करेगा । इंशा अल्ला मुस्लिम उम्मत मे वह क्या चिज़ है जिसे आप सब से ज्यादा पसंद करती है ?

जवाब : मुसलमानो के अंदर इस्लाम के लिए सब कुछ वक्फ करने का जो जज़्बा है वह वाकई काबिले तारीफ है।

सवाल : आजकल बहुत सारे मुसलमान अमली मुसलमान नही है पहले यह बताईये कि आप इन के मुताल्लीक क्या महसुस करती है और क्या यही वजह है कि इस्लाम तेजी से नही फैल रहा है और बे अमल मुसलमानो के लिए आप का क्या पैगाम है?

जवाब : १) मै पुरे यकीन के साथ आप की इस बात को गलत करार देती हूँ कि आजकल बहुत सारे मुसलमान अमली नही है । मै नही मानती कि कोई अमली मुसलमान बने बगैर मुसलमान बन सकता है। इस्लाम सिर्फ एक मज़हब ही नही है बल्की ज़िंदगी गुजारने का एक तरीका है और बहुत सारी चीज़ो मे यह भी एक चीज़ है जिसे मै पसंद करती हूँ।

२) इस्लाम इाज इस दुनिया मे सबसे ज्यादा तेजी से फैलने वाला मज़हब है और मै यह समझती हूँ कि इस की वजह यह है कि लोग इस मे हक को पाते है और जब वह यह फैसला करते है कि वह अल्लाह की इबादत करेगे तो इन को हैरत इंअंगेज़ खुशी और लुत्फ नसीब होता है।

३) अल्लाह पर तवक्कल किजिए। पुरी तरह इस की इबादत किजिए वही आप को एक अमली मुसलमान बनने के लिए अमन खुशी और लुत्फ नसीब करेगा।

सवाल : मुस्तकबील मे आप के क्या इरादे है?

जवाब : मै हमेशा यह ख्वाब देखती हूँ कि मै दुनिया की कायद बनू और फिर एक बार मुख्तलीफ लोगो के दरमियान अमन शांती और अच्छे ताल्लुकात कायम करने मे मआवीन बनू ।

सवाल : अरबी सीखने का क्या आप का कोई मंसुबा है ?

जवाब : जी हॉं ज़बाने से मुझे मोहब्बत है और मे इस का लुत्फ उठाती हूँ मेरे वालदैन भी मुझे अरबी सीखने की हौसला अफज़ाई करते है। मै पुरी उम्मीद के साथ इस ज़बान के कोर्स का आगाज़ करुगी। मेरे वालिद सालो तक एक अरब मुल्क मे रह चुके है तो वह भी मेरी मदद करेगे।

सवाल : हॉं तो यह बताईये किस मुल्क मे ?

जवाब : सुडान मे ।

सवाल : क्या आप हमे पुरी तफसील के साथ बता सकती है कि आप ने इस्लाम कैसे कुबूल किया ?

जवाब : मै ने दरअसल तीन साल कब्ल इस्लाम के बारे मे सुना था मेरे वालदैन को इस का इल्म हो गया कि इस का मुतालआ कर रही हू तो उन्होने मुझे आईंदा इस से मना किया।आखिरकार जब मै ने हाई स्कूल के लिए एक नए स्कूल मे दाखला दिया तो वहॉं पर बहुत सारे मुस्लिम तलबा थे। जब मै ने पहले

वहाँ जाना शुरु किया तो जो मै पढ चुकी थी वह सब कुछ मुझे याद था और मै इस तजस्सुस मे थी कि यह लोग करते क्या है? मेरे वालदैन ने मुझसे कहा था कि मुसलमान खौफनाक जंग जौ और बदकलामी करनेवाले लोग होते है तो मै सोचती थी कि वह इसी तरह ही होगे लेकिन ऐसा नही था।मै ने वहाँ सबसे पहले तलबा से ही दोस्ताना ताल्लुकात बढाए। वह लोग बहुत अच्छे हमदर्द और दूसरे के दुख दर्द मे शरीक होने वाले थे मुझे याद है कि वह खुदा के बारे मे गुफ्तगु करते थे और मै हैरत जदा थी कि इस्लाम से इन को कितना प्यार है मै बहुत जल्द ही इनका एहतेराम के साथ अकाईद के मुताल्लीक दिल चस्पी लेने लगी एक दिन मेरे एक दोस्त ने इन से इस्लाम के मुताल्लीक पूछा तो बहुत देर तक अल्ला ,इस्लाम और रोज़ाना की ज़िंदगी के मुताल्लीक गुफ्तगु करते रहे मुझे इन पर बहुत ताज्जुब हुआ मै ने कुरआन मजीद पढना शुरू किया और इंटरनेट से इस्लाम के मुताल्लीक बहुत सारी मालुमात हासिल की और इस के बाद जल्द ही मै ने कलमा शहादत का इकरार किया और इस तरह मै ने इस्लाम कुबूल किया।

अब तक मै हैरान हूँ कि मेरी जिंदगी कितनी खुशगवार और प्यारी है अल्लाह तआला ने मुझे रोज़ मर्रा की ज़िंदगी मे और ज्यादा वक्त दी है ।इंशा अल्लाह मरे वालदैन इस को देखेगे ।

सवाल : इंशा अल्लाह । अल्लाह तआला आप को इस का बहेतरीन अज्र अता फरमाए और सिराते मुस्तकीम पर आपको इस्तेकामत अता फरमाए। आमीन

(मुस्तफाद अज़ माहनामा 'अरमुगान' जनवरी २००५ ई.)

●●●●●●

इस्लामी अखलाक ने दिल की दुनिया बदल दी

दो बार मै भी लखनऊ जा चुकी हूँ।इनका घर मुझे अपना मैका लगता है और इसी अंदाज़ से हम जाते और आते है अल्लाह तआला से दुआ करती हूँ कि यह रिश्ता बरकरार रहे और हम सब लोग आखेरत मे कामयाब हो एक शेर पर अपनी दास्तान खत्म करती हूँ मै ने यह शाअर अक्सर डॉक्टर साहब की ज़बान से सुना है-

मेरी ज़िंदगी का मक्सद तेरे दीन की सरफराज़ी
मै इसी लिए मुसलमा,मै इसी लिए नमाज़ी

२९ नोव्हेंबर २००३ की खुशगवार सुबह थी मौसम कोहरा आलूद था ज़रा सी खुश्की भी थी तकरीबन ९ बजे सुबह मै अपनी बच्ची समता को गोद मे लेकर कानपूर से लखनऊ जाने वाली बस पर बैठ गई। थोडी देर बाद बस चल पडी और मुसाफिरो ने अपना अपना टिकिट बनवाना शुरु किया मै ने भी टिकिट बनवाने के लिए अपना पर्स खोला तो मेरे होश उड गए जो रुपये मै ने रखे थे वह इस मे न थे। हाथ पाव फुलने लगे,सांसे तेज़ तेज़ चलने लगी,बार बार पर्स उलटती पलटती रही बमुश्किल तमाम कुल बत्तीस रुपये निकले जब कि किराया अडतीस रुपये था अब कंडॅक्टर शोर मचाने लगा कि किस ने टिकिट नही बनवाया है मै डरी सहमी उठी और कंडॅक्टर को बत्तीस रुपये थमा कर अपनी सीट पर बैठ गई और खिडकी की से बाहर देखने लगी,कंडॅक्टर तेज़ तेज़ चीखने लगा कि पुरे पैसे लाओ मै बिल्कुल खामोश थी कुछ बोला नही जा रहा था तरह तरह के खयालात दिल व दिमाग पर छाए हुए थे। बस गंगा

नदी पर से गुज़र रही थी कि कंडॅक्टर ने फिर कहा कि पुरे रुपये लाओ वरना बस से उतर जाओ और उसने बस रुकवा दी,मुझे उतरने के लिए बार बार कह रहा था। पुरी बस मै सन्नाटा छाया हुआ था सारे पॅसेंजर,मुडकर मेरी तरफ देख रहे थे और मै मारे शर्म के सर्दी मे भी पसीने पसीने हो रही थी।

इतने मे एक साहब ने जो काली शेरवानी ज़ेबतन किए हुए ड्रायव्हर के पीछे वाली सीट पर अखबार पढ रहे थे कंडॅक्टर से पूछा क्या बात है? उस ने जवाब दिया अरे यह मॅडम पूरे पैसे नही दे रही है और उतर भी नही रही है उन्होने एक उचटती नज़र से मेरी तरफ देखा और फिर कंडॅक्टर से पूछा कितने रुपये कम है? उस ने बताया छःह रुपये कम है उन साहब ने दस रुपये का नोट देते हुए कहा कि इसमे से ले लो और फिर बस चल पडी बस तेज़ रफ्तार दरख्तो,मकानो,और दुकानो को पीछे छोडती भागती जा रही थी और मै कदरे इत्मीनान से मुख्तलीफ एहसासात व खयालात मे खोई हुई थी। लखनऊ आ गया और मै झट से बस से उतरकर किनारे खडी हो गई सोचा कि इन भले आदमी का शुकरिया अदा कर लूँ।

जब वह साहब उतरे तो मै ने आगे बढकर उनका शुकरिया अदा किया और अपनी आंखो के आसुओ को संभालने की कोशिश की। वह साहब बोले अरे कोई बात नही है और जाने लगे,फिर अचानक मुडकर पुछा बात क्या हुई थी,उनका यह सवाल गालबन इस लिए था कि मै दिखने मे खुशहाल लग रही थी बहेतरीन लिबास और ज़ेवरात पहन रखे थे। मै ने बताया कि भाई साहब घर से निकली तो खयाल था कि पर्स मे रुपये है मगर मालूम नही क्या हुआ उन्होने कहा ऐसा हो जाता है आप को जाना कहा है?मै ने बताया कि हुसेन गंज मे रहती हूँ पैदल चली जाउगी उन्होने कहा कि बच्ची गोद मे है बॅग भी वज़नी मालूम होता है(जो वाकई वज़नी था)आप यह रुपये लीजिए और रिक्शे से चले जाइए और बीस रुपये का नोट मेरी तरफ बडाया मै ने पहले माअज़ेरत की मगर उन्होने ज़बरदस्ती वह नोट मुझे दिया और चले गए।

उनके जाने के बाद मै ने रिक्शा किया और अपने घर पहुच गई लेकिन दिल मे एक ऐसा नक्श बैठ चुका था कि अब कभी मिट नही सकता था। शाम को अपने शौहर उम्मत कुमार से पुरी दास्तान सुनाई वह भी बहुत मुतास्सीर(प्रभावित)

हुए और कहने लगे कि इन का नाम पता और फोन नंबर वगैरा मालूम कर लेना चाहिए था मगर सही बात यह है कि उस वक्त मेरी अक्ल गुम थी। अब मै दिन रात बार बार यही बात सोचती और दिल चाहता काश ऐसे भले इंसान से फिर मुलाकात होती। कई दिन गुज़र गए मै और मेरे शौहर अक्सर तज़केरा करते,उनको याद करते,राह चलते नज़रे उन्हे तलाश करती,बहुत से ऐसे अफराद शेरवानी टोपी और दाढी मे जब दिखाई देते तो उम्मत कहते इन मे पहचानो मगर अब वह कहाँ मिलते।

तकरीबन तीन माह बाद एक रोज़ हम दोनो मार्केटिंग करते हुए कचहरी रोड अमीनाबाद से गुज़र रहे थे कि अचानक मेरी नज़र एक साहब पर पडी जो कुरता,पैजामे मे थे मगर देखते ही दिल ने कहा कि यह तो वही साहब है जब तक मै फैसला करती और उम्मत को बताती वह हम लोगो के करीब से आगे निकल गए,मै ने उम्मत से कहा कि शायद यह वही साहब है ज़रा पुछो,उम्मत लपके और उनको रोका मै भी करीब पहुँची तो यकीन हो गया कि वही साहब हैं जिन को हम तलाश करना चाहते थे। हम ने उनको नमस्ते कहा वह हैरत से हम लोगो को देख रहे थे मै ने कहा आप ने मुझे पहचाना? उन्हाने कहा माफ किजीएगा मै तो नही पहचान सका,मुझे अंदर से तक्लीफ सी महसूस हुई कि जिस शख्स की शक्ल व सुरत गुज़िश्ता तीन चार माह से दिल व दिमाग मे बसी हुई थी वह मुझे नही पहचान रहा है। उम्मत ने कहा सोचिए और पहचानिये,उन्होने कहा बिल्कुल याद नही है बराए करम कुछ बताइये,मै ने कहा कि तीन चार माह पहले कानपुर से आते हुए बस मे मुलाकात हुई और आप ने मेरी मदद की थी अब वह हंसने लगे और बोले आइए चाए पीते है और यह कह कर करीब के एक होटल मे बैठ गए। हम लोग उनसे मिलने के लिए बेकरार थे इसलिए फौरन उनकी पेशकश कुबूल करली अब सब से पहले तो हम लोगो ने उनका शुकरिया अदा किया। अपनी मजबुरी बयान की और अपनी कैफियत बयान करते रहे वह बार बार यही कहते कि भाई छोडिये इन सब बातो को,कोई ऐसी बात तो नही थी कि आप लोग इस कद्र याद करते रहे। उम्मत ने डायरी निकाली और कहा जनाब अपना इस्मे गरामी (नाम) और फोन नंबर वगैरह लिखा दिजीए। उन्होने नाम और फोन नंबर और पता लिखाया और उम्मत का पता व नंबर वगैरह एक कागज़ पर लिख लिया मालुम हुआ

कि यह जनाब सराए मीर आज़मगढ के रहने वाले है। (इस वाकिये मे नाम हज़्फ(रद्द) कर दिया है ताके इस वाकिये इख्लास मे शोहरत (नाम व नमुद) का दाग न लगे।) उम्मत ने मेरे कहने पर गुज़ारिश की के चाय का पैसा हमे देने दिजीए व किसी तरह अमादा नही हो रहे थे। मैने कहा डॉक्टर साहब मुझे बडी खुशी होंगी कि चाय का पैसा मै दू, वह खामोश हो गये और उम्मत ने पैसा दे दिया।

अब हमने आहिस्ता से कहा के डॉक्टर साहब एक बात कहू आप कुछ महसूस न किजीएगा यह २६ रुपये बराए करम रख लिजीए।वह उंची आवाज़ मे बोले भाई यह क्या बात कर रहे है अगर यह पहली और आखरी मुलाकात है तो कोई बात नही है वरना ऐसी बातें न किजीए। मगर उम्मत ने बहुत ज़बरदस्ती २६ रुपये इनकी जेब मे इनके मना करने के बावजूद रख दिए।

अब मै ने कहा डॉक्टर साहब कभी मेरे घर तशरीफ लाईये। उन्होने कहा हरगिज़ नही कभी नही आउंगा। दो बाते आप लोगो ने ज़बरदस्ती मनवा ली मेरी शर्त है पहले आप लोग मेरे घर आए। थोडी तकार के बाद हम लोगो ने वादा कर लिया कि जल्द ही हम ज़ुरुर आएगे और फिर हम लोग रुख्सत हो गए।

अगले ही इतवार को उम्मत ने कहा चलो डॉक्टर साहब के घर चले फोन किया तो उन्होने कहा तशरीफ लाईये मै इंतेज़ार करुगा।वादे के मुताबिक शाम को हम लोग चले यकीन किजीए ज़िंदगी मे पहली बार ऐसा महसूस हो रहा था मेरा कोई भाई है और मै अपने भाई के घर जा रही हूँ मेरा कोई हकीकी भाई या बहन नही है मा बाप का भी काफी दिनो पहले इंतेकाल हो चुका था अब जो लोग भी है वह ससुराली रिश्तेदार है।

हम पहुचे तो डॉक्टर साहब अपने ऑफिस के बाहर इंतेज़ार कर रहे थे बडी मुहब्बत से मिले और फौरन घर मे ले गए बिठाया और किचन मे अपनी अहलिया उम्मे सलमा आज़मी से मुलाकात कराई जो मेरी ही उम्र की है या साल दो साल की छोटी होगी,इन से मिलकर मुझे बडी खुशी हुई बडी हंसमुख मिलनसार और सलीकेमंद है। ज़ियाफत का अच्छा खासा एहतेमाम किया था चाय के दौरान ही मै ने कहा डॉक्टर साहब अगर आप इजाज़त दे और हर्ज न हो तो रोटी मै पका दू इसलिए कि बच्चा रो रहा है और भाभी परेशान है। उन्होने कहा भाभी से पूछलो तुम अपने ही घर मे हो इन की इस बात से मुझे हददर्जे खुशी हुई मै ने बहुत कहा कि खाना पकाने मे मदद करु मगर भाभी ने कहा अब जब दोबारा आइएगा तो खाना पकाइएगा इस दौरान

मै तो भाभी से बाते करती रही और डॉक्टर साहब उम्मत को बहुत सी किताबे दिखाते रहे उम्मत किताबो के दीवाने है तकरीबन दो ढाई घंटे बाद जब हम चलने को तैयार हुए तो उम्मत ने दसियो किताबे ले ली थी चलते हुए भाभी ने एक पॅकेट दिया और कहा इसे घर जाकर खोलिएगा हम लोग घर पहुँचे दस बज चुके थे पॅकेट खोला तो हैरत और खुशी की इंतेहा न रही एक साडी ब्लाउज़ और मेरी बेटी समता के लिए एक फ्रॉक और एक किलो मिठाई का डब्बा था।

अब क्या था उम्मत आए दिन डॉक्टर साहब से मिल रहे किताबे लाते रहे रात रात भर पढते और वापस पहुचाते रहे मै भी किताबे पढती थी शांती मार्ग,मुक्ती मार्ग,जीवन मृत्यु के पश्चात,इस्लाम धर्म,इस्लाम जिस से मुझे प्यार है, चालीस हदीसे,कुरआन का तर्जुमा,सब कुछ पढ डाला,चार पांच बार मै भी डॉक्टर साहब के घर गई,जब भी जाती और वापस आती तो भाभी कुछ न कुछ कपडे,खिलौने,खाने पीने की चीज़े या कुछ और चीज़े ज़रुर देती दो तीन बार वह भी हमारे साथ हमारे घर आए हम लोग एक दूसरे से काफी करीब हो चुके थे उम्मत अक्सर डॉक्टर साहब से मिलते रहते और वह भी फोन करके इन को बुला लेते मगर एक साल से ज़्यादा अर्सा गुज़र गया बार बार कहने के बावजूद डॉक्टर साहब हमारे घर नही आए,हर बार कोई मजबूरी या उज़्र बयान करते और फिर आने का वादा करते एक बार हम लोग इनके घर गए तो मालुम हुआ तबीअत कुछ खराब है बदन सनसना रहा है और भाभी अपनी नाराज़गी ज़ाहिर कर रही है,मालूम हुआ कि आज ही किसी अजनबी मरीज़ को खून दिया था भाभी नाराज़ हो रही थी और वह कह रहे थे अगर खून देकर किसी की जान बच सकती है तो क्या हर्ज है? मै ने भाभी की हिमायत की।

उम्मत आते ही अक्सर कोई न कोई वाकिया बताते और हैरत व खुशी से बारह तज़केरा करते मसलन आज डॉक्टर साहब से मुलाकात हुई थी,एक लिस्ट लिए बैठे थे देखा आटा,दाल,चावल और यह सामान लाना है मै पहुच गया तो बैठे रहे बाते होती रही इसी दर्मियान नदवा का एक तालिबे इल्म आया कुछ देर बाद इसने अपनी ज़रुरत बयान की डॉक्टर साहब ने चार सौ रुपये इस को दे दिए और सामान लाना रह गया।

एक बार कहने लगे आज डॉक्टर साहब से मुलाकात हुई थी साथ

मे अमीनाबाद गए थे एक कंबल तीन सौ पचास रुपये मे खरीदा और वापस आ रहे थे रास्ते मे एक नकाबपोश खातुन मिली और कहा कि मौल्वी साहब बच्चे सर्दी खा रहे है एक कंबल या लिहाफ दिला दीजिए,इतना कहना था कि डॉक्टर साहब ने वह कंबल इस को थमा दिया और खाली हाथ घर चले गए।

इस दर्मियान उम्मत मे गैर मामूली तब्दीली आ चुकी थी पूजा करना और मंदिर जाना बिल्कुल छोड दिया था जब कि पहले इसकी पाबंदी करते थे घर से तमाम तसवीरो और मुर्तियो को हटा दिया और हम लोग अजीब सी तब्दीलिया महसूस करने लगे इस दौरान डॉक्टर साहब से बार बार घर आने को कहते मगर वह टाल जाते एक रात तकरीबन ग्यारह बजे उम्मत ने देखा कि डॉक्टर साहब एक हाथ मे आटे का थैला और दूसरे हाथ मे चावल दाल और कुछ सामान लटकाए हुए हमारी गली के करीब वाली दूसरी गली की तरफ मुडे है उम्मत पीछे लग गए और करीब जाकर पुछा आप इस वक्त यहाँ,यह क्या है? पहले तो उन्होने टालना चाहा मगर फिर बताया कि यहाँ एक बूढी खातून रहती है उनका कोई सहारा नही मै कभी कभार या सामान पहुचा देता हूं फिर उम्मत को साथ लेकर गए सामान दिया कुछ रुपये दिए वापस लौटे अब उम्मत ने इसरार किया कि घर चलिए उन्होने कहा काफी रात हो गई है फिर आएगे मगर उम्मत ने ज़बरदस्ती घर ले आए अपने घर मे इन्हे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मै जल्दी से खाने का इंतेज़ाम करने लगी इन्होने कहा हम तो खाना खा चुके है चाय बना लो बस खाना फिर कभी खाएगे बहरेहाल जो कुछ था पेश किया बाते होने लगी और बिलआखिर उम्मत बोले अब बहुत दिन हो गए हम लोग कब तक इसी तरह रहेंगे डॉक्टर साहब ने कहा जल्दी क्या है?हम ने कहा अगर दर्मियान मे मौत आ गई तो? अब डॉक्टर साहब बिल्कुल खामोश थे तकरीबन एक बजे उम्मत उनको पहुचाने गए जब वापस आए तो हम लोग रात भर सो न सके और ईमान,इस्लाम, जन्नत,दोज़ख और डॉक्टर साहब और इस बूढी खातून की बाते करते रहे।

इसी तरह तीन चार माह गुज़र गए नमाज़ की किताब से और भाभी से नमाज़ पढना सीख लिया और हम लोग पाबंदी से नमाज़ पढने लगे,इसी दौरान उम्मत का ट्रांसफर हो गया और हम लोग लखनऊ से गाज़ियाबाद आ गए,यहॉं से हम लोगो ने नई ज़िंदगी का आगाज़ किया है। मै अर्चना से मोमिना तबस्सुम,उम्मत अब्दुल करीम और समता उज़्मा हो चुकी है।ज़िंदगी का सफर जारी है डॉक्टर साहब दो साल से ईद के मौके पर सब लोगो के लिए कपडे और ईदी भेजत्ते है इन के हमज़ुल्फ(साळु) मुहम्मद यूनुस भाई तोहफे तहाईफ लेकर आते है दो बार मै भी लखनऊ जा चुकी हूँ।इनका घर मुझे अपना मैका लगता है और इसी अंदाज़ से मह जाते और आते है अल्लाह तआला से दुआ करती हूँ कि यह रिश्ता बरकरार रहे और हम सब लोग आखेरत मे कामयाब हो। एक शेर पर अपनी दास्तान खत्म करती हूँ मै ने यह शेर अक्सर डॉक्टर साहब की ज़बान से सुना है-

मेरी ज़िंदगी का मक्सद तेरे दीन की सरफराज़ी
मै इसी लिए मुसलमा,मै इसी लिए नमाज़ी

(माहनामा "अल्लाह की पुकार"दिसंबर २००१ई., मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुगान अगस्त २०१०ई.)

●●●●●●

18 एक राजकुमारी के कुबूले इस्लाम की ईमान अफरोज़ रुदाद

इमाम साहब की बहु बेटिया इसे बहन कहती थी और वह यह महसूस करती थी कि वह एक नई दुनिया मे आ गई है आहिस्ता आहिस्ता इस ने तौहीद का सबक सीखा और इसके बाद इस्लाम की मुसावात और मुसलमानो के अखलाक की गिरवीदा हो गई।बिलआखिर इस ने एक दिन कुबूले इस्लाम की तमन्ना की और अपनी खुशी से खुदाए वाहिद की परस्तार हो गई इस ने यह उसूल भी मालूम किया कि इस्लाम दीने फितरत है वह किसी मर्द या औरत को फितरत के खिलाफ नबर्द आज़माई पर मजबूर नही करता चुनांचे एक दिन जब इसे इमाम साहब की बीवी ने निकाह की तल्कीन की तो वह इनके अल्फाज़ सुन कर हैरत मे रह गई इस ने कहा,हमारे रसूल सल्ल.ने फरमाया कि निकाह मेरी सुन्नत है जो भी इस सुन्नत से मुंह फेरेगा वह हम मे से नही।

दयानगर के महाराजा उन चंद वालयाने रियासत मे से थे जो वज़ादारी और तालीम के बज़ाहिर मुतज़ाद औसाफ के हामिल थे इनके मज़हब को उलूमे जदीदा की रौश्नी ने कोई सदमा नही पहुचाया था लेहाज़ा इन के लिए निहायत आसान था कि शिले और कॅट्स की नज़्मो का मुतालआ करने के बाद मंदिर मे जाकर बुत परस्ती करे।

वह वेदांत के अमीक फलसफा को अवहाम परस्ती के मनाफी खयाल नही करते थे और इस्पेंसर और ब्राटिस के मुकालात पढकर भी चात्रिक के हामी थे।इन की इक्लौती बेटी सुंदरकुमारी थी जो अपने नाम की तफ्सीर थी। हुस्न सूरत के साथ हुस्ने सीरत भी शामिल था। मुजस्समा हुस्न व मासुमियत जहाँ पहुचती थी अपनी शोले अफरोज़ निगाहो से लोगो के खरमन दिल को जला देती थी।

यह मुजस्समा हुस्न एक बाहोश राजकुमार के कल्ब की तसकीन का सामान हुई और शादी की मुकद्दस जंजीर की बदौलत इस से वाबिस्ता हो गई शहज़ादा भी किस्मत से वैसा ही मिला जैसा मिलना चाहिए था। हसीन शरीफ,समझदार और मुखलिस इस का दिल मुहब्बत से लबरेज़ था और सुंदर कुमारी के दिल के जज़बात को भी समझता था। दोनो को एक दूसरे की बदौलत जन्नत हासिल थी इनकी छोटी सी दुनिया मे किसी चीज़ की कमी न थी।

मगर यह कब हुआ है कि दो दिलो को राहत नसीब हुई हो और तफरीका पर दाज़ फलक चैन से बैठा हो? राज कुमार और सुंदरकुमारी इसी

दुनिया के फानी इंसान थे यह भी इन कवानीने अब्दी के मातेहत थे जिन से किसी को चारा नही । गर्ज़ सुंदरकुमारी को राज कुमार की फुरकत का सदमा सहना पडा और कुदरत ने इस के महबूब शौहर को इस से हमेशा हमेशा के लिए जुदा कर दिया।

सोला बरस की सन मे एक पेकर हुस्न व जमाल की बेवगी और फिर हिंद व कानून के मुताबीक इसका मुद्दतुल उम्र एक ज़हर गदाज़ सांखा के रंज व अलम के लिए वक्फ हो जाना। अब हालत यह है कि सुंदर कुमारी को दुनिया की किसी चीज़ से रगबत नही है वह ज़ेब व ज़ीनत जो नसवानी हुस्न का तम्ता है इस के जिस्म से नाआश्ना है। वह राहते जो जवानी के लिए पैदा होती है वह इस से कोसो दूर है इस के दिल की रौशनी तारिकी से तब्दील हो गई और अब तमाम दुनिया इस की नज़र मे अंधेर है वह अक्सर कहती है और सच कहती है काश मै मर जाती मगर मौत की आरज़ू का पूरा होना आसान नही। आरज़ू जिस चीज़ की भी हो मदआ के हुसूल को दुश्वार बना देती है।

वह गम जो गला घोंटता है और दिल मे धुवा पैदा करता है अक्सर इंसान को दुनिया की तरफ से मायुस करके इन अब्दी हकीकतो की तरफ मुतवज्जेह कर देता है जिन को हम रुहानियत या मज़हब कहते है रुह दुनिया की मसर्रतो से बेज़ार होकर उन मसर्रतो के इक्तेसाब की तलाश मे गुम हो जाती है जिन को फना नही। सुंदरकुमारी ने भी दुनिया की तरफ से बेज़ार होकर मज़हब की तरफ रुजूअ किया और रफ्ता रफ्ता नौबत यहाँ तक पहुची कि वह अपना घर छोउकर बनारस रवाना हो गई। इस के ज़ईफ बाप ने हर चंद कोशिश की कि इसे कुछ दौलत दे दे कि वक्त पर काम आए या कुछ और ऐसा बंदोबस्त कर दे कि इसे तक्लीफ न हो लेकिन इस ने कुबूल न किया और कहा:"मै धर्म के लिए बाहर निकली हूँ भक्ती मे माया का क्या काम?"

राजा साहब को मजबूर होना पडा,इस लिए कि वह जानते थे कि उनकी बेटी का इरादा किस कद्र मज़बूत है इस के अलावा इस के मज़हबी इरादो मे खलल डालकर अपनी आकेबत खराब करना नही चाहते थे।

दुनिया की वह मुकद्दस चीज़े जो हमे दूर से बहुत दिल फरेब नज़र आती है अक्सर बहुत ही मकरुह और खराब होती है। कितने राहीब ऐसे है जो फील हकीकत राहीब हो और कितने हादी वाकई हिदायत का काम करते है? जब सुंदरकुमारी बनारस पहुची तो इसे भी इन तलख हकीकतो का एहसास हुआ, इस के रंज व अलम ने इस की फितरी कशिश को कम न किया था इस का ज़ाहिर फरेब हुस्न अब भी तर्के दुनिया राहिबो तक को अपना गिरविदा बना लेता था। वह बनारस जाते ही एक अजीब कश्मकश मे मुब्तेला हो गई इस दुनियाए तकद्दुस मे जहाँ गुनाह का नाम लेना भी गुनाह था सुंदरकुमारी को हर दर व दीवार से गुनाह की आवाज़ आने लगी। वह हैरान थी कि मै किस मुसीबत मे फंस गई हूँ। इस ज़मीन मे जहाँ दुनियावी किसाफतो से बालातर होने की आरज़ूमंद हो मेरा इम्तेहान इस कद्र शदीद क्यो लिया जाता है? क्या दुनिया नेकियो से खाली है? क्या तकद्दुस व रहबानियत का खात्मा हो गया ? क्या कोई मुतनफ्फस ऐसा नही जो इसे सही सही हिदायत करे और मुझे वह रास्ता दिखा सके जहाँ पहुचकर मै तमाम दुनिया को फरामोश कर दूँ।

एक रोज़ इसी खयाल मे मुस्तगरक गंगा के किनारे एक तंहा मुकाम पर बैठी थी इस की आंखो मे काशी मे आने के बाद से इस वक्त तक के तमाम नज़ारे फिर गए अक्सर पंडितो की बदअखलाकी और इस की अस्मत के शदीद खतरे मे पड जाने के वह तमाम वाकिआत इस की नज़र के सामने आ गए।इस की आंखो के सामने उन बेचारियो के मुकदमे की

भयानक तस्वीर भी आ गई जो मासूम औरतो को तहखाने मे रखने और उनकी अस्मत पर डाका डालने और नाजाएज़ बच्चो के मार फेंकने के हौलनाक जराएम मे १९०३ई. मे गिरफ्तार हुए थे। इस मुकदमे मे बनारस के एक तहखाने मे से तकरीबन सत्तर बच्चीयो की खोपडिया निकली थी जिन को छुपाने के लिए मारकर वहॉ डाल दिया गया था। इस ने अपने कल्ब की हालत को देखा और इस पर यह हकीकत और भी वाज़ेह हो गई। इस ने सोचा कि इसे बहुत अच्छी तरह इबादत करनी चाहिए शायद इस से मुझे अपने नफ्स पर काबु हासिल हो जाए और मै फितरत के मुकाबले मे कामयाब हो सकू,लिहाज़ा वह तमाम मंदिरो मे गई और निहायत खुशुअ व खुजूअ के साथ दुआए मांगी कि देवता इसे कुदरत पर न सही कम अज़ कम इस के नफ्स पर इसे फतह दिला दे। यह अमल एक अर्से तक जारी रहा लेकिन कोई नतीजा न निकला और सुंदर कुमारी के शुकूक व शुब्हात तरक्की ही करते रहे। एक दिन वह मंदिर से निकल रही थी,उसने देखा कि एक गरीब आदमी मंदिर मे जाना चाहता है लेकिन कोई इसे घुंसने नही देता जब उस ने दर्याफ्त किया तो मालूम हुआ कि वह अछूत है और अगर वह अंदर घुस आया तो मंदिर नापाक हो जाएगा उसके दिल मे यह खयाल पैदा हुआ कि यह बेचारा इंसान क्या इन देवताओ को मानने वाला नही है,फिर देवता के पुजारी इसे अपने माबूद तक क्यो नही जाने देते ?

उसने करीब जाकर उस शख्स से पुछाः "तु कौन है?" उसने कहाः "मै एक गरीब आदमी हूँ देवता के दर्शन करना चाहता हूँ लेकिन मुझे घुसने नही दिया जाता कि मेरे जाने से मंदिर नापाक हो जाएगा"

सुंदरकुमारी ने पूछाः क्या तुम इंसान नही हो? उसने जवाब दियाः मै इंसान ज़रुर हूँ लेकिन पंडित कहते है कि मेरे छूने से हर चीज़

खराब हो जाती है।जिस खाने को मै छू लेता हूँ और जिस पानी को मै पी लेता हूँ हत्ता कि जिस चीज़ पर मेरा साया भी पड जाता है वह भी नापाक हो जाती है। सुंदर कुमारी ज़्यादा न सुन सकी वह खयालात मे डूब गई और वहाँ से चली गई चांदनी रात की रौश्नी मे बनारस की आलमगिरी मस्जिद ने एक खास दिलआवेज़ी अखतीयार करली थी। इस के बुलंद मिनारो पर एक सुकूत का इल्म तारी था और इस के गुंबदो का शिकवा और बड गया था। सुंदरकुमारी खडी हुई इस नज़ारे को देख रही थी और ताअज्जुब कर रही थी कि क्या यह इमारत भी खुद गर्ज़ियो और नफ्स परस्तो का वैसा ही मर्कज़ है जैसा मै देख चुकी हूँ वह जानती थी कि दुनिया की आबादी का एक हिस्सा मंदिरो से अलाहिदा है और मस्जिदो मे जाकर इबादत करता है अब इसके दिल मे यकायक यह खयाल आया कि इस के अंदर इबादत का क्या तरीका है? इसके अंदर किस की इबादत होती है? क्या इस मे वह लोग जमा होते है जो मेरी तरह मंदिरो से बेज़ार है? इन खयालात मे मुस्तगरक अपने वजूद से बे खबर वह उस जगह खडी रही और सोचती रही कि यकायक उसने अज़ान की आवाज़ सुनी थोडी देर के बाद इस ने देखा एक सफाई करने वाला झाडू रखकर ज़ीने पर चढा और मस्जिद मे दाखिल हो गया। सुंदरकुमारी के दिल मे खयाल पैदा हुआ,अब लोग इस को रोकेंगे लेकिन इसे किसी ने भी अंदर जाने से मना न किया सुंदरकुमारी बहुत हैरान हुई और वह भी मस्जिद मे दाखिल हो गई और सहन के गोशे मे बैठ गई। हलालखोर ने मस्जिद मे वज़ू किया और नमाज़ मे शरीक हो गया सुंदरकुमारी ने खयाल किया कि लोगो ने इसे पहचाना नही है अगर मै बता दू तो यह मस्जिद से निकाल दिया जाएगा वह हिम्मत करके उठी मस्जिद के अंदर गई और इस का हाथ पकडकर बुलंद आवाज़ से कहा यह अछुत है और

मेरे सामने झाडू दे रहा था इस ने मस्जिद को खराब कर दिया हलालखोर ने कहा मै मुसलमान हू मुसलमानो ने इस से कुछ न कहा बल्कि सुंदरकुमारी की तरफ मुतवज्जेह हुए और कहा तू कौन है? जो इस शख्स को रोकती है? वह हलालखोर ज़रुर है मगर हमारा भाई और खुदा का परस्तार है वह हमारे साथ नमाज़ पढता है इस मे किसी किस्म का हर्ज नही,क्योकि इस्लाम एक फितरी मज़हब है इस मे जो शख्स दाखिल होता है वह भी पाक हो जाता है। सुंदरकुमारी की हैरत की कोई इंतेहा नही रही इस ने दिल मे सोचा कि दुनिया मे ऐसे भी लोग है जो अछूतो को बुरा नही समझते लिहाज़ा इस ने और जुराअत की और एक सफेद पोश बुजुर्ग के पास गई जो इमाम थे वह बोली "मस्जिद के पुजारी मुझे अपना देवता तो दिखाओ,जो सब आदमियो को बराबर समझता है और किसी से नफरत नही करता"

उन्होने कहा इस मस्जिद के देवता को कोई नही देख सकता वह हर शख्स के दिल मे है सिर्फ इबादत से नज़र आता है वह हर चीज़ का मालिक है दुनिया की कोई चीज़ इस के कब्ज़े से बाहर नही,वह एक है न इस जैसा कोई है न इसका कोई शरीक है? तू कौन है जो खुदा को देखना चाहती है?

सुंदरकुमारीः बुजुर्ग इंसान क्या तुम इसे पूजते हो जिसे तुम ने कभी देखा नही?

इमाम साहबः हॉ वही एक परस्तीश के काबिल है जिस का हर चीज़ पर काबु है और वह अपने वजूद के लिए किसी के देखने का मोहताज नही।

सुंदरकुमारीः क्या वह मेरे दिल को गुनाह से पाक कर देंगा?

इमाम साहबः इसमे सब ताकत है।

जिस तरह कोई तारिकी से निकलकर रौश्नी मे आ जाता है और यकायक रौश्नी को देखकर इस की निगाहे खैरा हो जाती है इसी तरह

राजकुमारी ने इस मुकद्दस इंसान की पाक नज़रो मे कुछ देखा और हैरान रह गई लेकिन थोडी देर बाद इस ने कहा मुझे अपने पास रखो और अपने खुदा की बाते मुझे बताओ ,मुझे तुम्हारी बातो से बहुत इत्मीनान हासिल हो रहा है। इमाम साहब ने उस से कहा तु अपने अज़ीज़ो से इजाज़त ले ले, अगर वह इजाज़त दे तो यहाँ आकर मुझसे पूछ लिया कर मै किसी अजनबी औरत को बिला इजाज़त अपने घर मे नही रख सकता। सुंदरकुमारी ने कहा मुझ बदनसीब का यहाँ कोई नही है मुझे आप के चेहरे मे तकद्दुस की चमक मालूम होती है। जो जो मै इस पर नज़र डालती हूँ मुझे यकीन हो रहा है कि आप मे क्या कोई रुहानी कशिश है इसलिए मुझे यकीन है कि तुम मुझे अपनी बेटियों की तरह रखोगे और मेरे शुकूक रफा करके मुझे इत्मीनान व निजात का रास्ता दिखाओंगे।

सुंदरकुमारी अब इमाम साहब के साथ रहने लगी वहाँ इस के साथ अज़ीज़ो का सा बरताव हुआ,इमाम साहब की बहु बेटिया इसे बहन कहती थी और वह यह महसूस करती थी कि वह एक नई दुनिया मे आ गई है आहिस्ता आहिस्ता इस ने तौहीद का सबक सीखा और के बाद इस्लाम की मुसावात और मुसलमानो के अखलाक की गिरवीदा हो गई। बिलआखिर इस ने एक दिन कुबूले इस्लाम की तमन्ना की और अपनी खुशी से खुदाए वाहिद की परसितार हो गई। इस ने यह उसूल भी मालूम किया कि इसलाम दीने फितरत है वह किसी मर्द या औरत को फितरत के खिलाफ नबर्द आज़माई पर मजबूर नही करता चुनांचे एक दिन जब इसे इमाम साहब की बीवी ने निकाह की तल्कीन की तो वह इनके अल्फाज़ सुन कर हैरत मे रह गई इस ने कहा,हमारे रसूल सल्ल.ने फरमाया कि निकाह मेरी सुन्नत है जो भी इस सुन्नत से मुंह फेरेगा वह हम मे से नही।

सुंदरकुमारी को एक साधू के अल्फाज़ याद आए"फितरत के खिलाफ जंग नामुमकिन है" और वह अमीक खयालात मे खो बैठी जब राजा दयानगर को बेटी की खबर मिली तो वह खुद बनारस आए और इन्होने बेटी को तलाश किया इस वक्त वह मुसलमान हो चुकी थी राजा साहब पर इस का गहरा असर हुआ,लेकिन शफक्कत पिदरी गालिब आई और वह इससे मुहब्बत से मिले सुंदरकुमारी ने उन्हे इस माकूल तरीके पर तमाम बाते समझाई और इस तरह आप बीती सुनाई कि वह भी मुशर्रफ बइस्लाम हो गए ।

सुंदरकुमारी जो अब हसीना बेगम है इस्लामी शरीअत के मुताबीक अपने बाप की जायदाद की मालिक हुई और इस का अक्द बाप की मर्ज़ी के मुवाफिक एकशहज़ादा बैरिस्टर से किया गया शादी के मौके पर राजा साहब ने बहुत सा रुपया इस्लामी तहरीकात खुसूसन तब्लीग की इमदाद के लिए दिया और खुसुसी जायदाद इस के लिए वक्फ कर दी कि हज़रत शहंशाह आलमगीर की रुह को सवाब पहुचाने का एहतेमाम किया जाए इन का यह भी खयाल है कि बनारस की आलमगीरी मस्जिद मे नौमुस्लिमो की तालीम व तरबियत के लिए मदरसा खोला जाए नेज़ मुस्लिम औरतो के लिए एक आश्रम बनाया जाए जिसकी निगरानी हसीना बेगम (साबीक सुंदरकुमारी) करेंगी।

(मुस्तफाद अज़ माहनामा "अरमुगान" सितंबर २०१०ई.)

••••••

19 वुमन्स हॉकी की सेंटर फॉरवर्ड खिलाडी का कुबूले इस्लाम

इंसान अपने नेचर से कितना दूर हो जाए और कितने ज़माने तक दूर रहे,जब इसको इसके नेचर की तरफ आना मिलता है वह कभी अजनबियत महसूस नही करेंगा वह हमेशा फेल करेंगा कि अपने घर लौट आया। अल्लाह ने इंसान को बनाया और औरतो की नेचर बिल्कुल अलग बनाई। बनाने वाले ने औरत का नेचर छिनने और पर्दे मे रहने का बनाया इसे सुकून व चैन लोगो की हौस भरी निगाह से बचे रहने मे ही मिल सकता है। इस्लाम दीने फितरत है जिस के सारे हुक्म इंसानी नेचर से मेल खाते है मर्दो के लिए मर्दो के नेचर की बात और औरतो के लिए औरतो के नेचर की बात।

सवालः अस्सलाम अलैकुम रहेमतुल्लाहि व बरकातहू

जवाबः वअलैकुम अस्सलाम व रहेमतुल्लाही व बरकातहू

सवालः अबी ने हमें बताया था कि हिंदुस्तान की एक हॉकी खिलाडी आ रही है तो हम सोच रहे थे कि आप हॉकी की ड्रेस मे आएगी,मगर आप माशा अल्लाह बुरके मे मबलूस और दास्ताने पहनकर मुकम्मल परदे मे हैं आप अपने घर से बुरका ओढकर कैसे आई है?

जवाबः मै अल्हमदुलिल्लाह पिछले दो माह से सौ फिसद शरई परदे मे रहती हूँ।

सवालः अभी आप के घर मे तो कोई मुसलमान नही हुआ?

जवाबः जी मेरे घर मे अभी मेरे अलावा कोई मुसलमान नही है मगर इस के बावजूद मै अल्हमदुलिल्लाह कोशिश करती हूं कि मै अगर चे घर मे अकेली मुसलमान हूं मगर मै आधी इधर आधी उधर यह तो न होना चाहिए।

सवालः आप को हॉकी खेलने का शौक कैसे हुआ,यह तो बिल्कुल मर्दों का खेल है?

जवाबः असल मे मै हरियाणा के सोनीपत ज़िला के एक गॉव की रहने वाली हूँ हमारे घर मे सभी मर्द पढे लिखे है और अक्सर कबड्डी खेलते रहते है मै ने स्कूल मे दाखला लिया शुरु से क्लास मे टॉप करती रही,सी.बी.एस.ई बोर्ड मे मेरी हाई स्कूल मे ग्यारहवी पोज़िशन रही,मुझे शुरु से मर्दो से आगे निकलने का शौक था,इस के लिए मै ने स्कूल मे हॉकी खेलना शुरु की पहले ज़िला मे नौवी क्लास मे सिलेक्शन हुआ फिर हाई स्कूल मे हरियाणा स्टेट के लिए लडकियो की टीम मे मेरा सिलेक्शन हो गया,बारहवी क्लास मे भी मै ने स्कूल टॉप किया और सी.बी.एस. ई बोर्ड मे मेरा नंबर अठारहवा रह,इसी साल मे इंडिया टीम मे सिलेक्ट हो गई औरतो के एशिया कप मे भी खेली और बहुत से टुर्नामेंट मेरी कारकर्दगी की वजह से जीते गए असल मे हॉकी मे भी सबसे ज़्यादा एक्टीव रोल असमा बाजी! सेंटर फॉर वर्ड खिलाडी का होता है यानी सबसे आगे दर्मियान मे खेलने वाले खिलाडी का,मै हमेशा सेंटर फॉर वर्ड मे खेलती रही असल मे बस मर्दो से आगे बढने का जुनुन था मगर रोज़ाना रात को मेरा जिस्म मुझसे शिकायत करता था कि यह खेल औरतो का नही है मालिक ने अपनी दुनिया मे हर एक के लिए अलग काम दिया है। हाथ पॉव बिल्कुल छल हो जाते थे मगर मेरा जुनून मुझे दौडाता था और इस पर कामयाबी और वाह वाह अपने नेचर के खिलाफ दौडने पर मजबुर करती थी।

सवाल : इस्लाम कुबूल करने से पहले तो आप का नाम प्रिती था ना?

जवाबः हज़रत ने मेरा नाम अभी अफीफा यानी कुछ माह पहले रखा है।

सवालः आप के वालिद क्या करते हैं?

जवाबः वह एक स्कूल चलाते हैं उसके प्रिंसिपल है।मेरे एक बडे भाई उसमे पढाते है,मेरी भाभी भी पढाती है,वह सब खेल से दिलचस्पी रखती है। मेरी भाभी बॅडमिंटन की खिलाडी है।

सवालः ऐसे आज़ाद माहोल मे ज़िंदगी गुज़ारने के बाद ऐसे पर्दे मे रहना आप को कैसा लगता है?

जवाबः इंसान अपने नेचर से कितना दूर हो जाए और कितने ज़माने तक दूर रहे,जब इसको इसके नेचर की तरफ आना मिलता है वह कभी अजनबियत महसूस नही करेंगा वह हमेशा फेल करेंगा कि अपने घर लौट आया। अल्लाह ने इंसान को बनाया और औरतो की नेचर बिल्कुल अलग बनाई।बनाने वाले ने औरत का नेचर छिनने और पर्दे मे रहने का बनाया इसे सुकून व चैन लोगो की हौस भरी निगाह से बचे रहने मे ही मिल सकता है। इस्लाम दीने फितरत है जिस के सारे हुक्म इंसानी नेचर से मेल खाते है मर्दो के लिए मर्दो के नेचर की बात और औरतो के लिए औरतो के नेचर की बात।

सवालः आप की उमर कितनी है?

जवाबः मेरी तारीखे पैदाईया ६ जनवरी १९८८ई.है गोया मे बाईस साल की होने वाली हूँ।

सवालः मुसलमान हुए कितने दिन हुए?

जवाबः साढे छःह महिने के करीब हुए हैं।

सवालः आपके घर मे आप के इतने बडे फैसले पर मुखालेफत नही हुई।

जवाबः हुई और खूब हुई,मगर सब जानते है कि अजीब दीवानी लडकी है जो फैसला कर लेती है फिरती नही,इस लिए शुरु मे ज़रा सख्ती की मगर जब अंदाज़ा हो गया कि मै दूर तक जा सकती हूँ तो सब मोम हो गए।

सवालः आप हॉकी अब भी खेलती है?

जवाबः नही! अब हॉकी मैने छोड दी है।

सवालः इस पर तो घरवालो को बहुत ही अहसास हुआ

होंगा?

जवाबः हाँ हुआ मगर मेरा फैसला मुझे लेने का हक था मैने लिया और मै ने अपने अल्लाह का हुक्म समझकर लिया अब अल्लाह के आगे बंदो की चाहत कैसे ठहर सकती है।

सवालः आप के तेवर तो घरवालो को बहुत सख्त लगे होंगे?

जवाबः आदमी को ढुल मिल नही होना चाहिए,असल मे आदमी पहले यह फैसला करे कि मेरा हक है कि नही,और अगर इसका हक पर होना साबित हो जाए तो पहाड भी सामने से हट जाते है।

सवालः आपके इस्लाम मे आने का क्या चिज़ ज़रिया बनी?

जवाबः मै हरियाना के उस इलाके की रहने वाली हूँ जहाँ किसी हिंदु का मुसलमान होना तो दूर की बात है हमारे चारो तरफ कितने मुसलमान है जो हिंदु बने हुए है खुद हमारे गाँव मे बादी और तेलियो के बीसो घर है जो हिंदु हो गए है,मंदिर जाते है होली दिवाली मनाते है,लेकिन मुझे इस्लाम की तरफ वहाँ जाकर रगब्त हुई जहाँ जाकर खुद मुसलमान इस्लाम से आज़ाद हो जाते है।

सवालः कहाँ और किस तरह ज़रा बताईए?

जवाबः मै हॉकी खेलती थी तो बिल्कुल आज़ाद माहोल मे रहती थी,आधे से कम कपडो मे हिंदुस्तानी रिवायात का खयाल भी खत्म हो गया था,हमारे अक्सर कोच मर्द रहे टीम के साथ कुछ मर्द साथ रहते है,एक दूसरे से मिलते है टीम मे ऐसी भी लडकियाँ थी जो रात गुज़ारने बल्कि ख्वाहिशात पुरी करने मे ज़र्रा बराबर कोई झिझक महसूस नही करती थी मेरे अल्लाह का करम था कि मुझे उस ने इस हद तक न जाने दिया। गोल के बाद और मॅच जीत कर मर्दो औरतो का गले लग जाना चिमट जाना तो कोई बात ही नही थी मेरी टीम के कोच ने कई दफा बे तकल्लुफी मे मेरे किसी शॉट पर टांगो मे कमर चिटकिया भरी।मै ने उस पर नोटिस लिया और उनको

वार्निंग दी मगर टीम की साथी लडकियो ने मुझे बुरा भला कहा इतनी बात को तुम दूसरी तरह ले रही हो मगर मेरे ज़मीर पर बहुत चोट लगी,हमारी टीम एक टुर्नामेंट खेलने डेनमार्क गई वहाँ मुझे मालूम हुआ कि वहा की टीम की सेंटर फॉर वर्ड खिलाडी ने एक पाकिस्तानी लडके से शादी करके इस्लाम कुबुल कर लिया है और हॉकी खेलना छोड दिया है। लोगो मे यह बात मशहुर थी कि इस ने शादी के लिए इस लडके की मुहब्बत मे इस्लाम कुबूल किया है। मुझे यह बात अजीब सी लगी हम जिस होटल मे रहते थे इस के करीब एक पार्क था, उस पार्क से मिला हुआ उनका मकान था मै सुबह को इस पार्क मे तफरीह कर रही थी कि डेनमार्क की एक खिलाडी ने

मुझे बताया कि वह सामने ब्रिटीनी का घर है जो डेनमार्क की हॉकी की मशहूर खिलाडी रही है। उसने अपना नाम अब सादिया रख लिया है और घर मे रहने लगी है मुझे उससे मिलने का शौक हुआ मै एक साथी खिलाडी के साथ उस के घर गई वह अपने शौहर के साथ कही जाने वाली थी बिल्कुल मोज़े,दस्ताने,और पूरे बुर्के मे मबलूस मै देखकर हैरत मे रह गई और हम दोनो हंसने लगे,मै ने अपना ताअर्रुफ कराया तो वह मुझे पहचानती थी,वह बोली मै ने तुम्हे खेलते देखा है। सादीया ने कहा हमारे एक ससुराली अज़ीज़ का इंतेकाल हो गया है मुझे इस मे जानाहे वरना मै आप के साथ कुछ बाते करती,मै तुम्हारे खेलने के अंदाज़ से बहुत मुतास्सिर ही हूँ,हॉकी खेल औरतो के नेचर से मेल नही खाता मेरा दिल चाहता है कि तुम्हारी सलाहयते नेचर से मेल खाने वाले कामो मे लगी,मै तुम से हॉकी छुडवाना चाहती हूँ,मै ने कहा आप मेरे खेल के अंदाज़ से मुतास्सिर है और मुझ से खेल छुडवाना चाहती हैं और मै आप का हॉकी छोडना सुनकर आप से मिलने आई हूँ कि ऐसी मशहूर खिलाडी होकर आप ने क्यो हॉकी छोड दी? मै आप को फिल्ड मे लाना चाहती हूँ सादिया ने

कहा कि अच्छा आज रात को डिनर मेरे साथ करलो मै ने कहा आज तो नही कल हो सकता है तै हो गया,मै डीनर पर पहुची तो सादिया ने अपने कुबूले इस्लाम की रुदाद मुझे सुनाई और बताया कि मैने शादी के लिए इस्लाम कुबूल नही किया बल्कि शर्म अपनी असमत की इज़्ज़त व हिफाज़त के लिए इस्लाम कुबूल किया है और इस्लाम के लिए शादी की है। सादीया न सिर्फ एक मुस्लिम खातुन थी बल्कि इस्लाम की बडी दाईया थी उस ने फोन करके दो अंग्रेज़ लडकियो को और एक मामर खातुन को बुलाया जो उन के मोहल्ले मे रहती थी और सादीया की दाअवत पर मुसलमान हो गई थी। वह मुझे सबसे ज़्यादा इस्लाम के पर्दे के हुक्म की खैर बताती रही और बहुत इसरार करके मुझे बुरका पहन कर बाहर जाकर आने को कहा। मैने बुरका पहना,डेनमार्क के बिल्कुल मुखालिफ माहोल मे मैने बुरका पहनकर गली का चक्कर लगाया मगर वह बुरका मेरे दिल मे उतर गया मै बयान नही कर सकती कि मै ने मज़ाक उडाने या ज़्यादा से ज़्यादा उस की ख्वाहिश के लिए बुरका पहना था मगर मुझे अपना इंसानी कद बहुत बडा हुआ महसूस हुआ अब मुझे अपने कोच की बेशरमाना शहवानी चुटकियो से घिन भी आ रही थी।मै ने बुरका उतारा और सादीया को बताया कि मुझे वाकई बुरका पहन कर बहुत अच्छा लगा,मगर आज के माहोल मे जब बुरके पर वेस्टर्न हुकुमतो मे पाबंदी लगाई जा रही है बुरका पहनना कैसे मुमकीन है?और गैर मुस्लिम का बुरका पहनना तो किसी तरह मुमकीन नही वह मुझे इस्लाम कुबूल करने को कहती रही और बहुत इसरार करती रही।मै ने माज़रत की कि मै इस हाल मे नही हूँ, अभी मुझे दुनिया की नंबर वनहॉकी की खिलाडी बनना है मेरे सारे अरमानो पर पानी फिर जाएगा।सादीया ने कहा मुझे आप को हॉकी की फिल्ड से बुरके मे लाना है मै ने अपने अल्लाह से दुआ भी

की है और बहुत ज़िद करके दुआ की है,इस के बाद हम दस रोज़ तक डेनमार्क मे रहे वह मुझे फोन करती रही दो बार होटल मे मिलने आई,और मुझे इस्लाम पर किताबे देकर गई।

सवालः आप ने वह किताबे पढी?

जवाबः कही कही से देखी हैं।

सवालः इस के बाद इस्लाम मे आने का क्या ज़रिया बना?

जवाबः मै इंडिया वापस आई हमारे यहा नरेला के पास एक गॉव की एक लडकी (जिस के वालिद सन ४७ई.मे हिंदु हो गए थे और बाद मे आप के वालिद मौलाना साहब के हाथो मुसलमान हो गए थे।उनके मुरीद भी थे और हज भी कर आए थे) हॉकी खेलती थी,दिल्ली स्टेट की हॉकी टीम मे थी और इंडिया की तरफ से सिलेक्शन के बाद रुस मे खेलने जाने वाली थी,मुझ से मशवरा और खेल के अंदाज़ मे रहनुमाई के लिए मेरे पास आई,मै ने उस से डेनमार्क की मशहूर खिलाडी का ज़िक्र किया उस ने अपने वालिद साहब से सारी बात बताई,वह अपनी लडकी के साथ मुझसे मिलने आए और मुझे हज़रत की किताब "आप की अमानत"और इस्लाम एक परिचय"दी आप की अमानत छोटी सी किताब थी बुरका ने मेरे दिल मे जगह बना ली थी,इस किताब ने बुरके के कानून को मेरे दिल मे बिठा दिया मै ने हज़रत साहब से मिलने की ख्वाहिश ज़ाहिर की दूसरे रोज़ हज़रत का पंजाब सफर था अल्लाह का करना कि बहालगढ एक साहब के यहॉ हाईवे पर मुलाकात तै हो गई और हज़रत ने दस पंद्रह मिंट मुझसे बात करके कलमा पढने को कहा और उन्होने बताया कि मेरा दिल यह कहता है कि ब्रिटनी ने अपने अल्लाह से आप को बुरके मे लाने की बात मनवा ली है,बहरे हाल मै ने कलमा पढा और हज़रत ने मेरा नाम अफीफा रखा और कहा अफीफा पाक दामन को कहते है चुंकि बाई नेचर आप अंदर से पाक दामनी को पसंद करती है मेरी भांजी का नाम भी

अफीफा है,मै आप का नाम अफीफा ही रखता हूँ।

सवालः इसके बाद क्या हुआ?

जवाबः मै ने ब्रिटनी को फोन किया और उसको बताया वह खुशी मे झुम गई जब मै ने हज़रत का नाम लिया तो उन्होने अपने शौहर से बात कराई,डॉक्टर अशरफ उनका नाम है उन्होने बताया कि हज़रत की बहन के यहाँ रहने वाली एक हिरा की शहादत और इस के चचा के कुबूले इस्लाम की कहानी सुनकर हमे अल्लाह ने इस्लाम की कद्र सिखाई है और इसी की वजह से मै ने ब्रिटनी से शादी की है यह कह कर कि अगर तुम इस्लाम ले आती हो तो मै आप से शादी के लिए तैयार हूँ। मै ने अखबार मे ॲड दिया गॅज़ेट मे नाम बदलवाया और हॉकी से रिटायरमेंट लेकर घर पर स्टडी शुरु की।

सवालः अब आप का क्या इरादा है? आप की शादी का क्या हुआ?

जवाबः मै ने आई.सी.एस.की तैयारी शुरु की है,मैने इरादा किया है कि मै एक आई.एस अफसर बनूंगी और बुरके पोश आई.एस अफसर बनकर इस्लामी पर्दे की अज़मत लोगो को बताउंगी।

सवालः आप इस के लिए कोचिंग कर रही है?

जवाबः मै नेट पर स्टडी कर रही हूँ,मेरे अल्लाह ने हमेशा मेरे साथ यह मामला किया है कि मै जो इरादा कर लेती हूं इसे पुरा कर देते है जब काफिर थी तो पूरा करते थे अब तो इस्लाम की अज़मत के लिए मै ने इरादा किया है अल्लाह ज़रुर पूरा करेंगे।मुझे एक हज़ार फिसद उम्मीद है कि मै पहली बार मे ही आई.एस. इम्तेहानात पास कर लुंगी।

सवालः इंटरव्यू का क्या होंगा?

जवाबः सारे बुरके और इस्लाम के खिलाफ भी अगर इंटरव्यू लेंगे तो वह मेरे सिलेक्शन के लिए इंशा अल्लाह मजबूर हो जाऐंगे।

सवालः घरवालो को आपने दाअवत नही दी?

जवाबः अभी दुआ कर रही हूं और करीब कर रही हूं हमें हिदायत कैसे मिली,हिंदी मे मैने घरवालो को पढवाई सब लोग हैरत मे रह गए और अल्लाह का शुक्र है ज़हन बदल रहा है।

सवालः यह बाते मै ने आप के इल्म मे है कि फुलत से निकलने वाले रिसाले अरमुगान के लिए की है इस रिसाले के बहुत से पढने वाले है उनके लिए कोई पैगाम आप देंगी?

जवाबः औरत का बे पर्दा होना उसकी हद दर्जे तौहीन है इसलिए मर्द खुदा के लिए अपने झूटे मतलब और अपना बोझ इन पर डालने के लिए इन को बाज़ारो मे फिराकर बाज़ारी बनाने से बाज़ रहे और औरते अपने मुकाम और अपनी असमत व उफ्फत की हिफाज़त के लिए इस्लाम के पर्दे के हुक्म की कद्र करे।

सवालः बहुत बहुत शुक्रिया,अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातूह।

जवाबः वअलैकुम अस्सलाम

(मुस्तफाद अज़ माहनामा "अरमुगान"नोव्हेंबर २०१०ई.)

••••••

Maktab Ashraf

20 बेटी और भतीजी की दाअवत पर बाप और चचा ने इस्लाम कुबूल किया

हिरा ने जलती आग मे हाथ आसमान की तरफ उठाये और चीखीं, "मेरे अल्लाह ! आप मुझे देख रहे हैं ना ! मेरे अल्लाह आप मुझसे मुहब्बत करते हैं ना,अपनी हिरा से मुहब्बत करते है ना,हाँ मेरे अल्लाह ! आप ग़ार-ए-हिरा से भी मुहब्बत करते है और गढे मे जलती हिरा से भी मुहब्बत करते है ना,आपकी मुहब्बत के बाद मुझे किसी की ज़रुरत नही ।

मौलाना अहमद अव्वाह नदवी

अहमद अव्वाह : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

अब्दुल्लाह : वअलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

सवाल : अब्दुल्लाह भाई आपके इल्म मे होगा की हमारे यहाँ फुलत (यु.पी.मुज़फ्फर नगर)से एक मेग़्ज़ीन अरमुग़ान के नाम से निकलता है।उसमे कुछ अर्से से दस्तरख्वाने इस्लाम पर आनेवाले नये खुशक़िस्मत लोगों के इंटरव्यु का सिलसिला चल रहा है । उसके लिए मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हुँ ।

जवाब : अहमद भाई (आँसुओं को पोंछते हुये कहा) मुझ जैसे ज़ालिम और कमीने आदमी की बातें इस मुबारक मेग़्ज़ीन मे देकर क्यों इसे गंदा करते है ?

सवाल: नही अब्दुल्लाभाई! अबी (मेरे अब्बाजान हज़रत मौलाना कलीम सिद्दीकी मद्दज़िल्लहू)कह रहे थे,आपकी ज़िंदगी अल्लाह की कुदरत की एक अजीब निशानी है। उनकी ख्वाहिश है कि आपका इंटरव्यु ज़रुर शाए किया जाए आपके अबी,अल्लाह तआला उनको लंबी उम्र दे। मै अपने को उनका

गुलाम मानता हुँ ।उनका हुक्म है तो मै सर झुकाता हुँ । आप जो सवाल करें मैं जवाब देने को तैयार हूँ ।

सवाल: पहले आप अपना तआरुफ कराइये?

अगर मै यह कहुँ कि जबसे दुनिया क़ायम हुई है आज तक का मै दुनिया का सबसे ज़ालिम तरीन,बदतरीन और खुश क़िस्मत तरीन इंसान हूँ बल्कि दरिंदा हूँ तो यह मेरा बिलकुल सच्चा तआरुफ होगा।

सवाल : ये तो आपका जज़्बाती(भावुक) तआरुफ है आप अपने घर और खानदान के बारे मे बताईये ?

जवाब: मै ज़िला मुज़फ्फर नगर की बुढाना तहसील के एक राजपूत अकसरियत (बहुसंख्य)के गाँव के अहीर (गडरिये) के घर अबसे बयालीस या तैंतालीस साल कब्ल(पहले)पैदा हुआ। मेरा घराना बहुत मज़हबी हिंदु और जराएम पेशा (अपराधी) था। चाचा और पिताजी एक गिरोह के सरकर्दा(मुख्य)लोगों मे थे । लूटमार ज़ुल्म खानदानी तौर पर घुट्टी मे पडा हुआ था । 1987 मे मेरठ के फ़सादात(दंगो) के मौके पर अपने बाप के साथ रिश्तेदारों की मदद के लिये मेरठ रहा ।हम दोनो ने कम से कम पच्चीस मुसलमानों को अपने हाथ से कत्ल किया । उसके बाद मुस्लिम नफरत के जज़्बे(भावना) से मुतास्सिर होकर बजरंग दल मे शामिल हुआ । बाबरी मस्जिद के शहादत के सिलसिले मे 1990 मे शामली मे कितने ही मुसलमानों को कत्ल किया । 1992 मे बुढाना मे बहुत से मुसलमानों को शहीद किया । बुढाना मे एक बहुत नाम का मशहूर बदमआश मगर सच्चा मुसलमान था जिससे पूरे इलाके के गैरमुस्लिम घबराते थे। मैने अपने साथी के साथ उसको गोली मारी । इस मुस्लिम दुश्मनी मे मुझ दरिंदे ने एक ऐसी ज़ालिमाना(क्रूर) हरकत(कृत्य) भी की...(देर तक रोते हुये)की शायद ऐसी बरबरीयत(क्रूरता)और ज़ालिमाना हरकत आसमान के नीचे और ज़मीन के उपर किसी ने ना देंखी होगी और ना सुनी होगी और ना ख्याल किया होगा-----(फिर देरतक रोते हुये)

सवाल आप अपने कुबूले इस्लाम के बारे मे सुनाईये ।

जवाब कुरआन शरीफ के 30वें पारे मे एक सुरए बुरुज है ना,उसमे आग की खाई वालों के बारे मे अल्लाह ने कहा है कि वे बर्बाद हुए और हलाक(नष्ट) किये गये। यह सूरत शायद मेरे बारे मे उतरी है। बस इतना है कि वे आग वाले हुए यह

कहा गया।क्या आयत है अरबी मे सुनाइये--- यानी हलाक कर दिये गये और बरबाद हुए आग की खंदक वाले ।

सवाल : اعوذبالله..بسم الله..قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ اِذْهُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ

जवाब : अगर यह कहिये रहम किया गया आग वालों पर तो अरबी मे क्या होगा।

सवाल : رَحِمَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ

जवाब : हाँ अगर मेरे बारे में यह आयत उतरती तो यह होता कि

सवाल: आप अपना वाकिआ सुनाइये ।

जवाब: हाँ मेरे भाई बता रहा हुँ। मगर किस मुँह से बताऊँ और किस दिलसे बताऊँ मेरा पत्थर दिल भी इस वाकिअे को सुनाने की हिंमत नही रखता ।

सवाल:फिर भी बताईये । शायद ऐसा वाकिआ तो और ज़्यादा लोगों के लिए इबरत(सबक) का ज़रिया(माध्यम) हो ।

जवाब: हाँ भाई।वाकई मेरे कुबूले इस्लाम का वाकिआ हर मायूस(निराश) के लिए उम्मीद(आशा) दिलाने वाला है कि वह कृपावान और दयालु(अरहमर्राहीमीन) खुदा जब मेरे साथ ऐसा करम कर सकता है तो किसी को मायूस होने की कहाँगुंजाईश (जगह)है।तो सुनो अहमदभाई मेरे एक बडे भाई है इतने ज़ुल्म और जरायम(अपराध) के बावजूद हम दोनो भाईयों मे हददर्जा(बहुत) मुहब्बत है । मेरे भाई की दो लडकियाँ और दो लडके थे और मेरे कोई औलाद नही है । उनकी बडी लडकी का नाम हिरा था। वह अजीब दिवानी लडकी थी बहुत ही भावुक(जज़्बाती)। जिससे मिलती बस दिवानों की तरह और जिससे नफरत करती पागलों की तरह। कभी कभी हमे यह ख्याल होता की शायद इसपर उपरी असर है। कई सयानो वगैरा को भी दिखाया मगर उसका हाल जुँ का तुँ रहा उसने आठवी क्लास तक स्कूल मे पढा । बडी हो गई उसको घर के काम काज मे लगा दिया । मगर उसको आगे पढने का बहुत शौक था और उसने घरवालों की मर्ज़ी के बगैर हाईस्कूल का फॉर्म भर दिया आठ दिन तक खेतों मे मज़दूरी की ताकि फीस भरे और किताबें भी ले। जब किताबें उसकी खुद समझ मे ना आई तो वह बराबर मे एक बामन (ब्राहमण) के घर उसकी लडकी से पढने जाने लगी। ब्राहमण का

एक लडका बदमाश और डाकू था। ना जाने किस तरह मेरी भतीजी हिरा को उसने बहकाया और उसको लेकर रात को फरार हो गया। बडोत के पास एक जंगल मे जहाँ उसका गिरोह रहता था पहुँचा।वह उसके साथ चली तो गई। मगर वहाँ जाकर उसे अपने माँ बाप की इज़्ज़त जाने का और उनकी बदनामी और अपनी गलती का एहसास(बोध) हुआ । वह चुपके चुपके रोती थी।

उस गैंग मे एक इदरीसपूर का मुसलमान लडका भी रहता था एक रोज़ उसने रोते हुये देख लिया । उसने रोने की वजह मालुम की,उसने बताया कि मै कम उम्री और कम समझी मे उसके साथ आ तो गई मगर मुझे अपनी इज़्ज़त खतरे मे लग रही है और मेरे माँ बाप की परेशानी मुझे बहुत याद आ रही है । उसको हिरा पर तरस आ गया और उसने बताया की मै मुसलमान हूँ और मुसलमान अपने अहेद के सच्चे को कहते है । मै तुझे अपनी बहन बनाता हु। मै तेरी इज़्ज़त की हिफाज़त करुंगा और तुझे इस जंगल से निकालकर सही सलामत तेरे घर पहुंचाने की कोशिश करुंगा। उसने अपने साथीयों से कहा कि यह लडकी तो बहुत बहादुर और अपने इरादे की पक्की मालुम होती है । हमे अपने गिरोह मे एक दो लडकियों को ज़रुर शामिल कर लेना चाहीये । अकसर हमे इसकी ज़रुरत होती है अब इसको जंगल मे साथ रखने का तरीका है की इसको लडकों के कपडे पहनाओ। उसकी बात सब साथीयों की समझ मे आ गयी । हिरा को कपडे पहनाकर लडका बनाया गया और वे उसको साथ लेकर फिरते थे । उसने देखा - दसबारह लोगों मे उस मुसलमान का हाल सबसे अलग था । वह बात का पक्का था। अच्छी राय देता था ।जब माल बँटता तो उसमे कुछ गरीबों का हिस्सा रखता था । हिरा को अलग कमरे मे सुलाता था और रातको बारबार उठकर देखता था कोई साथी इधर तो नही आया । जब कुछ रोज हिरा को उनके साथ हो गये और उनको इत्मिनान हो गया की वह उनके गैंग की मेंबर बन गई है तो उससे चौकसी कम करदी गई ।

अब उसने एक रोज़ हिरा को एक बहाने से बडोत भेजा और हिरा से कहा की तु वहाँ तांगे मे बैठकर हमारे घर इदरीसपूर चली जाना और वहाँ जाकर मेरे छोटे भाई से सारा हाल सुनाना और कहना की तेरे भाईने बुलाया है और उसको बता देना की वह यहाँ आकर यह कहे कि वह लडकी बडोत वालो ने शकमे पकडकर पुलिस वालों को दे दी । हिरा ने ऐसाही किया। उसका भाई जंगल मे

गया और अपने भाईसे जाकर कहा - उस लडकी को बडोत वालों ने पकडकर पुलिस को शक मे दे दिया है।उसने अपने भाई से कहा कि हिरा को थाने भेज दो और वह जाकर थाने मे कहे की एक गिरोह मुझे गाँव से उठा लाया। किसी तरह मै छूट कर आ गयी हुँ।मुझे अपनी जान का खतरा है । हिरा ने ऐसा ही किया । बडोत थानेवालों ने बुढाना थाने से राब्ता किया,वहाँ उस लडकी के अगवा(अपहृत) करने की रिपोर्ट पहले ही लिखी हुई थी। लेडीज़ पुलिस लेकर बुढाना थाने के लोग बडोत आये और उस थाने से हिरा को ले गये। हिरा को लेकर हमारे गाँव आये। हमने उसे घर रख तो लिया मगर ऐसी बदचलन लडकी को किस तरह रखें । हिरा ने कहा-मुझे तो गिरोह उठाकर ले गया। मगर मैने अपनी इज़्ज़त की हिफाज़त की है किसी को यकीन ना आया एक पढे लिखे रिश्तेदार भी आ गये । उन्होने कहा कि डॉक्टरी करवालो। हम दोनो भाई डॉक्टरी के लिये बुढाना अस्पताल उसको लेकर गये और ख्याल यह था की अगर इसकी इज़्ज़त सलामत(सुरक्षित) है तो वापस लायेंगे वरना मारकर बुढाना की नदी मे डाल आयेंगे ।अल्लाह का करम हुआ की डॉकटरने रिपोर्ट दी कि इसकी इज़्ज़त महेफूज़ है। खुशी खुशी उसको लेकर घर आए मगर अब वह मुसलमानो का बहुत ज़िक्र करती थी और बार बार एक मुसलमान लडके की शराफत(सज्जनता) की वजह से अपने बच जाने का ज़िक्र करती थी वह मुसलमानों के घर जाने लगी। वहाँ एक लडकी ने उसको दोज़ख का खटका और जन्नत की कुंजी किताबें दे दी। मुसलमानों की किताबें मैने घर मे रखी हुई देखी तो मैने उसको बहुत मारा और खबरदार किया कि अगर इस तरह की किताब मैने घर मे देखी तो तुझे काटकर डाल दूंगा,मगर उसके दिल मे इस्लाम घर कर गया था और इस्लाम ने उसके दिल की अंधेरी कोठरी को अपने प्रकाश (नूर)से प्रकाशित(मुनव्वर) कर दिया था । उसने मदरसे मे एक मुसलमान लडके के साथ जाकर एक मौलाना साहब के हाथ पर इस्लाम कुबूल कर लिया और चुपके चुपके नमाज़ सीखने लगी और समय समय पर (वक्तन फ वक्तन नमाज़ पढने लगी । मुसलमान होने के बाद वह शिर्क के अंधेरे घराने मे घुटन महसूस करने लगी वह बिल्कुल उदास उदास सी रहती। हर वक्त हँसने वाली लडकी वह ऐसी ही हो गई जैसे उसका सब कुछ बदल गया हो।ना जाने किस किस तरह उसने प्रोग्राम बनाया और वह फिर घर से

चली गई ।एक मौलाना साहब उसको अपनी बीवी के साथ फुलत छोड आये । फुलत कुछ रोज़ अहमद भाई आपके यहाँ रही। शायद आपको याद होगा ।

सवालः हाँ हाँ ! हिराबाजी ! अरे वह हिराबाजी कहाँ है ?हमारे घरवाले तो उनकी तरफ़ से बहुत फिक्रमंद है. । वह बडी नेक इंसान थी । हैरत है कि आप हिरा बाजी के चचा है ।

जवाबः हाँ अहमद भाई ! उसका नाम आपके अबी ने हिरा रखा था और उस नेक बख्त बच्ची का ज़ालिम और कातिल चचा मै ही हूँ------(रोते हुये)

सवालः पहले यह तो बताइये कि हिरा बाजी कहाँ है ?

जवाबः बता रहा हुँ मेरे भाई बता रहा हूँ, अपने ज़ुल्म और दरिंदगी की दास्तान। जैसा की आपके इल्म मे होगा कि मौलाना साहब ने उसे एहतियात(दक्षता) के तौर पर देहली अपनी बहन के यहाँ भेज दिया । वह वहाँ रही । वहाँ उसको बहुत ही मुनासिब(योग्य) माहोल मिला । वह मौलाना साहब की बहन के यहाँ रही । वह उनको रानी फुफी कहती थी । आपकी अम्मी ने भी उसको बहुत प्यार दिया । रानी फुफी ने उसकी बहुत तर्बियत(सुधारणा) की । शायद एक डेढ साल वह देहली मे रही । फुलत और देहली के कयाम ने उसको ऐसा मुसलमान बना दिया कि अब अगर कुरआन हकीम नाज़िल होता तो अहमद भाई शायद नाम लेकर उस ईमान वाली शहीद बच्ची का ज़रुर ज़िक्र(उल्लेख) होता। उसे अपने घरवालों से बहुत मुहब्बत थी। खुसूसन(विशेषतः) अपनी माँ से बहुत मुहब्बत थी। उसकी माँ बहुत बीमार रहती थी ।एक रात उसने ख्वाब मे देखा की मेरी माँ मर गई है ।आँख खुली तो उसको माँ की बहुत याद आई। अगर ईमान के बगैर उसकी माँ मर गई तो क्या होगा यह सोच कर वह रोने लगी और उसकी चीखें लग गई । घरके सभी लोग उठ गये ।उसको समझाया तसल्ली दी । वक्ती तौर पर वह चूप हो गई । मगर बार बार उसको ख्वाब याद करके रोना आता था। और आपके अबी को अबी जी कहती थी। बार बार वह अपनी माँ को याद करती थी। घर जाने की इजाज़त मांगी ।मगर आपके अबी उसको समझाते कि तुम्हारे घरवाले तुम्हे ज़िंदा नही छोडेंगे और मार देंगे और उससे ज़्यादा वह ये की तुम्हे ईमान से हटा देंगे ।ईमान के खतरे से वह रुक जाती । मगर फिर उसको घर याद आता तो घर जाने की ज़िद करती । बहुत मजबूर होकर मौलाना ने उसको इजाज़त दे दी मगर समझाया कि तुम सिर्फ अपने

इस्लाम की दअ्वत देने की नियत से घर जाओ और अगर वाकअी तुम्हे अपने घरवालों से मुहब्बत है । तो मुहब्बत का सबसे ज़रुरी हक यह है की तुम उनको इस्लाम की दअ्वत दो और उनको दोज़ख की आग से बचाने की फिक्र करो। हिरा ने कहा कि वे तो इस्लाम के नाम से भी चिढते हैं । वे हरगिज़ इस्लाम कुबूल नही कर सकते । उसने घर मे बताया था कि मौलाना साहब ने कहा कि जब अल्लाह तआला उनके सीने को इस्लाम के लिये खोल देंगे तो वे कुफ्र और शिर्क से भी इसी तरह चिढने लगेंगे जिस तरह इस्लाम से चिढते है । मौलाना साहब ने उससे कहा की तुम भी तो इस्लाम से इसी तरह चिढती थी जिस तरह अब शिर्क से नफरत करती हो । अल्लाह से दुआ करो और मुझसे अहेद करो कि मै घर अपनी माँ और घरवलों को दोज़ख से बचाने की फिक्र मे जा रही हुँ । अगर तुम इस नियत से जाओगी तो अव्वल तो अल्लाह तुम्हारी हिफाज़त करेंगे और अगर तुमको तकलीफ भी हुई तो वो तक्लीफ होंगी जो हमारे नबी स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम की असल सुन्नत(पध्दती) है । और अगर तुम्हारे घरवालों ने तुम्हे मार भी दिया तो शहीद होगी और शहादत जन्नत का मुख्तसर तरीन रास्ता है । और मुझे यकीन है तुम्हारी शहादत खुद उनके लिये हिदायत(सन्मार्ग) का ज़रिया होगी अगर तुम घरवालों को दोज़ख से बचाने के लिए अपनी जान दे दोगी वे हिदायत पा जायेंगे तो तुम्हारे लिये सस्ता सौदा होगा।मौलाना साहब बताते है कि उन्होने उसको दो रकअत नमाज पढकर अल्लाह से हिदायत की दुआ करने और दअ्वत की नियत से अपने घर जाने का अहद करने को कहा । वह देहलीसे फुलत और फिर घर आ गयी हम लोग उसको देखकर आग बगोला हो गये। मैने उसको जुतों और लातों से मारा । उसने ये तो नही बताया की मै कहाँ रही । अलबत्ता यह बताया कि मै मुसलमान हो गयी हूँ । और अब मुझे इस्लाम से कोई हटा नही सकता ।हम उसपर सख्ती करते तो वह रो रो कर उलटा हमे मुसलमान होने को कहती, उसकी माँ बहुत बीमार थी । दो महिने के बाद वह मर गयी । तो वह उसे दफन करने के लिए मुसलमानों को देने को कहती रही कि मेरी माँ ने मेरे सामने कलमा पढा है वह मुसलमान मरी है । उसको दफनाना ही अच्छा है । मगर हम लोग किस तरह उसको दफन करते। उसको जला दिया । रोज़ हमारे घर मे एक फसाद होता । कभी वह भाईयों को मुसलमान होने के लिये कहती कभी बाप को। हम लोगों ने

उसको मेरठ उसकी ननिहाल मे पहुँचा दिया । उसके मामूं उस की मुसलमानी से आज़िज(हतबल) आ गये और उन्होने मुझे और मेरे भाई को बुलाया की इस अधर्म को हमारे यहाँ से ले जाओ । हम लोग रोज़ रोज़ के झगडो से आजिज़ आ गये है।

मैने बजरंगदल के ज़िम्मेदारों से मश्वरा किया । सबने उसे मार डालने का मश्वरा दिया । मै उसे गाँव ले आया। एक दिन जाकर नदी किनारे पाँच फिट गहरा गढ़ा खोदा और मै और मेरे बडे भाई दोनो उसको गाँव लेजाने के बहाने लेकर चले कि तेरी बुवा के यहाँ जा रहे है। उसको शायद सपने मे मालुम हो गया था। वह नहायी,नये कपडे पहने और कहा चचा आखरी नमाज़ तो पढने दो जल्दी से नमाज़ पढी और खुशी खुशी दुल्हन सी बनकर हमारे साथ चल दी । आबादी से दो रास्ते से अलग जाने के बावजूद उसने हमसे बिल्कुल नही पुछा की बुवा का घर इधर कहाँ? नदी के बिल्कुल पास जाकर उसने हँसकर बाप से पूछा कि आप मुझे बुवा के घर ले जा रहे है या पिया के घर ?

(देर तक रोते रहे -----)

सवालः(पानी मंगा कर पिलाते हुये) हाँ बात पूरी कर दीजिये।

जवाबः किस दिल से पूरी करुँ । हाँ भाई पूरी तो करनी है । मेरे थैले मे पाँच लीटर पेट्रोल था । हिरा का हक़ीक़ी बाप और मै ज़ालिम चचा दोनो के साथ वह सच्ची मोमिना,आशिका और शहीद, हम उसको लेकर गढे के पास पहुंचे। जो एक रोज पहले प्रोग्राम के तहत खोदा गया था । इस दरिंदे चचा ने यह कहकर फूल सी बच्ची को उस गढे मे धक्का दे दिया कि तू हमे नर्क की आग से क्या बचाएगी । ले खुद मजा चख नर्क का । गढे मे धक्का देकर मैने वह सारा पेट्रोल उसपर डाल दिया और माचिस जलाई। मेरे बडे भाई बस रोते हुये उसको खडे देखते रहे। जली हुई माचिस की तिली उसपर लगी कि आग उसके नये कपडों मे भडक गयी । वह गढे मे खडी हुई और जलती आग मे हाथ आसमान की तरफ उठाये और चीखी "मेरे अल्लाह ! आप मुझे देख रहे है ना ।मेरे अल्लाह आप मुझसे मुहब्बत करते है ना, अपनी हिरा से बहुत प्यार करते है ना, हाँ मेरे अल्लाह! आप ग़ार-ए-हिरा से भी मुहब्बत करते है और गढे मे जलती हिरा से भी मुहब्बत करते है ना । आपकी मुहब्बत के बाद मुझे किसी की ज़रुरत नही।" उसके बाद

उसने ज़ोर ज़ोर से कहना शुरु किया "पिताजी इस्लाम ज़रुर कुबूल कर लेना। चाचा मुसलमान ज़रुर हो जाना। चाचा मुसलमान ज़रुर हो जाना (हिचकियों से रोते हुये)

इसपर मुझे गुस्सा आ गया और मै भाई साहब का हाथ पकडकर चला आया । भाई साहब मुझसे कहते रहे कि एक बार और समझाकर देख लेते मगर मुझे उनपर गुस्सा आ गया । बाद मे वापस आते हुये हमने गढे के अंदर से ज़ोर ज़ोर से "लाइलाह इल्लल्लाह " (ईश्वर के सिवा कोई पूजनीय नही) की आवाज़ें आती सुनीं और हम अपने फरीज़े को अदा करना समझकर चले तो आये मगर उस शहीद की मुहब्बत का ये अखीर जुमला (वाक्‌य)मुझ दरिंदे और सफ्फाक (पत्थर दिल) के पत्थर जैसे दिल को टुकडे कर गया ।

मेरे भाई यानि हिरा के वालिद घर आकर बीमार पड गये। उनके दिलमे सदमा सा बैठ गया और यह बीमारी उनके लिये जान लेवा साबित हुई । मरने के दो दिन पहले उन्होने मुझे बुलाया और कहा कि हमने जिंदगी मे जो किया सो किया मगर अब मेरी मौत हिरा के धर्म पर जाये बगैर नही हो सकंती। तुम किसी मौलवी साहब को बुला लाओ । मै भी भाई साहब के हाल की वजह से टूट गया था । हमारे यहाँ मस्जिद के इमाम साहब मिल गये । उनको लेकर आया उन्होने उनसे कलमा पढाने को कहा ।उन्होने कलमा पढा अपना इस्लामी नाम अब्दुर्रहमान रखा और मुझसे कहा कि " मुझे मुसलमानों के तरीके पर मिट्‌टी देना ।" मेरे लिये ये बहुत मुश्किल बात थी । मगर मैने भाई की अंतिम इच्छा पुरी करने के लिए यह किया कि उनको इलाज के बहाने देहली ले गया। वहाँ पर अस्पताल मे दाखिल किया। वहीं उनकी मौत हुई । वह बहुत इत्मिनान(शांती) से मरे । फिर हमदर्द के एक डॉक्टर से मैने यह हाल बताया तो उन्होने वहाँ संगम विहार के कुछ मुसलमानो को बुलाया और उनके दफन वगैरा का इंतेज़ाम किया ।

सवाल : अजीब वाकिआ है आपने अपने इस्लाम कुबूल करने का हाल नहीं बताया ?

जवाब : वही बता रहा हूँ । इस्लाम से मेरी दुश्मनी कुछ तो कम हो गई थी।मगर भाई के मुसलमान हो कर मरने का भी मुझे दु:ख था । भाई साहबके मुसलमान मरने से यह यकीन आ गया कि मेरी भाभी भी ज़रुर मुसलमान हो गयी होगी । मुझे ऐसा लगा कि किसी मुसलमान ने हमारे घर पर जादु कर दिया है । और वह दिलों

को बांध रहा है । कि एक एक करके सब अपने धर्म को छोड रहे है । तो मैने बहुत से सयानों से बात की। मै एक तांत्रिक की तलाश मे शामली से ओन जा रहा था। बस मे सवार हुआ तो बस किसी मुसलमान की थी । ड्रायवर भी मुसलमान था । उसने टेप मे कव्वाली चला रखी थी। बुढिया नाम की कव्वाली थी । उसमे हमारे नबी स्वल्लल्लाहु अलैही व सल्लम को एक बुढिया के सताने लेकिन आपके ज़रिये उस के साथ अच्छे सुलूक और उसको समझाने और फिर बुढिया के मुसलमान हो जाने का किस्सा था । स्पीकर मेरे सर पर था । बस झंझाना रुकी । उस कव्वाली ने मेरी सोच को बदल दिया । मुझे ख्याल हुआ की जिस नबी का यह किस्सा है वह झुठा नही हो सकता । मै ओन के बजाय झंझाना उतर गया और ख्याल हुआ कि मुझे इस्लाम के बारे मे पढना चाहीये । उसके बाद शामली की बस मे बैठ गया । उस मे भी टेप बज रहा था । पाकिस्तान के मौलाना क़ारी हनीफ साहब की तकरीर थी मरने और मरने के बाद के हालात (स्थितियों)पर उनकी तकरीर थी। मुझे शामली उतरना था मगर वह तकरीर पूरी नही हुई थी । शामली अड्डे पर पहुंचकर ड्रायवर ने टेप बंद कर दिया। मुझे तकरीर सुनने की बेचैनी थी । बस मुज़फ्फर नगर जा रही थी । मैने तकरीर सुनने के लिये मुज़फ्फर नगर का टिकट लिया। बिघरा पहुंचकर वह तकरीर खत्म हुई । उस तकरीर ने इस्लाम से मेरे फासले को बहुत कम कर दिया । मै बुढाना रोड पर उतरा और घर जाने के लिए बुढाना की बस मे सवार हुआ । मेरे करीब एक मौलाना साहब बैठ गये । उनसे मैने कहा कि मै इस्लाम के बारे मे कुछ पढना चाहता हुँ या मालुमात करना चाहता हुँ । आप मेरी इस सिलसिले मे मदद करें । उन्होने कहा,आप फुलत चले जाएँ और मौलाना कलीम सिद्दीकी साहब से मिले । उनसे ज़्यादा मुनासिब आदमी हमारे इलाके मे आपको कोई नही मिलेगा । मैने फुलत का पता मालुम किया और घर जाने के बजाय फुलत पहुंचा । रातको एक मास्टर साहब ने मुझे मौलाना कलीम साहब की किताब "आपकी अमानत आपकी सेवा मे" दी ।यह किताब उसकी ज़ुबान और दिल को छू लेने वाली बातों ने मुझे शिकार कर लिया। मौलाना साहब सवेरे के बजाय अगले रोज शाम को फुलत आये। मैने मग़रिब(संध्या की नमाज़) के बाद उनसे मुसलमान होने की ख्वाहिश का इज़हार (इच्छा प्रकट)किया और बताया कि मै मालुमात करने आया था मगर आपकी अमानत ने मुझे शिकार कर

लिया । मौलाना साहब बहुत खुश हुये 13 जनवरी 2000 को मुझे कलमा पढाया । मेरा नाम अब्दुल्लाह रखा।रात को मै वहीं रुका।मैने मौलाना साहब से एक घंटे का वक्त मांगा और अपने जुल्म और बरबरीयत के नंगे नाच की कहानी सुनायी । मौलाना साहब मेरी भतीजी हिरा की कहानी सुनकर देर तक रोते रहे और बताया कि हिरा हमारे यहाँ ही रही और मेरी बहन के पास देहली मे रही । मौलाना साहब ने मुझे तसल्ली दी कि इस्लाम पिछले सारे गुनाहों को खत्म कर देता है। मगर मेरे दिल को उसका इत्मिनान ना हुआ कि इस दरजा सफ्फाकी(निर्दयता) और बरबरीयत(क्रूरता) को किस तरह माफ किया जा सकता है।मौलाना साहब मुझसे कहते थे कि इस्लाम से सारे पिछले गुनाह माफ हो जाते है । अपने दिल के इत्मिनान के लिए आपने इतने मुसलमानो को कत्ल किया। अब आप कुछ मुसलमानों की जान बचाने की कोशिश करें।क़ुरआन ने कहा है कि नेकियाँ गुनाहोंको ज़ाइल करदेती है إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ अपने दिल की तसल्ली के लिए और अपने ज़ुल्म की किस्मत को जगाने के लिए मै यही कोशिश करता हूँ कि किसी हादसे मे किसी बीमारी मे कोई मुसलमान मरने जा रहा हो तो मै उसे बचाने की कोशिश करुँ ये भी मुझे मालुम है कि मरने वाले को मै बचाने वाला कौन हूँ मगर कोशिश करनेवाला भी करने वाले की तरह होता है । इसलिए कोशिश करता हूँ।

गुजरात मे दंगे हुये तो मैने मौका गनीमत जाना । मेरे अल्लाह का करम है कि उसने मुझे खूब मौका दिया । मैने वहाँ पर वैसा बनकर बहुत से मुसलमानों को महफ़ूज़ जगह पर पहुंचाया या पहले से खतरे से होशियार किया।पहले जाकर उनके मश्वरे मे शामिल हुआ और दस ग्यारह भीड के हमलों की मैने मुसलमानों को इत्तेला दे कर अपने गाँव से हमले से पहले ही भगा दिया ।एक काम तो मेरे अल्लाह ने मुझ से ऐसा कराया जिससे मुझे ज़रुर बडी तसल्ली(आत्मशांती) होती है। आपने सुना होगा की भावनगर मे एक मदरसे मे चार सौ बच्चों को मदरसे के अंदर जलाने का प्रोग्राम था। मैने वहाँ थाना इंचार्ज शर्मा को इत्तेला दी और उनको तैयार किया। भीड के आने के दस मिनट पहले पीछे की दीवार मैने अपने हाथों से तोडी और अल्लाह ने चार सौ मासूमों(निष्पापों) की जान बचाने का मुझे ज़रिया बनाया ।मै तीन महिने तक गुजरात जाकर पड गया। फिर भी मेरे ज़ुल्म इतने ज़्यादा है कि ये सबकुछ उसके बराबर नही हो सकता ।बस एक बार मौलाना

साहब ने मुझे तसल्ली दी कि अल्लाह की रहमत के लिए क्या मुश्किल है कि मौत का वक्त और बहाना तो खुद उसने तै किया है ।जिस अल्लाह ने आपको हिदायत से नवाज़(वर्दानित) दिया । वह अल्लाह आपको मआफ करने पर क्यों क़ादिर नही । उससे दिल मुतमइन हुआ । मौलाना साहब ने मुझे इस्लाम सिखने के लिए जमाअत मे जाने का मश्वरा दिया । मैने दो माह का वक्त मांगा । गाँव से मकानात और ज़मीनें सस्ते दामों में फरोख्त(बेची) की और देहली जाकर मकान लिया । बीवी और दो भतीजों और हिरा की बहन को तैयार किया और फुलत लेजा कर कलमा पढवाया। उसमे मुझे दो माह के बजाय एक साल लगा । फिर जमाअत मे वक्त लगा ।मेरा दिल हर वक्त इस गम मे डूबा रहता है कि इतने मुसलमानो और फूल सी बच्ची को इस सफ्फाकी(निर्दयता) से कत्ल करने वाला किस तरह मआफी का मुस्तहिक(पात्र) है । मौलाना साहब ने मुझे क़ुरआन शरीफ पढने को कहा और खास तौर से सूर : बुरुज सुरत को बार बार पढने को कहा। अब वह मुझे ज़्यादा याद है और उसका तर्जुमा भी 1400 साल पहले कैसी सच्ची बात मेरे अल्लाह ने कही थी। मुझे ऐसा लगता है कि गैब के जानने वाले खुदा ने हमारा ही नकशा खिंचा है ।

قُتِلَ اَصْحَابُ الْاُخْدُوْدِ النَّارِ ذَاتِ الْوُقُوْدِ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ، وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ؕ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ، الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ (البروج ۴تا۹)

(खंदक वाले हलाक कर दिये गये यानि आग की खंदकें जिन मे इंधन झोंक रखा था।जबकि वह उनके किनारो पर बैठे हुये थे और जो सख्तियाँ वे अहले ईमान पर कर रहे थे उनको सामने देख रहे थे। उनको मोमिनों की यही बात बुरी लगती थी कि वे खुदा पर इमान लाये हुये थे जो ग़ालिब और काबिले तअ्रीफ है । वही जिसकी आसमानो और ज़मीनों मे बादशाहत है ।और खुदा हर चीज से वाकिफ है।)

अहमद भाई इस सूरत को आप पढ़े और हिरा की तडपा देने वाली सदाओं(आवाजों) को गौर से सुनें : मेरे अल्लाह ! आप मुझे देख रहे है ना । मेरे अल्लाह आप मुझसे मुहब्बत करते है ना । हाँ मेरे अल्लाह ! आप ग़ार ए हिरा से

भी मुहब्बत करते है ।अपनी हिरा से भी प्यार करते है ना । आपकी मुहब्बत के बाद मुझे किसी की ज़रुरत नही------पिताजी इस्लाम ज़रुर कुबूल कर लेना । चाचा मुसलमान ज़रुर हो जाना । चाचा मुसलमान ज़रुर हो जाना (हिचकियों से रोते हुये)

सवाल:अल्लाह का शुक्र है कि आपने उसका कहना मान लिया। आप बहुत खुश किस्मत है ।इस ज़ुल्म के अंधेरे को रहमत और इस्लाम के नूर का ज़रिया अल्लाह ने आपके लिये बना दिया ।

जवाब: मैने कहाँ उसका कहना माना ? हिदायत(सन्मार्ग) का फैसला करनेवाले उससे मुहब्बत करने वाले अल्लाह ने उसका कहना माना। मुझ जैसा दरिंदा कब उसके करम के काबिल(कृपा पात्र) था।

सवाल: बहुत बहुत शुक्रिया अब्दुल्लाह भाई ।

जवाब: अहमद भाई आप दुआ करे । अल्लाह तआला मुझसे कोई ऐसा काम ज़रुर करा दे जिससे मेरा दिल मुत्मइन (शांत)हो जाय कि मेरे मज़ालिम(अत्याचार) की तलाफी(क्षतिपूर्ति) हो गई । वाकअी क़ुरआन के इस फरमान मे मुझ जैसे ला इलाज मरीज़ के लिये बडा इलाज है कि अच्छाईयाँ बुराइयों को जाईल(समाप्त) कर देती है । इस लिए गुजरात फसादात मे कुछ मासूम मुसलमानों की मदद और जान बचाने की कोशिश से मेरे दिल को तसल्ली होती हैं (खुदा हाफीज)

(मुस्तफाद अज़ माहनामा अरमुग़ान फरवरी 2005)

••••••

21 ससुराल वालो के ज़ुल्म व सितम के बावजूद इस्लाम पर साबित कदमी

> शादी के बाद ससुराल वालो के इस तरह के बरताव से हमे बहुत सी परेशानियो का सामना करना पडा।नया नया माहोल था मेरे शौहर अकेला छोडकर काम पर चले जाते। सुबह दस बजे से शाम मगरिब तक आते। मै दरवाजा बंद करके घर मे डर डर कर रहती कि कोई आकर मारेगा,गालिया देगा मेरे ससुराल वालो ने हमारे साथ बहुत गलत बरताव किया औरतो के इज्तेमा मे जाती तो वहा मेरी सास आकर बहुत बुरा बुरा बकती,गालीया बकती। जब इज्तेमा मे जाना बंद कर दिया सामने के मकान मे खाला जान के पास नमाज़ सीखने के लिए गई तो उन्होने भी मुझे बुरा कहा और गालिया बकी।

अ.बारी कुरेशी : अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातूह।

ज़ैनब अंजुम : वअलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाही व बरकातूह।

सवालः फुलत ज़िला मुज़फ्फर नगर युपी से दीनी रिसाला अरमुगान हर माह निकलता है और इस मे नौ मुस्लिमो का इंटरव्यु शाए होते है। हमारी दिली तमन्ना है कि इस मे आप का इंटरव्यु भी शाए हो जाए ?

जवाबः हॉं हॉं,क्यो नही ?

सवालः आप अपना खानदानी तआर्रुफ कराईये ?

जवाबः मेरा नाम रेखा था। मेरे वालिद मधुकर लुहासे और वालदा का नाम सीता लुहासे है। मेरे वालिद बुध्द मज़हब के मानने वाले है मेरे वालिद कागज़ फॅक्टरी नेपानगर जिला खंडवा,एमपी मे मुलाज़िम थे।मेरे वालिद के चार भाई और

आठ बहने है। चारो चचा मुलाज़िम है अल्लाह के फज़ल से पढा लिखा खानदान है। मेरा नाम रेखा मेरे दादा ने रखा है।मुझ से बडी तीन बहने है और एक बहन छोटी है अल्लाह के करम से एक भाई है जिस की पैदाईश ईद के दिन ज़ोहर के वक्त हुई। मेरा रुझान शुरु से अल्लाह के वलियो की तरफ रहा है। जो भी मांगती थी पहे बाबा जंगली पीर से ही मांगती थी। इल्म न था लेकिन अल्लह तआला ने हर चीज़ दी। जो चाहती थी वह मिला। मेरी बहने और वालदा सब मुझे आपा कहते थे।

सवालः आप अपने कुबूले इस्लाम के बारे मे बताईये ?

जवाबः कुबूले इस्लाम के बारे मे तो यही कहना चाहुंगी कि मेरे अल्लाह का मुझपर बडा एहसान हुआ कि मै इस्लाम मे दाखिल हुई।शुरु ही से मेरा रुझान इस्लाम की तरफ रहा।मुझे
मांगने का इल्म न था बस अल्लाह अल्लाह कहती थी और जंगली पीर बाबा से मांगती थी। मगरिब के मांगी हुई हर दुआ कुबूल होती है बस रोज़ शाम मे पढाई करने के बाद मगरिब के वक्त दुआ करती और मेरी दुआ कुबूल भी होती।

मै तकरीबन चौदह साल की थी। आठवी क्लास के रिज़ल्ट का इंतेज़ार था। मै ने दुआ की और अल्लाह के करम से ख्वाब मे मुझे बताया दिया गया कि मै पास हो गई हूँ और ५७.८ फिसद नंबरात मिले है सुबह ग्यारह बजे स्कूल जाना रिज़ल्ट मिलने वाला है। सुबह उठी अम्मी से कहा तो अम्मी कहने लगी आपा तुम ने अल्लह से दुआ की और अल्लाह ने कुबूल की और इशारा कर दिया कि तुम पास होने वाली हो तुम ने दिल से दुआ की अल्लाह तुम्हारी सुनता है।स्कूल से रिज़ल्ट लेकर आई देखा कि ख्वाब मे जो रिज़ल्ट बताया गया था वही रिज़ल्ट आया है मेरा यकीन बढ गया फिर अलाह तआला के करम से मेरा रुझान इस्लाम की तरफ बढा लेकिन

सब कुछ बाबा जंगली पीर के नाम से ही करती थी क्योंकी दीन का इल्म नही था। हमारे आस पास सब हिंदु रहते थे किससे पूछते? मेरे वालिद के एक दोस्त थे अल्लाह इनको जन्नत नसीब करे वह लखनऊ के रहने वाले है इन का नाम यासीन था हमारे घर इन का आना जाना था मेरे वालिद के बहुत करीब के और बचपन के दोस्त थे पांचो वक्त की नमाज़ के पाबंद थे।वह जब भी घर आते तो मै उन से नमाज़ के बारे मे पुछती,वह हंसते और कहते कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही और वह दीन की बाते सुनाते हम सब अदब के साथ बैठकर वह बाते सुनते बस उन से ही थोडा सा दीन सीखा। रमज़ानुल मुबारक का महीना आया मै ने इन से रोज़ा रखने के बारे मे पूछा कि क्या हम सब रोज़ा रख सकते है? तो उन्होने कहा क्यो नही ? बल्की सब रखो अल्लाह आप सबको हिदायत दे हम सब ने रोज़े रखने शुरु कर दिए और हर साल पाबंदी से रोज़े रखते रहे। अल्लाह के करम से मुझे ख्वाब बहुत आते है एक बार ख्वाब देखा की एक बुजुर्ग मुझसे कह रहे है हम जो बोल रहे है सुनो और दोहराओ उन्होने अरबी मे कुछ कहा मुझे समझ मे नही आया मै रोने लगी और कहने लगी बाबा मै बोल नही पा रही हू,आप मुझे कागज़ पर लिखकर दे दिजीए मै इसे याद करके सुना दूंगी। वह कहने लगे नही कागज़ पर लिखकर देगे तो कागज़ जल जाएगा एक काम करो तुम कुरआन शरीफ के बीसवे पारे की बीसवी आयत देख लेना और समझ लेना इतना कहा और मेरी आंख खुल गई। मै ने अम्मी को सुनाया तो अम्मी ने कहा शायद अल्लाह तुम्हे नवाज़ रहा है लेकिन किस से पुछे? आसपास कोई भी अल्लाह का बंदा नही था जहॉ मै मुलाजे़मत करती थी वही पर एजाज़ नाम का एक लडका मुलाजे़मत करता था।इस से मेरी अच्छी दोस्ती थी मै

ने इसे यह ख़्वाब सुनाया तो इस ने कहा मुझे तो इस का इल्म नही लेकिन मै तुम्हे मुफ्ती साहब के पास ले चलता हूँ। मुफ्ती साहब को पुरा ख़्वाब बताया तो उन्होने बताया कि बीसवे पारे की बीसवी आयत मे तो अल्लाह तआला ने फरमाया है कि जिसको चाहेगा अज़ाब देगा जिस पर चाहे रहमत करेगा।बस मेरे अल्लाह का मुझ पर करम हुआ और उस ने मुझे इस्लाम की दौलत से माला माल कर दिया।

सवालः आपको इस नए माहोल मे अजीब सा नही लगता।

जवाबः इस नए माहोल मे मेरे लिए कुछ भी अजीब सा नही लगता क्यों कि अल्लाह के करम से मेरी आखेरत सवर गई और मुझे क्या चाहिए।मुझे नयापन सिर्फ यह लगा कि मुझे अपने रहन सहन मे थोडा सा बदलाव करना पडा,जैसे कि पहले रेखा लुहासे कहलाती थी अब अल्लाह के करम से ज़ैनब अंजुम हूँ। पहले माथे पर बींदी लगाती थी अब नही लगाती।अल्लाह के करम से वही चेहरा बिना बिंदी लगाए अच्छा लगता है चेहरे से ही कई लेग मुझसे पूछते है कि आप मुस्लिम है या हिंदु? हिंदु मुस्लिम दोनो तरह की औरतो ने मुझसे यह पूछा मै ने कहा आप को क्या लगता है? तो कहने लगे कि आप चेहरे से तो मुस्लिम लग रही है अपनी बातचीत से भी आप मुस्लिम लगती है। मुझे बदलाव इतना ही करना पडा कि नाम बदला और बिंदी नही लगाती।मै अपने अल्लाह को पहले भी चाहती थी और आज भी चाहती हूँ।

सवालः आपके वालदैन के बगैर यह शादी कैसी लगी ?

जवाबः मै मुलाज़ेमत के सिलसिले मे नेपानगर से रोज़ाना बुरहानपूर आती थी जैसा कि मै ने उपर ज़िक्र किया है।वही पर मेरी मुलाकात एजाज़ नाम के लडके से हुई। एजाज़ मेरे कुबूले इस्लाम का ज़रिया नही बने यह तो मेरे अल्लाह का मुझ पर बहुत बडा करम है। आप ने शादी के ताअल्लुक से

सवाल किया है तो यह पेशकश एजाज़ ने ही रखी और मै तैयार हो गई जैसा कि हर लडकी के अरमान होते है वैसे ही हर लडकी के माँ बाप के भी अरमान होते है मै बी.कॉम पास हूँ और जिनसे मेरी शादी हुई वह सिर्फ तीसरी पास है और कोई परमानंट मुलाज़ेमत या बिज़नेस नही मेरे वालिद मुझसे बहुत ज्यादा नाराज़ थे वह न तो हमारे बराबर तालीम याफ्ता है और साथ ही शादी शुदा और दो बच्चे भी है इसी वजह से मेरे वालदैन बहुत ज्यादा नाराज़ थे। हर शख्स चाहता है कि उसकी बेटी को तालीम याफ्ता और तमाम काबीलियत वाला शौहर मिले,लेकिन तमाम खूबिया उनके अंदर नही थी मेरे अल्लाह ने मेरे मुकद्दर मे उन्हे ही मेरा शौहर होना लिखा था। एक लडकी की शादी करने के जो अरमान होते है वह अरमान भी मेरे पुरे नही हुए एक तो मेरा पुरा खानदान तालीम याफ्ता और मेरे शौहर का घराना जाहिल,बे पढा लिखा,और न ही उनके घरवालो ने मुझे अपनाया लेकिन अल्लाह का करम है कि मरे वालदैन ज्यादा दिन नाराज़ नही रहे उन्होने मुझको और मेरे शौहर को अपना लिया। मै बहुत खुश हूँ।

सवालः आप के ससुराल वालो का बरताव आपके साथ कैसा रहा ?

जवाबः जब मुझ से एजाज़ ने शादी के लिए कहा तो मै ने कहा कि तुम्हारे घरवाले राज़ी हो जाएगे ? तो उन्होने कहा हो जाएगे।मै ने सोच कर हाँ कहा एजाज़ ने अपने वालदैन और खानदान के दूसरे लोगो से बात की वह सब राज़ी हो गए। मुझे अच्छी तरह याद है कि उनकी वालदा ने कहा था कि तुम बडे घरकी लडकी हो हमारा छोटा सा घर है हम गरीब है । क्या तुम हमारे साथ रहोगी ? तो मै ने कहा क्यो नही? आप लोगो के साथ नही रहुगी तो फिर कहाँ रहूगी ?

उन्होने कहा ठीक है तो तुम आजाओ।हमारा मज़हब कुबूल करलो। हम तुम्हे अपना लेगे। दूसरे दिन जब मै अपने घर नेपानगर से बुरहानपूर मुलाज़ेमत के लिए आई तो वापस घर नही गई। उन के साथ घर गई। उनकी अम्मी ने कहा यहाँ नही उधर के मकान मे ले जाओ,उनके तीन मकान है जो घर खाली था,ऐसी धुल मट्टी,गंदगी हमे वहाँ जाने को कहा रात वहाँ रुके। खाने को भीं नही कहा। दो दिन बीत गए सारे ही लोग बदल गए और कहने लगे जाओ हम को तुम से कोई मतलब नही कही भी मरो हम क्यो तुमको अपनाए,क्यो तुम्हारा निकाह करवाए? उनके घरवाले उनसे लडाई झगडा करने लगे दूसरे दिन हम दोनो मुफ्ती साहब के पास गए और कहा हम दोनो निकाह करना चाहते है हमारा निकाह कर दो। उनहोने कहा गवाह लाओ मेरे शौहर ने कहा हमारे साथ हमारे घरवालो ने ऐसा ऐसा बरताव किया है हम गुनाह नही करना चाहते है। महेरबानी करके हमारा निकाह करवा दो। वही पर कुछ लोग मौजुद थे।उनकी मौजुदगी मे मेरा निकाह हुआ और उनके घर वाले हम से अलग अलग ही रहे और आज भी हम से अलग है। उनके घर मे छोटे भाई बहन की शादी हुई हमे नही बुलाया। उनके घर वाले कहते है कि हमारा इन लोगो से कोई रिश्ता नही। हमारा बेटा हमारे लिए मर चुका है। ससुराल के लोगो ने हमे मारा,गंदी गंदी गाली दी। मआमला पोलिस तक पहुचा जैसे तैसे करके रफा दफा हुआ मोहल्ले मे ही मकान किराया से ले कर रह रहे थे जब भी उनके घरवालो से सामना होता तो गालिया बकते और लडाई पर आमादा रहते। हम जिस मकान मे रहते थे।इस मे बिजली भी नही थी पुरा एक साल ऐसा ही गुजार दिया मेरे वालिद के यहाँ बिजली थी परवरीश बहुत अच्छे माहोल मे हुई थी हमे यह भी पता नही था कि गरीबी क्या होती है। शादी के बाद ससुराल वालो

के इस तरह के बरताव से हमे बहुत सी परेशानियो का सामना करना पडा। नया नया माहोल था मेर शौहर मुझे अकेला छोडकर काम पर चले जाते। सुबह दस बजे से शाम मगरिब तक आते। मै दरवाजा बंद करके घर मे डर डर कर रहती कि कोई आकर मारेगा,गालिया देगा। मेरे ससुराल वालो ने हमारे साथ बहुत गलत बरताव किया औरतो के इज्तेमा मे जाती तो वहा मेरी सास आकर बहुत बुरा बुरा बकती,गालीया बकती। जब इज्तेमा मे जाना बंद कर दिया सामने के मकान मे खाला जान के पास नमाज़ सीखने के लिए गई तो उन्होने भी मुझे बुरा कहा और गालिया बकी।

सवालः इस्लाम कुबूल करने के बाद हालात और तक्लीफ तो आती है जो उनपर इस्तेकामत से जम जाता है उसका इस्लाम मज़बूत हो जाता है। हज़रते सहाबा कराम पर भी हालात और तक्लीफे आई?

जवाबः आपने सही फरमाया हज़राते सहाबा कराम को तक्लीफ पहुचाने वाले कौन थे,कुफ्फार ? लेकिन मुझको तकलीफ पहुचाने वाले खानदानी मुसलमान है,जिन्हे विरासत मे इस्लाम मिला है।

सवाल : आपके शौहर का बरताव आपके साथ कैसा है?

जवाब : अल्लाह का करम है कि मेरे मिया ने हर पल समझा और समझाया। वह हर हाल मे खुश रखते है। अल्लाह का एहसान है मुझे इतना चाहने वाला शौहर मिला मेरे शौहर का साथ है तो मुझे किसी चिज़ की कमी महसूस नही होती।

सवालः अब आप का क्या इरादा है ?

जवाबः अल्लाह के करम से मेरी आखेरत सुधर गई। अब मै दाअवत का काम करुंगी ता कि दूसरो की आखेरत सुधर जाए अल्लाह तआला मुझ गुनाहगार से दाअवत का काम ले ले यही मै दूसरो के लिए भी दुआ करती हूँ।

सवालः मौजूदा दौर के मुसलमानो के लिए कोई पैगाम ?

जवाबः बस इतना ही कहुगी कि दायराए इस्लाम मे दाखिल होने वाले नौमुस्लिमो का यह खानदानी मुसलमान बढकर इस्तकबाल करें। उन्हे गले लगाए। इन के इस अमल से बहुत सारे लोग इस्लाम कुबूल कर लेगे। इस मज़मून को पढनेवाले हज़रात मेरे खानदान के लिए भी दुआ करे कि अल्लाह तआला उन्हे भी हिदायत दे।

सवालः बहुत बहुत शुक्रिया अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाही

जवाबः वअलैकुम अस्सलाम, अल्लाह हाफिज़

मुस्तफाद अज़ माहनामा "अरमुगान" जुलाई २०११ ई.

••••••

Maktab Ashraf